श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग

रूपेश महावीर पञ्चाङ्ग

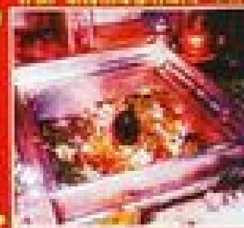
॥श्री महावीराय नमः॥



॥श्री गणेशाय नमः॥



॥श्री काशीविश्वनाथाय नमः॥



बाण-पञ्चक विचार

श्रीसंवत् २०८३। शक १९४८। ईस्वीय सन् २०२६-२७। फसली १४३३-३४। बंगला संवत् १४३२-३३। हिजरी १४४७-४८।

वर्ष के आरंभ में

रौद्र

नामक संवत्सर का संकल्पादि में वर्ष पर्यन्त विनियोग करें।

गत संवत्सर

सिद्धार्थ

लुप्त संवत्सर

काशी का शुद्ध पञ्चाङ्ग

प्रकाशक : **रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन**

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

मूल्य : ९०/-

भोजन द्वारा रोगों का उपचार

डाईबिटीज का घरेलू उपचार– १. एक चम्मच मेथी या दो आम की पत्ती, आधा गिलास पानी में रात को भिगोकर सुबह खाली पेट पीयें। २.दालचीनी, सेब व जामुन का सिरका, जामुन व जामुन के बीज का चूर्ण। ३.**फल**- सन्तरा, अमरूद, आँवला, आडू, चकोतरा। ४.**सब्जी**-करेला, नीबू, भिण्डी, प्याज, खीरा, टमाटर व अन्य हरी सब्जी खायें। ५.**चावल**- ब्राउन राइस, कुट्टू का चावल व सभी छिलके वाली दालो का प्रयोग करें।

कंधा, पीठ एवं जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-D एवं कैल्शियम की कमी से होता है। सुबह की धूप, काली तिल, मशरूम, दही, सन्तरा, शकरकन्द, कीवी, शिमला मिर्च। काडलीवर आयल (दवा की दुकान पर मिलता है), अण्डा, मछली (सैलमन, मैक्रील, सारडीन, टूना), कूलर एवं Ac के सामने न सोएँ, ठण्डी चीजो का सेवन न करें।

कोलेस्ट्राल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे– अखरोट, बादाम, अलसी (तीसी), दालचीनी, ग्रीन-टी, काली तिल, लहसुन, सेब, तरबूज, केला, सन्तरा, कीवी, अबैकाडो, गाजर, टमाटर, पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, खीरा, लालमिर्च, हरी मटर, बीन्स– ये सभी चीजें मोटाई व चिकनाई को काटती हैं। (बिस्कुट, नमकीन, कोल्डड्रिंक्स एवं तली हुई चीजों का परहेज करें।) सभी सब्जियों का कच्चा सलाद खाना ज्यादा फायदेमन्द है।

हाई-बी.पी. के लिए घरेलू उपचार– तीसी (अलसी), मेथी या अड़हुल का फूल पानी में रात को भिगोकर सुबह पीये, नारियल का पानी, दही, लहसुन, किशमिश, अमरूद, केला, तरबूज, सन्तरा, नीबू, आँवला, अबैकाडो, प्याज, टमाटर, कीवी, शकरकन्द, ब्रोकली, करैला, सहजन। (कच्चा नमक एवं तली चीजें न खाएँ। अलग से नमक भी न खाएँ।)

नोट- धूम्रपान, शराब, पान-मसाला न खायें क्योंकि इन सबसे बी.पी. बढ़ता है।

दिमागी ताकत के लिए– अखरोट, बादाम, अनार, सफेद तिल, कद्दू का बीज, दही, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, काली तिल। (रात में बरफ वाली व ठंडी चीजें न खायें-पीये। जिनको नीद की शिकायत हो)।

अनिद्रा के लिए–मछली, अलसी (तीसी), कद्दू का बीज, दही, शहद, बादाम, गरम दूध।

थाइराइड के लिए– नारियल, काडलीवर आयल, (अश्वगन्धा जड़ी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें)। पत्तागोभी, हरी गोभी (ब्रोकली) कच्चा न खाएँ।

पैरालाइसिस (लकवा)– लहसुन, काली तिल, बैगन, मूली। (किसी एक्सपर्ट की राय से नियमित व्यायाम करें)।

स्त्री रोग– सन्तरा, नीबू, करौंदा, अमरख व अन्य सभी खट्टे फल तथा ठंडई-(खरबूजा के बीज-१०० ग्राम, तरबूजा के बीज-१०० ग्राम, छोटी इलायची व गोल मिर्च स्वादानुसार, मोटी सौंफ-१०० ग्राम, पोस्ता दाना-१०० ग्राम, गुलाब की पत्ती-५० ग्राम)।

चर्म रोगों के लिए घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-C की कमी से होते है। सन्तरा, शिमला मिर्च, दही, अखरोट, नीम की पत्ती, कीवी, शकरकन्द, नीबू व सभी खट्टे फल मुँहासें व अन्य सभी चर्म रोग में लाभदायक है। **न खाएँ**–कच्चा नमक, चाय, चाकलेट, कोल्ड्रिंक, तली चीजें, मलाई, खोवा, अजवाइन एवं मांस इत्यादि। पानी ज्यादा पीयें।

शरीर के विकार को दूर करने वाले भोजन– सभी खट्टे फल जैसे- नीबू, संतरा इत्यादि, शलजम, शिमला मिर्च, अखरोट, हल्दी, काली मिर्च, लहसुन, खीरा, हरी गोभी (ब्रोकली), छिलके वाली दाल, गेहूँ की दलिया।

शरीर को ठंडा रखने वाले फल एवं सब्जियाँ– नारियल, खरबूजा, तरबूजा, संतरा, नीबू, आम, कीवी, सेब, खीरा, टमाटर, पत्तागोभी, ब्रोकली, कटहल, गेहूँ के ज्वार इत्यादि।

नोट- ऊपर लिखी चीजो को नित्य भोजन में शामिल कर बदल-बदल कर लेने से रोग जल्द ही दूर हो जायेंगे।

पञ्चाङ्ग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रूप से पाँच प्रकार की गणना होती है—सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियो मे सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष कहते है तथा जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करे उसे सौर मास तथा जितने समय मे प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते हैं। जिस दिन चन्द्रमा सूर्य एक राशि मे हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के समय को चान्द्रमास कहते है। एक इसका तीसवां भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच को सावन दिन कहते है। नक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। १ वर्ष=३६५ दिन, १५ घटी ३० पल, २२॥ विपल का होता है। तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण नामक पाँच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते हैं। सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानो में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों मे भेद होना स्वाभाविक है। इससे भिन्न-भिन्न देश मे लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन मे प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान—सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानो के भेद के कारण इनके मानो मे भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश मे दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग मे दिये हुए सूर्य घटी मे धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि—जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते है, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२×१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है तथा १६वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती है, जब फिर अमावस्या होती है तब ३० तिथियाँ बीत चुकती है। इसलिए अमावस्या की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि—सूर्य चन्द्रमा की गतियाँ सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का मान भी सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है। कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही बार में पूरी होती हैं और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा मे उस बार के सूर्योदय काल मे जो तिथि विद्यमान रहती है वही मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवहार में नहीं मानी जाती है। ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अधम कहते हैं। प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो बार मानी जाती है। इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं। इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षों के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत के लिये अनिष्ट कर होता है। शुक्ल पक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण—आधी तिथि जितने समय में बीतती है इसको करण कहते हैं। करण कुल ११ होते हैं। इसके नाम ये हैं—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र—तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीखता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं। इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन, १९ घटी, १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन—आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायें कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य मे दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या—ये छः राशियाँ उत्तर गोल मे हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मकर, मीन—ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं—उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भ होता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण—किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त मे सृष्टयादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है।

योग—अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हो उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आने वाला वर्तमान योग होता है। योग कुल २७ योग होते हैं—१. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमे भी क्षय-वृद्धि होती है।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए महामृत्युंजय वैदिकमंत्र जप की विधि ॥

आचमन कर प्राणायाम करके शान्तिपाठ, गणेशस्मरण करने के पश्चात् संकल्प, विनियोग, न्यास, ध्यान करने के अनन्तर महामृत्युञ्जयमंत्र का जप करना चाहिए। **संकल्प**–देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पमानाऽखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसाद-दीर्घायुष्यं सततारोग्यताप्राप्त्यर्थं अमुकसंख्यापरिमित-श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये॥ **विनियोग**–अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः, पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं, महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यास**–ॐ वामदेव कहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः वक्त्रे। ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे। ॐ श्रीं बीजाय नमः पादयोः॥ **करन्यास**–ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ **हृदयादिन्यास**– ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्। **पदन्यास**– त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं दृशोः। पुष्टिवर्धनम् मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः। इव हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय उर्वोः। मा जान्वोः अमृतात् पादयोः। मूलमंत्र से व्यापक कर ध्यान करना चाहिए। **ध्यान**– हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाऽक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्। अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभान्तं त्रिनेत्रं भजे॥ ध्यान के पश्चात् मानसोपचार पूजन करके मूलमन्त्र का जप करना चाहिए। **मानसोपचारपूजन**– ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। **जपार्थमंत्र**–ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ॥ जप करके देवता के दक्षिणकर में जप समर्पण करते हुए निम्न प्रकार मन्त्र बोलना चाहिए। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥१॥ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥२॥ तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदामृड। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रञ्च त्र्यम्बकम् ॥३॥ जपसाङ्गता संसिद्धि हेतु कामना के अनुसार वस्तु से, दूध-घृत से संसिक्त अपामार्ग (चिचिड़ी या लटजीरा) की समिधा से जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिए।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए शताक्षरागायत्री मंत्र की जप विधि ॥

ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठा ऋषयो गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवित्रिजात वेदस्त्र्यम्बको देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः॥ **ऋष्यादिन्यास**– विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। सवित्रिजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानिगुह्ये। त्रिष्टुबक्षराणिशक्तये नमः पादयोः॥ **हृदयादिन्यास**– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहातिवेदः शिखायै वषट्। ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः कवचाय हुम्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्राय फट्॥ **ध्यान**- स्मर्तव्याखिललोकवर्त्तिसततं यज्जङ्गमस्थावरं व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते-तद्व्रतकृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥ **होमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्र**– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

सन्तानप्रद मंत्र– ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ॐ कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा। यथा वरेण देवानामदितिर्वज्रपाणिना॥

बाल रक्षा के लिए धूप–लाख, नीम के पत्ते, बाँस का छिलका, शिवजी पर चढ़े फूल, राई, लहसुन, गाय का घी, अगर इन सबको एक में मिलाकर धूप देने से पूतना तथा अन्य बाल ग्रह का प्रकोप नष्ट हो जाता है। धूप देने के समय '**खुं, खुर्दनं, हुं फट् स्वाहा**' इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

मृतसंजीवनी मंत्र– ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ।

द्वादशाक्षर मृत्युञ्ज मंत्र– ॐ जूं सः पालय पालय सः जूं ॐ।

पुराणोक्त-मृत्युञ्जय मंत्र– ॐ मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥

अथ वर-कन्या नक्षत्र-मेलापक विचारोपयोगी होड़ा चक्र

अक्षर	चू,चे,चो,ला	ली,लू,ले,लो	अ,ई,उ,ए	ओ,वा,वी,वु	वे,वो,का,की	कु,घ,ङ,छ	के,को,हा,ही	हू,हे,हो,डा	डी,डू,डे,डो	मा,मी,मू,मे	मो,टा,टी,टू	टे,टो,पा,पी	पू,ष,ण,ठ	पे,पो,रा,री
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा०	उ०फा०	हस्त	चित्रा
राशि	मेष	मेष	मेष१ वृष३	वृष	वृष२ मिथुन२	मिथुन	मिथुन३ कर्क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह१ कन्या३	कन्या	कन्या२ तुला२
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु.२ मानव२	मानव	मानव३ जल.१	जलचर	जलचर	चतुष्पद (वनचर)	चतुष्पद (वनचर)	चतु.१ (वनचर) मानव३	मानव	मानव
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ
राशीश	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल१ शुक्र३	शुक्र	शुक्र२ बुध२	बुध	बुध३ चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य१ बुध३	बुध	बु.२ शुक्र२
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

अक्षर	रू,रे,रो,ता	ती,तू,ते,तो	ना,नी,नू,ने	नो,या,यी,यू	ये,यो,भा,भी	भू,धा,फा,ढा	भे,भो,जा,जी	खी,खू,खे,खो	गा,गी,गू,गे	गो,सा,सी,सू	से,सो,दा,दी	दू,थ,झ,ञ	दे,दो,चा,ची
नक्षत्र	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
राशि	तुला	तुला३ वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु१ मकर३	मकर	मकर२ कुम्भ२	कुम्भ	कुम्भ३ मीन१	मीन	मीन
वर्ण	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मानव३ कीट१	कीट	कीट	मानव	मानव॥ चतु३॥	चतुष्पद	चतु१॥ जल२॥	जलचर२ मानव२	मानव	मानव३ जलचर१	जलचर	जलचर
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
योनिवैर	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	शुक्र	शुक्र३ भौम१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गुरु१ शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३ गुरु१	गुरु	गुरु
गण	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१-।।वर्णगुणचक्र।। वर का वर्ण

कन्या का वर्ण	वर्ण	ब्रा०	क्ष०	वै०	शूद्र
	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

२-वश्यगुण । वर का वश्य

कन्या का वश्य	वश्य	च०	मा०	ज०	व०	की०
	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	॥	०	१
	जलचर	१	॥	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

६-गण-गुण । वर का गण

कन्या का गण	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

३-तारागुण/ऊपर वर-तारा, पार्श्व में कन्या-तारा

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५-ग्रहमैत्रीगुण । ऊपर वर का ग्रह, पार्श्व में कन्या का

ग्रह	सू०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
सू०	५	५	५	४	५	०	०
च०	५	५	४	१	४	॥	॥
मं०	५	४	५	॥	५	३	॥
बु०	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ०	५	४	५	॥	५	॥	३
शु०	०	॥	३	५	॥	५	५
श०	०	॥	॥	४	३	५	५

४-योनिगुण । ऊपर वर की योनि, पार्श्व में कन्या की योनि

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

वर्ग तथा वर्गेशचक्र

वर्ग	अ	क	च	ट
स्वामी	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्ग	त	प	य	श
स्वामी	सर्प	मूषक	मृग	मेष

उक्त वर्गों में अपने से पाँचवें वर्ग को परस्पर सभी वर्ग शत्रु मानते हैं। चक्र में जो ऊपर-नीचे हैं, परस्पर शत्रु हैं।

७-भकूटगुण। ऊपर वर राशि, पार्श्व में कन्या राशि

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिंह	क०	तुला	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

युञ्जाप्रीतिबोधक चक्र

पतिश्रेष्ठ	दोनों में सुमति	कन्या श्रेष्ठ
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा	ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा

८ नाड़ीगुण। वर की नाड़ी

कन्या की नाड़ी	नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

कुज (मंगली) दोष

१-जन्मकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में से एक या एक से अधिक में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से कोई पापग्रह अकेले या साथ-साथ स्थित हो।

२-चन्द्रकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से एक या अनेक पापग्रह एक या अनेक स्थानों में स्थित हों। उपरोक्त स्थितियाँ वर-कन्या जिसकी कुण्डली में होंगी वह कुजदोष से युक्त होगा।

वर की कुण्डली में शुक्र के द्वितीय-द्वादश दोनों स्थानों में पापग्रह हों, या शुक्र पापयुक्त हो, अथवा शुक्र से सप्तम-अष्टम-द्वादश में से किसी में पापग्रह हों तो उसकी पत्नी के लिए मारक स्थिति बनती है।

विवाहलग्न में ग्रहों के विंशोपक बल और शुभस्थान बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्रमा	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥	विंशोपकबल

विवाह लग्न से-सूर्य, शनि, राहु, केतु ३।६।८।११ में, मङ्गल ३।६।११ में, चन्द्रमा २।३।११ मे, बुध और गुरु १।२।३।४।५।६।९।१०।११ में तथा शुक्र १।२।४।५। ९।१०।११में स्थित हो तो शुभद होते हैं। उक्त शुभद स्थानों में स्थित ग्रहों के चक्राङ्कित विंशोपक बलों का योग करने से लग्न का विंशोपक बल ज्ञात होता है। यद्यपि ग्रहों के चक्र में उल्लिखित बलों का योग करने पर २१॥ विश्वा है, जो २० विश्वा से अधिक है। विंशोपक बल २० विश्वा ही कहा है, राहु-केतु में से कोई एक ही ग्रह उपरोक्त स्थान में रहेगा, दूसरा नहीं, इस कारण २० विश्वा से अधिक बल नहीं होगा। विंशोपक बलों का योग ५ विश्वा से अल्प त्याज्य है। ५ से १० तक साधारण, १० से ऊपर १५ तक मध्यम तथा उससे ऊपर २० तक उत्तम होता है। यदि और कोई लग्न न मिल सके तो साधारण विंशोपक बल वाली लग्न को भी ग्रहण किया जा सकता है।

कुण्डली मिलाने की रीति

स्त्री-नाशक या पति नाशक जो योग है, उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पाप-ग्रह का होना प्रायः पति-नाशक या पत्नी नाशक है। इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। इसके लिए पण्डितों का अनुभव है कि, सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पाप-ग्रह होते हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए।

द्वितीय, सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश-अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तमेश में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग भी प्रायः वैधव्य-सूचक होते हैं। एकादश या पञ्चम में भी विशेष पाप योग वैधव्यसूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो वह विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठवें या आठवें चन्द्रमा हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें पाप ग्रह हों, लग्न में चन्द्रमा और साँतवें में मंगल हो तो भी वैधव्य कारक योग होता है।

यदि कन्या का प्रबल वैधव्य योग हो तो अश्वस्थ विवाह, कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाए तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता है, ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है। लग्न को शरीर चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है।

गणना जन्म नाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण (मुण्डन), गोचर विचार, मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म नाम ही प्रधान है, जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध ... से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई ... अन्तिम नाम ग्रहणकर गणना देखने का विधान ... किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हो और ... का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध ... से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से ... उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म ... ग्रहणकर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। ... कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना ...

कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्रायः ... गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिए ... को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्र ... वर्णित **''कात्यायिनी देवी''** का अनुष्ठान बड़ा ही ... व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में ... मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम ... पूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने ... विघ्न दूर होते हैं एवं विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि–

यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर ... कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय ... तेल का दीपक जलते रहना चाहिए।

जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे ... पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जपकाल) तक ब्रह्मचर्य ... पालन करना चाहिए। इस मंत्र का जप जपकर्ता ... खाते हुए करना चाहिए। इस मंत्र का ४१ हजार ... है। प्रथम दिन मंत्र का १ हजार जाप करें व इसके ... दिनों तक प्रतिदिन दो हजार मंत्र का जाप करें। ... प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि ... भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग ... अनुष्ठान के अंत में दशांश हवन, तर्पण तथा ब्राह्मण ... भोजन कराना चाहिए।

भोजन में पीले रंग की मिठाई अवश्य रखें।

मंत्र—

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोप सुतः देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥

गणनागुणैक्य (मेलापक) सारिणी

वर के नक्षत्र (स्तम्भ) — कन्या के नक्षत्र (पंक्ति)

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.१	कृ.३	रोहि.	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्लेषा
अश्वनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१९	२३॥	३१॥	२८
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३१॥	२३॥	२५॥
कृत्तिका१	२७॥	२९	२८	१८	११	१७॥	२१	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥
कृत्तिका३	१८॥	२०	१९	२८	२१	२७॥	१८॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०
रोहिणी	२३॥	२३॥	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३
मृगशिरा२	२३॥	१४॥	१९॥	२८॥	३५	२८	१९	२४	२३॥	२७	२०	२२
मृगशिरा२	२७	१८	२३	२०॥	२७	२०	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१२॥	२०	१३
पुनर्वसु३	१९	२६	२३	२०॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७
पुनर्वसु१	२१॥	२८॥	२५॥	२२	२५	२६	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२६	१९	१२	१८	२१॥	३५	२८	३०
श्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२०	१३	१२	१५	२८॥	२९	२८
मघा	१९	१९	१५॥	१६॥	९॥	१७॥	२१॥	२१॥	२०॥	१६॥	१८॥	१६
पू.फाल्गुनी	२५	१७	१९	२०	२३॥	१५॥	१९॥	२७॥	२६॥	२२॥	१६॥	१६॥
उ.फाल्गु.१	१६॥	२५	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१६॥	२५॥	१८॥
उ.फाल्गु.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९	२८	२१
हस्त	१०	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२३॥	१९	२८	२२
चित्रा २	१३	६	१९	२३॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०	१२	२६
चित्रा २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	१९॥	११॥	२५॥
स्वाती	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८	२७॥	१३॥
विशाखा३	२२॥	२३॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२०	२०	२१	२१	१७॥
विशाखा१	१६॥	१७॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१३॥	१३॥	१८	१८	१४॥
अनुराधा	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२०॥	२५	१८	२०
ज्येष्ठा	१२	१७॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	५	९॥	२०	२५
मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७	२३॥
पूर्वाषाढ़१॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३	१३	१७
पूर्वाषाढ़३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥
उत्तराषाढ़१	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	९॥
उत्तराषाढ़ ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२३॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	१३
श्रवण १॥	२८	२८	१४॥	१२	१८	२७	२४	२१॥	२२॥	२७	२५	१४
श्रवण २॥	२७	२७	१३॥	११	१७	२६	२३॥	२१	२२	२८	२६	१५
धनिष्ठा२	२०	११	२६	२३॥	२०	१२	९॥	१६॥	१६	२२	१३	२८
धनिष्ठा२	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१२	१९	१८॥	१३॥	४॥	१९॥
शततारका	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२७	२०	१२	१३	८	१४॥	२०॥
पू.भाद्रपदा३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१८	१३	२०	१३॥
पू.भाद्रपदा१	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१९	१८	२५	१८॥
उत्तराभाद्रपदा	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥	२७	१४

नक्षत्र	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चित्रा २	चित्रा २	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनु.	ज्येष्ठा	मूल
अश्वनी	२१	२५	१५॥	११	९	१३	२२॥	२७॥	२२॥	१८॥	२५॥	१४	१३
भरणी	२०	१८	२६	२१॥	२०	४	१३॥	२९॥	२१॥	१७॥	१६॥	१८॥	२०
कृत्तिका१	१४॥	१८	२०	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१५॥	१९॥	२५॥	२४॥
कृत्तिका३	१६॥	२०	२२	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२०॥	२४॥	३०॥	२०
रोहिणी	१०॥	२४॥	२६	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१५॥	२९॥	२३॥	१४
मृगशिरा२	१९॥	१५॥	२३॥	२२॥	२६	१३	१२	२५	१८॥	२४॥	२१॥	२४॥	१५
मृगशिरा२	२३॥	१९॥	२७॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१५	१२	१५	२३
आर्द्रा	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१४॥	१८	४	१६
पुनर्वसु३	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥	१९॥	२७	२१	१५॥	२१॥	७	१४
पुनर्वसु१	१६॥	२०॥	१५॥	१७	१८	२०	१९॥	२७	२१	१९	२५	१०॥	८
पुष्य	१७॥	१३॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	१९	१८	२१	१७
श्लेषा	१५	१५॥	१७॥	२०	२०	२५	२४॥	११॥	१६॥	१४॥	१९	२५	२२॥
मघा	२८	३०	२६॥	१५॥	१५॥	२१॥	२४॥	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	३२	२४
पू.फाल्गुनी	३०	२८	३४	२३	२१॥	७॥	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	१८
उ.फाल्गु.१	२६॥	३४	२८	१७	१६	१३॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥
उ.फाल्गु.३	१६॥	२४	१८	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१९	२८	१४	१४
हस्त	१७॥	२१॥	१६	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२१	२७	१४	१५
चित्रा २	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२९	१३	२६	२७
चित्रा २	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२७
स्वाती	१२॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३
विशाखा३	१७॥	१९॥	१७॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१९	२८	१८	१७	२१॥	२७
विशाखा१	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२२॥
अनुराधा	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२६	१२	७॥	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥
ज्येष्ठा	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५	२०॥	१५॥	२०॥	३१॥	३०	२८	२५
मूल	२४	१८	९॥	१३	१३	२६	२६	२१	२६	२३॥	१६॥	१६	२८
पूर्वाषाढ़१॥	१९	१७	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१७॥	१६॥	१८॥	२८
पूर्वाषाढ़३॥	१९	१७	२५	२७॥	२६	११	११	२६	१९	१७॥	१६॥	१८॥	२७
उत्तराषाढ़१	९॥	२५	२६	२८॥	२७॥	२०	२०	१८	१२	१०॥	२४॥	१८॥	२५॥
उत्तराषाढ़ ३	४॥	२०	२१	२६	२५	१७॥	२४॥	२२॥	१६॥	१३	२७	२१	१६॥
श्रवण १॥	५॥	१७॥	१९	२४	२५	१९	२६	२२॥	१६॥	१३	२७	२३	१७॥
श्रवण २॥	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२२	१६	१३	२७	२२	१७
धनिष्ठा२	१८॥	४॥	२२॥	१६	१७॥	१६॥	२३॥	२४॥	३०	२७	१२	२६	२१
धनिष्ठा२	२४॥	१०॥	१८॥	१७॥	१९	१८	१९	२०	२५॥	२७	१२	२६	२९॥
शततारका	२६॥	२०॥	१२॥	११॥	८॥	२५	२६	१९	२६	२७॥	२२	२०	२२॥
पू.भाद्रपदा३	१८॥	२४॥	१६॥	१५॥	१५॥	१८॥	१९॥	२६	२१	२२॥	२७॥	१२	१५॥
पू.भाद्रपदा१	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१६॥	१९॥	१२॥	१९	१४	२०	२५	९॥	१५
उत्तराभाद्रपदा	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥	२॥	१९॥	१२	१८	१९	२१	२४
रेवती	१३	२३॥	२३॥	२५॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	४॥	१०॥	२६	२१	२६॥

नक्षत्र	पू.षा.१॥	पू.षा.३॥	उ.षाढ़१	उ.षाढ़३	श्र.१॥	श्र.२॥	धनि.२	धनि.२	शत.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भाद्र.	रेवती
अश्वनी	२५	२६	२४॥	२६	२७	२६	२०	२०	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	१९	२०	२७	२८॥	२७	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२६॥
कृत्तिका१	१७॥	१९	१४	१५॥	१२॥	११॥	२५	२५	२७	१९	१७॥	१९॥	११॥
कृत्तिका३	१३	१४॥	९॥	१४	११	१०	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	१९॥	२१	१२॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृगशिरा२	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२६	१३	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७
मृगशिरा२	१९	१८	२४	२०॥	२५	२४॥	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१६॥	२६॥
आर्द्रा	२८	२७	२७	२३॥	२३॥	२३	१७॥	१९	१२	१७	१९	२६॥	२६॥
पुनर्वसु३	२७	२६	२६	२२॥	२३॥	२३	१८	१९॥	१३	१७	१९	२७	२६॥
पुनर्वसु१	२१	२१॥	२१॥	२५	२६	२७	२२	१३॥	७	११	१७	२५	२४॥
पुष्य	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	१६	१६॥	८॥	१२	१२	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	१९	१९	९॥	३॥	३॥	४॥	१७॥	२३॥	२४॥	१७॥	१७॥	१८॥	१२
पू.फाल्गुनी	१७	१७	२५	१९	१७॥	१८॥	३॥	९॥	१८॥	२३॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फाल्गु.१	२५	२५	२६	२०	१९	२०	१९॥	१७॥	१९॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फाल्गु.३	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२४॥	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२६॥
हस्त	२७	२६	२७॥	२४	२५	२४॥	१८॥	१९	८॥	१३॥	१६॥	२६॥	२७॥
चित्रा २	१३	१२	२१	१७॥	१८	१७॥	१६॥	१७	२४	१७॥	२०॥	१०॥	२०॥
चित्रा २	१३	१२	२१	२५॥	२६	२५॥	२४॥	१९	२६	१९॥	१३॥	३॥	१३॥
स्वाती	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२१	२०	२५	१९	१९॥	१२॥
विशाखा३	२१	२०	१३	१७॥	१६॥	१६	३१	२५॥	२६	२१	१५	१३	५॥
विशाखा१	१५॥	१६॥	९॥	१२	११	११	२६	२६	२६॥	२१॥	२०	१८	१०॥
अनुराधा	११॥	१४॥	२२॥	२५	२६	२६	१३	१३	२२	२६॥	२५	१८	२६
ज्येष्ठा	१६॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२६	१९	१२	१०॥	२१	२०
मूल	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५	२०	२८॥	२१॥	१४॥	१६	२५	२६॥
पूर्वाषाढ़१॥	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३	७	१५॥	२३॥	३०॥	३१	२३	३२
पूर्वाषाढ़३॥	२६॥	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	७॥	१४॥	२२॥	२८॥	३१॥	२३॥	३२॥
उत्तराषाढ़१	३२॥	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	३३॥
उत्तराषाढ़ ३	२३॥	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	२९॥	३०॥	३१॥
श्रवण १॥	२३	२४॥	१६	२५	२८	२७	२८	२०	१८॥	२२॥	२८॥	२८॥	२२॥
श्रवण २॥	२३	२३॥	१५	२४	२७	२८	२९	१९॥	१८	२२	२९॥	२९॥	२३॥
धनिष्ठा२	७	८॥	१६॥	२५॥	२७	२८	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
धनिष्ठा२	१५॥	१५॥	२३॥	१८॥	२०	१९॥	१९॥	२८	३३	२८॥	१८	७	१४
शततारका	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८	२४॥	३३	२८	१९	८॥	१७	१६
पू.भाद्रपदा३	२९॥	२९॥	२९॥	२४॥	२४॥	२४	२०	२८॥	१९	२८	१७॥	२२॥	२०
पू.भाद्रपदा१	२९	३०॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उत्तराभाद्रपदा	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
रेवती	३०	२९॥	२१॥	१९॥	२०॥	२१॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८

यज्ञोपवीत-विवाहादि हेतु सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्धि विचार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	गुरु
शुभ स्थान	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्य	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१
निन्दितस्थान	४।८।१२	४।८।१२	१।३।६।१०

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार में वटु का सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्ध तथा विवाह में वर का सूर्य, कन्या का गुरु तथा दोनों का चन्द्र शुद्ध होना चाहिए। उच्च राशि (मेष) में सूर्य और उच्च राशि (कर्क) में बृहस्पति जब रहे तब ४।८।१२ वें में होने पर भी शुभ माने गये हैं।

जन्मराशि से २।५।९वें में सूर्य हो तो, १३दिन छोड़कर शेष दिनों में सूर्य शुभ कहा गया है।

जन्मराशि से अनिष्ट स्थानीय (१।२।४।५।७।८।९। १२वें)सूर्य हो और सूर्यस्थ राशि से आगे वाली राशि शुभ ग्रह की हो तो सूर्यस्थ राशि का प्रारम्भ से १३ दिनों को छोड़कर शेष दिनों का सूर्य शुभ माना गया है।

पूज्य सूर्य होने पर सूर्य की पूजा तथा लाल वस्तुओं का दान करने से शुभ होता है।

गर्भाधान, सीमन्त, युद्ध, दान, व्रतबन्ध, विवाह, रति, अन्नाशन, व्रतोपवास और राज्याभिषेक में १२वाँ चन्द्र भी ग्राह्य है। २।५।९वाँ चन्द्र शुक्लपक्ष में तथा ४।८।१२वाँ चन्द्र कृष्णपक्ष में शुभ होता है।

उच्चस्थ, स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रगृहस्थित, वर्गोत्तमस्थ गुरु ४।८।१२वाँ भी ग्राह्य है। नीच या शत्रुराशिस्थ हो तो शुभ स्थानों में रहने पर भी त्याज्य है।

रजस्वला होने के पश्चात् यदि कन्या का विवाह हो तो गुरु-शुद्धि देखना आवश्यक नहीं। केवल लग्न, चन्द्रमा और तारा की शुद्धि में विवाह किया जा सकता है। अत: इस प्रकार परिहार और दान-पूजा को विद्वान् द्वारा भली-भाँति समझकर मङ्गल कार्य करना चाहिए।

नूतनवधू-द्वारा पाक कर्म (रसोई) का मुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ प्रशस्त हैं, तथा ४।९।१४ और ३० तिथियाँ त्याज्य हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	कृत्तिका, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ है।
लग्न-शुद्धि	स्थिर (२।५।८।११) लग्न में, लग्न से चतुर्थ स्थान शुभग्रह से युक्त अथवा शुद्ध हो। लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो। लग्न, से सप्तम स्थान में बलवान ग्रह व्यवस्थित हो। ऐसे समय में (उपरोक्त लग्नों में) नूतन (नई) वधू के द्वारा पाककर्म (रसोई बनाना) शुभ कहा है।

वधूप्रवेश-मुहूर्त

विवाह के दिन से १६ दिनों के अन्तर्गत (२।४।६।८।१०।१२।१४।१६) सम दिनों में से किसी दिन में तथा विषम दिनों (५।७।९)में से किसी दिन में वधूप्रवेश कराना शुभ होता है। यदि वधूप्रवेश १६ दिनों में न हो सके तो प्रथम मास के विषम (१७।१९।२१।२३।२५।२७।२९वें) दिनों में, यदि प्रथम मास में न हो सके तो प्रथम वर्ष के विषम(३।५।७।९।११वें) मासों में तथा एक वर्ष की अवधि में भी वधू-प्रवेश न हो सकने की स्थिति में विषम (३।५) वर्षों में वधूप्रवेश शुभ होता है। ५वर्ष के पश्चात् वर्ष मास के सम-विषम का विचार न करके केवल शुभ मुहूर्त देखकर उसमें बली लग्नमे वधूप्रवेश कराना चाहिए।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३तिथियाँ, पूर्णिमा (१५) तथा कृष्णपक्ष की १ (प्रतिपदा) शुभ होती है।
वार	सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार ग्राह्य हैं। किसी आचार्य के मत से बुधवार त्याज्य कहा गया है, किन्तु मुहूर्त गणपति में बुधवार को मध्यम कहा है। सूर्य और मङ्गल का वार सर्वथा त्याज्य है। रिक्ता तिथियाँ (४।९।१४) और भद्रा करण भी त्याज्य है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, मघा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती शुभ है किन्तु वेधरहित होना चाहिए।
विशेष	जो वधूप्रवेश विवाह से १६ दिनों तक की अवधि में होने वाला हो, परन्तु १६ दिनों के भीतर ही पौष (धनु का सूर्य) चैत्र (मीन का सूर्य) हरिशयन और मलमास उपस्थित हो जाने पर इनको अवश्य वर्जित करना चाहिए।

विवाहार्थ वर के लिए सूर्यशुद्धि, कन्या के लिए गुरु शुद्धि तथा दोनों के लिए चन्द्रशुद्धि होनी चाहिए।

द्विरागमन-मुहूर्त

वधूप्रवेश के पश्चात् पतिगृह से पिता के घर जाकर, पुन: पतिघर में दूसरी बार आना ही द्विरागमन कहलाता है। विवाह से (१।३।५) विषम वर्षों में वृश्चिक, कुम्भ और मेष राशिस्थ सूर्य के मासों, अर्थात् सौर मार्गशीर्ष (अगहन), फाल्गुन और वैशाख मासों में पति की सूर्यशुद्धि, पत्नी की गुरुशुद्धि तथा दोनों की चन्द्रशुद्धि होने पर एवं गुरु-शुक्र के उदय रहने पर द्विरागमन शुभ होता है।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०। ११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा (१) शुभद होती है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र प्रशस्त है।
लग्न तथा लग्न शुद्धि	वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला और मीन लग्न शुभद होती है। लग्न से उपचय स्थानों (३।६।१०।११) में से किसी स्थान में बृहस्पति हो, केन्द्र (१।४।७।१०) में शुक्र हो, लग्न शुभग्रह से युक्त अथवा ग्रहरहित हो, केन्द्र में शुभग्रह हों और ३।६।११ भावों में पापग्रह हों तथा अष्टमभाव शुभग्रह से दृष्ट हो तो द्विरागमन शुभ होता है।
त्याज्य	पौष और चैत्र मासों में अर्थात् धनु, मीन के सूर्य में, हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल ११से कार्तिक शुक्ल, ११ तक) में, मलमास में, गुरु-शुक्र के अस्त में तथा सम्मुख या दाहिने शुक्र की स्थिति में द्विरागमन नहीं होना चाहिए, उक्त सभी समय त्याज्य है।
शुक्र	यदि सम्मुख या दाहिने शुक्र रहे तो बालक, गर्भिणी और नववधू (द्विरागमन वाली) को एक पग भी नहीं चलना चाहिए, क्योंकि सम्मुख दाहिने शुक्र रहने पर यात्रा करने से बालक की मृत्यु, गर्भिणी का गर्भस्राव तथा नवोढ़ा का वन्ध्या होना कहा है। शुक्र-पीछे और बायें शुभप्रद होता है।

विभाजन (बँटवारा) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा तथा दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार प्रशस्त है। मंगलवार और शनिवार त्याज्य हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती शुभद है।
लग्न शुद्धि	शुभग्रहों की लग्न में तथा लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों की स्थिति में विभाजन शुभ कहा है।

शल्यक्रिया (आपरेशन) का मुहूर्त

तिथि	४।९।१४ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण एवं शततारका नक्षत्र प्रशस्त हैं।

रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

४।९।१४ तिथियों में, रवि, मङ्गल, बुध, गुरु-शनिवारों में, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा आर्द्रा, पुष्य, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में, १।४।७।१० लग्नों में। लग्न से १।४।५।७।९।१०।११वें स्थानों में पापग्रहों की स्थिति में रोग से मुक्त हुए व्यक्ति को दोनों पक्षों में दिन या रात्रि में भद्रा, वैधृति, व्यतीपात, संक्रान्त्यादि में, चन्द्र-तारा शुद्धि में, लग्न से १०वें में शुभग्रह तथा ८वें में शुभ-पाप की स्थिति में रोग मुक्त स्नान करके आरोग्यार्थ यथाशक्ति दान करना चाहिए।

रजस्वलास्नान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ श्रेष्ठ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद और रेवती।
विशेष	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती तथा रेवती नक्षत्र में स्नान करने से शीघ्र गर्भधारण होता है।

रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान के पश्चात् अपने पति के स्पर्शयोग्य होती है, परन्तु देवता और पितृ कार्यों के लिए पाँचवें दिन योग्य होती है।

गर्भाधान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१२।१३
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा उत्तम हैं। अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य तथा चित्रा मध्यम है।
लग्न शुद्धि	गर्भाधान की लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रहों तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर, पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो तथा पुरुष ग्रहों से लग्न दृष्ट हो तो शुभ होता है।

गर्भाधान में त्याज्य

तीनों प्रकार के गण्डान्त, जन्म नक्षत्र, निधन तारा, अश्विनी-भरणी-मघा-मूल-रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, व्यतीपात और वैधृतियोग माता-पिता का श्राद्ध दिन, दिन का समय, परिघ का पूर्वार्द्ध समय, सन्ध्या समय, भद्रा, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टम लग्न, पापयुक्त लग्न, पति-पत्नी की चन्द्र व तारा की अशुद्धि, रिक्ता व पर्वतिथियाँ (४।६।८।९।१४।१५।३०) सूर्य, मङ्गल एवं शनिवार तथा रजोदर्शन से ४रात्रि पर्यन्त का समय गर्भाधान के लिए त्याज्य है।

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन का शुभाशुभ समय

मास- वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन। शुक्लपक्ष विशेष श्रेष्ठ।

तिथि- दोनों पक्ष की २।३।५।७।१०।१३ तथा १५ (पूर्णिमा) तिथियाँ और दिन का समय उत्तम होता है।

वार- चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उ० फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षाढ़ श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, उ० भाद्रपद, रेवती श्रेष्ठ हैं।

लग्न- २।३।४।६।७।९।१२ लग्नों में श्वेत वस्त्र में प्रथम रजोदर्शन उत्तम होता है।

मध्यम- १।११ तिथियाँ तथा कृत्तिका, पुनर्वसु, मघा, विशाखा, एवं मूल नक्षत्र मध्यम हैं।

अशुभ- भद्रा, निद्रा, संक्रान्ति, अमावस्या, रिक्ता, नन्दा, द्वादशी, संध्या, रात्रि, व्यतीपात, वैधृति, रुग्णावस्था, ग्रहण, पिता का गृह, कृष्ण वस्त्र और कुदेश।

शान्ति करने से तथा गुरु व शुक्र से युत दृष्ट लग्न में शुभ होता है।

गर्भ के १० मासों के अधिपति

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भलग्न पति	चन्द्रमा	सूर्य

पुंसवन-सीमान्त संस्कारों का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ शुभ होती हैं। कृष्णपक्ष में दशमी तक।
वार	सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति। मतान्तर से सोम, बुध शुक्रवार प्रशस्त हैं। पूर्व के ३ उत्तम, पर के ३ मध्यम हैं।
नक्षत्र	मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, रोहिणी नक्षत्र शुभ हैं (परन्तु जन्म नक्षत्र से अतिरिक्त होने पर)।
लग्न शुद्धि	पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो। लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह स्थित हों ४।८।१२ स्थानों में एक भी पापग्रह न हों। चन्द्रमा १।६।८।१२ के अतिरिक्त स्थान में हो तो श्रेष्ठ होता है।

गर्भ से २।३सरे मास में पुंसवन तथा ४।६।८ वें मास में सीमान्त संस्कार किया जाता है। मासेश पुष्ट हो तथा दम्पति को चन्द्र-तारा बल प्राप्त हो। मिथुन को छोड़कर अन्य विषम राशि की लग्न तथा विषम नवांश होना चाहिए।

जातकर्म-नामकरण मुहूर्त

पुत्र (शिशु) की आयु और श्री की वृद्धि, ग्रह दोष के विनाश हेतु तथा सूतिका के अशुभ विच्छेद, बालग्रह-नाशार्थ और पुंसत्व की वृद्धि के लिए जातकर्म किया जाता है। बालक का जन्म सुनकर पिता सचैल स्नान करे (रात्रि में जन्म हो तो भी तत्काल सचैल स्नान करे) और स्वर्णादिक से (अपने सामर्थ्यानुसार) श्राद्धादि करे। यहाँ श्राद्ध से तात्पर्य आभ्युदयिक श्राद्ध (नान्दीश्राद्ध) से है। यदि यह समय व्यतीत हो जाए तो जन्म से ११वें अथवा १२वें दिन जातकर्म तथा नामकर्म दोनों करे। पूर्वाह्न श्रेष्ठ, मध्याह्न मध्यम कहा है। अपराह्न, रात्रि नामकर्म में वर्जित है।

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियाँ भद्रा आदि दोष रहित होने पर शुभ हैं।
वार	सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभि०, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, रेवती शुभ हैं।
लग्न	२।५।८।११ लग्न, शुभग्रहों के नवांश शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ स्थानों में पापग्रह हैं तथा लग्न से ८।१२ स्थानों में शुभाशुभ कोई भी ग्रह न हो तो शुभ होता है।

सूतिका के सूतीगृह प्रवेश का मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ०फा० हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षा०, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा तथा शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों में, रि[illegible] षष्ठी-अष्टमी को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ लग्नों में, शुभनवांश में, लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों तथा लग्न से ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर सूतिका को सूतीगृह में प्रवेश कराना चाहिए।

पुत्र-जन्म सुनकर पिता तत्काल वस्त्र सहित स्नान कर वृद्धिश्राद्ध (आभ्युदयिक श्राद्ध) स्वर्णादि से सामर्थ्यानुसार करे। यदि तत्काल न कर सके तो सूतकान्त में भी कर सकता है।

सूतिका को क्वाथ-औषधि पीने-खाने का मुहूर्त

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा अभिजित्, मृगशिरा और रेवती नक्षत्रों में, ३।६।९।१२ लग्नों में, रवि-सोम, गुरु-शुक्रवारों में, लग्न से ७।८।१२ स्थान ग्रहरहित होने पर, रिक्ता और अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में, लग्न में पूर्णचन्द्र के रहने पर सूतिका को औषधि क्वाथादि सेवन कराना चाहिए। जन्मराशि में औषधि सेवन वर्जित है।

खट्वारोहण (खाट पर सुलाने का मुहूर्त)-

जन्म के दिन से गिनकर १०।१२।१६।२२ वें दिनों में से किसी दिन में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित् तथा रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तथा अमावस्या से अतिरिक्त तिथियों में और शुभ वारों में पूर्व दिशा में शिर करके बालक को लेटाना चाहिए।

स्तनपान मुहूर्त-तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों मे रिक्ता-अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में तथा स्थिर लग्न (२।५।८।११) में स्तनपान प्रशस्त होता है।

सूतिका को अन्नप्राशनोक्त तिथि, नक्षत्र, वारों में दुर्योगादि से रहित समय में पथ्य सेवन श्रेयस्कर होगा।

सूतिकास्नानमुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ उत्तम हैं। ३० (अमावस्या) मध्यम है। शेष तिथियाँ त्याज्य हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार उत्तम हैं। सोमवार-शुक्रवार मध्यम तथा बुधवार-शनिवार त्याज्य हैं।
नक्षत्र	हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और स्वाती श्रेष्ठ हैं। श्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और ज्येष्ठा मध्यम हैं। शेष त्याज्य हैं।

दोलारोहण मुहूर्त विचार

जन्म के दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिनों में से किसी दिन चन्द्र-तारा की अनुकूलता में २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथियों में, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्रों में, सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गिनने पर संख्या १ से ५ तक या २१ से २७ तक आती हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए शिशु को पूर्व दिशा में शिर करके माता या किसी सुवासिनी द्वारा सुलाया जाना चाहिए। उस समय चर लग्न शुभग्रह से युक्त हो। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा त्रिषडाय में पापग्रहों की स्थिति श्रेष्ठ होती है।

बालक को भूमि पर बैठाने का मुहूर्त

जन्म से पाँचवें मास में, मङ्गल की शुद्धि में वराह और भूमि का पूजन करके, कटिसूत्र बाँधकर बालक को भूमि पर बैठाने के पश्चात् बालक के समक्ष पुस्तक, लेखनी, शस्त्र, चाँदी, सुवर्ण आदि रखकर देखना चाहिए कि बालक किस वस्तु को ग्रहण करता है। जिसको ग्रहण करे उसी से बालक की वृत्ति जीवन में होती है।

शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् भम्युपवेशन के लिए प्रशस्त हैं।
शुभ तिथि	रिक्ता (४।९।१४) को छोड़कर अन्य तिथियाँ शुभ हैं।
शुभ वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

प्रसूतिका के जलपूजन का मुहूर्त

प्रसव दिन से एक मास (३० दिन) व्यतीत होने पर चन्द्र-बुध-गुरुवारों में रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में (अर्थात् १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में) मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल तथा श्रवण नक्षत्रों में स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुआँ-पूजना) श्रेष्ठ है।

जलपूजन में प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु, शुक्र का अस्त समय, रिक्ता और अमावस्या तिथियाँ त्याज्य हैं।

जन्म से प्रथमादि मासों में बालक के दाँत निकलने का फल

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं का नाश	छोटे भाई का नाश	बहिन का नाश	माता का नाश	बड़े भाई का नाश	अतुल भोग	पिता का सुख	शरीर की पुष्टि	लक्ष्मी	विशेष सुख	विशेष सुख	धन-सम्पत्ति का लाभ

विशेष- जो शिशु दाँत सहित जन्म लेता है, वह अपने माता-पिता के लिए मृत्युसूचक होता है। जिसे जन्म से ५ मास की अवधि में पहले ऊपर वाली दन्त-पँक्ति उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा कुल को नाश करेगा। इसकी विधिवत् शान्ति कराई जानी चाहिए।

अन्नप्राशन-मुहूर्तबोधक चक्र

मास	कन्याओं का जन्म से पाँचवें आदि विषम मासों में तथा पुत्रों का छठें आदि सम मासों में अन्नप्राशन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ तथा पूर्णिमा (१५) तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार प्रशस्त हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा और रेवती शुभ हैं।
शुभ लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१०।११ उत्तम हैं। लग्न से दशम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। शेष केन्द्र-त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ में पापग्रह शुभद होते हैं।
त्याज्य	जन्म लग्न व जन्म राशि से अष्टम राशि की लग्न तथा नवांश, १।६।८ स्थानों में स्थित चन्द्रमा, तिथिक्षय, रात्रि का समय, भद्रा, व्यतिपातादि।

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त

१. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २. वैशाखशुक्ल तृतीया (अक्षयतीज) ३. आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी) ४.कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तथा दीपावली प्रदोषवेला चार स्वयं सिद्धि मुहूर्त हैं। इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांगशुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होने से इन्हें **साढ़े तीन मुहूर्त** कहते हैं।

कर्णवेध मुहूर्तबोधक चक्र

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।१२।१३।१५ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१० तिथियाँ शुभ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न उत्तम हैं एवं इन्हीं के नवांश उत्तम हैं। लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। लग्न से १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभद होते हैं, लग्नस्थ गुरु श्रेष्ठ कहा है। उत्तरायण में, चन्द्र-तारा की शुद्धि में पूर्वाह्न में, जन्म से १२वें या १६वें दिनों में अथवा ६।७।८ मासों में या विषम वर्षों में कर्णवेध शुभ होता है। समय से उचित ढंग से कर्णवेध होने से व्यक्ति को आन्त्र वृद्धि (हार्निया) जैसे भयानक रोग के होने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।
त्याज्य	जन्ममास, जन्म नक्षत्र, रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ, गुरु-शुक्र का अस्त समय, भद्राकरण, समवर्ष, चैत्र और पौष मास (मीन और धनु में सूर्य के रहने का २ मासका समय अर्थात् दोनों खरमास) हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल के ११से कार्तिक शुक्ल ११ तक) तथा मध्याह्न के पश्चात् का समय अर्थात् दिन का उत्तरार्द्ध कर्णवेध के लिए त्याज्य है।

कन्याओं के नासिकावेध का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ और पूर्वाह्न का समय शुभ है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका एवं रेवती नक्षत्र नासिकावेध (नाक छेदने) के लिए उत्तम हैं।

मुण्डन (चौल) संस्कार का मुहूर्त चक्र

वर्ष-अयन-मास	गर्भाधान समय से अथवा जन्म समय से तीसरे, पाँचवें, सातवें वर्षों में [illegible] के मत से प्रथम वर्ष में भी उत्तरायणसूर्य में परन्तु [illegible] को छोड़कर अन्य मासों में मुण्डन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१०।११ तिथियाँ शुभप्रद हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ हैं।
लग्न व लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन राशियों की लग्न एवं इन्हीं के नवांश प्रशस्त हैं, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभप्रद होते हैं। लग्न से केन्द्र में पापग्रह स्थित होकर अशुभ फल देते हैं। [illegible] ग्रह नेष्ट फल देते हैं, [illegible] शुभप्रद होता है।
त्याज्य ग्राह्य	[illegible] ३,५,७ ताराएँ, [illegible] सन्तान के मुण्डन के लिए [illegible] मास भी, बालक [illegible] किया जाना हो उसकी [illegible] वर्ष से अल्प हो और [illegible] माता को ५ मास का गर्भ [illegible] समय मुण्डन निषिद्ध है [illegible] ५ वर्ष से अधिक [illegible] माता के गर्भिणी होने पर भी [illegible] करने में कोई दोष नहीं [illegible] उच्च में या मित्र वर्ग [illegible] वर्ग में होते हुए त्रिकोण में [illegible] तारा का दोष न [illegible] होता है।

सामान्य (मुण्डन के अतिरिक्त) क्षौर मुहूर्त

क्षौर-श्मश्रु कर्म (बाल तथा दाढ़ी बनवाने) के लिए, वार-तिथि-नक्षत्र जो मुण्डन के हेतु कहे हैं, वही प्रशस्त है। सूर्य, मङ्गल और शनि इन पापग्रहों के वार वर्जित हैं परन्तु ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मङ्गलवार तथा वैश्य और शूद्र के लिए शनिवार शुभ है। रात्रि में, बिना आसन के, संग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान के पश्चात् शरीर में उबटन लगाकर, भोजन करने के पश्चात् क्षौरकर्म (बाल, दाढ़ी, नख आदि का निकृन्तन) निषिद्ध कहा है।

विशेष- यज्ञ में, विवाह में, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय दाढ़ी-बाल-नख कटवाया जा सकता है। राजकार्य में नियुक्त व्यक्ति, रूपजीवी (नट, नर्तक, भांड, बहुरूपिया आदि) किसी दिन किसी समय नख-बाल कटवा (बनवा) सकता है।

अक्षरारम्भमुहूर्तचक्र

तिथि	कुयोगादि रहित २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार तथा शुक्ल पक्ष शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण और रेवती शुभ है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२लग्न और इन्हीं के नवांश उत्तम कहे गये हैं। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३।६।११में पापग्रह शुभप्रद कहे गये हैं। बुध, गुरु, शुक्र स्वगृही लग्न में हो या लग्न में बली शुभग्रह हो।

जन्म से पाँचवें वर्ष में उत्तरायण में गणेश-लक्ष्मी, सरस्वती और विष्णु का पूजन करके शिशु से नूतनाक्षर लेखनारम्भ कराना चाहिए।

विद्यारम्भमुहूर्त

अक्षरों का सुपुष्ट ज्ञान हो जाने पर उत्तरायन में कुम्भार्क का एक मास का समय छोड़ कर शेष समय में अर्थात् सौर फाल्गुनमास छोड़कर शेष मासों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में, रवि-बुध-गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा और रेवती नक्षत्रों में और ऐसे लग्न में जिससे केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह हों सभी प्रकार की विद्याओं का प्रारम्भिक अध्ययन कराना चाहिए।

अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि विद्याओं का आरम्भ ४।९।१४ तिथियों में, रवि, मंगल और शनिवारों में ज्येष्ठा, मघा, श्लेषा, तीनोंपूर्वा, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा नक्षत्रों में किया जाना शुभद होता है।

व्रतबन्ध-(उपनयन) काल ज्ञान

व्रतबन्ध-(उपनयन) काल ज्ञान - व्रतबन्ध (उपनयन) संस्कार के तीन भेद (१) नित्य (२) काम्य (३) गौण कहे गये हैं। श्रौत-स्मार्त कर्म साधन और द्विजत्व प्राप्ति के हेतु उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार किया जाता है। ब्राह्मण कुमारों का जन्म से ५वें सौरवर्ष में ब्रह्मवर्चस की कामना से किया गया उपनयन काम्य, ८वें वर्ष में नित्य तथा १६वें वर्ष में गौण होता है। क्षत्रिय कुमारों का बल की कामना से ६ठवें वर्ष में किया जाने वाला उपनयन काम्य, ११वें वर्ष में किया जाने वाला नित्य तथा २२वें वर्ष में गौण कहा गया है। वैश्य कुमारों का ८वें वर्ष में धन कामना से किया जाने वाला उपनयन काम्य, १२वें वर्ष में नित्य तथा २४वें वर्ष का उपनयन संस्कार गौण कहा जाता है। इसमें सौर वर्ष ही मान्य है।

उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार-मुहूर्त

अयन व मास	उत्तरायन में माघादि ६ मासो में हरिशयन से पूर्व अर्थात् आषाढ़ शुक्ल दशमी तिथि तक। चन्द्रमा, सूर्य और गुरु की शुद्धि होनी चाहिए।
पक्ष एवं तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियाँ प्रशस्त हैं। दिन का पूर्वाह्न उत्तम, मध्याह्न मध्यम तथा अपराह्न (दिन का तीसरा त्रिभाग) त्याज्य होता है।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ होते हैं, किन्तु यदि बुध अस्त हो तो उसके अस्त रहने तक बुधवार नहीं ग्रहण करना चाहिए। मङ्गलवार यद्यपि पापग्रह का वार होने से सबके लिए ग्राह्य नहीं है, परन्तु शाखाधिपति का वार होने से सामवेदियों के लिए मंगलवार अति प्रशस्त है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती, इस प्रकार कुल २२नक्षत्र शुभ हैं, परन्तु ऋगवेदी और सामवेदी ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु त्याज्य है।
लग्न शुद्धि	२।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नों में, बुध बली हो तथा चन्द्र-तारा के बलवान (अनुकूल) होने पर, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह, ३।६में पापग्रह, २।३।७।१० में चन्द्रमा, ११वें में शुभाशुभ सभी ग्रह, सर्वशाखाधिप होने से लग्न में सूर्य, वृष-कर्क राशियों का चन्द्रमा, (अन्य राशियों का नहीं) उक्त सभी स्थितियाँ प्रशस्त कही गई है।
त्याज्य	गुरु-शुक्र का बाल-वृद्धास्त का समय, सिंहस्थ-मकरस्थ तथा वक्रातिचारी गुरु, दक्षिणायन, शनिवार, भद्राकरण, संक्रान्ति का दिन, रोगबाण, प्रदोष, गलग्रह अनध्याय लग्न से त्रिक (६।८।१२) स्थानों में चन्द्र-गुरु शुक्र तथा लग्नेश की स्थिति, लग्न से १।५।८ स्थानों में पापग्रहों की स्थिति तथा १२वें स्थान में चन्द्र और शुक्र की स्थितियाँ व्रतबन्ध में नेष्ट होने से त्याज्य है।

विशेष- जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र और जन्मलग्न में भी ब्राह्मण के ज्येष्ठपुत्र का तथा क्षत्रिय और वैश्य के ज्येष्ठ पुत्र (प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र) को छोड़कर अन्य पुत्रों का व्रतबन्ध होने से व्रती विद्वान् होता है। इसके विपरीत में अशुभ होता है। गुरु-सूर्य-चन्द्र की शुद्धि न भी हो, गुरु-शुक्र बाल-वृद्ध अस्त हों, गुरु सिंहस्थ या मकरस्थ हो तो भी चैत्र मास में मीन राशि में जब तक सूर्य रहता है तब तक के समय में ब्राह्मण कुमारों का उपनयन संस्कार अतीव प्रशस्त कहा है।

रोगबाण, प्रदोष, गलग्रह और अनध्याय-ज्ञान

रोगबाण	गोचर भ्रमण-वश सूर्य जब-जब किसी भी राशि के ९वें, १८वें तथा २७वें अंशों पर भ्रमण करेगा तब-तब रोगबाण होगा।
प्रदोष	प्रदोष दो प्रकार के हैं (१) नैत्यिक, (२) नैमित्तिक। प्रतिदिन सूर्यास्त के पश्चात् रात का आरम्भिक समय नैत्यिक प्रदोष होता है, नैमित्तिक तिथि भेद से इस प्रकार कहा गया है– १-द्वादशी तिथि में आधी रात से पहले ही त्रयोदशी लग जाय। २-षष्ठी तिथि में डेढ़ प्रहर रात से पहले ही सप्तमी लग जाय तथा ३-तृतीया तिथि में एक पहर रात से पहले चतुर्थी लग जाय तो यह तीनों प्रदोष कहे जाते हैं। यह तीनों नैमित्तिक प्रदोष हैं।
गलग्रह	दोनों पक्षों में १३।१४।१५।३०।१।७।८।९।४ यह ८ तिथियाँ गलग्रह हैं। (नोट- १५पूर्णिमा तथा ३० अमावस्या सूचक हैं)
अनध्याय	आषाढ़ शुक्ल पक्ष की १०, ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की २, पौषशुक्ल पक्ष की ११ और माघ शुक्ल पक्ष की १२ तिथि तथा प्रत्येक मास के दोनों पक्षों की १।८।१४ तिथियाँ (१५) पूर्णिमा एवं (३०) अमावस्या और संक्रान्ति के दिन उपनयन में अनध्याय होता है।

कन्यावरण मुहूर्त

शुक्ल प्रतिपदा (१), रिक्ता (४।९। १४) और अमावस्या (३०) के अतिरिक्त तिथियों में, शुभवारों में तथा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, मूल, स्वाती, अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों में वस्त्रादि अलंकार एवं फल-पुष्पादि से कन्या का वरण करना चाहिए।

वरवरणमुहूर्त

कन्यावरणोक्त तिथि-वारों में वैवाहिक नक्षत्रों तथा कृत्तिका और तीनों पूर्वा नक्षत्रों में कन्यापक्ष का ब्राह्मण (पुरोहित) अथवा कन्या का सहोदर (भाई) माङ्गलिक उपकरणों के साथ वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, द्रव्य इत्यादि सामग्रियों से वर का वरण करे, अर्थात् वर को तिलक चढ़ाये।

॥ स्त्री-पुरुष (कन्या-वर) का विवाह वर्ष॥

जन्म से समसंख्यक वर्षों में कन्या का विवाह होना पुत्र-पौत्र देने वाला तथा पुरुष का विवाह विषम वर्षों में होना श्रीप्रद (धनप्रद) कहा है, इसके विपरीत अर्थात् विषम वर्षों में कन्या का और सम वर्षों में पुरुष का विवाह होना अशुभ कहा है। अतः स्त्री (कन्या) का सम वर्षों मे और पुरुष का (वर का) विषम वर्षों में ही विवाह किया जाना चाहिए।

॥ विवाह में जन्ममासादि का निषेध ॥

जन्म के मास में, जन्म की तिथि में और जन्म के नक्षत्र में प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान (पुत्र या पुत्री जो भी हो) का विवाह शुभ नहीं होता है। प्रथम गर्भ के अतिरिक्त अन्य गर्भ से उत्पन्न सन्तति का विवाह जन्ममास, जन्मतिथि और जन्म नक्षत्र में भी होना शुभ कहा है।

॥ जन्ममासादि का परिहार ॥

अति आवश्यक होने पर ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या का विवाह जन्म के मास-तिथि-नक्षत्र में ही करना हो तो विपरीतार्ध में अर्थात् पूर्वार्ध में जन्म हो तो उत्तरार्ध में और यदि उत्तरार्द्ध में जन्म हो तो पूर्वार्ध में विवाह करना चाहिए।

॥विवाह में ज्येष्ठमास का निषेध और परिहार॥

वर-कन्या और मास इनमें से १ज्येष्ठ उत्तम २ज्येष्ठ मध्यम और३ज्येष्ठ अधम(अशुभ)कहा है। अतः ३ज्येष्ठ विवाह में कदापि शुभ नहीं है। किसी आचार्य का मत है कि जब तक कृत्तिका में सूर्य रहे तभी तक ज्येष्ठमास त्याज्य है। किसीका मत है कि यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा न हो तो ज्येष्ठ मास का दोष नहीं होता है। माता के प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र-कन्या ही ज्येष्ठ होते हैं, त्रिज्येष्ठ में इन्हीं की गणना होती है। अन्य गर्भोत्पन्नों की नहीं। किसी आचार्य ने ज्येष्ठ मास की भाँति ही मार्गशीर्ष (अगहन) मास में भी ज्येष्ठ संतानों के विवाहादि का निषेध किया है।

समानगोत्र प्रवर में विवाह करने को महापातक कहा है।

१-समानगोत्र और समान प्रवर की कन्या के साथ विवाह कर उससे उत्पन्न सन्तान की संज्ञा चाण्डाल होती है। ऐसा आपस्तम्ब का कथन है। २-यमस्मृति के अनुसार तीन प्रकार की सन्तानों को चाण्डाल की श्रेणी में गिनाया गया है।

(१) जो व्यक्ति संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् संन्यास का त्यागकर गृहस्थ बनकर संतान उत्पन्न करता है, तो वह सन्तान चाण्डाल होती है।

(२) ब्राह्मणी में शूद्र द्वारा उत्पन्न सन्तान चाण्डाल है।

(३) सगोत्रा से विवाहकर उत्पन्न की गई सन्तान भी चाण्डाल कही गई है।

एक गोत्र और समान प्रवर की तथा मातृगोत्र (अर्थात् नाना के गोत्र) की कन्या से विवाह न करे, क्योंकि वह कन्या भगिनी (बहन) के तुल्य होती है।

॥ समानादि क्रिया करने हेतु समय का विचार ॥

१-एक माता से उत्पन्न पुत्र और कन्या का एकदिन में (एक वर्ष में) समान क्रिया न करे। अर्थात् वर्ष भेद में करे तो दोष नहीं है। यह वृद्धमनु का वचन ज्योतिर्निबन्ध में उद्धृत है।

२-पुत्र के विवाह के पश्चात् तीन ऋतु (६मास) तक पुत्री का विवाह न करे, परन्तु यदि ६मास के पूर्व ही सम्वत्सर परिवर्तित हो जाय अर्थात् संवत् बदल जाय तो (जैसे फाल्गुन मे पुत्र का विवाह करने के पश्चात वैशाख, ज्येष्ठ आदि मासों में) ६मास के भीतर कन्या का विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यदि दोनों भिन्न-भिन्न माताओं से उत्पन्न हों तो ६मास का कोई बन्धन नहीं है। कन्या के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह करना शुभप्रद होता है।

३- अपने कुल में तीन पुरुष (पीढ़ी) के भीतर पुत्र के विवाह के पश्चात् ६ मास तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए। कन्या या पुत्र के विवाह से ६ मास के भीतर किसी का उपनयन तथा मुण्डन नहीं करना चाहिए। उपनयन (व्रतबंध) से ६ मास के अन्तर्गत किसी का मुण्डन नहीं करना चाहिए। यह नियम संयुक्त परिवार वालों के लिए है। विभक्त हों तो उन्हें दोष नहीं है। ऐसा कश्यप का वचन है।

४- दो सहोदर भाइयों का दो सहोदरी कन्याओं से विवाह नहीं करना चाहिए।

५- एक वर को दो सहोदरी कन्यायें नहीं देनी चाहिए।

६- दो सहोदर भाइयों या बहनों का विवाह ६ मास के भीतर नहीं करना चाहिए, परन्तु यमल (जुड़वा) रूप में एक गर्भ से उत्पन्न दो भाइयों या दो बहनों का समान संस्कार, (मुण्डन, उपनयन अथवा विवाह) एक साथ एक ही वर्ष में, एक ही दिन और एक ही मण्डप में कर सकते हैं, इस में कोई दोष नहीं है।

७- पुत्रवधू- प्रवेश से ६मास तक कन्या का पतिगृह-गमन भी नहीं होना चाहिए, परंतु यदि वर्ष (संवत्) बदल जाय तो ६मास के भीतर भी शुभ होता है। अर्थात् यदि माघ या फाल्गुन में विवाह हो तो वैशाख मास में (६ मास के अन्तर्गत ही) उपनयन-मुण्डन हो सकते हैं। क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही संवत् बदल जाने से ६ मास का प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

एक घर में एक साथ दो शुभ कार्य करने हेतु व्यवस्था

एक गृह में एक साथ दो शुभ कार्य मङ्गलदायी नहीं होते हैं। एक शुभ कार्य करने के नौ दिन पश्चात् दूसरा शुभकार्य करना चाहिए, आवश्यक होने पर शुभ कार्योत्सव द्वारभेद अथवा आचार्यभेद से होना चाहिए। यह वसिष्ठ का वचन निबन्ध ग्रन्थों में द्रष्टव्य है।

सहोदरों का समान संस्कार और विवाह भी संकट में वर्षभेद से करना चाहिए। अथवा चार दिन या एक दिन के व्यवधान से करना चाहिए। अत्यन्त संकट में एक दिन में कर्ता के भेद से या मण्डपभेद से करना चाहिए। दो कर्ताओं के द्वारा एक लग्न में और एक घर में भी दो भिन्नोदरों का विवाह करना चाहिए।

एक साथ तीन मङ्गलकार्य करने हेतु व्यवस्था

एक उदर से उत्पन्न तीन सन्तानों (तीन सहोदरों) का अग्निकार्य (शुभकार्य अर्थात् विवाहोपनयनादि) नहीं करना चाहिए। यदि तीनों एकोदर न होकर भिन्नोदर हों तो उक्त अवरोध नहीं होगा अर्थात् भिन्नोदरों का तीन मङ्गलकार्य एक साथ किया जा सकता है। ऐसा शातातप ने कहा है।

विवाहनिश्चयोपरांत मरणाशौच होने पर विवाह समय निर्धारण

विवाह का निश्चय हो जाने के पश्चात कन्या या वर के कुल में (तीन पुरुष अर्थात तीन पीढ़ी के भीतर) किसी की मृत्यु हो जाये तो उसके एक मास के बाद विवाह किया जाना चाहिए। मेधातिथि आदि कितने आचार्यों का यह मत है कि आवश्यक में अशौच समाप्त हो जाने पर (अर्थात मृत व्यक्ति का श्राद्ध आदि कार्य बीत जाने पर) शान्ति करके एक मास के भीतर भी विवाह करना चाहिए।

सपिण्ड में किसी के मरण मे एक मास का अशौच समझना चाहिए। पिता के मरने पर १ वर्ष, माता के मरने पर ६ मास, स्त्री के मरने पर ३ मास, भाई तथा पुत्र के मरने पर १॥ मास तक अशौच होता है। परन्तु दुर्भिक्ष में, राष्ट्रविप्लव की आशंका में, माता-पिता के मरने की आशङ्का में एवं कन्या की प्रौढ़ावस्था में प्रतिकूल का दोष नहीं होता, ऐसा योगी याज्ञवल्क्य ने कहा है।

मृत व्यक्ति का श्राद्धादि कार्य हो जाने पर विधिवत् विनायक शान्ति और कूष्माण्डी हवन द्वारा शान्ति करके विवाह करना चाहिए।

नान्दीश्राद्ध होने के पश्चात यदि रजोदोष तथा जनन-मरणजन्य सूतक आ पड़े तो भी कार्य का आरम्भ हो जाने से विवाह-उपनयनादि की समाप्ति पर्यन्त कार्य होते रहेंगे। कार्य में अवरोध नहीं होगा। विवाह, व्रत, यज्ञ, श्राद्ध, होम, पूजन और जप आरम्भ हो जाने पर सूतक नहीं होता, आरम्भ न होने पर ही सूतक होता है। ऐसा विष्णु का वचन है। प्रारम्भ के विषय में विष्णु ने ही कहा है कि-यज्ञ में वरण से (वरणशब्द से मधुपर्क का ग्रहण करें) व्रत एवं सत्रयाग में सङ्कल्प से, विवाहादि में नान्दीश्राद्ध से और श्राद्ध में पाक बनने से आरम्भ माना जाता है। रजोदोष और अशौच आदि की सम्भावना में नान्दीश्राद्ध का अपकर्ष कर करने में दिन की संख्यावधि- यज्ञ में २१ दिन, विवाह में १० दिन, उपनयन में ६ दिन तथा मुण्डन में ३ दिन पूर्व में नान्दीश्राद्ध का विधान है। उक्त दिनावधि बीत जाने पर पुनः नान्दीश्राद्ध सिद्ध है।

वर्णादि दोषों का परिहार

१-वर-कन्या के ग्रहों (राशीशों) में मित्रता-होने से वर्णवैर, योनिवैर, गणवैर, नृदूर फल, दुष्ट कूटफल नष्ट हो जाते हैं। ऐसा शौनक ने कहा है। २-बृहज्ज्योतिषसार के अनुसार- गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष तथा षडष्टक ये चारों केवल ग्रह मैत्री (राशीशमैत्री) होने से निष्प्रभावी हो जाते हैं, जिससे इनका दोष नहीं होता। ३-यदि वर-कन्या दोनों के राशीशों में मैत्री हो, तो वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा अशुद्धि, नवपञ्चम का दोष नहीं होता। विवाह करना शुभ होता है। ४- यदि वर-कन्या दोनों के राशीश परस्पर शत्रु हों क्यों न हों परंतु दोनों के नवांशेश बलवान हों और परस्पर मित्र हों तो दम्पति के सुख की इच्छा से विवाह करना चाहिए। ऐसा जगन्मोहन मे उल्लिखित है।

नाड़ी-दोष-परिहार

१- दम्पति (स्त्री-पुरुष) की एक ही राशि हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हो तो उसमें गण-नाड़ी का विचार न करके विवाह करना चाहिए। २- बृहस्पति के अनुसार-वर-कन्या की एक राशि और नक्षत्र भिन्न हों अथवा एक ही नक्षत्र हो किन्तु राशियाँ भिन्न हों तो गण, नाड़ी, नृदूर और ग्रहवैर का विचार न करें। ३-वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा एक नक्षत्र हो और राशियाँ भिन्न हों तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता इस प्रकार एक नक्षत्र में पाद भेद से शुभ होता है ऐसा राम दैवज्ञ, गणपति आदि ने कहा है। एक-नक्षत्र के एक ही चरण वालों का परस्पर विवाह नेष्ट कहा है। ४- रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, पुष्य, श्रवण, रेवती और उत्तरा भाद्रपदा में दोनों के जन्म नक्षत्र हों तो नाड़ीदोष नहीं होता। ऐसा ज्योतिष चिन्तामणि में उद्धृत है। ५- विवाह कुतूहल ग्रन्थ के अनुसार बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक ही ग्रह दोनों (वर-कन्या) के राशीश हों तो नाड़ी दोष नहीं होता। ६- यदि नाड़ी दोष हो तथा उसका परिहार न होता हो और विशेष परिस्थिति में परस्पर विवाह करना आवश्यक हो तो विधिवत् महामृत्युञ्जय मंत्र का जप, स्वर्णदान, गोदान, अन्नदान तथा वस्त्रदान, दक्षिणा आदि से ब्राह्मण को तृप्त (संतुष्ट) कर विवाह करना कल्याणकारी होता है।

कुजदोष (मङ्गलीदोष) के परिहार

१.मङ्गली कारक ग्रह पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो मङ्गली दोष निरस्त हो जाता है। २.वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में (लग्न कुन्डली और चन्द्र कुण्डली दोनों से देखने पर) पूर्वोक्त मङ्गली दोषोत्पादक पाँचों स्थानों में कहीं भी पाप ग्रह समान संख्या में बैठे हों तो मङ्गली दोष का दुष्प्रभाव नहीं होता है। ३. वर-कन्या दोनों के राशीशों में मित्रता हो या दोनों का एक ही गण हो अथवा दोनों के कूटों का गुण मिलान करने पर गुणों की अधिकता हो तो इन स्थितियों में मङ्गली दोष निष्प्रभावी हो जाता है। ४.कन्या के जन्माङ्ग अथवा चन्द्राङ्ग में सप्तम अपने स्वामी (शुभग्रह या पापग्रह जो भी हो) से युक्त हो अथवा किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो उस कन्या को वैधव्य-सन्तानाभाव और विषाङ्गना दोष नहीं होता अर्थात् इन तीनों दोषों का नाश होता है।

सद्भकूट और दुष्टभकूट में गुणों का विभाजन

१- वर्ण, २- वश्य, ३- तारा, ४- योनि, ५- ग्रहमैत्री, ६- गणमैत्री, ७- भकूट और ८- नाड़ी, यह आठ प्रकार के कूट है, जिनके क्रमशः एक-एक अधिकगुण होते है अर्थात् कुल ३६ गुण होते है, जिनमें अर्धाधिक (१८ से अधिक) वर-कन्या के गुणों का योग प्राप्त होने पर दोनों का परस्पर विवाह किया जाता है, आधे से अल्प में नहीं, किन्तु ऐसा भी प्रमाण है कि वर-कन्या का भकूट शुद्ध हो तो १६ गुण निन्दित, उससे ऊपर २० तक मध्यम, २० से ऊपर ३० तक उत्तम और उससे ऊपर ३६ तक उत्तमोत्तम होता है। यदि दुष्टभकूट हो तो २० तक निन्दित, उससे ऊपर २५ तक मध्यम, उससे ऊपर ३० तक उत्तम तथा ३० से ऊपर उत्तमोत्तम होता है।

विवाह से पूर्व के कार्यों का मुहूर्त

तिथि	दोनो पक्षो की १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा प्रशस्त है।
वार	रवि से शनि पर्यन्त सभी वार ग्राह्य है।
नक्षत्र	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, ३ पूर्वा, ३उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
त्याज्य	चित्रा, विशाखा, शतभिषा, अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा और ज्येष्ठा नक्षत्र तथा भद्राकरण त्याज्य है। विवाह पूर्व ३।६।९ दिन त्याज्य है।

इस विवाह से पूर्व के कार्यों के मुहूर्त का तात्पर्य कूटने, पीसने, गीत गाने, कलश, चित्रकारी, वेदी, मण्डप, लीपने, दलने मृदाहरण (मागरमाटी), हरिद्रा लेपन, कङ्कण-बन्धन आदि के मुहूर्त से है। चन्द्रबल विचारणीय नहीं है।

विशेष- उपरोक्त प्रशस्त और त्याज्य नक्षत्र दैवज्ञ मनोहर के अनुसार दिए गये हैं। राम दैवज्ञादि ने उक्त कार्यों को वैवाहिक नक्षत्रों में करने का निर्देश किया है। बृहस्पति, वशिष्ठ, नारद, श्रीपति, खण्डेकरादि ने विवाह के लिए मात्र ११ नक्षत्रों को ग्रहण किया है, किन्तु पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार तीनो उत्तरा नक्षत्रों से तीन-तीन नक्षत्र ग्रहण करने से अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा को लेकर १५ नक्षत्र संख्या हो जा रही है, जिनका चलन मिथिला में है। प्रायः सभी स्थानों में ११ नक्षत्र ही प्रचलित है।

विवाह-मुहूर्त

तिथि	दोनो पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १भी
वार	सभी सातो वार
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा ३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल तथा रेवती ११ नक्षत्र प्रशस्त हैं। पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा कुल नक्षत्र ग्राह्य हैं। किन्तु इन १५ नक्षत्रों का चलन केवल मिथिला में है। अन्यत्र उपरोक्त ११ नक्षत्र ही विवाह के लिए ग्रहण की जाती है।
वर्ज्य	कृष्ण १३ से चन्द्रक्षय और भद्रा वर्जित है।
विवरण	मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर और कुम्भ के सूर्य में विवाह होता है। मेष के सूर्य में चैत्र में, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में तथा मकर के सूर्य में पौष में भी विवाह शुभ होता है। देवशयन वर्जित तथा उत्तरायन विशेष शुभ है।

मण्डपोद्वासन (मण्डप-विसर्जन) मुहूर्त

विवाह के दिन से २, ४ आदि सम दिनों में किन्तु छठवां दिन छोड़कर तथा विषम दिनों में ५वें, ७वें दिन में शुभ नक्षत्रों और भद्रा रहित शुभवारों में मण्डपोद्वासन करना शुभ होता है।

।। पुरुषों की जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	रिपु ६	जाया ७	मृत्यु ८	भाग्य ९	कर्म १०	आय ११	व्यय १२
सूर्य	शौर्यवान्, क्रोधी	वक्ता, रोगी, भाग्यवान्	पराक्रमी, सुखी	दुःखी उद्विग्न	पुत्रहीन, निर्धन	शत्रुजेता, बलवान्	खल, पीड़ित	नेत्ररोगी अल्पायु	पुत्रवान्, सुखभोगी	सुखी, कीर्तिवान्	बहुत धनी	व्यग्र, पतित
चन्द्र	कान्तिमान्, नेत्ररोगी	कुटुम्बवान्, धनी	सात्विक, हिंसक	सुशील सुखी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु, बहुशत्रु	ईर्ष्यालु, संघर्षी	रोगयुक्त, सुखी	भाग्यवान्, धनी	यशस्वी प्रतापी	विख्यात, लाभवान्	अङ्गहीन, हिंसक
मंगल	क्रूर, क्रोधी	क्रोधी, कुटिल	पराक्रमी, बुद्धिमान	पीड़ित, दुःखी	पुत्रहीन, दरिद्र	सुखी, शत्रुजेता	झगड़ालु, कीलित	अल्पायु, रोगी	पापरत, दुर्भाग्यशाली	सुखी, कीर्तिवान्	बहुत धनी, सुखी	जातिभ्रष्ट, विधुर
बुध	सुखी, विद्वान्	धनी, गुणी	दुर्जन, शत्रुजेता	पंडित, सुखी	मंत्री, पुत्रवान्	शीलरहित, शत्रुरहित	धर्मज्ञ, यशस्वी	सद्गुणी, धनी	पुत्रवान्, सुखी	सुखी, पराक्रमी	यशस्वी, धनी	अज्ञ, पतित
गुरु	विद्वान्, दीर्घायु	वाग्मी, धनी	पापी, कृपण	धनी, सुखी	बुद्धिमान्, प्रतापी	कामी, अशुभ	पिता से अधिकसुखी	नीच	पुत्रवान्, तपस्वी	सत्कर्मवान्, धनी	लाभवान्, पुत्रवान्	दुष्ट, दरिद्र
शुक्र	कामी, सुखी	सुवक्ता, धनी	पापी, कृपण	बुद्धिमान्, सुखी	सुखी, बुद्धिमान्	रोगी, शत्रुहीन	कलह प्रिय	दीर्घायु, नीच	पुत्रवान्, धनी, सुखी	सम्मानयुक्त, सद्व्ययी	लाभवान्, बुद्धिमान्	दुष्ट, बन्धुहीन
शनि	दरिद्र, अभागी रोगी	वक्ता, रोगी,	बुद्धिमान् पराक्रमी	दुःखी	दरिद्र, सन्तानहीन	सुखी, शत्रुजेता	दुःखी, कीलित	अल्पायु, नेत्ररोगी	विकल, दीनतायुक्त	सुखी, पराक्रमी	बहुत धनी	पतित, दुःखी
राहु	सुकामी, रोगी	अधर्मी, विरोधी	विवेकी बुद्धिमान्	मातृसुखहीन, दुःखी	अभागा, दुर्बुद्धि	श्रीमान्, बलवान्	प्रमेहरोगी, अपवित्र	रोगी, गतायु	पापी, अभागा	अभिमानी, सुखी	पुत्रहीन, धनी, विख्यात	कामुक, पतित
केतु	कामी, क्षीणायु	कामी	शौर्यवान् पराक्रमी	मातृसुखहीन, दुःखी	पुत्रहीन, मूर्ख	धनी, बली	प्रमेहरोगी, दारहा	कष्टयुत, व्रणी	पापकर्मा, भाग्यहीन	श्रेष्ठ, पितृहीन	धनवान्	दुर्जन, पतित
गुलिक	मन्द-बुद्धि, रोगी	क्रोधी, विषयी	अभिमानी, शोकरहित	पापकर्मा, रोगी	अल्पपुत्र, अल्पायु	विरोधी, रिपुहा	कुदार, कृतघ्न	दुःखी, दरिद्र	पापरत, निर्दयी	सुखयुक्त, दानहीन	सुभग, पुत्रहीन	नीचरत, हीनाङ्ग

।। स्त्रियों की कुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	शत्रु ६	पति ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	विधवा सक्रोधा	दुःखार्ता दरिद्रा	धनिनी पुत्रिणी	दरिद्रा पीड़िता	नष्टात्मजा	सुखयुता धनाढ्या	समस्त सुखों से हीना	विधवा दुःखार्ता	धन, धर्मान्विता	सुकर्मरता	सुलाभा पुत्रान्विता	विधवा रोगिणी
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधन पुत्रान्विता	धनी सुखी	सुभगा अर्थयुक्ता	सुपुत्रा सुखयुक्ता	रोगिणी विधवा	सुन्दर शरीर वाली पतिप्रिया	रोगयुक्ता कुनेत्रा	पुत्रान्विता सुखयुक्ता	धन धर्मयुक्ता	धन्या विविज्ञा	हीनाङ्गी व्ययशीला
भौम	विधवा दुःखिता	बन्ध्या रोगिणी	भ्रातृहीना	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसम्मता	रोगादिरहिता	विधवा कुलटा	रोगार्ता विधर्मा	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ-लाभा	खल्वा रुग्णार्ता
बुध	सौभाग्यवती	धनाढ्या सती	पुत्रवती धनाढ्या	सुखी गृहान्विता	बुद्धिमती कान्तिमती	आयुहीना क्रोधयुक्ता	पतिव्रता विदुषी	कृतघ्ना भययुक्ता	सुयोगा सुधर्मा	सत्कर्मबुद्धि युता	सुलाभा पतिव्रता	कृशाङ्गी सुपुत्रा
गुरु	सती भाग्यशालिनी	धन-सौभाग्य युक्ता	सहजान्विता	धनिनी सुखयुक्ता	साध्वी सुभगा	बहुआपदा सपत्नघ्नी	सौभाग्यवती यशस्विनी	विशीला रोगिणी	पुत्रवती कृतज्ञा	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुरूपा	सुव्यया रुग्णा
शुक्र	सुखयुक्ता पतिव्रता	धनयुक्ता पुत्रान्विता	धनाढ्या पराशी	यशस्विनी सुखान्विता	पुत्रयुक्ता सुखसम्पन्ना	सुखहीना दरिद्रा	पतिप्रिया शास्त्ररता	प्रमत्ता सुखहीना	सुभगा धर्मपरायणा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्र-धन लाभ युक्ता	सद्व्यया दुःखार्ता
शनि	बन्ध्या दरिद्रा	दुःखयुक्ता धनहीना	सुभगा सुदक्षा	विपुत्रा सुखहीना	विपुत्रा सुखहीना	भाग्ययुक्ता गुणसम्पन्ना	विधवा सरोगा	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या शोकयुक्ता	पापरता सधना	अपुत्रा सुलाभा	रोगार्ता मूढा
राहु	पुत्रहीना दुःखार्ता	दरिद्रा दुःखार्ता	रोगिणी धनवती	रोगार्ता मातृसुखहीना	सुतार्थहीना	रोगहीना धनयुक्ता	दुःखिता विधवा	विधवा दुःखयुक्ता	बन्ध्या शोकार्ता	कुकर्मरता	निरोगी सुभगा	खला सरोगा
केतु	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"

नक्षत्रों के स्वामी, शुभाशुभ आदि विशेष संज्ञा चक्र

नक्षत्रों के नाम	स्वामी	शुभाशुभ	जाति	संज्ञा	मुख	किस घड़ी के उपरान्त वेध	दोहद
अश्विनी	अश्विनी कुमार	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिर्यक	५०	तिल, तण्डुल
भरणी	यम	नाशक	चाण्डाल	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	सफेद उड़द
कृत्तिका	अग्नि	अशुभ	ब्राह्मण	मिश्र, साधारण	नीचे	३०	उड़द
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शूद्र	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	४०	गव्य
मृगशिरा	चन्द्र	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	१४	गोघृत
आर्द्रा	शिव	अशुभ	क्रूरजाति	तीक्ष्ण, दारुण	ऊपर	२१	दुग्ध
पुनर्वसु	अदिति	शुभ	वैश्य	चर, चल	तिरछा	३०	हरिण मांस
पुष्य	गुरु	शुभ	क्षत्रिय	क्षिप्र, लघु	ऊपर	२०	मृगरक्त
आश्लेषा	सर्प	अशुभ	चाण्डाल	तीक्ष्ण, दारुण	नीचे	३२	पायस
मघा	पितर	शोकप्रद	शूद्र	उग्र, क्रूर	नीचे	३०	चाषमांस
पूर्वा फाल्गुनी	भग	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२०	मृगमांस
उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	१८	शशकमांस
हस्त	सूर्य	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिरछा	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	प्रियंगु
स्वाती	वायु	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	तिरछा	१४	अपूप
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभ	चाण्डाल	मिश्र, साधारण	नीचे	१४	नानापक्षीमांस
अनुराधा	मित्र	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	१०	सत्फल
ज्येष्ठा	इन्द्र	शुभ	कृषक	तीक्ष्ण, दारुण	तिरछा	१४	कूर्ममांस
मूल	राक्षस	क्षय	क्रूरजाति	तीक्ष्ण, दारुण	नीचे	५६	सारिकामांस
पूर्वाषाढ़	जल	धनहानि	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	गोधिकामांस
उत्तराषाढ़	विश्वेदेवा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२०	शाल्वमांस
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डाल	चर, चल	ऊपर	१०	कृसरान्न
धनिष्ठा	वसु	शुभ	कृषक	चर, चल	ऊपर	१०	मुद्गमोदक
शतभिषा	वरुण	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	ऊपर	१८	जवपिष्ट
पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	१६	मत्स्यान्न
उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२४	चित्रितान्न
रेवती	पूषा	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	दधि-भात

नक्षत्रों तथा नक्षत्रचरणों के अनुसार कष्ट का विचार

ज्वरादि रोग होने पर नक्षत्र चरणवश दिन संख्या तथा जपादि विधान

नक्षत्र	दि॰सं॰	१चरण	२चरण	३चरण	४चरण	दान वस्तु	जपार्थ मंत्र
अश्विनी	दि॰९	९	११	१०	२	ब्रा॰ भोजनदान	मृत्युञ्जयमंत्र
भरणी	११	०	८०	४०	११	घी, अन्न आदि दान	यमायत्वाङ्गिरस्वते॰
कृत्तिका	९	९	११	१६	२८	स्वर्णदान	अग्निर्मूर्द्धा दिवः॰
रोहिणी	७	३	९	१८	३०	घृतदान	ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं॰
मृगशिरा	३०	९	५	७	१०	तिलदान	इमं देवा ऽअसपत्नं॰
आर्द्रा	मृत्यु	०	१८	०	०	गोदान	नमस्ते रुद्र॰
पुनर्वसु	७	६	१४	२	२१	पीतलदान	अदितिर्द्यौ॰
पुष्य	७	७	७	१०	२१	तिल, अन्नदान	बृहस्पते अति॰
श्लेषा	मृत्यु	०	०	४१	०	गाय, बकरीदान	नमोऽस्तु सर्पे॰
मघा	२०	१५	७	१७	२०	वस्त्र, घृतदान	पितृभ्यः स्वधायि॰
पूर्वा फा॰	मृत्यु	०	१५	०	३०	भोजनदान	भगप्रणेतर्भग॰
उ॰ फा॰	७	७	१४	७	६०	अन्नदान	अर्यमणम्बृहस्पति॰
हस्त	१५	१५	१७	१५	०	तेलदान	उदुत्यञ्जातवेदसं॰
चित्रा	११	११	९	९	१६	दूधदान	त्वष्टातुरीयेऽअद्भुत॰
स्वाती	मृत्यु	६०	१७	३०	०	गोघृतदान	वायुरग्रेगायज्ञप्रीः॰
विशाखा	१५	१५	०	४	१३	स्वर्णदान+गोदान	इन्द्राग्नी ऽअव्यथमा॰
अनुराधा	स्थिर	६०	१२	३६	३०	गोघृतदान	नमो मित्रस्यवरुणस्य॰
ज्येष्ठा	मृत्यु	५९	९	६	४	तिलदान	त्रातारमिन्द्रमवितार॰
मूल	९	०	९	१५	६	चाँदी का पात्रदान	मातेवपुत्रम्पृथिवी॰
पूर्वाषाढ़	मृत्यु	०	१५	२४	१०	गोदान+मोतीदान	आपोऽ अस्मान्मातरः॰
उत्तराषाढ़	३०	३०	२४	२६	१६	भोजनदान	विश्वेदेवाः शृणुतेमं॰
श्रवण	११	६०	२४	६	९	श्रीफलदान	विष्णोरराटमसि॰
धनिष्ठा	१५	१५	४	२०	२१	अश्वदान+अन्नदान	वसोः पवित्रमसि॰
शतभिषा	११	०	४५	३	२२	भोजनदान+अन्नदान	वरुणस्योत्तम्भन॰
पूर्वाभाद्र॰	मृत्यु	०	१२	२१	१९	भोजनदान	अजैकचरण॰
उत्तराभाद्र॰	७	१०	३	९	१५	अन्नदान	अहिर्बुध्न्य॰
रेवती	स्थिर	१८	१०	९	२०	वृषदान	पूषन्तवव्रते॰

नष्ट वस्तु के लाभालाभ ज्ञानार्थ सुलोचनादि संज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दिशा	लाभालाभ	तारा	स्वरूप
अश्विनी	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	भगाकार
कृत्तिका	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	६	क्षुरिकाकार
रोहिणी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	५	शकटाकार
मृगशिरा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	मृगमुख
आर्द्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मणिसदृश
पुनर्वसु	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	४	गृहसदृश
पुष्य	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३	बाणाकार
श्लेषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	चक्राकार
मघा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	५	गृहाकार
पू॰फाल्गुनी	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	मंचाकार
उ॰फाल्गुनी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	खाट-आकार
हस्त	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	हस्ताकार
चित्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मौक्तिकाकार
स्वाती	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	१	प्रवालाकार
विशाखा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	तोरणाकार
अनुराधा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	४	मणिसदृश
ज्येष्ठा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	कुण्डलाकार
मूल	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	११	सिंहपुच्छाकार
पूर्वाषाढ़	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	गजदन्ताकार
उत्तराषाढ़	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	२	मञ्चतुल्य
श्रवण	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	३	त्रिचरणाकार
धनिष्ठा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	मृदङ्गाकार
शतभिषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	१००	वर्तुलाकार
पू॰भाद्रपद	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	२	मञ्चकाकार
उ॰भाद्रपद	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	यमलाकार
रेवती	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३२	मृदङ्गाकार

चैत्रादि पक्ष विचार का शेषांश

☛(पृष्ठ १५ चैत्र शुक्ल पक्ष का शेषांश) २६ मार्च को **महाष्टमी व्रत** तथा **महानवमी व्रत** होगा। **विशेष**-महाष्टमी व्रत सूर्योदय के समय वेधरहित **शुद्ध अष्टमी** का होना अनिवार्य है। **महानवमी** अष्टमीतिथि में **सूर्यास्त ६ मुहूर्त** पूर्व नवमी तिथि ग्राह्य है। इस अष्टमी-नवमी तिथि संधी में तन्त्रपूजन करें। महानिशापूजा सप्तमी युक्त अष्टमी में ग्राह्य है। **मध्यरात्रि** (निशीथकाल) का उल्लंघन नहीं होना चाहिये। **२७ मार्च** को **महानवमी व्रत** समस्त जन द्वारा मनाई जायेगी। आज नवमी से सम्बन्धित हवन, पूजनादि, कन्या पूजन तथा महाबलिदान का कार्य सम्पन्न किया जायेगा। रामावतार का महापर्व **राम नवमी** का पर्व समस्त जनों द्वारा सर्वत्र मनाया जायेगा। विशेषकर भगवान् राम की जन्मभूमि अयोध्या में पारम्परिक शास्त्रीय विधान से मनाई जायेगी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने आज से रामचरित मानस की रचना आरम्भ की थी, अतः **मानस जयन्ती** भी आज मनाई जाती है। जो संपूर्ण नवरात्र उपवास न कर सके वह **सप्तमी, अष्टमी** (सम्पूर्ण नवरात्र में प्रमुख व्रत) तथा नवमी तिथियों को उपवास करे तो उसकी समस्त कामना सिद्ध होती है। समस्त **नवमी** तिथि में हवन करें। **नवरात्र में अशौच विचार**—यदि नवरात्र में अशौच पड़ जाय तो ब्राह्मण के द्वारा ही पूजा कार्य करायें तथा **अशौच** की समाप्ति के पश्चात् ही ब्राह्मण को भोजनादि करायें। आज नौ दिन **नवरात्र व्रत का दशमी में पारण** होगा। **२९ मार्च** को **कामदा एकादशी व्रत** सबके लिए है। **३० मार्च** को सन्तान हेतु प्रशस्त **सोम प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज पूर्व विद्धा **अनङ्गत्रयोदशी व्रत** किया जायेगा। **३१ मार्च** को जैन धर्मावलम्बी जनों का महत्त्वपूर्ण एवं परम पवित्र पर्व **महावीर जयंती** मनाई जायेगी। आज प्रदोषकाल में चतुर्दशी में **शिव** तथा **नृसिंह भगवान् का दमनक** से पूजन किया जायेगा। **१ अप्रैल** को **व्रत की पूर्णिमा** को होगी। **२ अप्रैल को स्नान-दान की चैत्र पूर्णिमा** मनायी जायेगी। दाक्षिणात्य मत से को **हनुमान् जयंती** मनाई जायेगी। इस दिन हनुमान्जी की प्रतिमा का सविधि षोडशोपचार पूजा करनी चाहिये। इस दिन रामायण या सुन्दरकाण्ड अथवा हनुमान चालीसा के अखण्ड पाठ का आयोजन करें।

☛**(पृष्ठ २७ भाद्रपक्ष शुक्ल पक्ष का शेषांश)** काशी के लक्ष्मीकुण्ड में आज से स्नान व दर्शन-पूजन **१६ दिनों** का **सोरहिया मेला** प्रारंभ होगा। **१९ सितम्बर** को आज ही **मध्याह्न** में **राधाष्टमी** मनायी जायेगी। **२० सितम्बर** को **महारविवार व्रत** होगा। **२२ सितम्बर को पद्मा एकादशी व्रत** सबका, **कर्मा एकादशी** (झारखण्ड) एवं **डोलग्यारस** (म.प्र.) में होगा। **२४ सितम्बर को प्रदोष व्रत** होगा। **२५ सितम्बर** को **अनंत चतुर्दशी व्रत** होगा। इसमें नमक रहित भोजन करें। **२६ सितम्बर को स्नान-दान व व्रत** की **पूर्णिमा** तथा **अपराह्न** पूर्णिमा तिथि में **पार्वण नान्दी मातामह श्राद्ध** होगा।

☛**(पृष्ठ २९ आश्विन शुक्ल पक्ष का शेषांश) १२ अक्टूबर** को **चन्द्रदर्शन** विचार से महँगी होगी। द्वितीया में केश संस्कार हेतु रेशमी पट्टप्रदान करें। **१३ अक्टूबर** को तृतीया में दर्पण तथा सिर व चरण हेतु सिंदूर व अलक्त अर्पण करें। **१४ अक्टूबर** को **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। चतुर्थी में देवी को मधुपर्क (दही, घी, मधु का मिश्रण) तिलक हेतु चांदी। नेत्र हेतु अंजन का अर्पण करें। **१५ अक्टूबर** को पंचमी में अङ्गराग तथा शक्तिनुसार आभूषण अर्पण करें। आज मध्याह्न पंचमी में **उपाङ्ग ललिता पूजा** महाराष्ट्र में होगी। **१६ अक्टूबर** आज प्रातःकाल **बेल वृक्ष** को **निमंत्रण** तथा **सायं षष्ठी तिथि** में बेल वृक्ष को साक्षात दुर्गा मान कर देवी को शयन से जगाने हेतु **मंत्रों** द्वारा **बोधन** करें। बंगमतानुसार आज देवी का आगमन दोला पर होगा। षष्ठी के दिन माँ का पंडाल में आगमन होता है। आज **दुर्गाषष्ठी व्रत** किया जायेगा। **१७ अक्टूबर** को **दुर्गा सप्तमी** को **पत्रिका प्रवेशन**, पुस्तकादि का पूजन दशमी तक करें। आज से दुर्गा पण्डालों में देवी का आवाहन, स्थापन तथा पूजन का कार्य आरंभ हो जायेगा। दिन में **मूल** में **सरस्वती का आवाहन** करें। दिन में **पू.षा.नक्षत्र** के प्रथम चरण में **सरस्वती पूजा** होगी। **१८ अक्टूबर** को सूर्योदय **अष्टमी तिथि** के योग से **महाष्टमी व्रत** होगा। आज वस्त्रादि छत्र चामर सहित देवी पूजन करें। **निशीथव्यापिनी अष्टमी** में **महानिशापूजा** तथा उससे संबंधित बलिदानादि कृत्य सम्पन्न होंगे। **१९ अक्टूबर** को **महानवमी व्रत नवमी तिथि** मे कन्यापूजन, बटुक पूजन, हवन, चंडी पूजा तथा बलिदानादि कार्य संपन्न होगा। आज **अष्टमी व नवमी तिथि** की संधि में **तंत्र पूजन**। समस्त नवमी रहते हवनादि करें। **श्रवण** में **सरस्वती देवी** का **विर्सजन** करें। **२० अक्टूबर** आज मध्याह्न पूर्व **नवरात्र व्रत का पारण** होगा तथा **दुर्गाविसर्जन** होगा। देवी वाहन चरणायुध। देवी को द्रव्य चिह्न प्रदान करें तथा **अपराह्नकाल** तथा **श्रवणयोग** में **विजयादशमी पर्व** तथा **पट्टाभिषेकयोग्य विजयदशमी** भी आज मनाई जायेगी तथा विजयादशमी संबंधीत कृत्यी संपन्न होंगे। प्रस्थान पूर्व अपराजिता पूजन कर नगर सीमा का लघंन, जयंती ग्रहण, नीलकण्ठ दर्शन तथा शमी पूजन करें।**२२ अक्टूबर** समस्त पापनाशक **पापांकुशा एकादशी व्रत सबकी** मनायी जायेगी। आज काशी में नाटी इमली का विश्व प्रसिद्ध **भरत मिलाप** काशीराज की गौरवमयी उपस्थिति में मनाया जायेगा। **२३ अक्टूबर** को सन्तान सुख हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२५ अक्टूबर** को **व्रत की पूर्णिमा** है, आज संपूर्ण रात्रिव्यापिनि पूर्णिमा में **शरद्पूर्णिमा** एवं **कोजागरी** मनाई जायेगी। आज खीर बनाकर रात्रि में चन्द्रमा की रोशनी में रातभर रखने के बाद प्रातःकाल ग्रहण करना चाहिए। **२६ अक्टूबर** को **स्नान-दान की पूर्णिमा है**। आज संस्कृत रामायण के आदि कवि **महर्षि वाल्मीकि की जयंती** भी मनाई जायेगी।

☛**(पृष्ठ ३१ कार्तिक शुक्ल पक्ष का शेषांश)** आज ईख का रसपान करे। आज विवाह नक्षत्र में **तुलसी विवाह** भी सम्पन्न होगा। आज **चातुर्मास्य व्रत** की **समाप्ति** हो जायेगी। **२१ नवम्बर** को **दि.९।१९ से एकादशी व्रत का पारण** होगा। **२२ नवम्बर प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२३ नवम्बर** निशीथ चतुर्दशी में **वैकुण्ठ चतुर्दशी** व्रत में उपवास कर **अरुणोदय** बेला में काशी के मणिकर्णिका कुण्ड का स्नान अत्यन्त पुण्य दायक माना गया है। स्नान कर श्रीविष्णुजी का पूजन करें। आज के दिन शिवजी (विश्वनाथजी) को तुलसी पत्र एवं विष्णुजी को विल्वपत्र चढ़ाया जाता है। यह हरिहर के एकाकार का दिन है। आज विष्णु व शिवजी का पूजन करना चहिए। आज **श्रीकाशी विश्वनाथ का प्रतिष्ठा दिवस** मनाया जायेगा। अरुणोदय में महाविष्णु पूजन कर व्रत का पारण होगा। निशीथ में रासयात्रा होगी। **२४ नवम्बर** को **स्नान-दान-व्रत की कार्तिक पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती** एवं **त्रिपुरोत्सव, काशी में देव दीपावली** महोत्सव मनाया जायेगा।

●

संदिग्ध व्रत त्यौहार एवं पर्व निर्णय संवत् २०८३

१) चैत्रवत्सरारंभ- चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को चान्द्रवसन्तसंवत्सरारम्भ होता है। ***"अत्र प्रतिपदौदयिकी ग्राह्या"*** किन्तु संवत् २०८३ में चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का क्षय है अतःपूर्व दिन **चैत्रकृष्ण ३० गुरुवार** को **दिनांक (१९-३-२०२६) प्रा.६।४०** अमावस्या समाप्ति पश्चात नवसंवत्सरारम्भ निमित्त समस्त कृत्य होंगे। इसी दिन **वासन्तिक नवरात्र का प्रारंभ** है। **सिद्धार्थ** संवत्सर का **लोप** होगा तथा **रौद्र** नामक **संवत्सर** का संकल्पादि में विनियोग होगा। **अतः दिनांक (१९-३-२०२६) गुरुवार को चान्द्रवसंवत्सर** तथा **वासन्तिक नवरात्रप्रारंभ** होगा तथा**"रौद्र"**नामक **संवत्सर का वर्ष पर्यन्त संकल्पादि में विनियोग होगा।**

२) गङ्गादशहरा- संवत् २०८३ वर्ष मे ज्येष्ठ मास अधिमास (मलमास) है। ज्येष्ठ शु.ति.१० को गंगादशहरा मनाया जाता है। लेकिन **"ज्येष्ठे मलमासे सति तत्रैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे"**। अर्थात् ज्येष्ठ में मलमास होने पर मलमास में (अधिक ज्येष्ठ शु.१० दशमी) ही गंगा दशहरा करना चाहिये। **"दशहरासु नोत्कर्षश्चतुर्ष्वपि युगादिषु"** इति हेमाद्रौ ऋष्यशृङ्गोक्तेः। **अतः अधिक ज्येष्ठ शु.१० मंगलवार २६ मई २०२६ को गंगादशहरा पर्व मनाना चाहिये।**

३) जीवत्पुत्रिकाव्रत- आश्विनकृष्ण अष्टमी को प्रदोषकाल में जीमूतवाहन पूजन **होता है। इस** वर्ष दिनांक ३।१०।२०२६ शनिवार को सप्तमी घट्यादि ९।२८ (दि.९।५०) पर समाप्त हो रही है तथा अष्टमी लग जा रही है। दूसरे दिन ४ अक्टूबर रविवार को उदया अष्टमी घट्यादि ३।२२ (प्रा.७।२८) तक रहती है। पश्चात् नवमी तिथि प्राप्त हो जती है। अतः पूर्व दिन ही प्रदोष काल में अष्टमी मिल रही है। **"पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यः स नारीभिः राजाजीमूतवाहनम्।"** इस वचन के अनुसार प्रदोषव्यापिनी अष्टमी पूर्वदिन मिल रही है। **अतः दिनांक ३।१०।२०२६ शनिवार को ही जीवत्पुत्रिका व्रत होगा। दिनांक ४ अक्टूबर २०२६ रविवार को अष्टमी प्रा.७।२८ के बाद नवमी तिथि में जीवत्पुत्रिका व्रत का पारण होगा।**

४) नवरात्र व्रत पारण तथा विजयादशमी-नवरात्र शब्द का समष्टिवाचक है। इसका संबंध नव तिथियों से है। **नवमी व्रत जिस दिन निश्चित होता है। उसके दूसरे दिन पारण होता है। चाहे नवमी हो अथवा नहीं हो।** अश्विनशुक्ल नवमी मंगलवार को अपराह्नकाल दि.९।३४ तक व्याप्ति से आज **व्रत का पारण** होगा पश्चात दशमी विजयादशमी प्रयुक्त काल हेतु **अपराह्न** से **विजयकाल**(संध्याकाल में जब आकाश में कुछ तारागण दृश्य हो) तक प्राप्त है। **विजयकाल- "ईषत्संध्यामतिक्रान्तः किञ्चिदुभिन्नतारकः विजयो नाम कालोऽयं सर्वकार्यार्थसिद्धये"** **अतः विजयकाल व अपराह्नकाल की विशेषता** तथा श्रवण योग प्राप्ति से **विजयादशमी २०।१०।२०२६ मंगलवार** को ही मनायी जायेगी तथा **नवरात्रव्रत का पारण होगा।**

५) अन्नकूट- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट महोत्सव होता है। द्वितीया से स्पर्श युक्त प्रतिपदा चन्द्रर्दशन के कारण निषेध है। यहां चन्द्रर्दशन का आधार स्थूल (गणितपक्ष नहीं) है। अतः कार्त्तिक कृष्ण ३० सोमवार दिनांक ९।११।२०२६ को घट्यादि १२।२८ (दि.११।३२) उपरान्त प्रदोषव्यापिनि प्रतिपदा प्राप्त है तथा दूसरे दिन दिनांक १०।११।२०२६ मंगलवार को घट्यादि १५।१२ (दि.१२।३८) तक व्याप्त है पश्चात द्वितीया से स्पर्श है तथा चन्द्रदर्शन भी है। अतः पूर्व दिन **९ नवम्बर २०२६ सोमवार को अन्नकूट व काशी से अन्यत्र गोवर्द्धन पूजा** होगी तथा प्रदोषकाल में बलिपूजा होगी।

६) भातृद्वितीया (भईया दूज)- कार्तिक शुक्ल द्वितीया को **भातृद्वितीया (भईया दूज)** मनायी जाती है। इस वर्ष १०।१०।२०२६ मङ्गलवार को १५।१२ (दि.१२।३८) से प्रतिपदायुक्त द्वितीया तिथि प्राप्त है। अतः पूर्व दिन **मध्याह्न से स्पर्श** वृद्धिगामी द्वितिया तिथि में **भातृद्वितिया (भईया दूज)** यमुनास्नान,भगनी गृह भोजन आदि कृत्य **दिनांक १० नवम्बर २०२६ मङ्गलवार** को होगा।

दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त

कार्तिककृष्ण १४ रविवार (दिनांक ८ नवम्बर २०२६) को अमावस्या तिथि का मान दि१०।५१ से प्राप्त है। प्रदोषकाल तथा सम्पूर्ण रात्रि में व्याप्त है,अत **दीपावली का शुभ पर्व आज होगा।** दीपावली पूजन का **मुख्यकाल** *प्रदोषकाल* है। इसके साथ **स्वाती नक्षत्र अहोरात्र** (समस्त दिन) प्राप्त है तथा **स्वाती नक्षत्र के साथ स्थिरलग्नो की प्रधानता होती है। स्थिरलग्नवृष(रा.५।५९ से रा.७।५५ तक), स्थिरलग्न कुम्भ (दि.१।२३ से दि.२।५४ तक) रात्रि स्थिरलग्न सिंह (रा.१२।२७ से रा.२।४१)** तक है। *सूर्यास्तोत्तर त्रिमुहूर्ते प्रदोष* अतः **प्रदोषकाल** में **वृष लग्न** प्राप्त है। *अतः दीपावली पूजन प्रदोषकाल तथा स्थिर लग्न वृष में करना उत्तम है।* पूजन हेतु **निशिथकाल (मध्यरात्रि) रात्रि घट्यादि ४२।३७उ. (रात्रि घं.११मि.३५) से घट्यादि ४४।५७ या. (रात्रि घं.१२ मि.२७)** तक है। इसमें **रात्रि स्थिरलग्न** *सिंह प्राप्त नहीं है। अतः निशिथकाल(मध्यरात्रि) महाकाली* पूजन हेतु उत्तम है। इसके अतिरिक्त **दिन में स्थिर लग्नकुम्भ है।** *प्रदोषकाल तथा* **इन स्थिर लग्नो** में लक्ष्मी, गणेश, कुबेरादि देवताओं का दीपावली पूजन करना उत्तम है।

।।सर्वत्र होली(रंगोत्सव)पर विचार।।

विगत कुछ वर्षो से **होली (रंगोत्सव)** को मनाने में जनमानस को दुविधा का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि परम्परा दृष्टिकोण से इस पर्व का निर्धारण धर्मशास्त्रीय उल्लेख से भिन्न है। अतः काशी के पञ्चाङ्गों में काश्यां होली तथा दूसरे दिन अन्यत्र होली लिखते थे। जिससे जनमानस में दुविधा उत्पन्न होती थी।

अतः **काशी हिन्दू विश्विविद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय** में ज्योतिष विभाग द्वारा आयोजित सभा में काशी के प्रमुख पञ्चाङ्गकारों तथा ज्योतिष विभाग के विद्वानों द्वारा विगत कई वर्षों से **होली(रंगोत्सव)** को मनाने में उत्पन्न समस्या को देखते हुये गहन मंथन उपरान्त **होलिका दहन के दूसरे दिन होली (रंगोत्सव) मनाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है।चन्द्रग्रहणादि दोष** को ध्यान में रखते हुये प्रतिवर्ष पञ्चाङ्गकारों तथा ज्योतिष विभाग के विद्वानों द्वारा इस विषय पर एकमत निर्णय लेकर उस निर्णय को उस वर्ष के पञ्चाङ्ग में प्रकाशित किया जायेगा।

वसन्तोत्सव पर्व शास्त्रों के अनुसार **चैत्रकृष्ण प्रतिपदा** को **पूर्वाह्णकाल** में मनाने का कृत्य है तथा काशी में **चतुःष्ठी देवी** की चैत्रकृ. प्रतिपदा तिथि सायंकाल से प्रदोषकाल(रात्रि) तक व्याप्त हो उसमें चतुःष्ठी देवी यात्रा तथा दर्शन पूजन होता है अतः इसी आधार पर उस दिन **पूर्वाह्णकाल** में काशी में **होली(रंगोत्सव)** का पर्व होता है। भले सूर्योदय से स्पर्श पूर्णिमा तिथि व्याप्त हो। अतः काशी में **होली (रंगोत्सव)** को मनाने हेतु **सायं से प्रदोषकाल** (रात्रि) में स्थित **चैत्रकृष्ण प्रतिपदा तिथि ही मुख्य आधार** है। जहाँ **प्रतिपदा** का **सायं** तथा **प्रदोष (रात्रिकाल)** दोनों कालों में व्याप्त रहना आवश्यक है। दोनों के उल्लंघन की दशा में सूर्योदय स्पर्श प्रतिपदा ही ग्राह्य होगी। **होली(रंगोत्सव)**पर्व यह **वसन्तऋतु** के आगमन सूचक भी है। क्योंकि यह उत्सव अन्य प्रान्तों में अलग अलग तिथियों तथा दिनों को मनाया (अपनी क्षेत्रीय परम्परानुसार) जाता आ रहा है। जिसमें प्रमुख ब्रजमण्डल तथा काशी की होली, पश्चिम प्रसिद्ध चैत्रकृष्ण पंचमी में **रङ्गपंचमी** है।

अतःयह कोई **पूजनोत्सव** (पूजन संग उत्सव) जैसे रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी या महाशिवरात्रि आदि पर्व होते हैं **न होकर केवल मात्र एक उत्सव का द्योतक है** अर्थात् **वसन्तऋतु के उपलक्ष्य में किया जाने वाला उत्सव है।** अतः **होलिका दहन निर्णय उपरान्त दूसरे दिन यदि चैत्रकृष्ण प्रतिपदा सूर्योदय से सूर्यास्त पूर्व तक मिल जाये तो उसी में होली(रंगोत्सव) को मनाया जा सकता है। क्योंकि यह पूजन सम्बन्धी कर्म न होकर उल्लास का पर्व है।**

●

भोजन द्वारा रोगों का उपचार

डाईबिटीज का घरेलू उपचार– १. एक चम्मच मेथी या दो आम की पत्ती, आधा गिलास पानी में रात को भिंगोकर सुबह खाली पेट पीयें। २.दालचीनी, सेब व जामुन का सिरका, जामुन व जामुन के बीज का चूर्ण। ३.**फल**- सन्तरा, अमरूद, आँवला, आड़ू, चकोतरा। ४.**सब्जी**-करेला, नींबू, भिण्डी, प्याज, खीरा, टमाटर व अन्य हरी सब्जी खायें। ५.**चावल**- ब्राउन राइस, कुट्टू का चावल व सभी छिलके वाली दालों का प्रयोग करें।

कंधा, पीठ एवं जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-D एवं कैल्शियम की कमी से होता है। सुबह की धूप, काली तिल, मशरूम, दही, सन्तरा, शकरकन्द, कीवी, शिमला मिर्च। काडलीवर आयल (दवा की दुकान पर मिलता है), अण्डा, मछली (सैलमन, मैक्रील, सारडीन, टूना), कूलर एवं Ac के सामने न सोएँ, ठण्डी चीजों का सेवन न करें।

कोलेस्ट्राल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे– अखरोट, बादाम, अलसी (तीसी), दालचीनी, ग्रीन-टी, काली तिल, लहसुन, सेब, तरबूज, केला, सन्तरा, कीवी, अबैकाडो, गाजर, टमाटर, पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, खीरा, लालमिर्च, हरी मटर, बीन्स– ये सभी चीजें मोटाई व चिकनाई को काटती हैं। (बिस्कुट, नमकीन, कोल्डड्रिंक्स एवं तली हुई चीजों का परहेज करें।) सभी सब्जियों का कच्चा सलाद खाना ज्यादा फायदेमन्द है।

हाई-वी.पी. के लिए घरेलू उपचार– तीसी (अलसी), मेथी या अड़हुल का फूल पानी में रात को भिगोकर सुबह पीये, नारियल का पानी, दही, लहसुन, किशमिश, अमरूद, केला, तरबूज, सन्तरा, नींबू, आँवला, अबैकाडो, प्याज, टमाटर, कीवी, शकरकन्द, ब्रोकली, करैला, सहजन। (कच्चा नमक एवं तली चीजें न खाएँ। अलग से नमक भी न खाएँ।)

नोट- धूम्रपान, शराब, पान-मसाला न खायें क्योंकि इन सबसे वी.पी. बढ़ता है।

दिमागी ताकत के लिए– अखरोट, बादाम, अनार, सफेद तिल, कद्दू का बीज, दही, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, काली तिल। (रात में बरफ वाली व ठंढी चीजें न खायें-पीये। जिनको नींद की शिकायत हो)।

अनिद्रा के लिए–मछली, अलसी (तीसी), कद्दू का बीज, दही, शहद, बादाम, गरम दूध।

थाइराइड के लिए– नारियल, काडलीवर आयल, (अश्वगन्धा जड़ी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें)। पत्तागोभी, हरी गोभी (ब्रोकली) कच्चा न खाएँ।

पैरालाइसिस (लकवा)– लहसुन, काली तिल, बैगन, मूली। (किसी एक्सपर्ट की राय से नियमित व्यायाम करें)।

स्त्री रोग– सन्तरा, नींबू, करौंदा, अमरख व अन्य सभी खट्टे फल तथा ठंढई-(खरबूजा के बीज-१०० ग्राम, तरबूजा के बीज-१०० ग्राम, छोटी इलायची व गोल मिर्च स्वादानुसार, मोटी सौंफ-१०० ग्राम, पोस्ता दाना-१०० ग्राम, गुलाब की पत्ती-५० ग्राम)।

चर्म रोगों के लिए घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-C की कमी से होते हैं। सन्तरा, शिमला मिर्च, दही, अखरोट, नीम की पत्ती, कीवी, शकरकन्द, नींबू व सभी खट्टे फल मुँहासें व अन्य सभी चर्म रोग में लाभदायक है। **न खाएँ**–कच्चा नमक, चाय, चाकलेट, कोल्ड्रिंक, तली चीजें, मलाई, खोवा, अजवाइन एवं मांस इत्यादि। पानी ज्यादा पीयें।

शरीर के विकार को दूर करने वाले भोजन– सभी खट्टे फल जैसे- नींबू, संतरा इत्यादि, शलजम, शिमला मिर्च, अखरोट, हल्दी, काली मिर्च, लहसुन, खीरा, हरी गोभी (ब्रोकली), छिलके वाली दाल, गेहूँ की दलिया।

शरीर को ठंडा रखने वाले फल एवं सब्जियाँ– नारियल, खरबूजा, तरबूजा, संतरा, नींबू, आम, कीवी, सेब, खीरा, टमाटर, पत्तागोभी, ब्रोकली, कटहल, गेहूँ के ज्वार इत्यादि।

नोट- ऊपर लिखी चीजों को नित्य भोजन में शामिल कर बदल-बदल कर लेने से रोग जल्द ही दूर हो जायेंगे।

पञ्चाङ्ग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रूप से पाँच प्रकार की गणना होती है—सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियों में सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष कहते हैं तथा जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करे उसे सौर मास तथा जितने समय में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते हैं। जिस दिन चन्द्रमा सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के समय को चान्द्रमास कहते हैं। एक इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच को सावन दिन कहते है। नक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। १ वर्ष=३६५ दिन, १५ घटी ३० पल, २२।। विपल का होता है। तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण नामक पांच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते हैं। सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। इससे भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रात:काल ६ बजता है।

दिनमान—सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि—जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२×१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है तथा १६वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती है, जब फिर अमावस्या होती है तब ३० तिथियाँ बीत चुकती है। इसलिए अमावस्या की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि—सूर्य चन्द्रमा की गतियाँ सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का मान भी सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है। कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही बार में पूरी होती हैं और बार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस बार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वही मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवहार में नहीं मानी जाती है। ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अधम कहते हैं। प्राय: कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो बार मानी जाती है। इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं। इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षों के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत के लिये अनिष्ट कर होता है। शुक्ल पक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण—आधी तिथि जितने समय में बीतती है इसको करण कहते हैं। करण कुल ११ होते हैं। इसके नाम ये हैं—वब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र—तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीखता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं। इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन, १९ घटी, १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन—आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायँ कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या—ये छ: राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मकर, मीन—ये छ: राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं—उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भ होता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण—किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्टयादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है।

योग—अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हों उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आने वाला वर्तमान योग होता है। योग कुल २७ योग होते हैं—१. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए महामृत्युंजय वैदिकमंत्र जप की विधि ॥

आचमन कर प्राणायाम करके शान्तिपाठ, गणेशस्मरण करने के पश्चात् संकल्प, विनियोग, न्यास, ध्यान करने के अनन्तर महामृत्युञ्जयमंत्र का जप करना चाहिए। **संकल्प**–देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पमानाऽखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादा-दीर्घायुष्यं सततारोग्यताप्राप्त्यर्थं अमुकसंख्यापरिमित-श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।। **विनियोग**–अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषय:, पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्ति: श्री बीजं, महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोग:। **ऋष्यादिन्यास**– ॐ वामदेव कहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नम: मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नम: वक्त्रे। ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नम: हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नम: लिङ्गे। ॐ श्रीं बीजाय नम: पादयो:।। **करन्यास**–ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु:साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।। **हृदयादिन्यास**– ॐ हौं जूं स: भूर्भुव: स्व: त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नम:। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु:साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्। **पदन्यास**– त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवो:। सुगन्धिं दृशो:। पुष्टिवर्धनम् मुखे। उर्वारुकं गण्डयो:। इव हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्यो: गुह्ये। मुक्षीय उर्वो:। मा जान्वो: अमृतात् पादयो:। मूलमंत्र से व्यापक कर ध्यान करना चाहिए। **ध्यान**– हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाऽक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्। अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभान्तं त्रिनेत्रं भजे।। ध्यान के पश्चात् मानसोपचार पूजन करके मूलमन्त्र का जप करना चाहिए। **मानसोपचारपूजन**– ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। **जपार्थमंत्र**–ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुव: स्वरो जूं स: हौं ॐ।। जप करके देवता के दक्षिणकर में जप समर्पण करते हुए निम्न प्रकार मन्त्र बोलना चाहिए। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।१।। मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगै: पीडितं कर्मबन्धनै:।।२।। तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदामृड। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रञ्च त्र्यम्बकम् ।।३।। जपसाङ्गता संसिद्धि हेतु कामना के अनुसार वस्तु से, दूध-घृत से संसिक्त अपामार्ग (चिचिड़ी या लटजीरा) की समिधा से जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिए।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए शताक्षरागायत्री मंत्र की जप विधि ॥

ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठा ऋषयो गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टप्छन्दांसि सवित्रिजात वेदस्त्र्यम्बको देवता: गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तय: अरिष्टशान्तये जपे विनियोग:।। **ऋष्यादिन्यास**– विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्यो नम: शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नम: मुखे। सवित्रिजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नम: हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानिगुह्ये। त्रिष्टुबक्षराणिशक्तये नम: पादयो:।। **हृदयादिन्यास**– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नम:। ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसे सुनवामसोममारातीयतो निदहातिवेद: शिखायै वषट्। ॐ स न: पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्नि: कवचाय हुम्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्राय फट्।। **ध्यान**- स्मर्तव्याखिललोकवर्तिसततं यज्जङ्गमस्थावरं व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते-तद्गतकृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं मह:।। **होमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्र**– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।। ॐ जातवेदसे सुनवामसोममारातीयतो निदहाति वेद: सन: पर्षदतिदुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि:।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

सन्तानप्रद मंत्र– ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।। ॐ कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा। यथा वरेण देवानामदितिर्वज्रपाणिना।।

बाल रक्षा के लिए धूप–लाख, नीम के पत्ते, बाँस का छिलका, शिवजी पर चढ़े फूल, राई, लहसुन, गाय का घी, अगर इन सबको एक में मिलाकर धूप देने से पूतना तथा अन्य बाल ग्रह का प्रकोप नष्ट हो जाता है। धूप देने के समय '**खुं, खुर्दनं, हुं फट् स्वाहा**' इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

मृतसंजीवनी मंत्र– ॐ हौ जूँ स: ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: जूं हौं ॐ।

द्वादशाक्षर मृत्युञ्ज मंत्र– ॐ जूँ स: पालय पालय स: जूँ ॐ।

पुराणोक्त-मृत्युञ्जय मंत्र– ॐ मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नम:।।

अथ वर-कन्या नक्षत्र-मेलापक विचारोपयोगी होड़ा चक्र

अक्षर	चू,चे चो,ला	ली,लू ले,लो	अ,ई उ,ए	ओ,वा वी,वु	वे,वो का,की	कु,घ ङ,छ	के,को हा,ही	हू,हे हो,डा	डी,डू डे,डो	मा,मी मू,मे	मो,टा टी,टू	टे,टो पा,पी	पू,ष ण,ठ
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा०	उ०फा०	हस्त
राशि	मेष	मेष	मेष१ वृष३	वृष	वृष२ मिथुन२	मिथुन	मिथुन३ कर्क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह१ कन्या३	कन्या
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु.२ मानव२	मानव	मानव३ जल.१	जलचर	जलचर	चतुष्पद (वनचर)	चतुष्पद (वनचर)	चतु.१ (वनचर) मानव३	मानव
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व
राशीश	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल१ शुक्र३	शुक्र	शुक्र२ बुध२	बुध	बुध३ चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य१ बुध३	बुध
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि

अक्षर	पे,पो रा,री	रू,रे रो,ता	ती,तू ते,तो	ना,नी नू,ने	नो,या यी,यू	ये,यो भा,भी	भू,धा फा,ढा	भे,भो जा,जी	खी,खू खे,खो	गा,गी गू,गे	गो,सा सी,सू	से,सो दा,दी	दू,थ झ,ञ	दे,दो चा,ची
नक्षत्र	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
राशि	कन्या२ तुला२	तुला	तुला३ वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु१ मकर३	मकर	मकर२ कुम्भ२	कुम्भ	कुम्भ३ मीन१	मीन	मीन
वर्ण	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मानव	मानव३ कीट१	कीट	कीट	मानव	मानव॥ चतु३॥	चतुष्पद	चतु१॥ जल२॥	जलचर२ मानव२	मानव	मानव३ जलचर१	जलचर	जलचर
योनि	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
योनिवैर	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	बु.२ शुक्र२	शुक्र	शुक्र३ भौम१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गुरु१ शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३ गुरु१	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१-।।वर्णगुणचक्र।। वर का वर्ण

कन्या का वर्ण	वर्ण	ब्रा०	क्ष०	वै०	शूद्र
	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

२-वश्यगुण । वर का वश्य

कन्या का वश्य	वश्य	च०	मा०	ज०	व०	की०
	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	॥	०	१
	जलचर	१	॥	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

६-गण-गुण । वर का गण

कन्या का गण	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

३-तारागुण/ऊपर वर-तारा, पार्श्व में कन्या-तारा

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५-ग्रहमैत्रीगुण । ऊपर वर का ग्रह, पार्श्व में कन्या का

ग्रह	सू०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
सू०	५	५	५	४	५	०	०
च०	५	५	४	१	४	॥	॥
मं०	५	४	५	॥	५	३	॥
बु०	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ०	५	४	५	॥	५	॥	३
शु०	०	॥	३	५	॥	५	५
श०	०	॥	॥	४	३	५	५

४-योनिगुण । ऊपर वर की योनि, पार्श्व में कन्या की योनि

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

वर्ग तथा वर्गेशचक्र

वर्ग	अ	क	च	ट
स्वामी	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्ग	त	प	य	श
स्वामी	सर्प	मूषक	मृग	मेष

उक्त वर्गों में अपने से पाँचवें वर्ग को परस्पर सभी वर्ग शत्रु मानते हैं। चक्र में जो ऊपर-नीचे हैं, परस्पर शत्रु हैं।

७-भकूटगुण। ऊपर वर राशि, पार्श्व में कन्या राशि

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिंह	क०	तुला	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

युञ्जाप्रीतिबोधक चक्र

पतिश्रेष्ठ	दोनों में सुमति	कन्या श्रेष्ठ
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा	ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा

८ नाड़ीगुण। वर की नाड़ी

कन्या की नाड़ी	नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

कुज (मंगली) दोष

१-जन्मकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में से एक या एक से अधिक में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से कोई पापग्रह अकेले या साथ-साथ स्थित हो।

२-चन्द्रकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से एक या अनेक पापग्रह एक या अनेक स्थानों में स्थित हों। उपरोक्त स्थितियाँ वर-कन्या जिसकी कुण्डली में होंगी वह कुजदोष से युक्त होगा।

वर की कुण्डली में शुक्र के द्वितीय-द्वादश दोनों स्थानों में पापग्रह हों, या शुक्र पापयुक्त हो, अथवा शुक्र से सप्तम-अष्टम-द्वादश में से किसी में पापग्रह हो तो उसकी पत्नी के लिए मारक स्थिति बनती है।

विवाहलग्न में ग्रहों के विंशोपक बल और शुभस्थान बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्रमा	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥	विंशोपकबल

विवाह लग्न से-सूर्य, शनि, राहु, केतु ३।६।८।११ में, मङ्गल ३।६।११ में, चन्द्रमा २।३।११ में, बुध और गुरु १।२।३।४।५।६।९।१०।११ में तथा शुक्र १।२।४।५। ९।१०।११में स्थित हो तो शुभद होते हैं। उक्त शुभद स्थानों में स्थित ग्रहों के चक्राङ्कित विंशोपक बलों का योग करने से लग्न का विंशोपक बल ज्ञात होता है। यद्यपि ग्रहों के चक्र में उल्लिखित बलों का योग करने पर २१॥ विश्वा है, जो २० विश्वा से अधिक है। विंशोपक बल २० विश्वा ही कहा है, राहु-केतु में से कोई एक ही ग्रह उपरोक्त स्थान में रहेगा, दूसरा नही, इस कारण २० विश्वा से अधिक बल नहीं होगा। विंशोपक बलों का योग ५ विश्वा से अल्प त्याज्य है। ५ से १० तक साधारण, १० से ऊपर १५ तक मध्यम तथा उससे ऊपर २० तक उत्तम होता है। यदि और कोई लग्न न मिल सके तो साधारण विंशोपक बल वाली लग्न को भी ग्रहण किया जा सकता है।

कुण्डली मिलाने की रीति

स्त्री-नाशक या पति नाशक जो योग है, उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पाप-ग्रह का होना प्राय: पति-नाशक या पत्नी नाशक है। इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। इसके लिए पण्डितों का अनुभव है कि, सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पाप-ग्रह होते हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए।

द्वितीय, सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश-अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तमेश में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग भी प्राय: वैधव्य-सूचक होते हैं। एकादश या पञ्चम में भी विशेष पाप योग वैधव्यसूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो वह विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठवें या आठवें चन्द्रमा हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें पाप ग्रह हों, लग्न में चन्द्रमा और साँतवें में मंगल हो तो भी वैधव्य कारक योग होता है।

यदि कन्या का प्रबल वैधव्य योग हो तो अश्वस्थ विवाह, कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाए तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता है, ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है। लग्न को शरीर चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है।

गणना जन्म नाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण (मुण्डन), गोचर विचार, मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म नाम ही प्रधान है, जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हो तो अन्तिम नाम ग्रहणकर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हो और दूसरे का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म नाम ग्रहणकर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्राय: प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिए माता-पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित **"कात्यायिनी देवी"** का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धा पूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह मे आने वाले विघ्न दूर होते है एवं विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि–

यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठकर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कड़ुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिए।

जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जपकाल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस मंत्र का जप जपकर्त्ता को पान खाते हुए करना चाहिए। इस मंत्र का ४१ हजार पुरश्चरण है। प्रथम दिन मंत्र का १ हजार जाप करें व इसके बाद २० दिनों तक प्रतिदिन दो हजार मंत्र का जाप करें। जपकाल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिए। अनुष्ठान के अंत मे दशांश हवन, तर्पण तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।

भोजन में पीले रंग की मिठाई अवश्य रखें।

मंत्र—

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोप सुत: देवि पतिं मे कुरु ते नम: ॥

सुन्दरकाण्ड अथवा हनुमान चालीसा के अखण्ड पाठ का

गणनागुणैक्य (मेलापक) सारिणी

वर के नक्षत्र (स्तम्भ) — कन्या के नक्षत्र (पंक्ति)

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.१	कृ.३	रोहि.	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त
अश्वनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१९	२३॥	३१॥	२८	२१	२५	१५॥	११	९
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३१॥	२३॥	२५॥	२०	१८	२६	२१॥	२०
कृत्तिका१	२७॥	२९	२८	१८	११	१७॥	२१	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१४॥	१८	२०	१५॥	१५॥
कृत्तिका३	१८॥	२०	१९	२८	२१	२७॥	१८॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२०	२२	२१	२१
रोहिणी	२३॥	२३॥	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	१०॥	२४॥	२६	२५	२६
मृगशिरा२	२३॥	१४॥	१९॥	२८॥	३५	२८	१९	२४	२३॥	२७	२०	२२	१९॥	१५॥	२३॥	२२॥	२६
मृगशिरा२	२७	१८	२३	२०॥	२७	२०	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५	२३॥	१९॥	२७॥	३०॥	३४
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१२॥	२०	१३	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥
पुनर्वसु३	१९	२६	२३	२०॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥
पुनर्वसु१	२१॥	२८॥	२५॥	२२	२५	२६	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥	१६॥	२०॥	१५॥	१७	१८
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२६	१९	१२	१८	२१॥	३५	२८	३०	१७॥	१३॥	२३॥	२६	२७
श्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२०	१३	१२	१५	२८॥	२९	२८	१५	१५॥	१७॥	२०	२०
मघा	१९	१९	१५॥	१६॥	९॥	१७॥	२१॥	२१॥	२०॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१५॥	१५॥
पू.फाल्गुनी	२५	१७	१९	२०	२३॥	१५॥	१९॥	२७॥	२६॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२३	२१॥
उ.फाल्गु.१	१६॥	२५	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१७	१६
उ.फाल्गु.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९	२८	२१	१६॥	२४	१८	२८	२७
हस्त	१०	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२३॥	१९	२८	२२	१७॥	२१॥	१६	२६	२८
चित्रा २	१३	६	१९	२३॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०	१२	२६	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२७
चित्रा २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	१९॥	११॥	२५॥	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२०
स्वाती	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८	२७॥	१३॥	१२॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥
विशाखा३	२२॥	२३॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२०	२०	२१	२१	१७॥	१७॥	१९॥	१७॥	१७॥	१८॥
विशाखा१	१६॥	१७॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१३॥	१३॥	१८	१८	१४॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९
अनुराधा	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२०॥	२५	१८	२०	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२६
ज्येष्ठा	१२	१७॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	५	९॥	२०	२५	३१	२३॥	१६॥	१३	१२
मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७	२३॥	२४	१८	९॥	१३	१३
पूर्वाषाढ़१॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८॥	२७
पूर्वाषाढ़३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	१९	१७	२५	२७॥	२६
उत्तराषाढ़१	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	९॥	९॥	२५	२६	२८॥	२७॥
उत्तराषाढ़ ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२३॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	१३	४॥	२०	२१	२६	२५
श्रवण १॥	२८	२८	१४॥	१२	१८	२७	२४	२१॥	२२॥	२७	२५	१४	५॥	१७॥	१९	२४	२५
श्रवण २॥	२७	२७	१३॥	११	१७	२६	२३॥	२१	२२	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥
धनिष्ठा२	२०	११	२६	२३॥	२०	१२	९॥	१६॥	१६	२२	१३	२८	१८॥	४॥	१२॥	१६	१७॥
धनिष्ठा२	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१२	१९	१८॥	१३॥	४॥	१९॥	२४॥	१०॥	१८॥	१७॥	१९
शततारका	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२७	२०	१२	१३	८	१४॥	२०॥	२६॥	२०॥	१२॥	११॥	८॥
पू.भाद्रपदा३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१८	१३	२०	१३॥	१८॥	२४॥	१६॥	१५॥	१५॥
पू.भाद्रपदा१	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१९	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१६॥
उत्तराभाद्रपदा	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥	२७	१४	१३	२३॥	२३॥	२५॥	२६॥

नक्षत्र	चित्रा२	चित्रा२	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.१॥	पू.षा.३॥	उ.षाढ़१	उ.षाढ़३	श्र.१॥	श्र.२॥	धनि.२	धनि.२	शत.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भाद्र.	रेवती
अश्वनी	१३	२२॥	२७॥	२२॥	१८॥	२५॥	१४	१३	२५	२६	२४॥	२६	२७	२६	२०	२०	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	४	१३॥	२९॥	२१॥	१७॥	१६॥	१८॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२७	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२६॥
कृत्तिका१	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१५॥	१९॥	२५॥	२४॥	१७॥	१९	१४	१५॥	१२॥	११॥	२५	२५	२७	१९	१७॥	१९॥	११॥
कृत्तिका३	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२०॥	२४॥	३०॥	२०	१३	१४॥	९॥	१४	११	१०	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२०	१९	१५॥	९॥	१५॥	२९॥	२३॥	१४	१९॥	२१	१३॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृगशिरा२	१३	१२	२५	१८॥	२४॥	२१॥	२४॥	१५	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२६	१३	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७
मृगशिरा२	२१	१४	२७	२०॥	१५	१२	१५	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२४॥	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१६॥	२६॥
आर्द्रा	२७	२०	२७	२०	१४॥	१८	४	१६	२८	२७	२७	२३॥	२३॥	२३	१७॥	१९	१२	१७	१९	२६॥	२६॥
पुनर्वसु३	२६॥	१९॥	२७	२१	१५॥	२१॥	७	१४	२७	२६	२६	२२॥	२३॥	२३	१८	१९॥	१३	१७	१९	२७	२६॥
पुनर्वसु१	२०	१९॥	२७	२१	१९	२५	१०॥	८	२१	२१॥	२१॥	२५	२६	२७	२२	१३॥	७	११	१७	२५	२४॥
पुष्य	१२	११॥	२६॥	२१	१९	१८	२१	१७	११	११॥	३२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२४॥	११॥	१६॥	१४॥	१९	२५	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१२	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२१॥	२४॥	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	३२	२४	१९	१९	९॥	३॥	३॥	४॥	१७॥	२३॥	२४॥	१७॥	१७॥	१८॥	१२
पू.फाल्गुनी	७॥	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	१८	१७	१७	२५	१९	१७॥	१८॥	३॥	९॥	१८॥	२३॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फाल्गु.१	१३॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥	२५	२५	२६	२०	१९	२०	११॥	१७॥	११॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फाल्गु.३	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१९	२८	१४	१४	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२४॥	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२६॥
हस्त	२८	२०	२६॥	१८॥	२१	२७	१४	१५	२७	२६	२७॥	२४	२५	२४॥	१८॥	१९	८॥	१३॥	१६॥	२६॥	२७॥
चित्रा २	२८	२०	१९	२६॥	२९	१३	२६	२७	१३	१२	२१	१७॥	१८	१७॥	१६॥	१७	२४	१७॥	२०॥	१०॥	२०॥
चित्रा २	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२७	१३	१२	२१	२५॥	२६	२५॥	२४॥	१९	२६	१९॥	१३॥	३॥	१३॥
स्वाती	२१	२८	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२१	२०	२५	१९	१९॥	१२॥
विशाखा३	२७॥	३४॥	१९	२८	१८	१७	२१॥	२७	२१	२०	१३	१७॥	१६॥	१६	३१	२५॥	२६	२१	१५	१३	५॥
विशाखा१	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२२॥	१५॥	१६॥	९॥	१२	११	११	२६	२६	२६॥	२१॥	२०	१८	१०॥
अनुराधा	१२	७॥	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	११॥	१४॥	२२॥	२५	२६	२६	१३	१३	२२	२६॥	२५	१८	२६
ज्येष्ठा	२५	२०॥	१५॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१६॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२६	१९	१२	१०॥	२१	२०
मूल	२६	२६	२१	२६	२३॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५	२०	२८॥	२१॥	१४॥	१६	२५	२६॥
पूर्वाषाढ़१॥	१२	१२	२७	२०	१७॥	१६॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३	७	१५॥	२३॥	३०॥	३१	२३	३२
पूर्वाषाढ़३॥	११	११	२६	१९	१७॥	१६॥	१८॥	२७	२६॥	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	७॥	१४॥	२२॥	२८॥	३१॥	२३॥	३२॥
उत्तराषाढ़१	२०	२०	१८	१२	१०॥	२४॥	१८॥	२५॥	३२॥	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उत्तराषाढ़ ३	१७॥	२४॥	२२॥	१६॥	१३	२७	२१	१६॥	२३॥	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	२९॥	३०॥	२१॥
श्रवण १॥	१९	२६	२२॥	१६॥	१३	२७	२२	१७॥	२३	२४॥	१६	२५	२८	२७	२८	२०	१८॥	२२॥	२८॥	२८॥	२२॥
श्रवण २॥	१८॥	२५॥	२२	१६	१३	२७	२२	१७	२३	२३॥	१५	२४	२७	२८	२९	१९॥	१८	२२	२९॥	२९॥	२३॥
धनिष्ठा२	१६॥	२३॥	२४॥	३०	२७	१२	२६	२१	७	८॥	१६॥	२५॥	२७	२८	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
धनिष्ठा२	१८	१९	२०	२५॥	२७	१२	२६	२९॥	१५॥	१५॥	२३॥	१८॥	२०	१९॥	१९॥	२८	३३	२८॥	१८	७	१४
शततारका	२५	२६	१९	२६	२७॥	२२	२०	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८	२४॥	३३	२८	१९	८॥	१७	१६
पू.भाद्रपदा३	१८॥	१९॥	२६	२१	२२॥	२७॥	१२	१५॥	२९॥	२९॥	२९॥	२४॥	२४॥	२४	२०	२८॥	१९	२८	१७॥	२२॥	२०
पू.भाद्रपदा१	१९॥	१२॥	१९	१४	२०	२५	९॥	१५	२९	३०॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उत्तराभाद्रपदा	९॥	३॥	१९॥	१२	१८	१९	२१	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	२४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
रेवती	२०	२०॥	१३॥	११॥	४॥	१०॥	२६	२१	२६॥	३०	२९॥	२९॥	१९॥	२०॥	२१॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८

यज्ञोपवीत-विवाहादि हेतु सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्धि विचार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	गुरु
शुभ स्थान	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्य	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१
निन्दितस्थान	४।८।१२	४।८।१२	१।३।६।१०

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार में वटु का सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्ध तथा विवाह में वर का सूर्य, कन्या का गुरु तथा दोनों का चन्द्र शुद्ध होना चाहिए। उच्च राशि (मेष) में सूर्य और उच्च राशि (कर्क) में बृहस्पति जब रहे तब ४।८।१२ वें में होने पर भी शुभ माने गये हैं।

जन्मराशि से २।५।९वें में सूर्य हो तो, १३दिन छोड़कर शेष दिनों में सूर्य शुभ कहा गया है।

जन्मराशि से अनिष्ट स्थानीय (१।२।४।५।७।८।९।१२वें)सूर्य हो और सूर्यस्थ राशि से आगे वाली राशि शुभ ग्रह की हो तो सूर्यस्थ राशि का प्रारम्भ से १३ दिनों को छोड़कर शेष दिनों का सूर्य शुभ माना गया है।

पूज्य सूर्य होने पर सूर्य की पूजा तथा लाल वस्तुओं का दान करने से शुभ होता है।

गर्भाधान,सीमन्त,युद्ध,दान, व्रतबन्ध, विवाह, रति, अन्नाशन, व्रतोपवास और राज्याभिषेक में १२वाँ चन्द्र भी ग्राह्य है। २।५।९वाँ चन्द्र शुक्लपक्ष में तथा ४।८।१२वाँ चन्द्र कृष्णपक्ष में शुभ होता है।

उच्चस्थ, स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रगृहस्थित, वर्गोत्तमस्थ गुरु ४।८।१२वाँ भी ग्राह्य है। नीच या शत्रुराशिस्थ हो तो शुभ स्थानों में रहने पर भी त्याज्य है।

रजस्वला होने के पश्चात् यदि कन्या का विवाह हो तो गुरु-शुद्धि देखना आवश्यक नहीं। केवल लग्न, चन्द्रमा और तारा की शुद्धि में विवाह किया जा सकता है। अत: इस प्रकार परिहार और दान-पूजा को विद्वान् द्वारा भली-भाँति समझकर मङ्गल कार्य करना चाहिए।

नूतनवधू-द्वारा पाक कर्म (रसोई) का मुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ प्रशस्त हैं, तथा ४।९।१४ और ३० तिथियाँ त्याज्य है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	कृत्तिका, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ है।
लग्न-शुद्धि	स्थिर (२।५।८।११) लग्न में, लग्न से चतुर्थ स्थान शुभग्रह से युक्त अथवा शुद्ध हो। लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो। लग्न, से सप्तम स्थान में बलवान ग्रह व्यवस्थित हो। ऐसे समय में (उपरोक्त लग्नो मे) नूतन (नई) वधू के द्वारा पाककर्म (रसोई बनाना) शुभ कहा है।

वधूप्रवेश-मुहूर्त

विवाह के दिन से १६ दिनों के अन्तर्गत (२।४।६।८।१०।१२।१४।१६) सम दिनों मे से किसी दिन में तथा विषम दिनों (५।७।९)में से किसी दिन में वधूप्रवेश कराना शुभ होता है। यदि वधूप्रवेश १६ दिनों मे न हो सके तो प्रथम मास के विषम (१७।१९।२१।२३।२५।२७।२९वें) दिनों में, यदि प्रथम मास में न हो सके तो प्रथम वर्ष के विषम(३।५।७।९।११वें) मासो में तथा एक वर्ष की अवधि में भी वधू-प्रवेश न हो सकने की स्थिति में विषम (३।५) वर्षों में वधूप्रवेश शुभ होता है। ५वर्ष के पश्चात् वर्ष मास के सम-विषम का विचार न करके केवल शुभ मुहूर्त देखकर उसमें बली लग्नमें वधूप्रवेश कराना चाहिए।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३तिथियाँ, पूर्णिमा (१५) तथा कृष्णपक्ष की १ (प्रतिपदा) शुभ होती है।
वार	सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार ग्राह्य हैं। किसी आचार्य के मत से बुधवार त्याज्य कहा गया है, किन्तु मुहूर्त गणपति में बुधवार को मध्यम कहा है। सूर्य और मङ्गल का वार सर्वथा त्याज्य है। रिक्ता तिथियाँ (४।९।१४) और भद्रा करण भी त्याज्य है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, मघा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती शुभ हैं किन्तु वेधरहित होना चाहिए।
विशेष	जो वधूप्रवेश विवाह से १६ दिनों तक की अवधि में होने वाला हो, परन्तु १६ दिनों के भीतर ही पौष (धनु का सूर्य) चैत्र (मीन का सूर्य) हरिशयन और मलमास उपस्थित हो जाने पर इनको अवश्य वर्जित करना चाहिए।

विवाहार्थ वर के लिए सूर्यशुद्धि, कन्या के लिए गुरु शुद्धि तथा दोनों के लिए चन्द्रशुद्धि होनी चाहिए।

द्विरागमन-मुहूर्त

वधूप्रवेश के पश्चात् पतिगृह मे पिता के घर जाकर, पुन: पतिघर मे दूसरी बार आना ही द्विरागमन कहलाता है। विवाह से (१।३।५) विषम वर्षों मे वृश्चिक, कुम्भ और मेष राशिस्थ सूर्य के मासो, अर्थात् सौर मार्गशीर्ष (अगहन), फाल्गुन और वैशाख मासों मे पति की सूर्यशुद्धि, पत्नी की गुरुशुद्धि तथा दोनो की चन्द्रशुद्धि होने पर एवं गुरु-शुक्र के उदय रहने पर द्विरागमन शुभ होता है।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा (१) शुभद होती हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं।
नक्षत्र	अश्विनी,रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य,तीनों उत्तरा,हस्त,चित्रा,स्वाती, अनुराधा,मूल,श्रवण,धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र प्रशस्त है।
लग्न तथा लग्न शुद्धि	वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला और मीन लग्न शुभद होती हैं। लग्न से उपचय स्थानों (३।६।१०।११) मे से किसी स्थान में बृहस्पति हो,केन्द्र (१।४।७।१०) मे शुक्र हो, लग्न शुभग्रह से युक्त अथवा ग्रहरहित हो, केन्द्र में शुभग्रह हो और ३।६।११ भावों में पापग्रह हों तथा अष्टमभाव शुभग्रह से दृष्ट हो तो द्विरागमन शुभ होता है।
त्याज्य	पौष और चैत्र मासों में अर्थात् धनु, मीन के सूर्य में, हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल ११से कार्तिक शुक्ल,११ तक) में, मलमास में, गुरु-शुक्र के अस्त मे तथा सम्मुख या दाहिने शुक्र की स्थिति में द्विरागमन नहीं होना चाहिए, उक्त सभी समय त्याज्य है।
विशेष	यदि सम्मुख या दाहिने शुक्र रहे तो बालक, गर्भिणी और नववधू (द्विरागमन वाली) को एक पग भी नहीं चलना चाहिए, क्योंकि सम्मुख दाहिने शुक्र रहने पर यात्रा करने से बालक की मृत्यु,गर्भिणी का गर्भस्राव तथा नवोढा का वन्ध्या होना कहा है। शुक्र-पीछे और बाये शुभप्रद होता है।

विभाजन (बँटवारा) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा तथा दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार प्रशस्त है। मंगलवार और शनिवार त्याज्य हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती शुभद हैं।
लग्न शुद्धि	शुभग्रहों की लग्न में तथा लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों की स्थिति में विभाजन शुभ कहा है।

शल्यक्रिया (आपरेशन) का मुहूर्त

तिथि	४।९।१४ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण एवं शततारका नक्षत्र प्रशस्त हैं।

रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

४।९।१४ तिथियों में, रवि, मङ्गल, बुध, गुरु-शनिवारों में, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा आर्द्रा, पुष्य, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में; १।४।७।१० लग्नों में। लग्न से १।४।५।७।९।१०।११वें स्थानों में पापग्रहों की स्थिति में रोग से मुक्त हुए व्यक्ति को दोनों पक्षों में दिन या रात्रि में भद्रा, वैधृति, व्यतिपात, संक्रान्त्यर्क्ष में; चन्द्र-तारा शुद्धि में, लग्न से १०वें में शुभग्रह तथा ८वें में शुभ-पाप की स्थिति में रोग मुक्त स्नान करके आरोग्यार्थ यथाशक्ति दान करना चाहिए।

रजस्वलास्नान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ श्रेष्ठ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद और रेवती।
विशेष	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती तथा रेवती नक्षत्र में स्नान करने से शीघ्र गर्भधारण होता है।

रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान के पश्चात् अपने पति के स्पर्शयोग्य होती है, परन्तु देवता और पितृ कार्यों के लिए पाँचवें दिन योग्य होती है।

गर्भाधान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१२।१३
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा उत्तम है। अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य तथा चित्रा मध्यम है।
लग्न शुद्धि	गर्भाधान की लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रहों तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर, पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो तथा पुरुष ग्रहों से लग्न दृष्ट हो तो शुभ होता है।

गर्भाधान में त्याज्य

तीनों प्रकार के गण्डान्त, जन्म नक्षत्र, निधन तारा, अश्विनी-भरणी-मघा-मूल-रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, व्यतीपात और वैधृतियोग माता-पिता का श्राद्ध दिन, दिन का समय, परिघ का पूर्वार्द्ध समय, सन्ध्या समय, भद्रा, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टम लग्न, पापयुक्त लग्न, पति-पत्नी की चन्द्र व तारा की अशुद्धि, रिक्ता व पर्वतिथियाँ (४।६।८।९।१४।१५।३०) सूर्य, मङ्गल एवं शनिवार तथा रजोदर्शन से ४रात्रि पर्यन्त का समय गर्भाधान के लिए त्याज्य है।

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन का शुभाशुभ समय

मास- वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन। शुक्लपक्ष विशेष श्रेष्ठ।

तिथि- दोनों पक्ष की २।३।५।७।१०।१३ तथा १५ (पूर्णिमा) तिथियाँ और दिन का समय उत्तम होता है।

वार- चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उ० फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षाढ़ श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, उ० भाद्रपद, रेवती श्रेष्ठ हैं।

लग्न- २।३।४।६।७।९।१२ लग्नों में श्वेत वस्त्र में प्रथम रजोदर्शन उत्तम होता है।

मध्यम- १।११ तिथियाँ तथा कृत्तिका, पुनर्वसु, मघा, विशाखा, एवं मूल नक्षत्र मध्यम है।

अशुभ- भद्रा, निद्रा, संक्रान्ति, अमावस्या, रिक्ता, नन्दा, द्वादशी, संध्या, रात्रि, व्यतीपात, वैधृति, रुग्णावस्था, ग्रहण, पिता का गृह, कृष्ण वस्त्र और कुदृष्टि।

शान्ति करने से तथा गुरु व शुक्र से दृष्ट दृष्ट लग्न में शुभ होता है।

गर्भ के १० मासों के अधिपति

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	लग्नपति	चन्द्रमा	सूर्य

पुंसवन-सीमान्त संस्कारों का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ शुभ होती हैं। कृष्णपक्ष में दशमी तक।
वार	सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति। मतान्तर से सोम, बुध शुक्रवार प्रशस्त हैं। पूर्व के ३ उत्तम, पर के ३ मध्यम हैं।
नक्षत्र	मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, रोहिणी नक्षत्र शुभ है (परन्तु जन्म नक्षत्र से अतिरिक्त होने पर)।
लग्न शुद्धि	पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो। लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह स्थित हों ४।८।१२ स्थानों में एक भी पापग्रह न हों। चन्द्रमा १।६।८।१२ के अतिरिक्त स्थान में हो तो श्रेष्ठ होता है।

गर्भ से २।३सरे मास में पुंसवन तथा ४।६।८ वें मास में सीमान्त संस्कार किया जाता है। मासेश पुष्ट हो तथा दम्पति को चन्द्र-तारा बल प्राप्त हो। मिथुन को छोड़कर अन्य विषम राशि की लग्न तथा विषम नवांश होना चाहिए।

जातकर्म-नामकरण मुहूर्त

पुत्र (शिशु) की आयु और श्री की वृद्धि, ग्रह दोष के विनाश हेतु तथा सूतिका के अशुभ विच्छेद, बालग्रह-नाशार्थ और पुंसत्व की वृद्धि के लिए जातकर्म किया जाता है। बालक का जन्म सुनकर पिता सचैल स्नान करे (रात्रि में जन्म हो तो भी तत्काल सचैल स्नान करे) और स्वर्णादिक से (अपने समार्थ्यानुसार) श्राद्धादि करें। यहाँ श्राद्ध से तात्पर्य आभ्युदयिक श्राद्ध (नान्दीश्राद्ध) से है। यदि यह समय व्यतीत हो जाए तो जन्म से ११वें अथवा १२वें दिन जातकर्म तथा नामकर्म दोनों करें। पूर्वाह्न श्रेष्ठ, मध्याह्न मध्यम कहा है। अपराह्न, रात्रि नामकर्म में वर्जित है।

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियाँ भद्रा आदि दोष रहित होने पर शुभ हैं।
वार	सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार श्रेष्ठ है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभि०, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, रेवती शुभ हैं।
लग्न	२।५।८।११ लग्न, शुभग्रहों के नवांश शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ स्थानों में पापग्रह हैं तथा लग्न से ८।१२ स्थानों में शुभाशुभ कोई भी ग्रह न हो तो शुभ होता है।

सूतिका के सूतीगृह प्रवेश का मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ०फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षा०, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा तथा शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों में, रि० षष्ठी-अष्टमी को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ लग्नों में, शुभनवांश में, लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों तथा लग्न से ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर सूतिका को सूतीगृह में प्रवेश कराना चाहिए।

पुत्र-जन्म सुनकर पिता तत्काल वस्त्र सहित स्नान कर वृद्धिश्राद्ध (आभ्युदयिक श्राद्ध) स्वर्णादि से सामर्थ्यानुसार करे। यदि तत्काल न कर सके तो सूतकान्त में भी कर सकता है।

सूतिका को क्वाथ-औषधि पीने-खाने का मुहूर्त

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा अभिजित्, मृगशिरा और रेवती नक्षत्रों में, ३।६।९।१२ लग्नों में, रवि-सोम, गुरु-शुक्रवारों में, लग्न से ७।८।१२ स्थान ग्रहरहित होने पर, रिक्ता और अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में, लग्न में पूर्णचन्द्र के रहने पर सूतिका को औषधि क्वाथादि सेवन कराना चाहिए। जन्मराशि में औषधि सेवन वर्जित है।

खट्वारोहण (खाट पर सुलाने का मुहूर्त)-

जन्म के दिन से गिनकर १०।१२।१६।२२ वें दिनों में से किसी दिन में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित् तथा रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तथा अमावस्या से अतिरिक्त तिथियों में और शुभ वारों में पूर्व दिशा में शिर करके बालक को लेटाना चाहिए।

स्तनपान मुहूर्त–तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों में रिक्ता-अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में तथा स्थिर लग्न (२।५।८।११) में स्तनपान प्रशस्त होता है।

सूतिका को अन्नप्राशनोक्त तिथि, नक्षत्र, वारों में दुर्योगादि से रहित समय में पथ्य सेवन श्रेयस्कर होगा।

सूतिकास्नानमुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ उत्तम हैं। ३० (अमावस्या) मध्यम है। शेष तिथियाँ त्याज्य हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार उत्तम हैं। सोमवार-शुक्रवार मध्यम तथा बुधवार-शनिवार त्याज्य है।
नक्षत्र	हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और स्वाती श्रेष्ठ हैं। श्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और ज्येष्ठा मध्यम हैं। शेष त्याज्य हैं।

दोलारोहण मुहूर्त विचार

जन्म के दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिनों में से किसी दिन चन्द्र-तारा की अनुकूलता में २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथियों में, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्रों में, सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गिनने पर संख्या १ से ५ तक या २१ से २७ तक आती हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए शिशु को पूर्व दिशा में शिर करके माता या किसी सुवासिनी द्वारा सुलाया जाना चाहिए। उस समय चर लग्न शुभग्रह से युक्त हो। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा त्रिषडाय में पापग्रहों की स्थिति श्रेष्ठ होती है।

बालक को भूमि पर बैठाने का मुहूर्त

जन्म से पाँचवें मास में, मङ्गल की शुद्धि में वराह और भूमि का पूजन करके, कटिसूत्र बाँधकर बालक को भूमि पर बैठाने के पश्चात् बालक के समक्ष पुस्तक, लेखनी, शस्त्र, चाँदी, सुवर्ण आदि रखकर देखना चाहिए कि बालक किस वस्तु को ग्रहण करता है। जिसको ग्रहण करे उसी से बालक की वृत्ति जीवन में होती है।

शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् भम्युपवेशन के लिए प्रशस्त हैं।
शुभ तिथि	रिक्ता (४।९।१४) को छोड़कर अन्य तिथियाँ शुभ हैं।
शुभ वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

प्रसूतिका के जलपूजन का मुहूर्त

प्रसव दिन से एक मास (३० दिन) व्यतीत होने पर चन्द्र-बुध-गुरुवारों में रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में (अर्थात् १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में) मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल तथा श्रवण नक्षत्रों में स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुआँ-पूजना) श्रेष्ठ है।

जलपूजन में प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु, शुक्र का अस्त समय, रिक्ता और अमावस्या तिथियाँ त्याज्य हैं।

जन्म से प्रथमादि मासों में बालक के दाँत निकलने का फल

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं का नाश	छोटे भाई का नाश	बहिन का नाश	माता का नाश	बड़े भाई का नाश	अतुल भोग	पिता का सुख	शरीर की पुष्टि	लक्ष्मी	विशेष सुख	विशेष सुख	धन-सम्पत्ति का लाभ

विशेष– जो शिशु दाँत सहित जन्म लेता है, वह अपने माता-पिता के लिए मृत्युसूचक होता है। जिसे जन्म से ५ मास की अवधि में पहले ऊपर वाली दन्त-पंक्ति उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा कुल को नाश करेगा। इसकी विधिवत् शान्ति कराई जानी चाहिए।

अन्नप्राशन-मुहूर्तबोधक चक्र

मास	कन्याओं का जन्म से पाँचवें आदि विषम मासों में तथा पुत्रों का छठें आदि सम मासों में अन्नप्राशन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ तथा पूर्णिमा (१५) तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार प्रशस्त है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा और रेवती शुभ हैं।
शुभ लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१०।११उत्तम है। लग्न से दशम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। शेष केन्द्र-त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ में पापग्रह शुभद होते हैं।
त्याज्य	जन्म लग्न व जन्म राशि से अष्टम राशि की लग्न तथा नवांश, १।६।८ स्थानों में स्थित चन्द्रमा, तिथिक्षय, रात्रि का समय, भद्रा, व्यतिपातादि।

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त

१. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २. वैशाखशुक्ल तृतीया (अक्षयतीज) ३. आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी) ४.कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तथा दीपावली प्रदोषवेला चार स्वयं सिद्धि मुहूर्त हैं। इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांगशुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होने से इन्हें **साढ़े तीन मुहूर्त** कहते हैं।

कर्णवेध मुहूर्तबोधक चक्र

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।१२।१३।१५ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१० तिथियाँ शुभ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न उत्तम है एवं इन्हीं के नवांश उत्तम है। लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। लग्न से १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभद होते हैं, लग्नस्थ गुरु श्रेष्ठ कहा है। उत्तरायण में, चन्द्र-तारा की शुद्धि में पूर्वाह्न में, जन्म से १२वें या १६वें दिनों में अथवा ६।७।८ मासों में या विषम वर्षों में कर्णवेध शुभ होता है। समय से उचित ढंग से कर्णवेध होने से व्यक्ति को आन्त्र वृद्धि (हार्निया) जैसे भयानक रोग के होने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।
त्याज्य	जन्ममास, जन्म नक्षत्र, रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ, गुरु-शुक्र का अस्त समय, भद्राकरण, समवर्ष, चैत्र और पौष मास (मीन और धनु में सूर्य के रहने का २ मासका समय अर्थात् दोनों खरमास) हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल के ११से कार्तिक शुक्ल ११ तक) तथा मध्याह्न के पश्चात् का समय अर्थात् दिन का उत्तरार्द्ध कर्णवेध के लिए त्याज्य है।

कन्याओं के नासिकावेध का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ और पूर्वाह्न का समय शुभ है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका एवं रेवती नक्षत्र नासिकावेध (नाक छेदने) के लिए उत्तम हैं।

मुण्डन (चौल) संस्कार का मुहूर्त चक्र

वर्ष-अयन-मास	गर्भाधान समय से अथवा जन्म समय से तीसरे, पाँचवें, सातवें वर्षों में (मनु के मत से प्रथम वर्ष में भी) उत्तरायनसूर्य में परन्तु चैत्रमास को छोड़कर अन्य मासों में मुण्डन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१०।११ तिथियाँ शुभप्रद है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, अभिजित श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ हैं।
लग्न व लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन राशियों की लग्न एवं इन्हों के नवांश प्रशस्त है, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभप्रद होते है। लग्न से केन्द्र में पापग्रह स्थित होकर अशुभ फल देते है। अष्टमस्थ सभी ग्रह नेष्ट फल देते है, केवल शुक्र शुभप्रद होता है।
त्याज्य ग्राह्य	जन्मलग्न से अष्टम लग्न, भद्रा करण, ३,५,७ तारायें, चैत्र मास, प्रथम सन्तान के मुण्डन के लिए ज्येष्ठ मास भी, बालक जिसका मुण्डन किया जाना हो उसकी अवस्था ५ वर्ष से अल्प हो और बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो उस समय मुण्डन निषिद्ध है। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक वय का हो तो माता के गर्भिणी होने पर भी मुण्डन करने में कोई दोष नहीं होगा। चन्द्रमा उच्च में या मित्र वर्ग में या अपने वर्ग में होते हुए त्रिकोण में हो तो दुष्ट तारा का दोष न होकर शुभफल होता है।

सामान्य (मुण्डन के अतिरिक्त) क्षौर मुहूर्त

क्षौर-श्मश्रु कर्म (बाल तथा दाढ़ी बनवाने) के लिए, वार-तिथि-नक्षत्र जो मुण्डन के हेतु कहे हैं, वही प्रशस्त है। सूर्य, मङ्गल और शनि इन पाप-ग्रहों के वार वर्जित है परन्तु ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मङ्गलवार तथा वैश्य और शूद्र के लिए शनिवार शुभ है। रात्रि मे, बिना आसन के, संध्या में, यात्रा के दिन, स्नान के पश्चात् शरीर में उबटन लगाकर, भोजन करने के पश्चात् क्षौरकर्म (बाल, दाढ़ी, नख आदि का निकृन्तन) निषिद्ध कहा है।

विशेष- यज्ञ में, विवाह में, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय दाढ़ी-बाल-नख कटवाया जा सकता है। राजकार्य में नियुक्त व्यक्ति, रूपजीवी (नट, नर्तक, भाँड, बहुरूपिया आदि) किसी दिन किसी समय नख-बाल कटवा (बनवा) सकता है।

अक्षरारम्भमुहूर्तचक्र

तिथि	कुयोगादि रहित २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार तथा शुक्ल पक्ष शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण और रेवती शुभ है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२ लग्न और इन्हीं के नवांश उत्तम कहे गये है। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३।६।११ में पापग्रह शुभप्रद कहे गये है। बुध, गुरु, शुक्र स्वगृही लग्न में हो या लग्न में बली शुभग्रह हो।

जन्म से पाँचवे वर्ष में उत्तरायण में गणेश-लक्ष्मी, सरस्वती और विष्णु का पूजन करके शिशु से नूतनाक्षर लेखनारम्भ कराना चाहिए।

विद्यारम्भमुहूर्त

अक्षरों का सुपुष्ट ज्ञान हो जाने पर उत्तरायन में कुम्भार्क का एक मास का समय छोड़ कर शेष समय में अर्थात् सौर फाल्गुनमास छोड़कर शेष मासों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में, रवि-बुध-गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा और रेवती नक्षत्रों में और ऐसे लग्न मे जिससे केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह हों सभी प्रकार की विद्याओं का प्रारम्भिक अध्ययन कराना चाहिए।

अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि विद्याओं का आरम्भ ४।९।१४ तिथियों में, रवि, मंगल और शनिवारों में ज्येष्ठा, मघा, श्लेषा, तीनोंपूर्वा, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा नक्षत्रों में किया जाना शुभद होता है।

व्रतबन्ध-(उपनयन)काल ज्ञान

व्रतबन्ध-(उपनयन)काल ज्ञान- व्रतबन्ध (उपनयन) संस्कार के तीन भेद (१) नित्य (२) काम्य (३) गौण कहे गये है। श्रौत-स्मार्त कर्म साधन और द्विजत्व प्राप्ति के हेतु उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार किया जाता है। ब्राह्मण कुमारों का जन्म से ५वें सौरवर्ष मे ब्रह्मवर्चस की कामना से किया गया उपनयन काम्य, ८वें वर्ष मे नित्य तथा १६वें वर्ष मे गौण होता है। क्षत्रिय कुमारों का बल की कामना से ६ठवे वर्ष में किया जाने वाला उपनयन काम्य, ११वे वर्ष में किया जाने वाला नित्य तथा २२वें वर्ष में गौण कहा गया है। वैश्य कुमारों का ८वें वर्ष मे धन कामना से किया जाने वाला उपनयन काम्य, १२वें वर्ष मे नित्य तथा २४वें वर्ष का उपनयन संस्कार गौण कहा जाता है। इसमें सौर वर्ष ही मान्य है।

उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार-मुहूर्त

अयन व मास	उत्तरायन मे माघादि ६ मासो मे हरिशयन से पूर्व अर्थात् आषाढ़ शुक्ल दशमी तिथि तक। चन्द्रमा, सूर्य और गुरु की शुद्धि होनी चाहिए।
पक्ष एवं तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियाँ प्रशस्त हैं। दिन का पूर्वाह्न उत्तम, मध्याह्न मध्यम तथा अपराह्न (दिन का तीसरा त्रिभाग) त्याज्य होता है।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ होते हैं, किन्तु यदि बुध अस्त हो तो उसके अस्त रहने तक बुधवार नहीं ग्रहण करना चाहिए। मङ्गलवार यद्यपि पापग्रह का वार होने से सबके लिए ग्राह्य नही है, परन्तु शाखाधिपति का वार होने से सामवेदियों के लिए मंगलवार अति प्रशस्त है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती, इस प्रकार कुल २२नक्षत्र शुभ है, परन्तु ऋगवेदी और सामवेदी ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु त्याज्य है।
लग्न शुद्धि	२।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नों में, बुध बली हो तथा चन्द्र-तारा के बलवान (अनुकूल) होने पर, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह, ३।६ मे पापग्रह, २।३।७।१० में चन्द्रमा, ११वें में शुभाशुभ सभी ग्रह, सर्वशाखाधिप होने से लग्न मे सूर्य, वृष-कर्क राशियों का चन्द्रमा, (अन्य राशियों का नहीं) उक्त सभी स्थितियाँ प्रशस्त कही गई है।
त्याज्य	गुरु-शुक्र का बाल-वृद्धास्त का समय, सिंहस्थ-मकरस्थ तथा वक्रातिचारी गुरु, दक्षिणायन, शनिवार, भद्राकरण, संक्रान्ति का दिन, रोगबाण, प्रदोष, गलग्रह अनध्याय लग्न से त्रिक (६।८।१२) स्थानों मे चन्द्र-गुरु शुक्र तथा लग्नेश की स्थिति, लग्न से १।५।८ स्थानों में पापग्रहों की स्थिति तथा १२वें स्थान में चन्द्र और शुक्र की स्थितियाँ व्रतबन्ध में नेष्ट होने से त्याज्य हैं।

विशेष- जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र और जन्मलग्न में भी ब्राह्मण के ज्येष्ठपुत्र का तथा क्षत्रिय और वैश्य के ज्येष्ठ पुत्र (प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र) को छोड़कर अन्य पुत्रों का व्रतबन्ध होने से व्रती विद्वान होता है। इसके विपरीत मे अशुभ होता है। गुरु-सूर्य-चन्द्र की शुद्धि न भी हो, गुरु-शुक्र बाल-वृद्ध अस्त हो, गुरु सिंहस्थ या मकरस्थ हो तो भी चैत्र मास में मीन राशि में जब तक सूर्य रहता है तब तक के समय मे ब्राह्मण कुमारों का उपनयन संस्कार अतीव प्रशस्त कहा है।

रोगबाण, प्रदोष, गलग्रह और अनध्याय-ज्ञान

रोगबाण	गोचर भ्रमण-वश सूर्य जब-जब किसी भी राशि के ९वें, १८वें तथा २७वें अंशो पर भ्रमण करेगा तब-तब रोगबाण होगा।
प्रदोष	प्रदोष दो प्रकार के है (१) नैत्यिक, (२) नैमित्तिक। प्रतिदिन सूर्यास्त के पश्चात् रात का आरम्भिक समय नैत्यिक प्रदोष होता है, नैमित्तिक तिथि भेद से इस प्रकार कहा गया है– १-द्वादशी तिथि में आधी रात से पहले ही त्रयोदशी लग जाय। २-षष्ठी तिथि में डेढ़ प्रहर रात से पहले ही सप्तमी लग जाय तथा ३-तृतीया तिथि में एक पहर रात से पहले चतुर्थी लग जाय तो यह तीनो प्रदोष कहे जाते हैं। यह तीनों नैमित्तिक प्रदोष हैं।
गलग्रह	दोनों पक्षों में १३।१४।१५।३०।१।७। ८।९।४ यह ८ तिथियाँ गलग्रह हैं। (नोट- १५पूर्णिमा तथा ३० अमावस्या सूचक है)
अनध्याय	आषाढ़ शुक्ल पक्ष की १०, ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की २, पौषशुक्ल पक्ष की ११ और माघ शुक्ल पक्ष की १२ तिथि तथा प्रत्येक मास के दोनों पक्षों को १।८।१४ तिथियाँ (१५) पूर्णिमा एवं (३०) अमावस्या और संक्रान्ति के दिन उपनयन में अनध्याय होता है।

कन्यावरण मुहूर्त

शुक्ल प्रतिपदा (१), रिक्ता (४।९। १४) और अमावस्या (३०) के अतिरिक्त तिथियों में, शुभवारों में तथा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, मूल, स्वाती, अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों में वस्त्रादि अलंकार एवं फल-पुष्पादि से कन्या का वरण करना चाहिए।

वरवरणमुहूर्त

कन्यावरणोक्त तिथि-वारों में वैवाहिक नक्षत्रों तथा कृत्तिका और तीनों पूर्वा नक्षत्रों में कन्यापक्ष का ब्राह्मण (पुरोहित) अथवा कन्या का सहोदर (भाई) माङ्गलिक उपकरणों के साथ वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, द्रव्य इत्यादि सामग्रियों से वर का वरण करे, अर्थात् वर को तिलक चढ़ाये।

॥स्त्री-पुरुष (कन्या-वर) का विवाह वर्ष॥

जन्म से समसंख्यक वर्षों मे कन्या का विवाह होना पुत्र-पौत्र देने वाला तथा पुरुष का विवाह विषम वर्षों में होना श्रीप्रद (धनप्रद) कहा है, इसके विपरीत अर्थात् विषम वर्षों मे कन्या का और सम वर्षों मे पुरुष का विवाह होना अशुभ कहा है। अत: स्त्री (कन्या) का सम वर्षों में और पुरुष का (वर का) विषम वर्षों में ही विवाह किया जाना चाहिए।

॥विवाह में जन्ममासादि का निषेध॥

जन्म के मास में, जन्म की तिथि मे और जन्म के नक्षत्र में प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान (पुत्र या पुत्री जो भी हो) का विवाह शुभ नहीं होता है। प्रथम गर्भ के अतिरिक्त अन्य गर्भ से उत्पन्न सन्तति का विवाह जन्ममास, जन्मतिथि और जन्म नक्षत्र में भी होना शुभ कहा है।

॥जन्ममासादि का परिहार॥

अति आवश्यक होने पर ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या का विवाह जन्म के मास-तिथि-नक्षत्र में ही करना हो तो विपरीतार्ध मे अर्थात् पूर्वार्ध में जन्म हो तो उत्तरार्ध मे और यदि उत्तरार्द्ध में जन्म हो तो पूर्वार्ध मे विवाह करना चाहिए।

॥विवाह में ज्येष्ठमास का निषेध और परिहार॥

वर-कन्या और मास इनमें से १ज्येष्ठ उत्तम २ज्येष्ठ मध्यम और३ज्येष्ठ अधम(अशुभ)कहा है। अत: ३ज्येष्ठ विवाह में कदापि शुभ नहीं हैं। किसी आचार्य का मत है कि जब तक कृत्तिका मे सूर्य रहे तभी तक ज्येष्ठमास त्याज्य है। किसीका मत है कि यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा न हो तो ज्येष्ठ मास का दोष नहीं होता है। माता के प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र-कन्या ही ज्येष्ठ होते हैं, त्रिज्येष्ठ में इन्हीं की गणना होती है। अन्य गर्भोत्पन्नों की नहीं। किसी आचार्य ने ज्येष्ठ मास की भाँति ही मार्गशीर्ष (अगहन) मास में भी ज्येष्ठ संतानो के विवाहादि का निषेध किया है।

समानगोत्र प्रवर में विवाह करने को महापातक कहा है।

१-समानगोत्र और समान प्रवर की कन्या के साथ विवाह कर उससे उत्पन्न सन्तान की संज्ञा चाण्डाल होती है। ऐसा आपस्तम्ब का कथन है। २-यमस्मृति के अनुसार तीन प्रकार की सन्तानो को चाण्डाल की श्रेणी में गिनाया गया है।

(१) जो व्यक्ति संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् संन्यास का त्यागकर गृहस्थ बनकर संतान उत्पन्न करता है, तो वह सन्तान चाण्डाल होती है।

(२) ब्राह्मणी मे शूद्र द्वारा उत्पन्न सन्तान चाण्डाल है।

(३) सगोत्रा से विवाहकर उत्पन्न की गई सन्तान भी चाण्डाल कही गई है।

एक गोत्र और समान प्रवर की तथा मातृगोत्र (अर्थात् नाना के गोत्र) की कन्या से विवाह न करे, क्योंकि वह कन्या भगिनी (बहन) के तुल्य होती है।

॥समानादि क्रिया करने हेतु समय का विचार॥

१-एक माता से उत्पन्न पुत्र और कन्या का एकदिन मे (एक वर्ष में) समान क्रिया न करे। अर्थात् वर्ष भेद में करे तो दोष नही है। यह वृद्धमनु का वचन ज्योतिर्निबन्ध मे उद्धृत है।

२-पुत्र के विवाह के पश्चात् तीन ऋतु (६मास) तक पुत्री का विवाह न करे, परन्तु यदि ६मास के पूर्व ही सम्वत्सर परिवर्तित हो जाय अर्थात् संवत् बदल जाय तो (जैसे फाल्गुन में पुत्र का विवाह करने के पश्चात वैशाख, ज्येष्ठ आदि मासों में) ६मास के भीतर कन्या का विवाह करने में कोई दोष नही है। यदि दोनों भिन्न-भिन्न माताओं से उत्पन्न हो तो ६मास का कोई बन्धन नही है। कन्या के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह करना शुभप्रद होता है।

३- अपने कुल में तीन पुरुष (पीढ़ी) के भीतर पुत्र के विवाह के पश्चात् ६ मास तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए। कन्या या पुत्र के विवाह से ६ मास के भीतर किसी का उपनयन तथा मुण्डन नहीं करना चाहिए। उपनयन (व्रतबंध) से ६ मास के अन्तर्गत किसी का मुण्डन नहीं करना चाहिए। यह नियम संयुक्त परिवार वालों के लिए है। विभक्त हों तो उन्हें दोष नहीं है। ऐसा कश्यप का वचन है।

४- दो सहोदर भाइयों का दो सहोदरी कन्याओं से विवाह नहीं करना चाहिए।

५- एक वर को दो सहोदरी कन्यायें नही देनी चाहिए।

६- दो सहोदर भाइयो या बहनों का विवाह ६ मास के भीतर नहीं करना चाहिए, परन्तु यमल (जुड़वा) रूप में एक गर्भ से उत्पन्न दो भाइयों या दो बहनों का समान संस्कार, (मुण्डन, उपनयन अथवा विवाह) एक साथ एक ही वर्ष में, एक ही दिन और एक ही मण्डप में कर सकते हैं, इस में कोई दोष नहीं है।

७- पुत्रवधू- प्रवेश से ६मास तक कन्या का पतिगृह-गमन भी नहीं होना चाहिए, परंतु यदि वर्ष (संवत्) बदल जाय तो ६मास के भीतर भी शुभ होता है। अर्थात् यदि माघ या फाल्गुन में विवाह हो तो वैशाख मास में (६ मास के अन्तर्गत ही) उपनयन-मुण्डन हो सकते हैं। क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही संवत् बदल जाने से ६ मास का प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

एक घर में एक साथ दो शुभ कार्य करने हेतु व्यवस्था

एक गृह में एक साथ दो शुभ कार्य मङ्गलदायी नहीं होते हैं। एक शुभ कार्य करने के नौ दिन पश्चात् दूसरा शुभकार्य करना चाहिए, आवश्यक होने पर शुभ कार्योत्सव द्वारभेद अथवा आचार्यभेद से होना चाहिए। यह वसिष्ठ का वचन निबन्ध ग्रन्थों में द्रष्टव्य है।

सहोदरों का समान संस्कार और विवाह भी संकट में वर्षभेद से करना चाहिए। अथवा चार दिन या एक दिन के व्यवधान से करना चाहिए। अत्यन्त संकट में एक दिन में कर्ता के भेद से या मण्डपभेद से करना चाहिए। दो कर्ताओ के द्वारा एक लग्न मे और एक घर में भी दो भिन्नोदरों का विवाह करना चाहिए।

एक साथ तीन मङ्गलकार्य करने हेतु व्यवस्था

एक उदर से उत्पन्न तीन सन्तानों (तीन सहोदरों) का अग्निकार्य (शुभकार्य अर्थात् विवाहोपनयनादि) नहीं करना चाहिए। यदि तीनो एकोदर न होकर भिन्नोदर हों तो उक्त अवरोध नही होगा अर्थात् भिन्नोदरों का तीन मङ्गलकार्य एक साथ किया जा सकता है। ऐसा शातातप ने कहा है।

विवाहनिश्चयोपरांत मरणाशौच होने पर विवाह समय निर्धारण

विवाह का निश्चय हो जाने के पश्चात कन्या या वर के कुल मे (तीन पुरुष अर्थात तीन पीढ़ी के भीतर) किसी की मृत्यु हो जाये तो उसके एक मास के बाद विवाह किया जाना चाहिए। मेधातिथि आदि कितने आचार्यों का यह मत है कि आवश्यक मे अशौच समाप्त हो जाने पर (अर्थात मृत व्यक्ति का श्राद्ध आदि कार्य बीत जाने पर) शान्ति करके एक मास के भीतर भी विवाह करना चाहिए।

सपिण्ड में किसी के मरण मे एक मास का अशौच समझना चाहिए। पिता के मरने पर १ वर्ष, माता के मरने पर ६ मास, स्त्री के मरने पर ३ मास, भाई तथा पुत्र के मरने पर १॥ मास तक अशौच होता है। परन्तु दुर्भिक्ष में, राष्ट्रविप्लव की आशंका मे, माता-पिता के मरने की आशङ्का में एवं कन्या की प्रौढ़ावस्था में प्रतिकूल का दोष नहीं होता, ऐसा योगी याज्ञवल्क्य ने कहा है।

मृत व्यक्ति का श्राद्धादि कार्य हो जाने पर विधिवत् विनायक शान्ति और कूष्माण्डी हवन द्वारा शान्ति करके विवाह करना चाहिए।

नान्दीश्राद्ध होने के पश्चात यदि रजोदोष तथा जनन-मरणजन्य सूतक आ पड़े तो भी कार्य का आरम्भ हो जाने से विवाह-उपनयनादि की समाप्ति पर्यन्त कार्य होते रहेंगे। कार्य में अवरोध नही होगा। विवाह, व्रत, यज्ञ, श्राद्ध, होम, पूजन और जप आरम्भ हो जाने पर सूतक नहीं होता, आरम्भ न होने पर ही सूतक होता है। ऐसा विष्णु का वचन है। प्रारम्भ के विषय मे विष्णु ने ही कहा है कि-यज्ञ में वरण से (वरणशब्द से मधुपर्क का ग्रहण करें) व्रत एवं सत्रयाग में सङ्कल्प से, विवाहादि में नान्दीश्राद्ध से और श्राद्ध में पाक बनने से आरम्भ माना जाता है। रजोदोष और अशौच आदि की सम्भावना में नान्दीश्राद्ध का अपकर्ष कर करने में दिन की संख्यावधि- यज्ञ में २१ दिन, विवाह में १० दिन, उपनयन में ६ दिन तथा मुण्डन में ३ दिन पूर्व मे नान्दीश्राद्ध का विधान है। उक्त दिनावधि बीत जाने पर पुन: नान्दीश्राद्ध सिद्ध है।

वर्णादि दोषों का परिहार

१-वर-कन्या के ग्रहों (राशीशो) मे मित्रता-होने से वर्गवैर, योनिवैर, गणवैर, नृदूर फल, दुष्ट कूटफल नष्ट हो जाते हैं। ऐसा शौनक ने कहा है। २-बृहज्ज्योतिषसार के अनुसार- गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष तथा षडष्टक ये चारो केवल ग्रह मैत्री (राशीशमैत्री) होने से निष्प्रभावी हो जाते है, जिससे इनका दोष नही होता।

३-यदि वर-कन्या दोनों के राशीशो मे मैत्री हो, तो वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा अशुद्धि, नवपञ्चम का दोष नहीं होता। विवाह करना शुभ होता है। ४- यदि वर-कन्या दोनों के राशीश परस्पर शत्रु ही क्यों न हो परंतु दोनों के नवांशेश बलवान हो और परस्पर मित्र हों तो दम्पति के सुख की इच्छा से विवाह करना चाहिए। ऐसा जगन्मोहन में उल्लिखित है।

नाड़ी-दोष-परिहार

१- दम्पत्ति (स्त्री-पुरुष) की एक ही राशि हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हों तो उसमें गण-नाड़ी का विचार न करके विवाह करना चाहिए। २-बृहस्पति के अनुसार-वर-कन्या की एक राशि और नक्षत्र भिन्न हों अथवा एक ही नक्षत्र हो किन्तु राशियाँ भिन्न हों तो गण, नाडी, नृदूर और ग्रहवैर का विचार न करें। ३-वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो अथवा एक नक्षत्र हो और राशियाँ भिन्न हों तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता इस प्रकार एक नक्षत्र में पाद भेद से शुभ होता है ऐसा राम दैवज्ञ, गणपति आदि ने कहा है। एक-नक्षत्र के एक ही चरण वालों का परस्पर विवाह नेष्ट कहा है। ४- रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, पुष्य, श्रवण, रेवती और उत्तरा भाद्रपदा मे दोनों के जन्म नक्षत्र हों तो नाडीदोष नहीं होता। ऐसा ज्योतिष चिन्तामणि में उद्धृत है।

५- विवाह कुतूहल ग्रन्थ के अनुसार बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक ही ग्रह दोनो (वर-कन्या) के राशीश हों तो नाड़ी दोष नहीं होता। ६- यदि नाड़ी दोष हो तथा उसका परिहार न होता हो और विशेष परिस्थिति मे परस्पर विवाह करना आवश्यक हो तो विधिवत् महामृत्युञ्जय मंत्र का जप, स्वर्णदान, गोदान, अन्नदान तथा वस्त्रदान, दक्षिणा आदि से ब्राह्मण को तृप्त (संतुष्ट) कर विवाह करना कल्याणकारी होता है।

कुजदोष (मङ्गलीदोष) के परिहार

१.मङ्गली कारक ग्रह पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो मङ्गली दोष निरस्त हो जाता है। २.वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में (लग्न कुन्डली और चन्द्र कुण्डली दोनो से देखने पर) पूर्वोक्त मङ्गली दोषोत्पादक पाँचों स्थानों मे कही भी पाप ग्रह समान संख्या में बैठे हों तो मङ्गली दोष का दुष्प्रभाव नहीं होता है।

३. वर-कन्या दोनों के राशीशों में मित्रता हो या दोनों का एक ही गण हो अथवा दोनों के कूटों का गुण मिलान करने पर गुणों की अधिकता हो तो इन स्थितियों में मङ्गली दोष निष्प्रभावी हो जाता है। ४.कन्या के जन्माङ्ग अथवा चन्द्राङ्ग में सप्तम अपने स्वामी (शुभग्रह या पापग्रह जो भी हो) से युक्त हो अथवा किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो उस कन्या को वैधव्य-सन्तानाभाव और विषाङ्गना दोष नहीं होता अर्थात् इन तीनो दोषों का नाश होता है।

सद्भकूट और दुष्टभकूट में गुणों का विभाजन

१- वर्ण, २- वश्य, ३- तारा, ४- योनि, ५- ग्रहमैत्री, ६- गणमैत्री, ७- भकूट और ८- नाडी, यह आठ प्रकार के कूट है, जिनके क्रमशः एक-एक अधिकगुण होते है अर्थात् कुल ३६ गुण होते है, जिनमे अर्धाधिक (१८ से अधिक) वर-कन्या के गुणों का योग प्राप्त होने पर दोनों का परस्पर विवाह किया जाता है, आधे से अल्प मे नही, किन्तु ऐसा भी प्रमाण है कि वर-कन्या का भकूट शुद्ध हो तो १६ गुण निन्दित, उससे ऊपर २० तक मध्यम, २० से ऊपर ३० तक उत्तम और उससे ऊपर ३६ तक उत्तमोत्तम होता है। यदि दुष्टभकूट हो तो २० तक निन्दित, उससे ऊपर २५ तक मध्यम, उससे ऊपर ३० तक उत्तम तथा ३० से ऊपर उत्तमोत्तम होता है।

विवाह से पूर्व के कार्यों का मुहूर्त

तिथि	दोनो पक्षो की १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा प्रशस्त है।
वार	रवि से शनि पर्यन्त सभी वार ग्राह्य हैं।
नक्षत्र	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, ३ पूर्वा, ३उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
त्याज्य	चित्रा, विशाखा, शतभिषा, अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा और ज्येष्ठा नक्षत्र तथा भद्राकरण त्याज्य है। विवाह पूर्व ३।६।९ दिन त्याज्य है।

इस विवाह से पूर्व के कार्यों के मुहूर्त का तात्पर्य कूटने, पीसने, गीत गाने, कलश, चित्रकारी, वेदी, मण्डप, लीपने, दलने मृदाहरण (मागरमाटी), हरिद्रा लेपन, कङ्कण-बन्धन आदि के मुहूर्त से है। चन्द्रबल विचारणीय नहीं है।

विशेष- उपरोक्त प्रशस्त और त्याज्य नक्षत्र दैवज्ञ मनोहर के अनुसार दिए गये है। राम दैवज्ञादि ने उक्त कार्यों को वैवाहिक नक्षत्रों मे करने का निर्देश किया है। बृहस्पति, वशिष्ठ, नारद, श्रीपति, खण्डेश्वरादि ने विवाह के लिए मात्र ११ नक्षत्रों को ग्रहण किया है, किन्तु पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार तीनों उत्तरा नक्षत्रों से तीन-तीन नक्षत्र ग्रहण करने से अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा को लेकर १५ नक्षत्र संख्या हो जा रही है, जिनका चलन मिथिला में है। प्राय: सभी स्थानों में ११ नक्षत्र ही प्रचलित है।

विवाह-मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १भी
वार	सभी सातो वार
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा ३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल तथा रेवती ११ नक्षत्र प्रशस्त हैं। पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा कुल नक्षत्र ग्राह्य हैं। किन्तु इन १५ नक्षत्रों का चलन केवल मिथिला में है। अन्यत्र उपरोक्त ११ नक्षत्र ही विवाह के लिए ग्रहण की जाती है।
वर्ज्य	कृष्ण १३ से चन्द्रक्षय और भद्रा वर्जित है।
विवरण	मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर और कुम्भ के सूर्य में विवाह होता है। मेष के सूर्य में चैत्र में, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में तथा मकर के सूर्य में पौष में भी विवाह शुभ होता है। देवशयन वर्जित तथा उत्तरायन विशेष शुभ है।

मण्डपोद्वासन (मण्डप-विसर्जन) मुहूर्त

विवाह के दिन से २,४ आदि सम दिनों मे किन्तु छठवां दिन छोड़कर तथा विषम दिनों में ५वे, ७वें दिन में शुभ नक्षत्रों और भद्रा रहित शुभवारों मे मण्डपोद्वासन करना शुभ होता है।

।। पुरुषों की जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	रिपु ६	जाया ७	मृत्यु ८	भाग्य ९	कर्म १०	आय ११	व्यय १२
सूर्य	शौर्यवान्, नीरोग	वक्ता, रोगी, अल्पधनी	पराक्रमी, सुखी	दुःखी उद्विग्न	सुखहीन, निर्धन	शत्रुजेता, बलवान्	खल, खंडित	नेत्ररोगी, अल्पायु	पुत्रवान्, सुखभोगी	सुखी, शौर्यवान्	बहुत धनी	व्यङ्ग, पतित
चन्द्रमा	रूपवान, नेत्ररोगी	कुटुम्बवान्, धनी	सात्विक, हिंसक	सुशील सुखी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु, बहुशत्रु	ईर्ष्यालु, घंमडी	रोगयुक्त, सुखी	भाग्यवान्, धनी	धर्मार्थी प्रतापी	विख्यात, लाभवान्	अङ्गहीन, हिंस्र
मङ्गल	क्रूर, व्रणी	क्रोधी, कुटिल	पराक्रमी, बुद्धिमान	पीड़ित, दुःखी	पुत्रहीन, दरिद्र	सुखी, शत्रुजेता	झगड़ालु, खंडित	अल्पपुत्र, रोगी	पापरत, दुर्मनोरथी	सुखी, शौर्यवान्	बहुत धनी, सुखी	जातिभ्रष्ट, विधुर
बुध	सुखी, विद्वान्	धनी, गुणी	दुर्जन, शत्रुजेता	पंडित, सुखी	मंत्री, पुत्रहीन	शीलरहित, शत्रुरहित	धर्मज्ञ, यशस्वी	सद्गुणी, धनी	पुत्रवान्, सुखी	सुखी, पराक्रमी	यशस्वी, धनी	अज्ञ, पतित
गुरु	विद्वान्, दीर्घायु	वाग्मी, धनी	पापी, कृपण	धनी, सुखी	बुद्धिमान्, प्रतापी	कामी, अशुभ	पिता से अधिकसुखी	नीच	पुत्रवान्, तपस्वी	सत्कर्मवान्, धनी	लाभवान्, पुत्रवान्	दुष्ट, दरिद्र
शुक्र	कामी, सुखी	सुवक्ता, धनी	पापी, कृपण	बुद्धिमान्, सुखी	सुखी, बुद्धिमान्	रोगी, शत्रुहीन	कलह-प्रिय	दीर्घायु, नीच	पुत्रवान्, धनी, सुखी	सन्मानयुक्त, सद्धनी	लाभवान्, बुद्धिमान्	दुष्ट, बन्धुहीन
शनि	दरिद्र, अधनी रोगी	वक्ता, रोगी,	बुद्धिमान् पराक्रमी	दुःखी	दरिद्र, सन्तानहीन	सुखी, शत्रुजेता	दुःखी, खंडित	अल्पायु, नेत्र-रोगी	विकल, दीनतायुक्त	सुखी, पराक्रमी	बहुत धनी	पतित, दुःखी
राहु	सुकामी, रोगी	अधर्मी, विरोधी	विक्रमी बुद्धिमान्	मातृसुखहीन, दुःखी	अभागा, दुर्बुद्धि	श्रीमान्, बलवान्	प्रमेहरोगी, अपवित्र	रोगी, गतायु	पापी, अभागा	अभिमानी, सुखी	पुत्रहीन, धनी, विख्यात	कष्टयुक्त, पतित
केतु	कामी, क्षीणायु	कामी	शौर्यवान् पराक्रमी	मातृसुखहीन, दुःखी	पुत्रहीन, मूर्ख	धनी, बली	प्रमेहरोगी, दारहा	कष्टयुक्त, व्रणी	पापकर्मा, भाग्यहीन	श्रेष्ठ, पितृहीन	धनवान्	दुर्जन, पतित
गुलिक	मन्द-बुद्धि, रोगी	क्रोधी, विषयी	अभिमानी, शोकरहित	पापकर्मा, रोगी	अल्पसुत, अनायु	विनोदी, रिपुहा	कुदार, कृतघ्न	दुःखी, दरिद्र	पापरत, निर्दयी	सुखयुक्त, दानहीन	सुभग, पुत्रहीन	नीचरत, हीनाङ्ग

।। स्त्रियों की कुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु१	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	शत्रु ६	पति ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	विधवा सक्रोधा	दुःखार्ता दरिद्रा	धनिनी पुत्रिणी	दरिद्रा पीड़िता	नष्टात्मजा	सुखयुता धनाढ्या	समस्त सुखों से हीना	विधवा दुःखार्ता	धन, धर्मान्विता	सुकर्मरता	सुलाभा पुत्रान्विता	विधवा रोगिणी
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधन-पुत्रान्विता	धनी सुखी	सुभगा अर्थयुक्ता	सुपुत्रा सुखयुक्ता	रोगिणी विधवा	सुन्दर शरीर वाली पतिप्रिया	रोगयुक्ता कुनेत्रा	पुत्रान्विता सुखयुक्ता	धन धर्मयुक्ता	भव्या विधिज्ञा	हीनाङ्गी व्ययशीला
भौम	विधवा दुःखिता	बन्ध्या रोगिणी	भ्रातृहीना	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसम्मता	रोगादिरहिता	विधवा कुलटा	रोगार्ता विधर्मा	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ-लाभा	खला रुगार्ता
बुध	सौभाग्यवती	धनाढ्या सती	पुत्रवती धनाढ्या	सुखी गृहान्विता	बुद्धिमती कान्तिमती	आयुहीना क्रोधयुक्ता	पतिव्रता विदुषी	कृतघ्ना भययुक्ता	सुभोगा सुधर्मा	सत्कर्मबुद्धि युता	सुलाभा पतिव्रता	कृशाङ्गी सुपुत्रा
गुरु	सती भाग्यशालिनी	धन-सौभाग्य युक्ता	सहजान्विता	धनिनी सुखयुक्ता	साध्वी सुभगा	बहुआपदा सत्यहन्त्री	सौभाग्यवती यशस्विनी	विशीला रोगिणी	पुत्रवती कृतज्ञा	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुरूपा	सुव्यया रुग्णा
शुक्र	सुखयुक्ता पतिव्रता	धनयुक्ता मुदान्विता	धनाढ्या परहंत्री	यशस्विनी सुखान्विता	पुत्रयुक्ता सुखसम्पन्ना	सुखहीना दरिद्रा	पतिप्रिया शास्त्ररता	प्रमत्ता सुखहीना	सुभगा धर्मपरायणा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्र-धन लाभ युक्ता	सद्व्यया दुःखार्ता
शनि	बन्ध्या दरिद्रा	दुःखयुक्ता धनहीना	सुभगा सुदक्षा	विपुत्रा सुखहीना	विपुत्रा सुखहीना	भाग्ययुक्ता गुणसम्पन्ना	विधवा सरोगा	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या शोकयुक्ता	पापरता सधना	अपुत्रा सुलाभा	रोगार्ता मूढा
राहु	पुत्रहीना दुःखार्ता	दरिद्रा दुःखार्ता	रोगिणी धनवती	रोगार्ता मातृसुखहीना	सुतार्थहीना	रोगहीना धनयुक्ता	दुःखिता विधवा	विधवा दुःखयुक्ता	बन्ध्या शोकार्ता	कुकर्मरता	निरोगी सुभगा	खला सरोगा
केतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

नक्षत्रों के स्वामी, शुभाशुभ आदि विशेष संज्ञा चक्र

नक्षत्रों के नाम	स्वामी	शुभाशुभ	जाति	संज्ञा	मुख	निम्न घटी के उपरान्त नेष्ट	दोहद
अश्विनी	अश्विनी कुमार	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिर्यक	५०	तिल, तण्डुल
भरणी	यम	नाशक	चाण्डाल	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	साक्षत उड़द
कृत्तिका	अग्नि	अशुभ	ब्राह्मण	मिश्र, साधारण	नीचे	३०	उड़द
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शूद्र	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	४०	गव्य
मृगशिरा	चन्द्र	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	१४	गोघृत
आर्द्रा	शिव	अशुभ	क्रूरजाति	तीक्ष्ण, दारुण	ऊपर	२१	दुग्ध
पुनर्वसु	अदिति	शुभ	वैश्य .	चर, चल	तिरछा	३०	हरिण मांस
पुष्य	गुरु	शुभ	क्षत्रिय	क्षिप्र, लघु	ऊपर	२०	मृगरक्त
आश्लेषा	सर्प	अशुभ	चाण्डाल	तीक्ष्ण, दारुण	नीचे	३२	पायस
मघा	पितर	शोकप्रद	शूद्र	उग्र, क्रूर	नीचे	३०	चाषमांस
पूर्वा फाल्गुनी	भग	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२०	मृगमांस
उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	१८	शशकमांस
हस्त	सूर्य	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिरछा	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	प्रियंगु
स्वाती	वायु	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	तिरछा	१४	अपूप
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभ	चाण्डाल	मिश्र, साधारण	नीचे	१४	नानापक्षीमांस
अनुराधा	मित्र	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	१०	सत्फल
ज्येष्ठा	इन्द्र	शुभ	कृषक	तीक्ष्ण, दारुण	तिरछा	१४	कूर्ममांस
मूल	राक्षस	क्षय	क्रूरजाति	तीक्ष्ण, दारुण	नीचे	५६	सारिकामांस
पूर्वाषाढ़	जल	धनहानि	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	गोधिकामांस
उत्तराषाढ़	विश्वेदेवा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२०	शाल्वमांस
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डाल	चर, चल	ऊपर	१०	कृसरान्न
धनिष्ठा	वसु	शुभ	कृषक	चर, चल	ऊपर	१०	मुद्गमोदक
शतभिषा	वरुण	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	ऊपर	१८	जवपिष्ट
पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	१६	मत्स्यान्न
उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२४	चित्रितान्न
रेवती	पूषा	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	दधि-भात

नक्षत्रों तथा नक्षत्रचरणों के अनुसार कष्ट का विचार

ज्वरादि रोग होने पर नक्षत्र चरणवश दिन संख्या तथा जपादि विधान

नक्षत्र	दि०सं०	१चरण	२चरण	३चरण	४चरण	दान वस्तु	जपार्थ मंत्र
अश्विनी	दि०९	९	११	१०	२	ब्रा० भोजनदान	मृत्युञ्जयमंत्र
भरणी	११	०	८०	४०	११	गौ, अन्न आदि दान	यमायत्वाङ्गिरस्वते०
कृत्तिका	९	९	११	१६	२८	स्वर्णदान	अग्निर्मूर्द्धा दिवः०
रोहिणी	७	३	९	१८	३०	घृतदान	ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं०
मृगशिरा	३०	९	५	७	१०	तिलदान	इमं देवा ऽसपत्न०
आर्द्रा	मृत्यु	०	१८	०	०	गोदान	नमस्ते रुद्र०
पुनर्वसु	७	६	१४	२	२१	पीतलदान	अदितिर्द्यौ०
पुष्य	७	७	७	१०	२१	तिल, अन्नदान	बृहस्पते अति०
श्लेषा	मृत्यु	०	०	४१	०	गाय, बकरीदान	नमोऽस्तु सर्प्पे०
मघा	२०	१५	७	१७	२०	वस्त्र, घृतदान	पितृभ्यः स्वधायि०
पूर्वा फा०	मृत्यु	०	१५	०	३०	भोजनदान	भगप्रणेतर्भग०
उ० फा०	७	७	१४	७	६०	अन्नदान	अर्यमणम्बृहस्पति०
हस्त	१५	१५	१७	१५	०	तेलदान	उदुत्यज्ञातवेदस०
चित्रा	११	११	९	९	१६	दूधदान	त्वष्टातुरीयेऽअद्भुत०
स्वाती	मृत्यु	६०	१७	३०	०	गोघृतदान	वायुरग्रेगायज्ञप्रीः०
विशाखा	१५	१५	०	४	१३	स्वर्णदान+गोदान	इन्द्राग्नी ऽअव्यथमा०
अनुराधा	स्थिर	६०	१२	३६	३०	गोघृतदान	नमो मित्रस्यव्वरुणस्य०
ज्येष्ठा	मृत्यु	५९	९	६	४	तिलदान	त्रातारमिन्द्रमवितार०
मूल	९	०	९	१५	६	चाँदी का पात्रदान	मातेवपुत्रम्पृथिवी०
पूर्वाषाढ़	मृत्यु	०	१५	२४	१०	गोदान+मोतीदान	आपोऽ अस्मान्मातरः०
उत्तराषाढ़	३०	३०	२४	२६	१६	भोजनदान	विश्वेदेवाः शृणुतेम०
श्रवण	११	६०	२४	६	९	श्रीफलदान	विष्णोरराटमसि०
धनिष्ठा	१५	१५	४	२०	२१	अश्वदान+अन्नदान	वसोः पवित्रमसि०
शतभिषा	११	०	४५	३	२२	भोजनदान+अन्नदान	वरुणस्योत्तम्भन०
पूर्वाभाद्र०	मृत्यु	०	१२	२१	१९	भोजनदान	अजैकचरण०
उत्तराभाद्र०	७	१०	३	९	१५	अन्नदान	अहिर्बुध्न्य०
रेवती	स्थिर	१८	१०	९	२०	वृषदान	पूषन्तवव्रते०

नष्ट वस्तु के लाभालाभ ज्ञानार्थ सुलोचनादि संज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दिशा	लाभालाभ	तारा	स्वरूप
अश्विनी	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	भगाकार
कृत्तिका	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	६	छुरिकाकृति
रोहिणी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	५	शकटाकार
मृगशिरा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	मृगमुख
आर्द्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मणिसदृश
पुनर्वसु	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	४	गृहसदृश
पुष्य	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३	बाणाकार
श्लेषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	चक्राकार
मघा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	५	गृहाकार
पू०फाल्गुनी	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	मंचाकार
उ०फाल्गुनी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	खाट-आकार
हस्त	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	हस्ताकार
चित्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मौक्तिकाकार
स्वाती	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	१	प्रवालाकार
विशाखा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	तोरणवत्
अनुराधा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	४	मणिसदृश
ज्येष्ठा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	कुण्डलाकार
मूल	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पूर्वाषाढ़	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	गजदन्तवत्
उत्तराषाढ़	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	२	मञ्चतुल्य
श्रवण	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	३	विमानसदृश
धनिष्ठा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	मृदङ्गाकार
शतभिषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	१००	वर्तुलाकार
पू०भाद्रपद	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	२	मञ्चकाकार
उ०भाद्रपद	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	यमलाकार
रेवती	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३२	मृदङ्गाकार

चैत्रशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २६ फाल्गुन से १२ चैत्र तक १९४७-४८ शक। अंग्रेजी दिनांक २० मार्च से २ अप्रैल तक सन् २०२६ ई.।

मीन में सूर्य (खरमास) विप्रकुमार का उपनयन शुभ

वर्षारंभ में चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का ग्रहण है। सूर्योदयव्यापिनी प्रतिपदा दोनों दिन समान अथवा अव्याप्त रूप से हो तो पूर्वा अर्थात् पूर्व दिन को ग्रहण करें। अतः पूर्वदिन चैत्रकृष्णा ३० गुरुवार चान्द्रसंवत्सर कल्पसंवत्सर का प्रारंभ होगा। कलशस्थापन ध्वजारोपण सर्वतोभद्रपूजा, आभ्यङ्ग स्नान पञ्चाङ्गफल का श्रवण। प्रपादानारम्भ असमर्थता में यथेष्ट का दान। आरोग्यविधा तिलक व्रत। कल्पादि १ आज प्रातः काल से 'रौद्र' नामक संवत्सर का वर्षपर्यन्त संकल्पादि में विनियोग प्रारंभ।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल वसंतऋतु।।

दि.मा.		ति.	वा	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की गति घ.	प.	क्रान्ति		रे. अं.	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.	
२९	५५	२	शु	५४	२४	रा	३	४७	रेवती	५४	१२	रा	३	४१	ब्रह्म	४३	४७	रा	११	३२	बा	२६	२५	कौ	५४	२४	श्रीवत्स	२०	१७	३०	६	६	२९	मेष	५४।१२	६	१	५	५९	११	५	४	५९	५९	४०	०	३१	+	६	७	३४	मेषराशि(रा.३।८९)। ◡ चन्द्रदर्शन। दक्षिणशृंग दुर्भिक्ष। मु.३० सामान्य। पंचक समाप्त रा.३।८९। श्रीझूलेलाल जयंती (सिन्धीसमाज)। चेतीचाँद। सिंधी नववर्षारंभ। ❶
२९	५८	३	श	४९	३१	रा	१	४८	अश्विनी	५१	७	रा	२	२७	ऐन्द्र	३७	७	रा	८	५१	तै	२१	५७	गर	४९	३१	सौम्य	२१	१८	१	७	७	३०			६	०	६	०	११	६	४	३९	५९	३८	द	७	+	६	८	४०	मु.सव्वाल १०हि.१४४७। ईद उल फितर(ईद)। मन्वादि ३। अपराह्ने मत्स्यावतार ३। सौभाग्यसुन्दरी ३व्रत। गणगौरी ३व्रत(राज.)। आज झूले पर शिवपार्वती ❷
३०	२	४	र	४४	७	रा	११	३९	भरणी	४७	३२	रा	१	०	वैधृति	२९	५५	सा	५	५८	व	१६	४९	भ	४४	७	कालदण्ड	२२	१९	२	८	८	१			६	०	६	०	११	७	४	१७	५९	३६	उ	१७	+	५	९	४७	भ.दि.१२।४३ से रा.११।३९तक (स्वर्ग)। रा.चैत्रमास दि.३०शक १९४८। रा.नववर्षारंभ। रविवति वैना.श्रीगणेश ४ व्रत। कुष्माण्डादेवी दर्शन। रवियोग रा.१।७ तक।
३०	६	५	चं	३८	१८	रा	९	१८	कृत्तिका	४३	३२	रा	११	२४	विष्कुंभ	२२	२३	दि	२	५६	बव	११	१२	बा	३८	१८	स्थिर	२३	२०	३	९	९	२	वृष	१।३२	५	५९	६	१	११	८	३	५३	५९	३४	०	४१	+	५	१०	५६	वृषराशि(प्रा.६।३६)। श्रीरामराज्यमहोत्सव(ल.४)। लक्ष्मीपूजन। स्कन्दमातादर्शन। कल्पादि ५। रवियोग रा.११।२४ से। यायीजययोग रा.११।३९ से।
३०	१०	६	मं	३२	१८	रा	६	५३	रोहिणी	३९	२२	रा	९	४३	प्रीति	१४	४०	दि	११	५०	कौ	५	१८	तै	३२ ४९	१८ १९	मातंङ्ग	२४	२१	४	१०	१०	३			५	५८	६	२	११	९	३	२७	५९	३१	१	१	+	५	१२	४	श्रीसूर्यषष्ठी ६व्रतम्(बिहार)। श्रीस्कन्दषष्ठी। श्रीस्कन्ददमनकोत्सव। अशोकषष्ठी(बङ्गाल)। कात्यायनीदेवी दर्शन। यमुना छठ(नेपाल)। रवियोग रा.९।४३ तक।
३०	१३	७	बु	२६	२०	सा	४	२९	मृगशिर	३५	१७	रा	८	४	आयुष्मान	६ ५२	५३ २०	प्रा	८ ५	४२ ३८	व	२६	२०	भ	५३	२७	अमृत	२५	२२	५	११	११	४	मिथुन	७।१९	५	५७	६	३	११	१०	२	५८	५९	२९	१	२५	+	४	१	६	भ.सा.४।२९से रा.३।२० तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि(दि.८।५३)। श्रीभास्करदमनकपूजा। सा.४।२९से श्रीअन्नपूर्णापरिक्रमा प्रारंभ। निशिथव्यापिनि(महानिशाकाल) ❹
३०	१७	८	गु	२०	३५	दि	२	११	आर्द्रा	३१	२६	रा	६	३१	शोभन	५१	५१	रा	२	४१	बव	२०	३५	बा	४७	५४	काण	२६	२३	६	१२	१२	५			५	५७	६	३	११	११	२	२७	५९	२७	१	४९	+	४	२	१	श्रीदुर्गाष्टमीव्रत। महाष्टमीव्रत। व्रत ८। तारा ८। श्रीभवानी उत्पति ८। अष्टमीयुक्त नवमी में सायं त्रिमुहूर्त पूर्व व्याप्त में महानवमी व्रत। दुर्गानवमी। समस्त नवमी होमादि। ❺
३०	२१	९	शु	१५	१४	दि	१२	२	पुनर्वसु	२८	१	सा	५	८	अतिगंड	४४	५४	रा	११	४	कौ	१५	१४	तै	४२	५१	लुम्बक	२७	२४	७	१३	१३	६	कर्क	१३।५२	५	५६	६	४	११	१२	१	५४	५९	२४	२	१५	+	४	२	४९	कर्कराशि(दि.११।२९)। नवरात्रव्रतपारण। नवमीयुता दशमी में महाबलिदान। आज पुनर्वसुयुक्त श्रीरामनवमी व्रत सबका। रामावतार ९। मध्याह्न में श्रीरामजन्म महोत्सव(ल.४)। ❻
३०	२५	१०	श	१०	२८	दि	१०	६	पुष्य	२५	१६	दि	४	१	सुकर्मा	३८	३३	रा	९	२०	गर	१०	२८	व	३८	३०	मित्र	२८	२५	८	१४	१४	७			५	५५	६	५	११	१३	१	१८	५९	२१	२	३८	+	४	३	२९	भ.रा.९।१९ से (मृत्युलोक)। धर्मराजदशमी। रवियोग दि.४।१ तक।
३०	२८	११	र	६	३३	दि	८	३१	श्लेषा	२३	२४	दि	३	१६	धृति	३२	५२	रा	७	२	भ	६	३३	बव	३५	४	वज्र	२९	२६	९	१५	१५	८	सिंह	२३।२४	५	५४	६	६	११	१४	०	३९	५९	२०	३	२	+	३	४	५	भ.दि.८।३१तक (मृत्युलोक)। सिंहराशि(दि.३।१६)। कामदा ११एकादशी व्रत सबका। श्रीविष्णुदोलोत्सव। सायं झूले पर आरूढ श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन। यमघंटयोग दि.३।१६ से।
३०	३२	१२	चं	३	३५	प्रा	७	२०	मघा	२२	२४	दि	२	५१	शूल	२८	१	सा	५	६	बा	३	३५	कौ	३२	३८	ध्वांक्ष	३०	२७	१०	१६	१६	९			५	५४	६	६	११	१४	५९	५९	५९	१७	३	२५	+	३	४	३८	प्रा.७।२० तक एकादशी व्रत का पारण। सोमप्रदोष १२ व्रत। पुत्र कामना हेतु। पूर्वविद्ध श्रीअनङ्गत्रयोदशी १२व्रत। श्रीविष्णुदमनकोत्सव। मदनद्वादशी। वामनद्वादशी। रवियोग दि.२।५१ से।
३०	३६	१३	मं	१	४०	प्रा	६	३३	पू.फा.	२२	३५	दि	२	५५	गंड	२४	४	दि	३	३१	तै	१	४०	गर	३१	१९	धूम्र	३१	२८	११	१७	१७	१०	कन्या	३७।५६	५	५३	६	७	११	१५	५९	१६	५९	१६	३	४८	+	३	५	९	कन्याराशि(रा.९।३)। प्रदोष में दमनक चतुर्दशी। सायं दमनक दल से पूजन। अपराह्न श्रीशिवनृसिंह को दमनक अर्पण कर पूजन। श्रीमहावीरजयंती(जैन)। ⊙रेवती में सूर्य ४१।१४(रा.१०।२३)। ❼
३०	३९	१४	बु	०	५९	प्रा	६	१५	उ.फा.	२३	५९	दि	३	२८	वृद्धि	२१	७	दि	२	१९	व	०	५९	भ	३१	१६	धाता	अप्रै	२९	१२	१८	१८	११			५	५२	६	८	११	१६	५८	३२	५९	१३	४	११	+	३	५	३९	भ.प्रा.६।१५से रा.६।२२तक (पाताल)। अप्रैल ४। व्रत १५। मन्वादि १५(शुक्ल में पूर्वाह्न)। मदनभञ्जी (बङ्गाल)। हाटकेश्वर जयंती (गुजरात)। रवियोग दि.३।२८ तक। पश्चातसर्वार्थसिद्धियोग।
३०	४३	१५	गु	१	३३	प्रा	६	२८	हस्त	२६	४०	सा	४	३१	ध्रुव	१९	१०	दि	१	३१	बव	१	३३	बा	३२	३२	आनंद	२	३०	१३	१९	१९	१२	तुला	५८।३६	५	५१	६	९	११	१७	५७	४५	५९	९	४	४०	+	२	-	-	तुलाराशि(रा.शे.५।२५)। स्नानदान हेतु पुण्य पूर्णिमा १५। हनुमत्जयंती १५ (द.भा.)। सभी देवों का दमनककोत्सव। वैशाख स्नान व्रतयमनियम का प्रारंभ। ओलीसमापन(जैन)। ❾

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

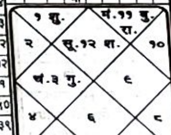
ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
२	शु	११	१७	२९	५०	८३०	२६	१०	१९	२३	२६	४६	३९	१०	१९	४	५३	२२	४५	२	२३	३५	८	११	२३	४	५४	७४	१२	११	६	१०	०	१०	१३	४१	४९
३	श	०	०	२१	३१	८४३	२०	१०	२०	१०	६	४६	३९	१०	१८	४२	८	२२	४५	२	२३	३५	५५	११	२४	१९	६	७४	१२	११	६	१७	५०	१०	१३	३८	३८
४	र	०	१५	२५	५८	८५०	४८	१०	२०	५६	४६	४६	३९	१०	१८	१९	२३	२२	४१	२	२३	३८	४८	११	२५	३३	१८	७३	५९	११	६	२५	४०	१०	१३	३५	२७
५	चं	०	२९	३८	६	८५७	८	१०	२१	४३	२५	४६	३२	१०	१७	५६	४२	१०	०	२	२३	४१	४०	११	२६	४७	१६	७३	५६	११	६	३३	३८	१०	१३	३२	१६
६	मं	१	१३	५५	५६	८५९	४२	१०	२२	२९	५८	४६	३०	मा	१७	४६	४२	९	४६	२	२३	४४	३३	११	२८	१	१२	७३	५६	११	६	४१	४३	१०	१३	२९	६
७	बु	१	२८	१५	१२	८५८	२५	१०	२३	१६	२९	४६	३०	१०	१७	५६	२७	९	४६	२	२३	४७	२५	११	२९	१५	९	७३	५६	११	६	४९	४७	१०	१३	२५	५५
८	गु	२	१२	३२	९	८५४	५१	१०	२४	२	५९	४६	३०	१०	१८	६	१३	१०	१	२	२३	५०	१८	०	०	२९	५	७३	५६	११	६	५७	५१	१०	१३	२२	४४
९	शु	२	२६	४३	५३	८४८	१८	१०	२४	४९	३०	४६	३०	१०	१८	१६	१४	१०	२९	२	२३	५३	१०	०	१	४३	१	७३	५६	११	७	५	५५	१०	१३	१९	३३
१०	श	३	१०	४६	५६	८३८	२५	१०	२५	३६	१	४६	३०	१०	१८	२६	४३	२७	२५	२	२३	५६	२	०	२	५६	५७	७३	५६	११	७	१३	५९	१०	१३	१६	२२
११	र	३	२४	३७	५९	८२५	४१	१०	२६	२२	३२	४६	३०	१०	१८	५४	८	३९	२७	२	२३	५८	५५	०	४	१०	५३	७३	५६	११	७	२२	३	१०	१३	१३	१२
१२	चं	४	८	१६	१६	८१३	३३	१०	२७	९	२	४६	३०	१०	१९	३३	३५	३९	२७	२	२४	१	४७	०	५	२४	४९	७३	५६	११	७	३०	८	१०	१३	१०	१
१३	मं	४	२१	३९	४८	७९७	३३	१०	२७	५५	३३	४६	२९	१०	२०	१३	२	३९	२७	२	२४	४	४०	०	६	३८	४५	७३	५६	११	७	३८	१२	१०	१३	६	५०
१४	बु	५	४	४७	३१	७८१	४५	१०	२८	४२	३	४६	२९	१०	२०	५२	२९	३९	४२	२	२४	७	३३	०	७	५२	४१	७३	५६	११	७	४६	१६	१०	१३	३	३९
१५	गु	५	१७	३९	४०	७६५	४५	१०	२९	२८	३३	४६	२९	१०	२१	३२	११	५६	४८	२	२४	१०	२७	०	९	६	३७	७३	५६	११	७	५४	२०	१०	१३	०	२८

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। **भौम**- शतभिष। ति.२ शुक्र पू.भा.४७।२ (रा.१२।५०)।। ति.१५ गुरु मीन ४०।३६(रा.१०।५)।। **वक्रीबुध**-शतभिष। ति.६ मंगल मार्गी ३०।२२ (सा.६।७)। **ति.१२** सोम पू.भा.४०।१० (रा.९।५८)।। **गुरु**-मिथुनराशि पुनर्वसु २ चरण।। **शुक्र**-रेवती। **ति.७** बुध अश्विनी मेष में ३६।२४ (रा.८।३१)।। **शनि**-मीन उ.भा. १ चरण। **ति.५** सोम उ.भा.२ चरण ४७।१७ (रा.१२।५४)।। **राहु**-कुम्भ शतभिष १ चरण। **ति.८** गुरु शतभिष २ चरण।। **केतु**-सिंहराशि पू.फा.१ चरण। मघा ४ चरण ५१।३३ (रा. २।३४)।।

चैत्र शुक्ल पक्ष विचार-प्रतिपदा तिथि की हानि से पक्ष १४ दिनों का है। चैत्र शुक्ल तिथि १,२,३,४ को वर्षा हो तो चातुर्मास्य में उत्तम वर्षा हो। चैत्र कृष्ण में तिथि वृद्धि हो तथा शुक्ल में क्षय हो तो कृषि उपज में कमी होगी। **१९ मार्च** गत वर्ष संवत् २०८२ (सन् २०२५-२६) में **सिद्धार्थ** नामक संवत्सर का लोप तथा **'रौद्र'** नामक नवसंवत्सर प्रारंभ हो जायेगा। जिस दिन संवत्सर प्रारंभ होता है वही वर्ष का राजा होता है। इस वर्ष **गुरु** वर्ष के राजा हैं। नववर्ष के प्रथम दिन तेल, उबटन आदि लगाकर स्नान करके नया वस्त्र धारण कर घर के ऊपर ☛

१ पं०चैत्रशुक्ल ८ गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१८१ अयनांश २४।१२।४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	१०	२	०	११	१०	४
११	१२	२४	१८	२३	०	६	१३	१३
२	३२	२	६	५०	२९	५७	२२	२२
२७	९	५९	१३	१८	५	५१	४४	४४
५९	८५४	४६	१०	२	७३	८	३	३
२६	५१	३०	१ मा	५२	५६	४	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ चं. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ चं. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
मीन	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५९	६	५५	६	५१	६	४८	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	२९	६	२६
मेष	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२५	८	२१	८	१७	८	१४	८	१०	८	६	८	३
वृष	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५९
मिथुन	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१३
कर्क	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१
सिंह	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	१०	५	७	५	३	४	५९	४	५६	४	५२	४	४८	४	४५
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	२०	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५८
तुला	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४७	९	४३	९	३९	९	३६	९	३२	९	२८	९	२५	९	२१	९	१७	९	१४
वृश्चिक	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५६	११	५३	११	४९	११	४५	११	४२	११	३८	११	३४	११	३१
धनु	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	१०	२	६	२	२	१	५९	१	५५	१	५१	१	४८	१	४४	१	४०	१	३७
मकर	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५७	३	५३	३	४९	३	४६	३	४२	३	३८	३	३५	३	३१	३	२७	३	२४
कुम्भ	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	५	२०	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५८	४	५५

पक्ष में विविधमुहूर्त- ति.२ शुक्र रेवती सूर्यभोग्य। ति.३ शनि रा.८।५१ वैधृतिपूर्व अश्विनी में केतुवेध। **ति.४** रवि भरणी में वैधृतिरिक्तादोष रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। **ति.५ सोम** कृत्तिका में धानकटाई मुहूर्त। **ति.६** मंगल रोहिणी में सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रमूँगारत्नधारण शल्यक्रिया मुहूर्त। रा.९।४३ से मृगशिर में सूतीकास्नान मुहूर्त। **ति.७** बुध सा.४।२९ भद्रापूर्व मृगशिर में पुंसवन सीमन्त नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग **पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा** शिल्पविद्या **विपणि** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। ति.८ गुरु दि.२।११ रिक्तापूर्व आर्द्रा में रोगविमुक्तस्नान(९मीं) धानकटाई मुहूर्त। ति.९ शुक्र दि.१२।२ रिक्ता बाद पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय **कर्क** के **चन्द्र** में **पश्चिमदिशा की यात्रा** शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय **कूपनिर्माण(बोरिंग)** मुहूर्त। **ति.१०** शनि दि.९।१९ भद्रापूर्व पुष्य सौभाग्यवती को छोड़कर कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण **विपणि** वाहनक्रय मुहूर्त। ति.११ रवि दि.८।३१ भद्रा बाद श्लेषा में **विप्र बालकों का उपनयन(ल.३ दि.१०।१३ से)** शस्त्रनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.१२** सोम मघा में केतुयुति। **ति.१३** मंगल पू.फा. केतुवेध है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.१४ बुध** उ.फा.सूर्यवेध। ति.१५ गुरु हस्त में सूर्यवेधकिन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है।

२ पं०चैत्रशुक्ल १५ गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१८१ अयनांश २४।१२।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	१०	२	०	११	१०	४
१७	१७	२९	२१	२४	९	७	१३	१३
५७	३९	२८	३२	१०	६	५४	०	०
४५	४०	३३	११	२७	३७	२०	२८	२८
५९	७६५	४६	५६	२	७३	८	३	३
९	४५	२९	४८ मा	५३	५६	४	११	११



❶द्वितीया **ब्रह्मचारिणीदेवीदर्शन। ⊙सायन मेष सूर्य** ४२।२४ (रा.१०।५९)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.२।४९ तक। ❷को बैठाकर पूजन। **सरहुल** (बिहार)। **चन्द्रघन्टादेवी दर्शन।** रवियोग२।२७ से। ❹*अष्टमी* में घटी ४४।१०(रा.११।३७) से ४६।१०(रा.१२।२५) तक। **महानिशापूजा। कालरात्रिदेवी दर्शन। ओलीप्रारंभ** (जैन)। **वासन्ती पूजा** (बङ्गाल)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।४ तक। ❺ दि.२।११तक **श्रीअन्नपूर्णापरिक्रमा समापन। महागौरी दर्शन।** मध्याह्न **अशोकाष्टमी**(बङ्गाल)। अशोककलिकाप्राशन। **मेलाबहुफोर्ट** (जम्मू)। **मेलामनसा देवी** (हरिद्वार)। रवियोगयायीजयसर्वार्थसिद्धियोग सा.६।३१ से। ❻अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि दर्शन। **सिद्धिरात्रि देवीदर्शन।** रवियोग समस्तदिन। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।८ तक। ❼रवियोग दि.२।५५ तक पुनःरवियोग रा.१०।२३ से। स्थायीजययोग प्रा.६।३३ से। ❾**मेलासालासार बालाजी** (राज.)। **देवीपूर्णिमा** (नेपाल)। यायीजययोग प्रा.६।२८ से।

मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.३ शनि रा.२।२७ तक। **श्लेषा/मघा ति.१०** शनि दि.४।१ से। **ति.१२** सोम दि.२।५१ तक। **पञ्चक विचार-ति.२** शुक्र रा.३।४१ तक।

☛ध्वजारोहण करे तथा विद्वान् ब्राह्मण से पंचांग का फल श्रवण कर पंचांग का दान करें। आज मिश्री, काली मिर्च एवं नीम के पत्तों का सेवन करना त्रिदोषघ्न व सर्वरोग निवारक है। कृषकगण प्रतिपदा में सूर्योदयपूर्व ग्राम की समतल भूमि पर पताका का विन्यास कर पूजन एवं प्रार्थना कर वायु के दिशानुसार नये वर्ष के मौसम का पूर्वानुमान लगाकर कृषिकार्य प्रतिपादित करें। **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा १९ मार्च २०२६; गुरुवार** से आरम्भ हो रहा है। चैत्र नवरात्र में (दुर्गाजी के नौ रूपों की पूजा) आज से ही शुरू हो जायेगी। जिसमें **कलश-स्थापन** का विशेष महत्त्व होता है। **कलश-स्थापन का मुहूर्त** मध्याह्न में स्थापन करें। **कलश-स्थापन** का कार्य **चित्रा वैधृति** योग त्याग कर प्रातःकाल में करें। उक्त योग प्राप्त होने पर **अभिजिन्नमुहूर्त** में करें। यह पूजा परम सिद्धिदायिनी है। **२० मार्च** को **चन्द्रदर्शन** मुहूर्त विचार से खाद्यपदार्थों के मूल्य सामान्य रहेंगे। **२१ मार्च** को **सौ.सुन्दरी तीज व्रत**,तथा **गणगौरी व्रत** मारवाड़ क्षेत्र में सौभाग्यवती स्त्री द्वारा होता है। **२२ मार्च** को **वैना.गणेश चतुर्थी व्रत** को दमनक पत्तो पर वासुदेव स्वरूप कृष्ण का विधिपूर्वक पूजन करें। **२५ मार्च** को **सा.४।२९** से भवानी **अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारंभ** तथा **मध्यरात्रि** (निशीथकाल) में अष्टमीयोग से **महानिशापूजा**, बलिदानादि अन्य कृत्य होंगे। (शेष पृष्ठ ८ पर)

वैशाखकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १३ चैत्र से २७ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक ३ अप्रैल से १७ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल वसंतऋतु॥

दि.	मा.	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
३०	४७	१	शु	३	३२	प्रा	७	१६	चित्रा	३०	३२	सा	६	४	व्याघात	१८	१३	दि	१	८	कौ	३	३२	तै	३५	२	मुसल
३०	५०	२	श	६	३२	दि	८	२६	स्वाती	३५	३२	रा	८	३	हर्षण	१८	९	दि	१	६	गर	६	३२	व	३८	३५	सिद्धि
३०	५४	३	र	१०	३८	दि	१०	४	विशाखा	४१	२३	रा	१०	२२	वज्र	१८	५४	दि	१	२३	भ	१०	३८	बव	४३	३	उत्पात
३०	५८	४	चं	१५	२८	दि	११	५९	अनुराधा	४७	४८	रा	१२	५५	सिद्धि	२०	१०	दि	१	५२	बा	१५	२८	कौ	४८	५	मानस
३१	१	५	मं	२०	४२	दि	२	५	ज्येष्ठा	५४	२४	रा	३	३४	व्यतीपात	२१	४३	दि	२	२९	तै	२०	४२	गर	५३	१८	मुद्गर
३१	५	६	बु	२५	५४	दि	४	९	मूल	६०	0	समस्त			वरीयान	२३	१३	दि	३	४	व	२५	५४	भ	५८	१५	ध्वज
३१	१०	७	गु	३०	३६	सा	६	0	मूल	0	४५	प्रा	६	४	परिघ	२४	२१	दि	३	३०	बव	३०	३६	बा	६०	0	धूम्र
३१	१५	८	शु	३४	३३	रा	७	३४	पू.षा.	६	२६	दि	८	१९	शिव	२४	५६	दि	३	४३	बा	२	३४	कौ	३४	३३	प्रवर्द्धमान
३१	१९	९	श	३७	१९	रा	८	४०	उ.षा.	११	१२	दि	१०	१२	सिद्ध	२४	४०	दि	३	३६	तै	५	५६	गर	३७	१९	राक्षस
३१	२३	१०	र	३९	१	रा	९	१९	श्रवण	१५	४६	दि	१२	१	साध्य	२३	३३	दि	३	८	व	८	१०	भ	३९	१	गद
३१	२७	११	चं	३९	२७	रा	९	३०	धनिष्ठा	१७	१७	दि	१२	३८	शुभ	२१	२३	दि	२	२०	बव	९	१४	बा	३९	२७	शुभ
३१	३१	१२	मं	३८	२८	रा	९	५	शतभिष	१८	३४	दि	१	८	शुक्ल	१८	१७	दि	१	२	कौ	८	५७	तै	३८	२८	मृत्यु
३१	३४	१३	बु	३६	१६	रा	८	१२	पू.भा.	१८	३०	दि	१	६	ब्रह्म	१४	१०	दि	११	२२	गर	७	२२	व	३६	१६	पद्म
३१	३७	१४	गु	३३	२	रा	६	५४	उ.भा.	१७	१८	दि	१२	३६	ऐन्द्र	९	११	दि	९	२१	भ	४	३९	श	३३	२	छत्र
३१	४१	३०	शु	२८	५२	सा	५	१३	रेवती	१५	१७	दि	११	४७	वैधृति	३/५३	२५/३३	प्रा	७/४	३/२८	च	0	४७	ना	२८/५६	५२/२३	श्रीवत्स

ति.	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ+		रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	वैशाखकृष्णपक्ष
१	३	१	१४	२०	२०	१३			५	५१	६	९	११	१८	५६	५४	५९	८	५	३	+	२	७	३०	मासपर्यन्त प्रपा(पौसरा)दान। असमर्थता में धर्मघटादि का दान। पीपल के मूल में जलदान। तुलसीदल से श्रीविष्णुपूजन। **महाघटाभिषेक विन्ध्यवासिनीदेवी। गुडफ्राइडे** (क्रि.)।
२	४	२	१५	२१	२१	१४			५	५०	६	१०	११	१९	५६	३	५९	५	५	३६	+	२	८	२५	भ.रा.९।१६से (पाताल)। **ईस्टर सेटरडे** (क्रि.)। यायीजययोग दि.८।२६ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
३	५	३	१६	२२	२२	१५	वृश्चिक	२४।५५	५	४९	६	११	११	२०	५५	८	५९	३	५	४९	+	१	९	२१	भ.दि.१०।४ तक (पाताल)। **वृश्चिकराशि** (दि.३।४७)। **रविवति संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत** (च.उ.रा.९।२१)। **दुगदिवी रथोत्सव**(रत्नागिरी)। **स्वामी लीलाशाह जयंती। ईस्टरसन्डे** (क्रि.)।
४	६	४	१७	२३	२३	१६			५	४८	६	१२	११	२१	५४	१२	५९	१	६	११	+	१	१०	१७	**सतीअनुसूइया जयंती।** यायीजययोग दि.११।५९ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१२।५५ तक।
५	७	५	१८	२४	२४	१७	धनु	५४।२४	५	४८	६	१२	११	२२	५३	१३	५८	५८	६	३४	+	१	११	११	**धनुराशि**(रा.३।३४)। **गुरुतेगबहादुर जयंती**(सिख)। रवियोग रा.३।३४ से।
६	८	६	१९	२५	२५	१८			५	४७	६	१३	११	२३	५२	११	५८	५६	६	५६	+	१	१२	३	भ.दि.४।९ से रा.शे.५।५ तक (पाताल)। **कोकिलाषष्ठी**(मिथिला)। **गुरु अर्जुनदेव जयंती**(सिख)। रवियोगसमस्तदिन दुर्लभसंधिकरयोग दि.४।९ तक। यमघंटयोग समस्तदिन।
७	९	७	२०	२६	२६	१९			५	४६	६	१४	११	२४	५१	७	५८	५४	७	१९	+	0	१२	५०	रवियोग प्रा.६।४ तक।
८	१०	८	२१	२७	२७	२०	मकर	२२।३७	५	४५	६	१५	११	२५	५०	१	५८	५२	७	४१	+	0	१	३३	**मकरराशि**(दि.२।४८)। **कालाष्टमी। श्रीशीतलाष्टमी व्रत।** आज वासी भोजन का ग्रहण शास्त्र विहित है। यात्रा व उत्सवादि। स्थायीजययोग दि.८।१९ तक।
९	११	९	२२	२८	२८	२१			५	४४	६	१६	११	२६	४८	५४	५८	४९	८	४	+	0	२	१२	यायीजययोग दि.१०।१२ तक पश्चातसर्वार्थसिद्धियोग।
१०	१२	१०	२३	२९	२९	२२	कुम्भ	४६।३१	५	४३	६	१७	११	२७	४७	४३	५८	४७	८	२६	+	१	२	४८	भ.दि.८।५९से रा.९।१९तक (पाताल)। **कुम्भराशि**(रा.१२।१९)। **पंचक आरंभ** रा.१२।१९ से।
११	१३	११	२४	३०	३०	२३			५	४३	६	१७	११	२८	४६	३१	५८	४४	८	४८	+	१	३	२२	**वरूथिनी एकादशी ११व्रत** सबका। **श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।** यायीजययोग दि.१२।३८ तक।
१२	१४	१२	२५	३१	१	२४			५	४३	६	१७	११	२९	४५	१५	५८	४२	९	९	+	१	३	५५	**नेपाली वैशाखमास। ⊙अश्विनी मेष में सूर्य** १५।४(दि.११।४५)। मु.१५ महँगीकारक पूर्व व बाद की १०घटी पुण्य। आज सूर्योदय उपरान्त संक्रान्तिजन्य पुण्यकाल। ❶
१३	१५	१३	२६	१	२	२५	मीन	३।३१	५	४२	६	१८	0	0	४३	५८	५८	३९	९	३१	+	२	४	२९	भ.रा.८।१२से (मृत्युलोक)। **मीनराशि**(प्रा.७।६)। **सौर वैशाखमास। प्रदोष १३व्रत। मासशिवरात्रि व्रत। वैशाखादि**(बङ्गाल)। **बगाहबिहू**(असम)। **शिलहेम्बा**(मणिपुर)।
१४	१६	१४	२७	२	३	२६			५	४१	६	१९	0	१	४२	३८	५८	३७	९	५३	+	२	५	५	भ.प्रा.७।३३ तक (मृत्युलोक)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१२।३६ से।
३०	१७	१५	२८	३	४	२७	मेष	१५।१७	५	४१	६	१९	0	२	४१	१५	५८	३५	१०	१४	+	२	-	-	**मेषराशि**(दि.११।४७)। **अमावस्या ३०।** स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष तथा सुख। **पंचक समाप्त** दि.११।४७। **मेलापिंजोर**(हरियाणा)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.११।४७ तक।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	शु	६	१	१०	११	४३०	११	११	0	१५	२	४६	२९	१०	२२	२८	५८	६१	६	२	२४	१३	२०	0	१०	२०	३३	७३	५६	११	८	२	२४	१०	१२	४७	१८
२	श	६	१२	४२	४०	७३८	२७	११	१	१	३२	४६	२९	१०	२३	३०	५	६१	६	२	२४	१६	१४	0	११	३४	२९	७३	५६	११	८	१०	२८	१०	१२	५४	७
३	र	६	२४	४७	१४	७२८	५५	११	१	४८	१	४६	२९	१०	२४	३१	११	६१	६	२	२४	१९	८	0	१२	४८	२५	७३	५६	११	८	१८	३३	१०	१२	५०	५६
४	चं	७	७	४	१४	७२२	४२	११	२	३४	३१	४६	२९	१०	२५	३२	१८	६१	४३	२	२४	२२	१	0	१४	२	२१	७३	५६	११	८	२६	३७	१०	१२	४७	४५
५	मं	७	१९	६	३३	७२०	४३	११	३	२१	0	४६	२९	१०	२६	३४	१	७७	४४	२	२४	२६	२८	0	१५	१६	१७	७३	५६	११	८	३४	४१	१०	१२	४४	३४
६	बु	८	१	८	१७	७३१	४२	११	४	७	३०	४६	२९	१०	२७	५१	४५	७७	४४	२	२४	३२	१५	0	१६	३०	१३	७३	५६	११	८	४२	४५	१०	१२	४१	२३
७	गु	८	१४	२७	३१	७२३	२६	११	४	५३	५९	४६	२९	१०	२९	९	२८	७७	४४	२	२४	३८	१	0	१७	४४	९	७३	५६	११	८	५०	३१	१०	१२	३८	१३
८	शु	८	२५	२१	३१	७३०	४६	११	५	४०	२९	४६	२९	११	0	२७	१२	७७	४५	२	२४	४३	४८	0	१८	५८	५	७३	५६	११	८	५७	५०	१०	१२	३५	२
९	श	९	६	४१	३९	७४१	७	११	६	२६	५८	४६	११	११	१	४४	४७	८१	१८	२	२४	४९	३५	0	२०	१२	१	७३	५६	११	९	५	९	१०	१२	३१	५१
१०	र	९	२०	४	३९	७४३	२५	११	७	१३	१८	४६	१२	११	३	६	१५	८१	४	२	२४	५५	२१	0	२१	२५	५७	७३	५६	११	९	१२	२७	१०	१२	२८	४०
११	चं	१०	१	५५	१४	७८०	१६	११	७	५९	३१	४६	१२	११	४	३५	११	८१	४	२	२५	१	८	0	२२	३९	५३	७३	१३	११	९	१९	४६	१०	१२	२५	२९
१२	मं	१०	१५	४७	३८	७८३	१४	११	८	४५	४३	४६	१२	११	६	४	२४	८१	४	२	२५	६	५५	0	२३	५३	७	७२	५७	११	९	२७	५	१०	१२	२२	१९
१३	बु	१०	२९	१३	४	८००	५३	११	९	३१	५६	४६	१२	११	७	३३	२८	८१	९	२	२५	१२	४१	0	२५	६	३	७२	५७	११	९	३४	२४	१०	१२	१९	८
१४	गु	११	१२	४४	३८	८१६	११	११	१०	१८	९	४६	१२	११	९	२	३७	९३	५१	२	२५	१८	२८	0	२६	१९	0	७२	५७	११	९	४१	४३	१०	१२	१५	५७
३०	शु	११	२६	२१	८	८२७	४९	११	११	४	२२	४६	१२	११	१०	३६	२८	९८	१०	२	२५	२४	१५	0	२७	३१	५७	७२	५७	११	९	४९	१	१०	१२	१२	४६

३ पं० वैशाखकृष्ण ८ शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह धुगण
३२०४ अयनांश २४।१२।५९

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	११	२	0	११	१०	४
२५	२५	५	0	२४	१८	८	१२	१२
५०	२१	४०	२७	४३	५८	४७	३५	३५
१	३९	२९	१२	४८	५	५०	२	२
५८	७३०	४६	७७	५	७३	७	३	३
५२	४६	२९	४५ मा	४७	५६	१९	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि लग्न अं.	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ चं. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	तिथि लग्न अं.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	३० शु. घं.	मि.
मीन	६	२३	६	१९	६	१५	६	१२	६	८	६	५	६	१	५	५८	५	५४	५	५१	५	४७	५	४४	मेष	७	१६	७	१२	७	९
मेष	८	0	७	५६	७	५२	७	४९	७	४५	७	४२	७	३८	७	३५	७	३१	७	२८	७	२४	७	२१	वृष	९	१२	९	८	९	५
वृष	९	५६	९	५२	९	४८	९	४५	९	४१	९	३८	९	३४	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०	९	१७	मिथुन	११	२६	११	२२	११	१९
मिथुन	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५२	११	४८	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३१	कर्क	१	४४	१	४०	१	३७
कर्क	२	२८	२	२४	२	२०	२	१७	२	१३	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५६	१	५२	१	४९	सिंह	३	५८	३	५४	३	५१
सिंह	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०	४	१७	४	१३	४	१०	४	६	४	३	कन्या	६	११	६	७	६	४
लग्न अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		लग्न अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	३०	६	२६	६	२३	६	१९	६	१६	तुला	८	२७	८	२३	८	२०
तुला	९	११	९	७	९	३	९	0	८	५६	८	५३	८	४९	८	४६	८	४२	८	३९	८	३५	८	३२	वृश्चिक	१०	४४	१०	४०	१०	३७
वृश्चिक	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	३	१०	५९	१०	५६	१०	५२	१०	४९	धनु	१२	५०	१२	४६	१२	४३
धनु	१	३४	१	३०	१	२६	१	२३	१	१९	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	२	१२	५८	१२	५५	मकर	२	३७	२	३३	२	३०
मकर	३	२१	३	१७	३	१३	३	१०	३	६	३	३	२	५९	२	५६	२	५२	२	४९	२	४५	२	४२	कुम्भ	४	८	४	४	४	१
कुम्भ	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१	४	३७	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१३	मीन	५	३६	५	३२	५	२९

४ पं० वैशाखकृष्ण ३० शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह धुगण
३२११ अयनांश २४।१२।५२

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	११	११	११	२	0	११	१०	४
२	२६	११	१०	२५	२७	९	१२	१२
४१	२९	४	३६	२४	३१	४९	१२	१२
१५	८	२२	२८	१५	५७	१	४६	४६
५८	८२७	४६	१८	२	७२	८	३	३
३५	४९	१२	१० मा	५३	५७	४	११	११



❶हरिद्वार काशी के असी संगम में स्नान। सत्तु पंखा जलकुम्भादि दान। **सौम्यगोल। खरमास समाप्ति। वैशाखी**(पंजाब)। **मेषसंक्रान्ति**(उड़ीसा)। **चड़कपूजा** (बङ्गाल)। **चेईरोबा** (मणिपुर)। **मेषादि**(तमिलनाडु)। **विशु**(केरल)। **डा.अम्बेडकर जयंती। साखुयात्रा**(नेपाल)। **तमिलनववर्षारंभ** स्थायीजयत्रिपुष्करयोग दि.१।८ से। **साखुयात्रा**(नेपाल)। स्थायीजयत्रिपुष्करयोग दि.१।८

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.४ सोम रा.१२।५५ से। **ति.**७ गुरु प्रा.६।४ तक। **रेवती/ अश्विनी ति.** १४ गुरु दि.१२। ३६ से। **पञ्चक विचार-ति.** १० रवि रा.१२।१९ से। **ति.** ३० शुक्र दि. ११।४७ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पू.भा.। **ति.**४ सोम उ.भा.५८।४१(रा.शे.५।१६)॥ **मार्गीबुध**-पू.भा.। **ति.**७ गुरु मीन ३९।०(रा.९।२२)॥ **ति.**१० रवि उ.भा.९।१५ (दि.९।२५)॥ **गुरु**-पुनर्वसु २ चरण॥ **शुक्र**-अश्विनी। **ति.**३ रवि भरणी २५।३८ (सा.४।४)॥ **ति.**१४ गुरु कृत्तिका १७।१६ (दि.१२।३५)॥ **शनि**-उ.भा. २ चरण॥ **राहु**-शतभिष २ चरण॥ **केतु**-मघा ४ चरण॥

वैशाख कृष्ण पक्ष विचार- यह पक्ष १५ दिनों का है। वैशाख कृष्ण चतुर्दशी गुरुवारी होने से कृषि उपज उत्तम हो। **ता. ३ अप्रैल** को वैशाख मास प्रारंभ हो रहा है। आज **माँ विन्ध्याचल देवी का महाघट अभिषेक** होगा। आज से मास पर्यन्त पौसरा दान करें, असमर्थता में जलपूर्ण घट का दान करें। पीपल के मूल (जड़) में जलदान तथा तुलसीदल से विष्णुजी का पूजन करें। ५ **अप्रैल** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी** का व्रत कर चन्द्रमा को अर्घ्य रात ९:२१ पर दिया जायेगा। ९ **अप्रैल** को रात्रि में शीतला माता का पूजनकर **१० अप्रैल** को **शीतलाष्टमी व्रत बसिअउरा**☛ होगा, आज बासी भोजन करना शास्त्र विहित है। **१३ अप्रैल को वरूथिनी एकादशी का व्रत सबके लिये है। १४ अप्रैल को सूर्य का मेष राशि में प्रवेश** दि. ११।४५ पर हो रहा है। अतः आज सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्य-काल होगा तथा **खरमास** समाप्त हो जायेगा। इसे सत्तू संक्रांति अथवा **सतुआ संक्रांति** भी कहते हैं। इसमें काशी, हरिद्वार तीर्थ में स्नान का विधान है। सत्तु, पंखा तथा जल-कुम्भादि के दान का महत्त्व है। **मेष के सूर्य में दान विशेष**–जो मनुष्य मेष के सूर्य में देवों तथा पितरों के उद्देश्य से सत्तू तथा जलपूर्ण घट का दान करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय काल से पूर्व किसी तीर्थ स्थल, नदी, कुंआ, तालाब अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करके भगवान् विष्णु, राम अथवा श्रीकृष्णजी के मन्त्र का यथा-शक्ति जप करें। एक बार भोजन करना चाहिए। ऐसा इकतीस दिन तक करने से अनेक प्रकार के रोग व दोष दूर होते हैं तथा प्रभाव व पुण्य की वृद्धि होती है। वैशाख मास के प्रारंभ से मास पर्यन्त पौसरा दान करें, असमर्थता मे जलपूर्ण घट का दान करें। पीपल के मूल (जड़) मे जलदान तथा तुलसीदल से विष्णुजी का पूजन करें। **१५ अप्रैल** को समस्त कामनापूर्ति हेतु **प्रदोष व्रत** तथा **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१७ अप्रैल को स्नान-दान-श्राद्ध** की **अमावास्या** है।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति. १ शुक्र चित्रा भौमवेध। **ति.** २ शनि स्वाती में भौमवेध किन्तु चंद्र अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.** ३ रवि दि.१०।४ भद्रा बाद रिक्तादोष। **ति.**४सोम दि.११।५९ रिक्ता बाद दि.१।५२ (५मी) व्यतीपात पूर्व अनु. जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन **दक्षिणदिशा को छोड़कर यात्रा** दवँरी **विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.**५ मंगल दि.२।२९ व्यतीपात बाद ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया मुहूर्त। **ति.**६ बुध दि.४।९ भद्रापूर्व मूल शिशुताम्बूलभक्षण दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.**७ गुरु मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण बागवानी दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन नाव निर्माण **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.**८ शुक्र रा.७।३४ रिक्तापूर्व पू.षा.में नाव निर्माण मुहूर्त। **ति.**९ शनि उ.षा.रिक्तादोष। **ति.**१० रवि दि.८।५९ भद्रापूर्व श्रवण पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.**११ सोम धनिष्ठा मे जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय **कुम्भ के चन्द्र में पश्चिमदिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय **कूपनिर्माण (बोरिंग)** धानकटाई मुहूर्त। **ति.**१२ मंगल शत.गजकृत्य शल्यक्रिया मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

वैशाखशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २८ चैत्र से ११ वैशाख तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १८ अप्रैल से १ मई तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल वसंतऋतु।।

दि.मा.		तिथि ति.	वा	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ.प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.	
३१	४४	१	श	२३	५४	दि	३	१३	अश्विनी	१२	२९	दि	१०	३६	प्रीति	४९	५८	रा	१	३९	वव	२३	५४	बा	५१	९	सौम्य	१८	१६	२९	४	५	२८			५	४०	६	२०	0	३	३९	५१	५८	३३	१०	३५	-	२	७	२९	◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग दुर्भिक्ष। मु.१५ मँहगी। देवदामोदरतिथि(असम)। गुरु अङ्गददेव जयंती(सिख)। यायीजययोग दि.१०।३६ से।
३१	४७	२	र	१८	२५	दि	१	१	भरणी	८	५०	दि	९	१०	आयुष्मान	४२	३५	रा	१०	४१	कौ	१८	२५	तै	४५	२८	कालदण्ड	१९	१७	१	५	६	२९	वृष	२२।५१	५	३९	६	२१	0	४	३८	२४	५८	३२	१०	५६	-	३	८	४०	मु.जिल्काद ११ हि.१४४७। वृषराशि(दि.२।४७)। प्रदोष में परशुराम जयती। छत्रपति शिवाजी जयंती(तिथिमत)। त्रिपुष्करयोग दि.९।१० से।
३१	५१	३	चं	१२	३२	दि	१०	३९	कृत्तिका	४	५४	प्रा	७	३६	सौभाग्य	३४	५९	रा	७	३८	गर	१२	३२	व	३९	३०	स्थिर	२०	१८	२	६	७	३०			५	३९	६	२१	0	५	३६	५६	५८	२९	११	१७	-	३	९	५१	भ.रा.९।२७ से (स्वर्ग)। मध्याह्न में वैना.श्रीगणेश ४ व्रत। रोहिणीयुक्त अक्षयतृतीया ३ व्रत। ग्रैष्मिकसस्य जलकुम्भ–शर्करा व्यजनादि दानम्। ❶
३१	५४	४	मं	६	२८	दि	८	१३	रोहिणी	0 ५५	४७ ५२	प्रा	५ ४	५६ १७	शोभन	२७	१४	सा	४	३१	भ	६	२८	वव	३३	२६	मातङ्ग	२१	१९	३	७	८	१	मिथुन	२८।४३	५	३८	६	२२	0	६	३५	२५	५८	२७	११	३७	-	४	१०	५७	भ.दि.८।१३तक (स्वर्ग)। राष्ट्रिय वैशाखमास दि.३१। मिथुनराशि(सा.५।१७)। रवियोग समस्तदिन। स्थायीजयसर्वार्थसिद्धियोग प्रा.५।५६ से।
३१	५७	५	बु	0 ५४	२५ ११	प्रा	५ ३	४७ २७	आर्द्रा	५२	४३	रा	२	४३	अतिगंड	१९	३८	दि	१	२८	बा	0	२५	कौ	२७ ५४	३० ३६	मुसल	२२	२०	४	८	९	२			५	३७	६	२३	0	७	३३	५२	५८	२५	११	५८	-	४	११	५६	आद्यजगद्गुरुशङ्कराचार्य जयन्ती। सूरदास जयंती। श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। सप्तमी अनुरोध से श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती। चन्दनषष्ठी(बङ्गाल)। रवियोग रा.२।४३ तक।
३२	0	७	गु	४९	१२	रा	१	१७	पुनर्वसु	४९	१३	रा	१	१८	सुकर्मा	१२	१५	दि	१०	३१	गर	२१	५४	व	४९	१२	सिद्धि	२३	२१	५	९	१०	३	कर्क	३५।६	५	३७	६	२३	0	८	३२	१७	५८	२२	१२	१८	-	४	१२	४७	भ.रा.१।१७ से (मृत्युलोक)। कर्कराशि(रा.७।३९)। श्रीगङ्गासप्तमी (मध्याह्न)। श्रीगङ्गा उत्पत्ति। गङ्गापूजन। जह्नुसप्तमी। शर्करासप्तमी। बाबू कुँवरसिंह ❷
३२	३	८	शु	४४	२३	रा	११	२१	पुष्य	४६	१८	रा	१२	७	धृति	५ ४३	१४ ३३	प्रा	७ ५	४२ ७	भ	१६	४७	वव	४४	२३	उत्पात	२४	२२	६	१०	११	४			५	३६	६	२४	0	९	३०	३९	५८	२१	१२	३८	-	४	१	३०	भ.दि.१२।१९तक (मृत्युलोक)। श्रीबगलामुखी जयंती। रवियोग रा.१२।७ से। स्थायीजययोग रा.११।२१ तक।
३२	६	९	श	४०	२४	रा	९	४४	श्लेषा	४४	१७	रा	११	१७	गंड	५३	२	रा	२	४७	बा	१२	२४	कौ	४०	२४	मानस	२५	२३	७	११	१२	५	सिंह	४४।१७	५	३५	६	२५	0	१०	२९	0	५८	१९	१२	५८	-	४	२	७	सिंहराशि(रा.११।१७)। श्रीसीतानवमी। श्रीजानकी जयन्ती। मैथिल दिवस। मृत्युबाण ३१।५३(सा.६।२०)तक। रवियोगसमस्त दिन। यायीजययोग रा.९।४४ तक।
३२	९	१०	र	३७	२१	रा	८	३०	मघा	४३	४	रा	१०	४७	वृद्धि	४८	४	रा	१२	४७	तै	८	५२	गर	३७	२१	मुद्गर	२६	२४	८	१२	१३	६			५	३४	६	२६	0	११	२७	१९	५८	१६	१३	१७	-	४	२	४०	रवियमघंटयोग रा.१०।४७ तक।
३२	१२	११	चं	३५	२३	रा	७	४२	पू.फा.	४२	५८	रा	१०	४४	ध्रुव	४३	५८	रा	११	८	व	६	२२	भ	३५	२३	ध्वज	२७	२५	९	१३	१४	७	कन्या	५८।५५	५	३३	६	२७	0	१२	२५	३५	५८	१३	१३	३७	-	४	३	११	भ.दि.८।६से रा.७।४२तक (मृत्युलोक)। कन्याराशि(रा.शे.४।५१)। मोहिनीएकादशी व्रत। लक्ष्मीनारायण एकादशी(उ.)।⊙भरणी में सूर्य ५६।४(रा.शे.३।५९)।
३२	१५	१२	मं	३४	३५	रा	७	२२	उ.फा.	४४	४	रा	११	१०	व्याघात	४०	५२	रा	९	५३	वव	४	५९	बा	३४	३५	धाता	२८	२६	१०	१४	१५	८			५	३३	६	२७	0	१३	२३	४८	५८	११	१३	५६	-	४	३	४१	रुक्मणी द्वादशी। परशुराम द्वादशी। पिपीतकी द्वादशी(बङ्गाल)। त्रिपुष्करयोग रा.७।२२ तक।
३२	१८	१३	बु	३५	२	रा	७	३२	हस्त	४६	२९	रा	१२	७	हर्षण	३८	४६	रा	९	२	कौ	४	४८	तै	३५	२	आनंद	२९	२७	११	१५	१६	९			५	३२	६	२८	0	१४	२१	५९	५८	९	१४	१५	-	५	४	१२	प्रदोष १३व्रत। ओंकारेश्वर यात्रा। रवियोग रा.१२।७ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। ❸ रवियोग सा.१।३४ तक।
३२	२१	१४	गु	३६	५७	रा	८	१७	चित्रा	५०	९	रा	१	३४	वज्र	३७	४३	रा	८	३६	गर	५	५९	व	३६	५७	चर	३०	२८	१२	१६	१७	१०	तुला	१८।१९	५	३१	६	२९	0	१५	२०	८	५८	८	१४	३३	-	५	४	४४	भ.रा.८।१७ से (पाताल)। तुलाराशि(दि.१२।५१)। श्रीनृसिंहचतुर्दशी व्रत। सायाह्न में लक्ष्मी संग पूजन। श्रीनृसिंहावतार। प्रदोष श्रीछिन्नमस्तका जयंती। ❸
३२	२४	१५	शु	३९	५२	रा	९	२७	स्वाती	५४	५५	रा	१	२८	सिद्धि	३७	२९	रा	८	३०	भ	८	२४	वव	३९	५२	गद	मई	२९	१३	१७	१८	११			५	३१	६	२९	0	१६	१८	१६	५८	७	१४	५२	-	५	५	१९	भ.दि.८।५३तक (पाताल)। मई ५। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। वैशाख व्रत यम नियमादि समाप्ति। कूर्मजयंती १५। पुष्करादेवीजन्म। संपतगौरीव्रत। ❹

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.३ सोम प्रा.७।३६से रोहिणी रे.१० **दिन ल.२** (दि.८।५३ तक) इष्ट ६ प्र.व. वि.१५ या **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल)। या **ल.१०** (रा.१२।३१से) इष्ट६ ग.व.वि.११।।

ति.४ मंगल प्रा.५।५६ से मृग. रे.९ **दिन ल.२** (प्रा.६।५३ से) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५ या **ल.गोधूलि** (सूर्यास्त) या **ल.१०** (रा.१२।२७ से) इष्ट ६ प्र.व.वि.११।।

ति.९ शनि रा.११।१७ से मघा केतुयुति।

ति.१० रवि मघा पूर्वदोष।

ति.११ सोम रा.१०।४४ से उ.फा. भौमवेध।

ति.१२ मंगल उ.फा. में पूर्वदोष। रा.११।१०से हस्त भौमवेध किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है।

ति.१३ बुध हस्त पूर्वदोष।

ति.१४ गुरु रा.१।३४ से स्वाती राहुवेध।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	श	0	१०	२६	५२	८४१	७	११	११	५०	३५	४६	१२	११	१२	१४	३८	९८	१०	२	२५	३०	२	0	२८	४४	५४	७२	४५	११	९	५६	२०	१०	१२	९	३५
२	र	0	२४	३४	५३	८४९	४८	११	१२	३६	४८	४६	१२	११	१३	५२	४८	९८	१०	२	२५	३५	५०	0	२९	५७	३९	७२	४०	११	१०	३	३७	१०	१२	६	२५
३	चं	१	८	५०	५	८५६	७	११	१३	२३	0	४६	१२	११	१५	३०	५८	९८	१५	२	२५	४१	३७	१	१	१०	१९	७२	४०	११	१०	१०	५४	१०	१२	३	१४
४	मं	१	२३	८	४७	८५८	५५	११	१४	९	१३	४६	१२	११	१७	९	१४	१०३	१५	२	२५	४७	२५	१	२	२२	५९	७२	४०	११	१०	१८	११	१०	१२	0	३
५	बु	२	७	२७	३५	८५६	२२	११	१४	५५	२६	४६	१२	११	१८	५२	२९	१०५	४१	२	२५	५३	१३	१	३	३५	४०	७२	४०	११	१०	२५	२८	१०	११	५६	५२
७	गु	२	२१	४३	८	८४९	३३	११	१५	४१	३९	४६	१२	११	२०	३७	१०	१०५	४९	२	२५	५९	0	१	४	४८	२०	७२	४०	११	१०	३२	४५	१०	११	५३	४१
८	शु	३	५	५१	७	८४०	५२	११	१६	२७	५२	४६	१२	११	२२	२२	५९	१०६	५८	२	२६	६	४७	१	६	१	0	७२	४०	११	१०	४०	२	१०	११	५०	३१
९	श	३	१९	४९	१	८२७	४९	११	१७	१४	५	४६	१२	११	२४	८	४७	१०९	५६	२	२६	१४	४१	१	७	१३	४१	७२	४०	११	१०	४६	५५	१०	११	४७	२०
१०	र	४	३	३३	५४	८१६	३३	११	१८	0	१७	४६	१२	११	२५	५५	१४	१०९	५६	२	२६	२२	३८	१	८	२६	२१	७२	४०	११	१०	५३	२६	१०	११	४४	९
११	चं	४	१७	६	९	८०१	२०	११	१८	४६	३०	४६	१२	११	२७	४५	११	१०९	५६	२	२६	३०	३५	१	९	३९	१	७२	४०	११	१०	५९	५८	१०	११	४०	५८
१२	मं	५	0	२३	९	७८५	३५	११	१९	३२	४३	४६	१२	११	२९	३५	७	१०९	५६	२	२६	३८	३३	१	१०	५१	४२	७२	४०	११	११	६	३०	१०	११	३७	४७
१३	बु	५	१३	२४	१३	७६९	१	११	२०	१८	५६	४६	१२	0	१	२५	३	१११	५६	२	२६	४६	३०	१	१२	४	२२	७२	४०	११	११	१३	२	१०	११	३४	३७
१४	गु	५	२६	९	५१	७५३	५५	११	२१	५	९	४६	१२	0	३	१४	५९	११५	५४	२	२६	५४	२७	१	१३	१७	२	७२	४०	११	११	१९	३३	१०	११	३१	२६
१५	शु	६	८	४१	४०	७४१	७	११	२१	५१	२१	४६	१२	0	५	६	५३	११५	१४	२	२७	२	२५	१	१४	२९	४२	७२	४०	११	११	२६	५	१०	११	२८	१५

५ पं० वैशाखशुक्ल ८ शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह चुगण
३२१८ अयनांश २४।१२।५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	३	११	११	२	१	११	१०	४
९	५	१६	२२	२६	६	१०	११	११
३०	५१	२७	२२	६	१	४०	५०	५०
३९	७	५२	५९	४७	0	२	३१	३१
५८	८४०	४६	१०५	७	७२	६	३	३
२९	५२	१२	५८	५७	४०	५२	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	१५ शु. घं.	मि.
मेष	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१५
वृष	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	११
मिथुन	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२५
कर्क	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४३
सिंह	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५७
कन्या	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	१०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२६
वृश्चिक	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४३
धनु	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४९
मकर	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३६
कुम्भ	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	७
मीन	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	१२	४	३८	४	३५

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ शनि अश्विनी में केतुवेध। **ति.२** रवि भरणी में केतुवेधकिन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.३** सोम दि.१०।३९. रिक्तापूर्व कृत्तिका में धानकटाई मुहूर्त। प्रा.७।३६से रोहिणी में **वधूप्रवेश** (**ल.२** प्रा.६।५७ से) **द्विरागमन** (**ल.२** प्रा.६।५३ से या **ल.३** प्रा.८।५३ से) **हलप्रवहण** मुहूर्त। **ति.४** मंगल दि.८।१३ रिक्ताभद्रा बाद रोहिणी ५मे पुंसवन सीमन्त सूतीकास्नान शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.५** बुध आर्द्रा **विद्यारंभ** (**ल.२** प्रा.६।४९ से या **ल.३** दि.८।४५ से) धान कटाई मुहूर्त। **ति.७** गुरु रा.१।१८ भद्रापूर्व पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय **चौलकेशान्त-कर्णवेध-विद्यारंभ-अक्षरारंभ** (**ल.२** प्रा.६।४५ से या **ल.३** दि.८।४१ से) **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा**(**ल.३** दि.८।४१ से) **द्विरागमन** (**ल.२** प्रा.६।४५से या **ल.३** दि.८।४१से या **ल.९** रा.१०।१३ से) **उपनयन** (रोगबाण) **मिथुन के चन्द्र में पश्चिम दिशा की यात्रा** शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय मुहूर्त। ति.८ शुक्र दि.१२।१९ भद्रा बाद पुष्य पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का **प्रयोग सौभाग्यवती** को छोड़कर नवीवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय **मिथुन के चन्द्र पश्चिम दिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। ति.९ शनि श्लेषा रिक्तादोष। **ति.१०** रवि मघा में केतुयुति। **ति.११** सोम पू.फा.केतुभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.१२** मंगल उ.फा. भौमवेध। **ति.१३** बुध हस्त शनिवेध। **ति.१४** गुरु चित्रा रिक्ताभद्रा है। ति.१५ शुक्र स्वाती मे राहुवेध।

६ पं० वैशाखशुक्ल १५ शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह चुगण
३२२५ अयनांश २४।१२।५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
0	६	११	0	२	१	११	१०	४
१६	८	२१	५	२७	१४	११	११	११
१८	४१	५१	६	२	२९	२६	२८	२८
१६	४०	२१	५३	२५	४२	५	१५	१५
५८	७४१	४६	११५	७	७२	६	३	३
७	७	१२	१४	५७	४०	३१	११	११



❶चन्दनयात्रा। कल्पादि३। त्रेतायुगादि३। सागर स्नान विष्णुचन्दनपूजा। काशी त्रिलोचनयात्रा। श्रीबद्रीकेदार यात्रा। ⊙**सायनवृषसूर्य** ९।२८ (दि.९।२६)। रवियोगयायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोगश्च प्रा.७।३६से। ❷जयंती (बिहार)। रोगबाण२८।२९ (सा.५।९) तक। यायीजययोग रा.१।१७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।१८ तक। ❹फूलदोलयात्रा(बङ्गाल)। गन्धेश्वरीपूजा (बङ्गाल)। बुद्धजयंती १५। बुद्धपूर्णिमा। बुद्धनिर्वाण संवत् २०७० प्रारंभ।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी ति.१ शनि दि.१०।३६ तक। **श्लेषा-मघा ति.८** शुक्र रा.१२।७ से। **ति.१०** रवि रा.१०।४७ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-उ.भा.। **ति.८** शुक्र रेवती में १५।४२ (दि.११।५३)।। **बुध**-उ.भा.। **ति.३**सोम रेवती में ४२।९(रा.१०।३१)। **ति.१२** मंगल अश्विनी मेष में १३।३५ (दि.१०।५९)।। **गुरु**-पुनर्वसु २ चरण। **ति.१२** मंगल पुनर्वसु ३ चरण १०।५७ (दि.१०।७)।। **शुक्र**-कृत्तिका। **ति.२** रवि वृष १।५६(प्रा.६।२५)। **ति.११** सोम रोहिणी १७।१९ (दि.१२।२९)।। **शनि**-ति.१ शनि उ.भा. ३ चरण।। **राहु**-शतभिष २ चरण।। **केतु**-मघा ४ चरण।।

वैशाख शुक्ल पक्ष विचार-षष्ठी तिथि की हानि से यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। मीन राशि स्थित शनि-भौम से युद्ध, हिंसा तथा धन-धान्य को क्षति होगी। **१८ अप्रैल** को **चंद्रदर्शन मुहूर्त** के विचार से खाद्य पदार्थो का मूल्य मंहगे रहेंगे। **१९ अप्रैल** को तृतीया तिथि प्रदोषकाल में प्राप्त होने से **भगवान् परशुराम की जयंती** मनायी जायेगी। **३० अप्रैल को रोहिणी** प्रशस्त **अक्षय तृतीया** का पर्व है। इसे सतयुग की ☛ प्रारंभ-तिथि माना गया है। इस दिन दान अवश्य करना चाहिये, आज के दिन दिया गया दान अक्षय होता है। आज **वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **२२ अप्रैल** को **आद्यजगद्गुरु शंकराचार्य** तथा **संत सूरदास की जयन्ती, श्री रामानुजाचार्य की जयंती** मनाई जायेगी। **२३ अप्रैल** आज **गंगा सप्तमी** मध्याह्न में सप्तमी युक्त मनाई जायेगी। **२५ अप्रैल** को मध्याह्न युक्त नवमी में **सीतानवमी** तथा **मैथिल दिवस** मनाई जायेगी। **२७ अप्रैल** को **मोहिनी एकादशी व्रत** सबका होगा। **२९ अप्रैल** को सर्व कामनापूर्ति हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **३० अप्रैल** को **भगवान् श्रीनृसिंह का अवतार** पर्व प्रदोषव्यापिनी स्वाती युक्त चतुर्दशी में मनाया जायेगा। यह व्रत यथाविधि केवल फलाहार करके किया जाता है। सायंकाल में **नृसिंह भगवान् की पूजा लक्ष्मी संग** कर आरती करें। **१ मई** को **स्नान-दान व व्रत की वैशाख पूर्णिमा** मनाई जायेगी। आज बौद्ध सम्प्रदाय का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व **बुद्ध पूर्णिमा बुद्ध जयंती** के रूप में मनाया जायेगा। आज ही **कूर्म जयंती** भी मनाई जायेगी। **वैशाख व्रत नियम** की आज समाप्ति हो जायेगी।

शुद्धज्येष्ठकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १२ वैशाख से २६ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २ मई से १६ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल वसंतऋतु॥

दि.मा.		तिथि ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ+		रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय काशी		
३२	२७	१	श	४३	४४	रा	११	३	विशाखा	६०	०	समस्त			व्यतीपात	३८	८	रा	८	४५	वा	११	५३	कौ	४३	५४	शुभ	२	१	१४	१८	१९	१२	वृश्चिक	४४।१०	५	३०	६	३०	०	१७	१६	२३	५८	३	१५	१०	-	५	७	१३	वृश्चिकराशि(रा.११।१०)। ज्येष्ठ में पिष्टेन(आटे) से निर्मित ब्रह्ममूर्ति के वस्त्रादि से पूजन करने से सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। **श्रीश्री मांआनंदमयी जयंती।**
३२	३०	२	र	४८	३८	रा	१२	४७	विशाखा	०	३६	प्रा	५	४४	वरीयान	३९	२०	रा	९	१४	तै	१६	१६	गर	४८	३८	उत्पात	३	२	१५	१९	२०	१३			५	३०	६	३०	०	१८	१४	२६	५८	२	१५	२८	-	५	८	९	**देवर्षिनारद जयंती। दादाचेलाराम जयंती। दृश्यअगस्तयास्त**२२।२८(दि.२।२५)। **मृत्युबाण** ४७।१६(रा.१२।२०)से। त्रिपुष्करयोग प्रा.५।४४ तक।
३२	३३	३	चं	५३	४७	रा	३	०	अनुराधा	६	५५	दि	८	१५	परिघ	४०	५२	रा	९	४९	व	२१	१३	भ	५३	४७	मानस	४	३	१६	२०	२१	१४			५	२९	६	३१	०	१९	१२	२८	५७	५९	१५	४६	-	५	९	४	भ.दि.१।५८ से रा.३।० तक (स्वर्ग)। **मृत्युबाण** ४९।११(रा.१।१९)तक। यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग दि.८।१५ तक।
३२	३६	४	मं	५८	५४	रा	५	९	ज्येष्ठा	१३	३२	दि	१०	५२	शिव	४२	२८	रा	१०	२७	बव	२६	२१	बा	५८	५४	मुद्गर	५	४	१७	२१	२२	१५	धनु	१३।३२	५	२८	६	३२	०	२०	१०	२७	५७	५८	१६	३	-	५	९	५६	धनुराशि(दि.१०।५२)। **अङ्गारक संकष्टी श्री गणेश ४ व्रत** (चं.उ.रा.९।५६)। स्थायीजययोग दि.१०।५२ तक।
३२	३९	५	बु	६०	०	समस्त			मूल	१९	५६	दि	१	२६	सिद्ध	४३	४५	रा	१०	५८	कौ	३१	१२	तै	६०	०	ध्वज	६	५	१८	२२	२३	१६			५	२८	६	३२	०	२१	८	२५	५७	५६	१६	२०	-	५	१०	४५	यमघंटयोग दि.१।२६ तक।
३२	४२	५	गु	३	३१	प्रा	६	५१	पू.षा.	२५	४८	दि	३	४६	साध्य	४४	३१	रा	११	१५	तै	३	३१	गर	३५	२७	धाता	७	६	१९	२३	२४	१७	मकर	४२।३	५	२७	६	३३	०	२२	६	२१	५७	५३	१६	३७	-	५	११	२९	मकरराशि(रा.१०।१६)। **गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।** रवियोग दि.३।४६ से।
३२	४५	६	शु	७	२४	दि	८	२४	उ.षा.	३०	४८	सा	५	४६	शुभ	४४	३१	रा	११	१५	व	७	२४	भ	३८	४५	आनंद	८	७	२०	२४	२५	१८			५	२७	६	३३	०	२३	४	१४	५७	५२	१६	५४	-	६	१२	९	भ.दि.८।२४ से रा.८।५७तक (पाताल)। रवियोग सा.५।४६ तक पश्चातसर्वार्थसिद्धियोग।
३२	४८	७	श	१०	५	दि	९	२८	श्रवण	३४	४१	रा	७	१८	शुक्ल	४३	३८	रा	१०	५३	बव	१०	५	बा	४०	५४	स्थिर	९	८	२१	२५	२६	१९			५	२६	६	३४	०	२४	२	६	५७	५१	१७	१०	-	६	१२	४५	प्रदोष में **कालाष्टमी व्रत**। सर्वार्थसिद्धियोग रा.७।१८ तक।
३२	५१	८	र	११	४३	दि	१०	६	धनिष्ठा	३७	२२	रा	८	२१	ब्रह्म	४१	४८	रा	१०	८	कौ	११	४३	तै	४१	५१	मातङ्ग	१०	९	२२	२६	२७	२०	कुम्भ	६।२	५	२५	६	३५	०	२४	५९	५७	५७	४९	१७	२६	-	६	१	१९	कुम्भराशि(प्रा.७।५०)। **पंचक आरंभ** प्रा.७।५० से। **श्रीशीतलाष्टमी व्रत।** आज बासीभोजन का ग्रहण शास्त्रविहित है। **त्रिलोचनाष्टमी** (बङ्गाल)। ▼
३२	५३	९	चं	११	५९	दि	१०	१२	शतभिष	३८	४७	रा	८	५५	ऐन्द्र	३८	५८	रा	९	०	गर	११	५९	व	४१	२९	अमृत	११	१०	२३	२७	२८	२१			५	२५	६	३५	०	२५	५७	४६	५७	४५	१७	४२	-	६	१	५१	भ.रा.१०।१ से (मृत्युलोक)। ⊙**कृत्तिका सूर्य** ४३।५३(रा.१०।५८)। ▼ **त्रिलोचनपूजा।** यायीजययोग दि.१०।६ से।
३२	५६	१०	मं	१०	५९	दि	९	४७	पू.भा.	३८	५८	रा	८	५९	वैधृति	३५	७	रा	७	२६	भ	१०	५९	बव	३९	५२	काण	१२	११	२४	२८	२९	२२	मीन	२३।५५	५	२४	६	३६	०	२६	५५	३१	५७	४४	१७	५७	-	६	२	२४	भ.दि.९।४७ तक (मृत्युलोक)। मीनराशि(दि.२।५८)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।५९ से।
३२	५९	११	बु	८	४५	दि	८	५३	उ.भा.	३७	५९	रा	८	३५	विष्कुंभ	३०	२३	सा	५	३३	बा	८	४५	कौ	३७	६	लुम्बक	१३	१२	२५	२९	३०	२३			५	२४	६	३६	०	२७	५३	१५	५७	४३	१८	१३	-	६	२	५८	**अचला एकादशी व्रत सबका। जलक्रीड़ा एकादशी**(उड़ीसा)। **भद्रकाली एकादशी** (पंजाब)। **मृत्युबाण** ७।१(दि.८।१२)से।
३३	१	१२	गु	५	२६	प्रा	७	३३	रेवती	३६	७	रा	७	४९	प्रीति	२४	४९	दि	३	१८	तै	५	२६	गर	३३	२०	मित्र	१४	१३	२६	३०	३१	२४	मेष	३६।७	५	२३	६	३७	०	२८	५०	५८	५७	४१	१८	२७	-	६	३	३६	मेषराशि(रा.७।४९)। प्रा.७।३३ तक। **पंचक समाप्त** रा.७।४९। एकादशी व्रत का पारण। **प्रदोष १२ व्रत।** तीनदिनों तक **वटसावित्रीव्रत** का प्रारंभ। **मृत्युबाण** ❶
३३	४	१३	शु	१ ५४	५४ ५७	प्रा	५ ३	५२ ५१	अश्विनी	३३	२२	रा	६	४३	आयुष्मान	१८	३४	दि	१२	४८	व	१	१४	भ	२८ ५६	४३ ११	वज्र	१५	१४	२७	३१	१	२५			५	२३	६	३७	०	२९	४८	३९	५७	३९	१८	४२	-	६	४	१८	भ.प्रा.५।५२से सायं ६।५६तक (स्वर्ग)। नेपा.ज्येष्ठ। **मासशिवरात्रि व्रत। वटसावित्रीद्वितीय दिन।** प्रदोष **सावित्री चतुर्दशी** (ब.)। ⊙**सं.वृष में सूर्य** ११।४८ ❷
३३	७	३०	श	५०	३९	रा	१	३७	भरणी	२९	५७	सा	५	५०	सौभाग्य	११	४४	दि	१०	३	च	२३	२५	ना	५०	३९	ध्वांक्ष	१६	१५	२८	१	२	२६	वृष	४३।५९	५	२२	६	३८	१	०	४६	१८	५७	३८	१८	५६	-	६	५	९	**सौर ज्येष्ठ।** वृषराशि(रा.१०।५८)। **अमावस्या ३०।** स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष व भय। **वटसावित्रीव्रत।** स्त्रीयों के नित्य काम्य हेतु। ❸

❶ ९।२३(दि.९।८)तक। यायीजययोग प्रा.७।३३ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.७।४९ तक। ❷ (दि.१०।६)। मु.३० सामान्य। पूर्व की १६घटी पुण्य। आज सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्यकाल। हरिद्वार काशी में असी संगम पर स्नान। गो अन्न तिल दान। गोदावरी में स्नान। **ग्रीष्मर्तु।** सर्वार्थसिद्धियोग रा.६।४३ तक। स्थायीजययोग प्रा.५।५२ से। ❸**सावित्री अमावस्या** (उड़ीसा)। शनिवार युक्त **शनिजयंती। फलहारिणीकालिकापूजा**—निशिथ में (बङ्गाल)।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.२ रवि प्रा.५।४४ से अनुराधा में सूर्यवेध। रा.१२।२० से मृत्युबाण है।

ति.३ सोम दि.८।१५ तक अनु. पूर्वदोष।

ति.४ मंगल दि.१०।५२ से मूल रे.९ **दिन ल.७** (सा.४।५५से) इष्ट५ प्र.व.वि.१२॥ (७वा सूर्य दान) या **ल.१०**(रा.११।३४ से) इष्ट६ प्र.व.वि.११॥ या **ल.११** (रा. १।२१से) इष्ट ५प्र.व.वि.१५॥(७वां केतुदान)

ति.५ बुध दि.१।२६ तक मूल दिन में पञ्चेष्ठ लग्न अभाव।

ति.५ गुरु दि.३।४६ से उ.षा. रे.९ **दिन ल.७** (सा.४।४७से) इष्ट५ प्र.व.वि.१२॥ (७वां सूर्यदान) या **ल.१०**(रा.११।२६ से) इष्ट ६ प्र.व.वि.११॥

ति.६ शुक्र सा.५।४६ तक उ.षा.में **ल. गोधूलि** (सूर्यास्तकाल)।

ति.१० मंगल रा.८।५९से उ.भा. शनियुति।

ति.११ बुध उ.भा.शनियुति मृत्युबाण है।

ति.१२ गुरु प्रा.७।३३ तक रेवती में मृत्युबाण। **पश्चात मासान्त दोष।**

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	श	६	२१	२	२९	७३७	३०	११	२२	३७	३४	४६	१२	०	७	२	७	११५	१४	२	२७	१०	२२	१	१५	४२	२३	७२	४०	११	११	३२	३७	१०	११	२५	४
२	र	७	४	२१	५४	७३०	४६	११	२३	२३	४७	४६	१०	०	८	५७	२०	११५	१४	२	२७	१८	१९	१	१६	५५	७	७२	४०	११	११	३९	८	१०	११	२१	५३
३	चं	७	१५	१६	३४	७२३	४७	११	२४	९	५८	४६	१०	०	१०	५२	३४	११७	९	२	२७	२६	१७	१	१८	७	४३	७२	४०	११	११	४५	३९	१०	११	१८	४२
४	मं	७	२७	१७	२९	७२०	३२	११	२४	५६	९	४६	१०	०	१२	४९	४३	११८	१६	२	२७	३४	१५	१	१९	२०	२४	७२	४०	११	११	५२	९	१०	११	१५	३२
५	बु	८	९	११	५०	७२२	५३	११	२५	४२	२०	४६	१०	०	१४	४७	५१	११८	४२	२	२७	४२	१३	१	२०	३३	४	७२	४०	११	११	५८	३९	१०	११	१२	२१
५	गु	८	२१	२६	३८	७२८	४४	११	२६	२८	३०	४६	१०	०	१६	४६	४२	११८	४२	२	२७	५०	११	१	२१	४५	४४	७२	३	११	१२	५	९	१०	११	९	१०
६	शु	९	३	४०	५५	७३८	२७	११	२७	१४	४१	४६	१०	०	१८	४५	२४	११८	४२	२	२७	५८	९	१	२२	४७	४८	७१	४१	११	१२	११	३९	१०	११	६	१
७	श	९	१६	५	४०	७५१	२२	११	२८	०	५२	४६	१०	०	२०	४४	६	११८	४२	२	२८	६	७	१	२४	९	२८	७१	४१	११	१२	१८	९	१०	११	२	४८
८	र	९	२८	४३	६	७६५	४५	११	२८	४७	३	४६	१०	०	२२	४२	४९	११८	४२	२	२८	१४	३१	१	२५	२१	९	७१	४१	११	१२	२४	३९	१०	१०	५९	३८
९	चं	१०	११	३४	४९	७८१	३२	११	२९	३३	१४	४५	४३	०	२४	४१	३१	११८	४२	२	२८	२४	१७	१	२६	३२	४९	७१	४१	११	१२	३०	३८	१०	१०	५६	२७
१०	मं	१०	२४	४२	२	७९७	३३	०	०	१८	५८	४५	३४	०	२६	४०	१३	११८	४२	२	२८	३४	४	१	२७	४४	३०	७१	४१	११	१२	३६	२२	१०	१०	५३	१६
११	बु	११	८	५	७	८१३	११	०	१	४	३३	४५	३४	०	२८	३८	४५	११८	४२	२	२८	४३	५०	१	२८	५६	१०	७१	४१	११	१२	४२	७	१०	१०	५०	५
१२	गु	११	२१	४२	५९	८२५	४१	०	१	५०	७	४५	३४	१	०	३७	३८	११७	१४	२	२८	५३	३६	२	०	७	५१	७१	४१	११	१२	४७	५१	१०	१०	४६	५४
१३	शु	०	५	३३	४४	८३८	२५	०	२	३५	४२	४५	३४	१	२	३५	५२	११७	२१	२	२९	३	२२	२	१	१९	३१	७१	३४	११	१२	५३	३६	१०	१०	४३	४४
३०	श	०	१९	३६	३३	८४८	१८	०	३	२१	१७	४५	३४	१	४	३३	१३	११७	२१	२	२९	१३	८	२	२	३१	५	७१	२३	११	१२	५९	२१	१०	१०	४०	३३

७ पं०शुद्धज्येष्ठकृष्ण ८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३२३४
अयनांश २४।१२।५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	११	०	२	१	११	१०	४
२४	२८	२८	२२	२८	२५	१२	१०	१०
५९	४३	४७	४२	१४	२१	३४	५९	५९
५७	६	३	४९	३१	९	३९	३८	३८
५७	७६५	४६	११८	१०	७१	५	३	३
४९	४५	१०	४२	४६	४१	४७	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि लग्न अंश	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	९ चं. घं.	मि.	१० मं. घं.	मि.	११ बु. घं.	मि.	१२ गु. घं.	मि.	१३ शु. घं.	मि.	तिथि लग्न अंश	३० श. घं.	मि.
मेष	६	११	६	७	६	३	६	०	५	५६	५	५२	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८	५	३४	५	३१	५	२७	५	२४	वृष	७	१५
वृष	८	७	८	३	७	५९	७	५६	७	५२	७	४८	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३०	७	२७	७	२३	७	२०	मिथुन	९	२९
मिथुन	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५९	९	५५	९	५२	९	४८	९	४४	९	४१	९	३७	९	३४	कर्क	११	४७
कर्क	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५२	सिंह	२	१
सिंह	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१	२	२७	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	६	कन्या	४	१४
कन्या	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७	४	४४	४	४०	४	३७	४	३३	४	२९	४	२६	४	२२	४	१९	तुला	६	३०
लग्न अंश	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		लग्न अंश	रात्रि	
तुला	७	२२	७	१८	७	१४	७	११	७	७	७	३	७	०	६	५६	६	५३	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३५	वृश्चिक	८	४९
वृश्चिक	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	९	२४	९	२०	९	१७	९	१३	९	१०	९	६	९	२	८	५९	८	५५	८	५२	धनु	१०	५३
धनु	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४	११	३०	११	२६	११	२३	११	१९	११	१६	११	१२	११	८	११	५	११	१	१०	५८	मकर	१२	४८
मकर	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	१	१०	१	६	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४८	१२	४५	कुम्भ	२	११
कुम्भ	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४८	२	४४	२	४१	२	३७	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	३	१९	२	१६	मीन	३	३९
मीन	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	९	४	५	४	२	३	५८	३	५४	३	५१	३	४७	३	४४	मेष	५	१६

८पं०शुद्धज्येष्ठकृष्ण ३०शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३२४०
अयनांश २४।१२।५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	०	१	२	२	११	१०	४
०	११	३	४	२९	२	१२	१०	१०
४६	३६	२१	३३	१३	३१	५९	४०	४०
१८	३३	१७	१३	८	५	२१	३३	३३
५७	८४८	४५	११७	९	७१	५	३	३
३७	१८	३४	२१	४६	२३	४४	११	११



मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.३ सोम दि.८।१५ से। **ति.५** बुध दि.१।२६ तक। **रेवती/अश्विनी ति.११** बुध रा. ८।३५ से। **ति.१३** शुक्र रा.६।४३ तक। **पञ्चक विचार-ति.८** रवि प्रा.७।५० से। **ति.१२** गुरु रा.७।४९ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।।भौम-रेवती में। **ति.९** सोम अश्विनीमेष ३५।७ (रा.७।२८)॥ **बुध-ति.४** मंगल भरणी १५।२२ (दि.११।३६)। **ति.९** सोम कृत्तिका ५९।५३ (रा.शे.५।२१)। **ति.११** बुध वृष ०।४१(प्रा.५।४०)॥ **गुरु**-पुनर्वसु ३ चरण॥ **शुक्र**-रोहिणी। **ति.६** शुक्र मृग में १८।३५ (दि.१२।५३)। **ति.११** बुध मिथुन ५३।२६ (रा.२।४६)॥ **शनि**-उ.भा.३ चरण॥ **राहु**- शतभिष २ चरण॥ **केतु**-मघा ४ चरण॥

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष विचार- पंचमी तिथि की वृद्धि तथा १४ तिथि की हानि से यह पक्ष पूरे पन्द्रह दिनों का है। ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा शनिवारी होने से व्याधि तथा पीड़ा जन्य परिस्थितियाँ होगी। गुरु शुक्र का योग आकाल तथा दुखदायी होता है। **२ मई रविवार** को ज्येष्ठ मास का प्रारंभ है। आज आटे से निर्मित ब्रह्म मूर्ति का वस्त्रादि से पूजन करने से सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। **३ मई** को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में बिना किसी वाहन के पैदल ही पहुँचकर सूचना पहुँचाने वाले आदि संचार वाहक ☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ शनि विशाखा में व्यतीपात। रा.८।४५ व्यतिपात बाद शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.२** रवि विशाखा सौभाग्यवती को छोड़कर नवीन वस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी चौपायो का क्रय विक्रय नाव निर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। प्रा.५।४४ से अनु. **विद्यारंभ-अक्षरारंभ** (**ल.२** प्रा.६।७ से या **ल.३** दि.८।३ से) **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा** (**ल.३** दि.८।३ से) **उपनयन** (**ल.२** प्रा.६।७ से) **बीजोप्ति** मुहूर्त। **ति.३** सोम दि.१।५८ भद्रा पूर्व अनु.जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग **पश्चिम दिशा की यात्रा** दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **कर्णवेध** (**ल.३** प्रा.७।५९से) **उपनयन** (**ल.२** प्रा.६।३ से) **विपणि व्यापार** वाहनक्रय **गर्भाधान** मुहूर्त। दि.८।१५से ज्येष्ठा **चौल-गृहारंभ** (**ल.३** दि.८।१५से) **बीजोप्ति** मुहूर्त। **ति.४** मंगल ज्येष्ठा रिक्तादोष। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। **ति.५** बुध मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण दवँरी धान्यरोपाई औषधी सेवन **विद्यारंभ-अक्षरारंभ** (**ल.३** प्रा.७।५२ से) **उपनयन** (**ल.२** प्रा.५।५६ से चं.दा.) **बीजोप्ति विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.५** गुरु दि.३।४६ से उ.षा.नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीन वस्त्रस्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या नाव निर्माण धानकटाई **वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। **ति.६** शुक्र दि.८।२४ भद्रा बाद उ.षा.जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना सूतीका स्नान (७मी) नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीन वस्त्रस्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या नाव निर्माण धानकटाई **गर्भाधान वर-कन्या वरण(सगाई)**मुहूर्त। **ति.७** शनि श्रवण वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.८** रवि दि.१०।६ रिक्तापूर्व धनिष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.९** सोम शत.राहुयुति। **ति.१०** मंगल पू.भा.वैधृति। **ति.११** बुध उ.भा.शनियुति। **ति.१२** गुरु रेवती भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **पश्चात मासान्त दोष है।**

☛ **गुरु देवर्षि नारद जी की जयंती** मनाई जायेगी एवं **वीणा पूजन** का उत्सव किया जायेगा। **५ मई** को **सं.गणेश चतुर्थी व्रत** कर रात्रि ८:५६ पर अर्घ्य दिया जायेगा। **९ मई** को सप्तमी में व्रत कर देवी का पूजन कर अगले दिन **१० मई** को **शीतलाष्टमी व्रत बसिअउरा** होगा, आज बासी भोजन करना शास्त्र विहित है। **१३ मई** को **अचला एकादशी व्रत** सबका है, इस दिन व्रत करने से अचल अपार पापों से मुक्ति मिलती है। **१४ मई** को प्रातः ७:३३ तक एकादशी व्रत का पारण होगा। आज कामना लाभ हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज से ही **सौभाग्यदायी वटसावित्री व्रत** का प्रारंभ होगा, जो कि तीन दिनों तक चलेगा। **१५ मई** को निशीथ १४ तिथि में **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। आज **वृष की संक्रांति** दिन १०:६ से लगेगी, पुण्यकाल आज सूर्योदय से मध्याह्न तक होगा। गोदावरी, हरिद्वार व काशी में असीसंगम पर स्नान कर गो, तिल, सुवर्ण, अन्नादि एवं वस्त्र का दान करना चाहिए। आज से **ग्रीष्म ऋतु** प्रारम्भ हो जायेगा। **१६ मई** को **स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या** तथा प्रदोष अमावस्या में **वटसावित्री व्रत** का समापन होगा। **वटसावित्री व्रत** को **वरगदाई** भी कहते हैं। इस दिन स्त्रियाँ सौभाग्य हेतु वटवृक्ष की १०८ बार या यथाशक्ति कच्चा सूत लपेटते हुए परिक्रमा करती हैं। आज शनिवार युक्त **श्रीशनिदेव की जयंती** मनाई जायेगी।

अधिकज्येष्ठशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २७ वैशाख से १० ज्येष्ठ तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १७ मई से ३१ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

१९

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु॥

दि.मा.		तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ+		रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.	
३३	९	१	र	४४	४१	रा	११	१४	कृत्तिका	२६	७	दि	३	४८	शोभन	४/५२	२८/२७	प्रा	७/४	१/८	कि	१७	४०	बव	४४	४१	धूम्र	१७	१६	२९	२	३	२७			५	२२	६	३८	१	१	४३	५६	५७	३६	११	१०	-	६	-	-	दशाश्वमेध स्नान प्रारंभ। तिथि १०तक गंगास्तोत्र पाठ का वृद्धिक्रम से नित्य पाठ। यायीजययोग दि.३।४८ से।
३३	११	२	चं	३८	३३	रा	८	४६	रोहिणी	२२	२	दि	२	९	सुकर्मा	४९	१६	रा	१	३	बा	११	३७	कौ	३८	३३	प्रवर्द्धमान	१८	१७	३०	३	४	२८	मिथुन	४९।५६	५	२१	६	३९	१	२	४१	३२	५७	३४	११	२४	-	६	८	४०	◡ चन्द्रदर्शन। समर्घ सामान्य। मु.३०सामान्य। **मिथुनराशि** (रा.१।१९)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.२।९ तक।
३३	१४	३	मं	३२	२६	सा	६	१९	मृगशिर	१७	५१	दि	१२	२९	धृति	४१	४३	रा	१०	२	तै	५	२९	गर	३२/५१	२६/२९	राक्षस	१९	१८	१	४	५	२९			५	२१	६	३९	१	३	३९	६	५७	३२	११	३७	-	६	९	४४	भ.रा.शे.५।९ से (स्वर्ग)। **मु.जिलहिज् १२ हि.१४४७।** रवियोगयमघंटयोग दि.१२।२९ से।
३३	१६	४	बु	२६	३२	दि	३	५६	आर्द्रा	१३	५१	दि	१०	५२	शूल	३४	११	रा	७	३	भ	२६	३२	बव	५३	४८	मुसल	२०	१९	२	५	६	३०	कर्क	५६।१०	५	२०	६	४०	१	४	३६	३८	५७	३१	११	५०	-	६	१०	४०	भ.दि.३।५६तक (स्वर्ग)। **कर्कराशि**(रा.३।४८)। **वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत।** रवियोग दि.१०।५२ तक।
३३	१८	५	गु	२१	३	दि	१	४५	पुनर्वसु	१०	१६	दि	९	२६	गंड	२७	१६	दि	४	१४	बा	२१	३	कौ	४८	३५	सिद्धि	२१	२०	३	६	७	३१			५	२०	६	४०	१	५	३४	९	५७	२९	२०	२	-	६	११	२७	**⊙सायन मिथुनसूर्य** ११।३९(दि.१०।०)। रवियोग दि.९।२६ से पूर्व यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग।
३३	२१	६	शु	१६	७	दि	११	४६	पुष्य	७	११	दि	८	१२	वृद्धि	२०	४६	दि	१	३८	तै	१६	७	गर	४४	५	उत्पात	२२	२१	४	७	८	१			५	२०	६	४०	१	६	३१	३८	५७	२९	२०	१५	-	६	१२	७	**रा.ज्येष्ठमास दि.३१। श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। पौराणिक अगस्त्यास्त** २९।३६(सा.५।११)। रवियोग दि.८।१२ तक।
३३	२३	७	श	१२	३	दि	१०	८	श्लेषा	४	५८	प्रा	७	१८	ध्रुव	१४	५४	दि	११	१६	व	१२	३	भ	४०	२८	मानस	२३	२२	५	८	९	२	सिंह	४।५८	५	१९	६	४१	१	७	२९	७	५७	२७	२०	२७	-	६	१२	४२	भ.दि.१०।८से रा.९।३० तक (मृत्युलोक)। **सिंहराशि**(प्रा.७।१८)। यायीजययोग प्रा.७।१८ तक।
३३	२५	८	र	८	५४	दि	८	५२	मघा	३	३१	प्रा	६	४३	व्याघात	९	५०	दि	९	१५	बव	८	५४	बा	३७	५१	मुद्गर	२४	२३	६	९	१०	३			५	१९	६	४१	१	८	२६	३४	५७	२६	२०	३८	-	५	१	१४	रवियोगयमघंटयोग प्रा.६।४३ से।
३३	२७	९	चं	६	४८	दि	८	१	पू.फा.	३	११	प्रा	६	३४	हर्षण	५	३६	प्रा	७	३२	कौ	६	४८	तै	३६	२२	ध्वज	२५	२४	७	१०	११	४	कन्या	१८।२४	५	१८	६	४२	१	९	२४	०	५७	२४	२०	४९	-	५	१	४४	**कन्याराशि**(दि.१२।४०)।**⊙रोहिणी में सूर्य** ३७।३८(रा.८।२१)। रवियोग प्रा.६।३४ तक पुनः रवियोग रा.८।२१ से। यायीजययोग प्रा.६।३४ से।
३३	२९	१०	मं	५	५६	दि	७	४०	उ.फा.	४	३	प्रा	६	५५	वज्र	२	२१	प्रा	६	१४	गर	५	५६	व	३६	८	धाता	२६	२५	८	११	१२	५			५	१८	६	४२	१	१०	२१	२४	५७	२३	२१	०	-	५	२	१४	भ.रा.७।४५से (पाताल)। प्रा.६।५५ से हस्त योग में **श्री गङ्गादशहरा १०। विशेष**—दो दिन पूर्वाह्न में होने पर तथा अधिक योग में पूर्वाग्रहण होगा। ❶
३३	३१	११	बु	६	२०	दि	७	४९	हस्त	६	९	दि	७	४५	सिद्धि	०/५८	६/४९	प्रा	५/४	२०/५२	भ	६	२०	बव	३७	१३	आनंद	२७	२६	९	१२	१३	६	तुला	३७।५१	५	१८	६	४२	१	११	१८	४७	५७	२१	२१	१०	-	५	२	४६	भ.दि.७।४९तक (पाताल)। **तुलाराशि**(रा.८।२६)। **पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबका।** रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.७।४५ तक।
३३	३३	१२	गु	८	६	दि	८	३९	चित्रा	९	३४	दि	९	६	वरीयान	५८	३४	रा	४	४२	बा	८	६	कौ	३९	३०	चर	२८	२७	१०	१३	१४	७			५	१७	६	४३	१	१२	१६	८	५७	२०	२१	२१	-	५	३	२०	**प्रदोष १२व्रत।** दि.८।३१ तक एकादशी व्रत का पारण। **ईद–उ–जुहा (बकरीद)।**
३३	३५	१३	शु	१०	५४	दि	९	३८	स्वाती	१४	६	दि	१०	५५	परिघ	५९	७	रा	४	५५	तै	१०	५४	गर	४२	५१	गद	२९	२८	११	१४	१५	८			५	१७	६	४३	१	१३	१३	२८	५७	१९	२१	३०	-	५	३	५७	रवियोगस्थायीजययोग दि.१०।५५ से। यायीजययोग दि.९।३८ तक।
३३	३६	१४	श	१४	४९	दि	११	११	विशाखा	१९	३७	दि	१	६	शिव	६०	०	समस्त			व	१४	४९	भ	४७	८	शुभ	३०	२९	१२	१५	१६	९	वृश्चिक	३।१५	५	१६	६	४४	१	१४	१०	४७	५७	१७	२१	४०	-	५	४	३९	भ.दि.११।११से रा.१२।७ तक (स्वर्ग)। **वृश्चिकराशि**(प्रा.६।३४)। **व्रत १५।** रवियोग दि.१।६ तक।
३३	३८	१५	र	१९	२७	दि	१	२	अनुराधा	२५	४९	दि	३	३५	शिव	०	१७	प्रा	५	२३	बव	१९	२७	बा	५१	५९	मृत्यु	३१	३०	१३	१६	१७	१०			५	१६	६	४४	१	१५	८	४	५७	१६	२१	४६	-	५	-	-	**पूर्णिमा १५।** स्नानदान हेतु पुण्य। यायीजययोग दि.१।२ तक।

अधिमास के ३३ देव- विष्णु १, जिष्णु २, महाविष्णु ३, हरि ४, कृष्ण ५, मधोक्षजम् ६। केशवं ७, माधवं ८, राम ९, मच्युतं १०, पुरुषोत्तमम् ११॥ गोविन्द १२, वामनं १३, श्रीशं १४, श्रीकान्तं १५, विश्वसाक्षिणम् १६। नारायणं १७, मधुरिपु १८, मनिरुद्धं १९, त्रिविक्रमम् २०॥ वासुदेवं २१, जगद्योनि २२, मनन्तं २३, शेषशायिनम् २४। संकर्षणञ्च २५, प्रद्युम्नं २६, दैत्यारि २७, विश्वतोमुखम् २८॥ जनार्दनं २९, धरावासं ३०, दामोदरं ३१, मघार्दनम् ३२। श्रीपतिञ्च ३३। तैतिस उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु ३३ पुआ को कांसे के पात्र में रखकर घी तथा स्वर्ण ब्राह्मण को दान करें।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	र	१	३	४८	१	८५४	३५	०	४	६	५२	४५	३४	१	६	३०	३५	११७	२१	२	२९	२२	५८	२	३	४२	२९	७१	२३	११	१३	५	५	१०	१०	३७	२२
२	चं	१	१८	४	४६	८५८	२५	०	४	५२	२६	४५	३४	१	८	२७	५६	११७	२१	२	२९	३२	४०	२	४	५३	५२	७१	२३	११	१३	१०	५०	१०	१०	३४	११
३	मं	२	२	२४	१०	८५९	५७	०	५	३८	१	४५	३४	१	१०	२५	१७	११३	४२	२	२९	४२	२६	२	६	५	१५	७१	२३	११	१३	१६	३४	१०	१०	३१	०
४	बु	२	१६	४२	९	८५७	८	०	६	२३	३६	४५	३४	१	१२	१८	५९	१११	५७	२	२९	५२	१२	२	७	१६	३९	७१	२३	११	१३	२२	१८	१०	१०	२७	५०
५	गु	३	०	५४	२५	८५०	४८	०	७	९	११	४५	३४	१	१४	१०	५७	१११	५७	३	०	१	५९	२	८	२८	२	७१	२३	११	१३	२८	०	१०	१०	२४	३९
६	शु	३	१४	५९	२	८४३	२०	०	७	५४	४५	४५	३४	१	१६	२	५४	१११	५८	३	०	११	४५	२	९	३९	२६	७१	२३	११	१३	३३	४३	१०	१०	२१	२८
७	श	३	२८	५१	१४	८३०	४१	०	८	४०	२०	४५	३३	१	१७	५४	५२	१११	५३	३	०	२१	३२	२	१०	५०	४९	७१	२३	११	१३	३९	२६	१०	१०	१८	१७
८	र	४	१२	३१	५७	८११	४८	०	९	२५	५४	४५	८	१	१९	४६	४४	१०७	५८	३	०	३१	१९	२	१२	२	१२	७१	२३	११	१३	४५	९	१०	१०	१५	६
९	चं	४	२५	५७	११	८०४	२८	०	१०	११	२	४५	८	१	२१	३४	४३	१०७	१६	३	०	४१	५	२	१३	१३	३६	७१	२३	११	१३	५०	५२	१०	१०	११	५६
१०	मं	५	९	६	४६	७८८	३६	०	१०	५६	११	४५	८	१	२३	२१	५९	१०५	५८	३	०	५०	५२	२	१४	२४	५९	७१	२३	११	१३	५६	३५	१०	१०	८	४५
११	बु	५	२२	०	४६	७७२	५६	०	११	४१	१९	४५	८	१	२५	७	५८	१०५	५८	३	१	०	३०	२	१५	३६	२३	७१	२३	११	१४	१	१९	१०	१०	५	३४
१२	गु	६	४	३९	१९	७५६	५३	०	१२	२६	२८	४५	८	१	२६	५३	५६	१०३	५४	३	१	१२	४३	२	१६	४७	४६	७१	२३	११	१४	५	५४	१०	१०	२	२३
१३	शु	६	१७	५	१२	७४३	४८	०	१३	११	३६	४५	८	१	२८	३७	५०	९९	२५	३	१	२३	४४	२	१७	५९	९	७०	४०	११	१४	१०	२८	१०	९	५९	१२
१४	श	६	२९	२०	२८	७३२	३८	०	१३	५६	४५	४५	८	२	०	१७	१४	९९	२३	३	१	३४	४६	२	१९	१०	०	७०	३३	११	१४	१५	३	१०	९	५६	२
१५	र	७	११	२८	१	७२५	४	०	१४	४१	५३	४५	८	२	१	५६	३७	९९	२३	३	१	४५	४८	२	२०	२०	३२	६९	४१	११	१४	१९	३८	१०	९	५२	५९

९पं० अधिकज्येष्ठशुक्ल ८रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३२४८
अयनांश २४।१२।५७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	३	२	११	१०	४
८	१२	९	१९	०	१२	१३	१०	१०
२६	३१	२५	४६	३१	२	४५	१५	१५
३४	५७	५४	४४	११	१२	९	६	६
५७	८११	४५	१०७	७	७१	५	३	३
२६	४८	८	५८	४७	२३	४३	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	९ चं. घं.	मि.	१० मं. घं.	मि.	११ बु. घं.	मि.	१२ गु. घं.	मि.	१३ शु. घं.	मि.	१४ श. घं.	मि.	१५ र. घं.	मि.
वृष	७	११	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३
मिथुन	९	२५	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७
कर्क	११	४३	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५
सिंह	१	५७	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९
कन्या	४	१०	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२
तुला	६	२६	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	८	४३	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५
धनु	१०	४९	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१
मकर	१२	३६	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८
कुम्भ	२	७	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९
मीन	३	३५	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७
मेष	५	१२	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४

१०पं० अधिकज्येष्ठशुक्ल१५रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३२५५
अयनांश २४।१२।५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	०	२	३	२	११	१०	४
१५	११	१४	१	१	२०	१४	९	९
८	२८	४१	५६	४५	२०	१९	५२	५२
४	१	५३	३७	४८	३२	३८	५१	५१
५७	७२५	४५	९९	११	६९	४	३	३
१६	४	८	२३	९	४१	३४	११	११



❶श्रीगङ्गावतरण। श्री गङ्गाजन्म(ल.२)। काशीदशाश्वमेध में स्नान गङ्गास्तोत्र पाठ की समाप्ति श्रीसेतुबन्ध रामेश्वरप्रतिष्ठा दिन। ''ज्येष्ठ अधिमास में गंगादशहरा करें। शुद्ध मास में नहीं'' रवियोग समस्त दिन।

मूलविचार- श्लेषा/ मघा ति.६ शुक्र दि.८।१२ से। ति.८ रवि प्रा.६।४३ तक। ज्येष्ठ/ मूल ति.१५ रवि दि.३।३५ से।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-अश्विनी। ति.१३ शुक्र भरणी ११।९ (दि.९।४५)॥ **बुध-कृत्तिका। ति.२** सोम रोहिणी ४७।४ (रा.१२।११)। **ति.९** सोम मृग ५८।५३ (रा.शे.४।५१)। **ति.१३ शुक्र** मिथुन ४९।३६(रा.१।७)॥ **गुरु-**पुनर्वसु ३ चरण। **ति.४** बुध कर्क पुनर्वसु ४ चरण ४७।५१(रा.१२।२८)॥ **शुक्र-**मृग में। **ति.३** मंगल आर्द्रा २९।१२(सा.५।१)। **ति.१४** शनि पुनर्वसु ४२।३२ (रा.१०।१७)॥ **शनि-ति.३** मंगल उ.भा.४ चरण ३५।५७(रा.७।४४)॥ **राहु-**ति.१२ गुरु शतभिष १ चरण॥ **केतु-**मघा ३ चरण ४५।०(रा.११।१७)॥

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष विचार-यह पक्ष पूरे पन्द्रह दिनों का है। अधिक ज्येष्ठ मास हो तो रोग से कष्ट तथा यज्ञ-दानादि अधिक होते हैं। जिस अधिक मास में भौम तथा शुक्र एक राशि अन्तर पर हो अत्यधिक वर्षा से क्षति संभव है। **१८ मई** को **चन्द्रदर्शन** के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य सामान्य रहेंगे। आज से दशमी तिथि तक काशी के दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान प्रारंभ होगा। **२० मई** को **वैना. गणेश चतुर्थी व्रत** ☛ होगा। **२६ मई** को हस्त नक्षत्र में **गंगा दशहरा** मनाया जायेगा। यह उत्सव मुख्यतः स्नान का है। अपने दशविध पापों के विनाश हेतु गंगा की प्रार्थना करें व पूजा के पश्चात् दीपक को गंगा में प्रवाहित करें। **विशेष**-गंगा दशहरा अधिकमास में भी होगा। **२७ मई** को **पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत** सबका होगा। **२८ मई** को दि.८।३१ तक **एकादशी व्रत का पारण** किया जायेगा। आज सर्व कामनापूरक **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **३०मई** को **व्रत पूर्णिमा** होगी। **३१ मई** को **स्नानदान की पुरुषोत्तमी पूर्णिमा** मनाई जायेगी।

पक्ष मे विविधमुहूर्त-ति.१ रवि कृत्तिका में **सूर्ययुति। ति.२** सोम रोहिणी में सूर्यभोग्य। दि.२।९ से मृगशिर में दोलारोहण **विपणि व्यापार बीजोप्ति कूपनिर्माण(बोरिंग)** मुहूर्त। **ति.३** मंगल सा.६।१९ रिक्तापूर्व पुंसवन सीमन्त सूतीका स्नान रोगविमुक्तस्नान(४थीं) गजकृत्य शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया मुहूर्त। **ति.४** बुध दि.३।५६ रिक्ताबाद आर्द्रा **धानकटाई** मुहूर्त। **ति.५** गुरु पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय **कर्क के चन्द्र पश्चिमोत्तर दिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **हलप्रवहण** वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.६** शुक्र पुष्य जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नववस्त्रसुवर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.७** शनि प्रा.७।१८ तक श्लेषा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.८** रवि मघा में **सूर्यवेधकिन्तु** चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.९** सोम पू.फा.भौमवेध। **ति.१०** मंगल उ.फा.भौमवेधकिन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.११** बुध हस्त शनिवेध। **ति.१२** गुरु चित्रा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहन क्रय शल्यक्रिया धानकटाई **कूपनिर्माण(बोरिंग) गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१३** शुक्र राहुवेध। **ति.१४** शनि विशाखा रिक्ता व भद्रा दोष। **ति.१५** रवि अनु. शिशुताम्बूलभक्षण सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय दवरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहन क्रय मुहूर्त।

इस वर्ष ज्येष्ठमास मे अधिमास लग रहा है – इस मास में शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक सूर्य की सक्रान्ति नही होगी। अतः कहा गया है कि ''असंक्रान्ति मासोऽधिमासः स्फुटः स्यात्'' अर्थात् जिस चान्द्रमास मे सूर्य की संक्रान्ति न हो उसे अधिमास कहते है। प्रायः अधिकमास ३२ मास १६ दिन ४ घटी पर होता है यह मध्यम मान से है। ब्रह्म सिद्धान्त के अनुसार इसको ''मलमास'' भी कहते है, यथा– 'चान्द्रोमासोह्यसंक्रान्तो मलमासः प्रकीर्तितः।'' गृहसूत्र परिशिष्ट में कहा गया है कि'' मलं वदन्ति कालस्य मासं कालविदोऽधिकम्'' पुराणों में भगवान ने इस मास को '' पुरुषोत्तम'' मास कहा है। कहते है कि इसको चाहने वाले भक्त पुरुषोत्तम मास में मेरा व्रत रखे तो उनके उद्देश्य की पूर्ति होती है, परन्तु अन्य मासों मे इसको अधिक मास की संज्ञा दी गयी है। **अधिमास मे कौन कार्य करना चाहिए तथा कौन कार्य नहीं करना चाहिए इसका निरूपण–अधिमास में करने योग्य कर्म–** द्वादशाह, सपिण्डन, कर्मग्रहण, सीमन्त, पुंसवन, पितृश्राद्ध और जातकर्म। श्राद्ध को पूर्व तिथि अर्थात् अधिमास मे युगादि तिथियों में, तथा अधिमास में दैनिकदान करना निषेध नही है। तिल, गेहूं, सोना का दान तथा सन्ध्योपासन कर्म एव पर्व का होम ग्रहण का जप, अग्निहोत्र देवता पूजन, एवं अतिथि पूजन अधिमास में ग्राह्य है। **अधिमास मे नहीं करने योग्य कर्म**–अग्न्याधान, प्रथमवार तीर्थयात्रा देवप्रतिष्ठा, तालाब, बगीचा, यज्ञोपवीत, समावर्तन, वृषोत्सर्ग, आदि कर्म अधिमास में निष्क्रिय हो जाते है। राज्याभिषेक, चूडाकर्म, अन्नप्राशन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, प्रायश्चित गोदान, इत्यादि कर्म अधिमास में वर्जित है। श्रावण (उपाकर्म) राजादर्शन, दुर्गध्वज का स्थापन हथियार आदि धारण कर्म मलमास(अधिमास) में नहीं करना चाहिए।

अधिकज्येष्ठकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ११ ज्येष्ठ से २५ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १ जून से १५ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.
३३	४०	१	चं	२४	३१	दि	३	४	ज्येष्ठा	३२	२४	सा	६	१४	सिद्ध	१	५०	प्रा	६	०
३३	४१	२	मं	२९	३२	सा	५	३	मूल	३८	५३	रा	८	४८	साध्य	३	३१	प्रा	६	३१
३३	४२	३	बु	३४	६	रा	६	५३	पू.षा.	४४	५६	रा	११	१३	शुभ	४	५६	प्रा	७	१३
३३	४४	४	गु	३७	५५	रा	८	२५	उ.षा.	५०	६	रा	१	१७	शुक्ल	५	५४	प्रा	७	३६
३३	४५	५	शु	४०	३६	रा	९	२९	श्रवण	५४	१३	रा	२	५६	ब्रह्म	६	९	दि	७	४२
३३	४६	६	श	४२	१२	रा	१०	६	धनिष्ठा	५७	१०	रा	४	६	ऐन्द्र	५	३१	प्रा	७	२६
३३	४८	७	र	४२	२७	रा	१०	१२	शतभिष	५८	५२	रा	४	४६	वैधृति	३	५५	प्रा	६	४७
३३	४९	८	चं	४१	२६	रा	९	४८	पू.भा.	५९	१८	रा	४	५७	विष्कुंभ	१/५६	५८/२२	प्रा	[illegible]	[illegible]
३३	५०	९	मं	३९	११	रा	८	४४	उ.भा.	५८	३४	रा	४	३९	आयुष्मान	५३	७	रा	२	२८
३३	५१	१०	बु	३५	५२	रा	७	३४	रेवती	५६	४९	रा	३	५७	सौभाग्य	४७	४३	रा	१२	१९
३३	५२	११	गु	३१	४१	सा	५	५३	अश्विनी	५४	१३	रा	२	५४	शोभन	४१	३७	रा	९	५१
३३	५३	१२	शु	२६	३७	दि	३	५१	भरणी	५०	५६	रा	१	३५	अतिगंड	३४	५५	रा	७	११
३३	५३	१३	श	२१	२	दि	१	३७	कृत्तिका	४७	९	रा	१२	४	सुकर्मा	२७	४३	दि	४	१८
३३	५४	१४	र	१५	३	दि	११	१४	रोहिणी	४३	४	रा	१०	२६	धृति	२०	१६	दि	१	११
३३	५४	३०	चं	८	५२	दि	८	४५	मृगशिर	३८	५१	रा	८	४५	शूल	१२	३८	दि	१०	१६

ति.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि (नक्षत्र)	प्रवेश प. प.
१	कौ	२४	३१	तै	५७	१	पद्म	जून	१	१४	१७	१८	११	धनु	३२।२४
२	गर	२९	३२	व	६०	०	छत्र	२	२	१५	१८	१९	१२		
३	व	१	४९	प	३४	६	श्रीवत्स	३	३	१६	१९	२०	१३		
४	बव	६	१	बा	३७	५५	सौम्य	४	४	१७	२०	२१	१४	मकर	१।१३
५	कौ	९	१६	तै	४०	३६	धूम्र	५	५	१८	२१	२२	१५		
६	गर	११	२४	व	४२	१२	प्रवर्द्धमान	६	६	१९	२२	२३	१६	कुम्भ	२५।४२
७	प	१२	२०	बव	४२	२७	राक्षस	७	७	२०	२३	२४	१७		
८	बा	११	५७	कौ	४१	२६	मुसल	८	८	२१	२४	२५	१८	मीन	४४।११
९	तै	१०	१८	गर	३९	११	सिद्धि	९	९	२२	२५	२६	१९		
१०	व	७	३२	प	३५	५२	उत्पात	१०	१०	२३	२६	२७	२०	मेष	५६।४९
११	बव	३	४७	बा	३१	४१	मानस	११	११	२४	२७	२८	२१		
१२	तै	२६	३७	गर	५३	५०	मुद्गर	१२	१२	२५	२८	२९	२२		
१३	व	२१	२	प	४८	६	ध्वज	१३	१३	२६	२९	३०	२३	वृष	४।१९
१४	श	१५	३	च	४१	५८	धाता	१४	१४	२७	३०	३१	२४		
३०	ना	८	५२	किं	३५	४६	आनंद	१५	१५	२८	३१	१	२५	मिथुन	१०।५८

ति.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की प.	प.	क्रान्ति उ+		रे.अं. -	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
१	५	१६	६	४४	१	१६	५	२०	५७	१५	२१	५७	-	५	७	५१	जून ६। धनुराशि(सा.६।१४)।
२	५	१५	६	४५	१	१७	२	३५	५७	१५	२२	६	-	४	८	४१	
३	५	[illegible]	[illegible]	४५	१	१७	५९	५०	५७	११	२२	१३	-	४	९	२७	भ प्रा.५।२९से रा.६।५३ (पाताल) तक।
४	५	१५	६	४५	१	१८	५७	१	५७	११	२२	२१	-	४	१०	८	मकरराशि(प्रा.५।४८)। संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत (चं.उ.रा.१०।१८)। यायीजययोग रा.८।२५ से।
५	५	१५	६	४५	१	१९	५४	१२	५७	१०	२२	२८	-	४	१०	४५	विश्व पर्यावरण दिवस। रवियोग रा.२।५६ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
६	५	१४	६	४६	१	२०	५१	२२	५७	८	२२	३५	-	४	११	१८	भ.रा.१०।६से (मृत्युलोक)। कुम्भराशि(दि.३।३१)। पंचक आरंभ दि.३।३१ से। रवियोग रा.४।६ तक।◆
७	५	१४	६	४६	१	२१	४८	३०	५७	९	२२	४१	-	४	११	५०	भ दि.१०।० तक (मृत्युलोक)। ◆ यायीजययोग रा.१०।६ से।
८	५	१४	६	४६	१	२२	४५	३९	५७	६	२२	४७	-	३	१२	२२	मीनराशि(रा.१०।५४)। कालाष्टमी ८ व्रत। ⊙मृगशिर में सूर्य ३६।५(रा.७।४०)।
९	५	१४	६	४६	१	२३	४२	४५	५७	६	२२	५२	-	३	१२	५४	सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.४।३९ तक।
१०	५	१४	६	४६	१	२४	३९	५१	५७	५	२२	५७	-	३	१	२९	भ दि.८।२५से रा.७।३४ तक (मृत्युलोक)। मेषराशि(रा.३।५७)। पंचक समाप्त रा.शे.३।५७ तक।
११	५	१३	६	४७	१	२५	३६	५६	५७	३	२३	२	-	३	२	८	पुरुषोत्तमी एकादशी ११ व्रत सबका। सर्वार्थसिद्धियोग रा.२।५४ तक।
१२	५	१३	६	४७	१	२६	३३	५९	५७	४	२३	६	-	३	२	५३	प्रदोष १२ व्रत। स्थायीजययोग दि.३।५१ तक।
१३	५	१३	६	४७	१	२७	३१	३	५७	१	२३	१०	-	२	३	४७	भ दि.१।३७ से रा.१२।२७ तक (स्वर्ग)। वृषराशि (प्रा.७।१३)। मासशिवरात्रि १३ व्रत।
१४	५	१३	६	४७	१	२८	२८	४	५७	१	२३	१३	-	२	४	५०	श्राद्ध की अमावस्या ३०।
३०	५	१३	६	४७	१	२९	२५	५	५७	१	२३	१६	-	२	-	-	नेपाली आषाढ़मास। मिथुनराशि(दि.९।३६)। सोमवती अमावस्या ३०। स्नानदान हेतु पुण्य। ❶

ज्येष्ठ पक्ष अधिकमास पराशर—सूर्य द्वारा लंघित चन्द्रमास मलमास होता है। उसमें विहित कर्म उत्तर शुद्धमास में किया जाता है।।

प्रजापति— उपाकर्म, हव्य, काव्य पर्व उत्सव उत्तर मास में किये जाते हैं। पूर्व मलमास में ये सब फल निष्फल होते हैं।

अन्य—वापी, कूप, पुष्करिणी की प्रतिष्ठा यज्ञ कर्म नहीं किये जाते हैं।

हेमाद्रि शातातप—यदि उसी मास संवत्सर परिवर्तित हो तो पितृकार्य संभव है। किन्तु देव कार्य शुद्धमास में ही करें।

स्थूलरीति द्वारा अधिमास का ज्ञान— शक संख्या में १६६६ घटाकर १९ से विभाजित करें। शेष ३ रहे तो चैत्र, शेष ११ वैशाख, शेष १० ज्येष्ठ, शेष ८ में आषाढ़, शेष १६ में सावन, शेष १३, ५ में भाद्रपद तथा २ में आश्विन अधिमास होगा। स्पष्टमान द्वारा ही अधिमास ज्ञान संभव है।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

दि.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	चं	७	२३	३०	४३	७२०	५४	०	१५	२७	२	४५	८	२	३	३६	०	९९	२३	३	१	५६	४९	२	२१	३०	१३	६९	३०	११	१४	२४	१२	१०	९	४९	४०
२	मं	८	५	३२	०	७२९	५९	०	१६	१२	१०	४५	८	२	५	१५	२३	९३	५३	३	२	७	५१	२	२२	३९	४३	६९	३०	११	१४	२८	४७	१०	९	४६	२९
३	बु	८	१७	३५	४६	७२६	४३	०	१६	५७	११	४५	८	२	६	४१	१६	९०	९०	३	२	१८	५२	२	२३	४९	१३	६९	३०	११	१४	३३	२२	१०	९	४३	१८
४	गु	८	२९	४४	५८	७३६	३४	०	१७	४२	२७	४५	३	२	८	११	२६	९०	९०	३	२	२९	५४	२	२४	५८	४३	६९	३०	११	१४	३७	५६	१०	९	४०	७
५	शु	९	१२	३	३१	७४८	३८	०	१८	२७	३१	४६	४६	२	९	४१	३७	९०	९०	३	२	४०	५६	२	२६	८	१३	६९	३०	११	१४	४२	२९	१०	९	३६	५७
६	श	९	२४	३३	३०	७६२	३०	०	१९	११	१५	४३	४३	२	११	११	४७	८९	३६	३	२	५१	५७	२	२७	१७	४३	६९	३०	११	१४	४७	१	१०	९	३३	४६
७	र	१०	७	१६	४४	७७७	५७	०	१९	५४	५९	४३	४३	२	१२	४१	२३	८९	५८	३	३	२	५८	२	२८	२७	१३	६९	३०	११	१४	५१	३३	१०	९	३०	३५
८	चं	१०	२०	१५	०	७९८	१५	०	२०	३८	४२	४३	४३	२	१४	१	२२	८८	४२	३	३	१४	०	२	२९	३६	४३	६९	३०	११	१४	५६	५	१०	९	२७	२४
९	मं	११	२	२९	२९	८०१	५३	०	२१	२२	२६	४३	४३	२	१५	२८	३	८८	४२	३	३	२५	१	३	०	४६	१३	६९	३०	११	१५	०	३७	१०	९	२४	१३
१०	बु	११	१६	४१	४१	८२४	२	०	२२	६	९	४३	४३	२	१६	५६	४५	८८	४२	३	३	३६	२	३	१	५५	४३	६९	३०	११	१५	५	९	१०	९	२१	३
११	गु	०	०	४४	२२	८३६	१४	०	२२	४९	५३	४३	४३	२	१८	५	२७	८६	१८	३	३	४७	३	३	३	५	१३	६९	३०	११	१५	९	३९	१०	९	१७	५२
१२	शु	०	१४	४१	३५	८३६	१८	०	२३	३३	३६	४३	४३	२	१९	२१	४१	६२	८	३	३	५८	४	३	४	१४	४३	६९	१६	११	१५	१३	३	१०	९	१४	४१
१३	श	०	२८	४१	१	८४३	५०	०	२४	१७	२०	४३	४३	२	२०	२३	५३	६१	५४	३	४	१०	३२	३	५	२३	४९	६९	१२	११	१५	१६	२६	१०	९	११	३०
१४	र	१	१३	३	५९	८४८	२५	०	२५	१	३	४३	४३	२	२१	२५	४७	६१	५४	३	४	२३	०	३	६	३३	११	६९	१२	११	१५	१९	५०	१०	९	८	११
३०	चं	१	२७	२२	५१	८५०	२८	०	२५	४४	४७	४३	४३	२	२२	२७	४०	६१	५४	३	४	३५	२८	३	७	४२	२३	६९	१२	११	१५	२३	१४	१०	९	५	९

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-भरणी।। **बुध**-मृगशिर। ति.९ मंगल आर्द्रा ५४।४ (रा.२।५३)। **ति.१२** शुक्र पुनर्वसु ३६।५६ (रा.७।५९)।। **गुरु**-पुनर्वसु ४ चरण। **ति.८**सोम पुष्य १चरण ३३।४२(रा.६।४३)।। **शुक्र**-पुनर्वसु। ति.८ सोम कर्क में २०।६(दि.११६)। **ति.११** गुरु पुष्य १२।४५ (दि.१०।१९)।। **शनि**-उ.भा.४ चरण।। **राहु**-शतभिष १ चरण।। **केतु**-मघा ३ चरण।।

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष विचार- यह पक्ष पूरे पन्द्रह दिनों का है। एक राशि स्थित गुरु-शुक्र से अकाल तथा दुःख हो। **४ जून** को **सं.गणेश चतुर्थी व्रत** करके रात १०।१८ पर अर्घ्य दिया जायेगा। **११ जून** को **पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत** सबका होगा। **१२ जून** को सर्वकामनापूरक **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **१३ जून** को **मासशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१४ जून** को **श्राद्ध की अमावस्या** होगी। **१५ जून को स्नानदान की सोमवती अमावस्या** है। सोमवती अमावस्या को ☛

११पं० अधिकज्येष्ठकृष्ण८सोम सूर्योदय से स्पष्टग्रह इष्टम् ३।२६।३ अयनांश २४।१२।५९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	०	२	३	२	११	१०	४
२२	२०	२०	१४	३	२९	१४	६	६
४५	१५	३८	९	१४	३६	४६	२७	२७
३९	०	४२	२०	०	४३	५	२४	२४
५७	७१४	४३	८८	११	६९	४	३	३
६	१५	४३	४२	१	३०	३२	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ चं. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	३० चं. घं.	मि.
वृष	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५
मिथुन	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२९
कर्क	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४७
सिंह	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	१
कन्या	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१४
तुला	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	३०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४७
धनु	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५३
मकर	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०
कुम्भ	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	११
मीन	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३९
मेष	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१६

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ सोम ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना चौपायों का क्रय विक्रय दवँरी धानकटाई मुहूर्त। **ति.२** मंगल मूल पुंसवन सीमन्त शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.३** बुध पू.षा.भद्रा है। **ति.४** गुरु उ.षा. रिक्तादोष। **ति.५** शुक्र श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण **पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा** दवँरी धानरोपाई नये अन्न का भक्षण औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। ति.६ शनि प्रा.७।२६ वैधृति पूर्व धनिष्ठा में कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.७** रवि शत. राहुवेध। **ति.८ सोम** पू.भा.धानकटाई मुहूर्त। **ति.९** मंगल रा.८।५४ में उ.भा. सूतीकास्नान मुहूर्त। **ति.१०** बुध दि.८।२५ भद्रापूर्व रेवती पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायों का **क्रय विक्रय उत्तरदिशा त्यागकर यात्रा** दवँरी नये अन्न का भक्षणशिल्पविद्या औषधी सेवन **हलप्रवहण विपणि** वाहनक्रय **कूपनिर्माण(बोरिंग)**मुहूर्त। **ति.११** गुरु अश्विनी में भौमयुक्त है किन्तु वडम्भुक्त होने से अशुभ है। **ति.१२** शुक्र भरणी में भौमयुति। **पश्चात मासान्त दोष है।**

१२पं० अधिकज्येष्ठकृष्ण३०सोम सूर्योदय से स्पष्टग्रह इष्टम् ३।२७।० अयनांश २४।१३।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	२	३	३	११	१०	४
२९	२७	२५	२२	४	७	१५	९	९
२५	२२	४४	२७	३५	४२	२३	५	५
५	५१	४७	४०	२८	२३	१४	९	९
५७	८५०	४३	६१	१२	६९	३	३	३
१	२८	४३	५४	२७	१२	२३	११	११



❶शुभवार सुभिक्ष व सुख। "पीपल वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापना कर विधि पूर्वक सूर्यसोपचार स्त्रियों को सौभाग्य वृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिये" **⊙सं मिथुन में सूर्य** ३६।४८(रा.७।५५)। मु.३०सम्यन्य। बाद की १६ घटी पुण्य। अगले दिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्यकाल। यव अन्न गोदान गोदावरी में स्नान। **राजसंक्रान्ति**(उड़ीसा)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.८।१० तक।

मूलविचार - ज्येष्ठ/मूल ति.२ मंगल रा.८।४८ तक। **रेवती-अश्विनी ति.९** मंगल रा.शे.४।३९ से ति.११ गुरु रा.२।५४ तक। **पञ्चक विचार-ति.६** शनि दि.३।३१ से। **ति.१०**बुध रा.शे.३।५७ तक।

अधिमास में दान।। (हेमाद्रि) जिस मास में अधिमास मिलता है उस मास के तैंतीस देव है। सभी प्रकार के उद्देश्य पूर्ति के लिए पुआ (पूपान्) दान से भूमि दान का फल मिलता है। अधिमास में गुड़, [illegible] एवं तैंतीस पुआ को प्रतिदिन घी एवं स्वर्ण के साथ ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

दान संकल्प—देशकालौ सङ्कीर्त्यास्मिन् पुरुषोत्तममासे [illegible] गतेश्वर्यभुक्तिमुक्ति—प्राप्तिपूर्वक पृथ्वीदानसमफल प्राप्तये [illegible] श्रीमत्पुरुषोत्तमनारायण प्रीतये च [illegible] दैवताम्पुरुषोत्तमस्वरूपाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे इति द्विजकरे दद्यात्। तत [illegible] सहस्रांशु: सर्वपापप्रणाशन:। अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु। [illegible] व्रतेनानेन पुत्राश्च सम्पदश्चापि वर्द्धय।। यस्य हस्ते गदा चक्रं [illegible] यस्य वाहनम्। [illegible] विष्णु: प्रसीदतु।। [illegible] कुलपरमयो देवा: काल: सर्वदिशो हरि:। [illegible] पापप्रशमनाय च। पुत्रपौत्रसमृद्ध्यर्थं तव दास्यामि भास्कर।। मन्त्रेणानेन दद्यात् [illegible] इति।।

अधिमास के कृत्य—नैमित्तिक क्रिया सामान्य पात्रादिक्रिया कार्य। [illegible] गर्भाधानशान्ति न पुंसवनसीमन्तप्रायश्चित्तं च [illegible] रोगार्द्धगुरु मयन पाम्यमुनाधिमासर्वार्ति।। तथा च-गर्भे वर्धुषिके मृत्यौ श्राद्धकर्माणि मासिके। [illegible] अनिर्दुरिदुष्टं च हरिवास बुधाष्टमी। नाधिमासे परित्याज्या सीमन्त प्राशने शिशो:।

☛ सुहागिन स्त्रियाँ पीपल-वृक्ष के नीचे भगवान् श्रीविष्णु की प्रतिमा स्थापित करके विधानपूर्वक षोडशोपचार पूजन कर वृक्ष की यथासंख्या १०८, ५१, २१ परिक्रमा करके अपने सौभाग्य की वृद्धि की कामना करती है।

शुद्धज्येष्ठशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २६ ज्येष्ठ से ८ आषाढ़ तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १६ जून से २९ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु॥

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की घ.	प.	क्रान्ति उ +		रे. +	अं. मि.	चन्द्रास्त काशी	
३३	५५	१	मं	२ ५४	४५ २	प्रा	८ ३	५७ ५४	आर्द्रा	३४	४८	रा	७	८	गंड	५ ५२	२ ३४	प्रा	७ ४	१३ १५	बव	२	४१	बा	२९ ५६	४२ ४३	चर	१६	१६	२९	१	२	२६			५	१३	६	४७	२	०	२२	६	५६	५९	२३	१९	-	२	८	२५
३३	५५	३	बु	५१	१	रा	१	४०	पुनर्वसु	३१	५	सा	५	३८	ध्रुव	५०	३१	रा	१	२५	तै	२३	५६	गर	५१	१	गद	१७	१७	१	२	३	२७	कर्क	१७।१	५	१३	६	४७	२	१	१९	५	५६	५९	२३	२१	-	२	१	१८
३३	५६	४	गु	४६	७	रा	११	३९	पुष्य	२७	५२	दि	४	२१	व्याघात	४३	५४	रा	१०	४६	व	१८	३८	ध	४६	७	शुभ	१८	१८	२	३	४	२८			५	१३	६	४७	२	२	१६	४	५६	५८	२३	२३	-	१	१०	२
३३	५६	५	शु	४१	५६	रा	९	५२	श्लेषा	२५	२४	दि	३	२२	हर्षण	३७	५७	रा	८	२३	बव	१४	२	बा	४१	५६	मृत्यु	१९	१९	३	४	५	२९	सिंह	२५।२४	५	१३	६	४७	२	३	१३	२	५६	५७	२३	२५	-	१	१०	४०
३३	५६	६	श	३८	४०	रा	८	४०	मघा	२३	४५	दि	२	४२	वज्र	३२	४३	सा	६	१८	कौ	१०	१८	तै	३८	४०	पद्म	२०	२०	४	५	६	३०			५	१३	६	४७	२	४	९	५९	५६	५६	२३	२६	-	१	११	१४
३३	५६	७	र	३६	२७	रा	७	४७	पू.फा.	२३	८	दि	२	२८	सिद्धि	२८	२०	दि	४	३३	गर	७	३३	व	३६	२७	छत्र	२१	२१	५	६	७	३१	कन्या	३८।१६	५	१३	६	४७	२	५	६	५५	५६	५६	२३	२६	-	१	११	४५
३३	५६	८	चं	३५	२७	रा	७	३३	उ.फा.	२३	४३	दि	२	४२	व्यतीपात	२४	५४	दि	३	१०	भ	५	५७	बव	३५	२७	श्रीवत्स	२२	२२	६	७	८	१			५	१३	६	४७	२	६	३	५१	५६	५६	२३	२६	-	१	१२	१६
३३	५६	९	मं	३५	४३	रा	७	३०	हस्त	२५	३२	दि	३	२५	वरीयान	२२	३०	दि	२	१३	बा	५	३५	कौ	३५	४३	सौम्य	२३	२३	७	८	९	२			५	१३	६	४७	२	७	०	४७	५६	५६	२३	२६	-	०	१२	४७
३३	५६	१०	बु	३७	२२	रा	८	९	चित्रा	२८	३९	दि	४	४०	परिघ	२९	८	दि	१	४०	तै	६	३२	गर	३७	२२	कालदण्ड	२४	२४	८	९	१०	३	तुला	५७।५	५	१३	६	४७	२	७	५७	४३	५६	५५	२३	२५	-	०	१	२०
३३	५६	११	गु	४०	४	रा	९	१४	स्वाती	३२	५२	सा	६	२१	शिव	२०	३७	दि	१	२७	व	८	४३	ध	४०	४	स्थिर	२५	२५	९	१०	११	४			५	१३	६	४७	२	८	५४	३८	५६	५५	२३	२४	-	०	१	५७
३३	५६	१२	शु	४३	५३	रा	१०	४५	विशाखा	३८	११	रा	८	२९	सिद्ध	२१	३	दि	१	३८	बव	११	५८	बा	४३	५३	मातंग	२६	२६	१०	११	१२	५	वृश्चिक	२१।५१	५	१३	६	४७	२	९	५१	३३	५६	५४	२३	२३	-	०	२	३७
३३	५५	१३	श	४८	२६	रा	१२	३५	अनुराधा	४४	१३	रा	१०	५४	साध्य	२२	८	दि	२	४	कौ	१६	८	तै	४८	२६	अमृत	२७	२७	११	१२	१३	६			५	१३	६	४७	२	१०	४८	२७	५६	५३	२३	२१	-	१	३	२२
३३	५५	१४	र	५३	२५	रा	२	३५	ज्येष्ठा	५०	४४	रा	१	३०	शुभ	२३	४०	दि	२	४१	गर	२०	५५	व	५३	२५	काण	२८	२८	१२	१३	१४	७	धनु	५०।४४	५	१३	६	४७	२	११	४५	२०	५६	५३	२३	१८	-	१	४	११
३३	५७	१५	चं	५८	२५	रा	४	३५	मूल	५७	१५	रा	४	७	शुक्ल	२५	२१	दि	३	२१	भ	२५	५५	बव	५८	२५	लुम्बक	२९	२९	१३	१४	१५	८			५	१३	६	४७	२	१२	४२	१३	५६	५२	२३	१६	-	१	५	५

सौरआषाढमास। ◡चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्षकर। मु.१५ मँहगी। करवीर १व्रत। सोपपदा २। वेद अध्ययन का निषेध। यमघंटयोग रा.७।८ ❶
मु.मुहर्रम १। मुस्लिम नववर्षारंभ हि.१४४८। कर्कराशि(दि.१२।१)। रम्भा ३व्रत। महाराणाप्रताप जयंती ३(राज.)। रवियोग सा.५।३८ से।
भ.दि.१२।४०से रा.११।३९तक (मृत्युलोक)। वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। उमावतार४। उमाचतुर्थी(बङ्गाल–उड़ीसा)। गुरुअर्जुनदेव❷
सिंहराशि(दि.३।२२)। महादेव विवाह (उड़ीसा)। रवियोग दि.३।२२ से। ❶तक पश्चात त्रिपुष्करयोग।
श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। अरण्यषष्ठी। अरण्यगौरीव्रत। शीतलाषष्ठी(उड़ीसा)। विन्ध्यवासिनीषष्ठी। रानीझांसी पुण्यतिथि। जमाईषष्ठी(बङ्गाल)। ❸
भ.रा.७।४७ मे (पाताल)। कन्याराशि(रा.८।३१)। विश्वयोगा दिवस। ⊙सायन कर्क सूर्य ४०।४(रा.९।१५)। यायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग ❹
भ.प्रा.७।३६तक (पाताल)। रा.आषाढमास दि.३१। अष्टमी में शुक्लादेवीपूजन। मेलाक्षीरभवानी(क.)। धूमावती जयंती। ⊙आर्द्रा में सूर्य३८।५❺
नवमी में देवी उपवास तथा पूजन। रवियोग दि.३।२५ से। ❷ शहीददिवस(सिख)। रवियोग दि.४।२१ तक।
तुलाराशि(रा.शे.४।३)। श्रीबटुक भैरव जयंती। रवियोग समस्त दिन। रोगबाण २।२४ (प्रा.६।१२) से।
भ.दि.८।४३से रा.९।१४तक (पाताल)। निर्जलाएकादशी ११व्रत। भीमसेन के लिये शक्कर-स्वर्ण सहित कुम्भदान। दानमंत्र– *देवदेव हृषीकेश संसारार्णव तारक।* ❻
वृश्चिकराशि(दि.१।५७)। मु.मुहर्रम(ताजिया)। त्रिविक्रमपूजा। श्रीरामद्वादशी। गोत्तमेश्वर दर्शन। श्रीरामद्वादशी। श्रीसुपार्श्वनाथ जयंती(जैन)। ❼
शनिप्रदोष १२ व्रत। पुत्र कामना से व्रत का विधान। दाक्षिणवटसावित्री व्रतारंभ (तीन दिनों तक)। मृत्युबाण १२।१०(दि.१०।५) तक। ▼
भ.रा.२।३५मे (पाताल)। धनुराशि(रा.१।३०)। वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन। चम्पक चतुर्दशी—बंगाल। रवियोग रा.१।३० तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.दि.१।३५तक (पाताल)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत। विल्वत्रिरात्रव्रत। जलयात्रा। मन्वादि १५। संतकबीर जयंती।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.५ शुक्र दि.३।२२ से मघा केतुयुति।
ति.६ शनि मघा पूर्वदोष।
ति.७ रवि दि.२।२८ से दि.४।३३ व्यतिपात पूर्व उ.फा. रे.६ दिन ल.७ (दि.२।२८ से) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५ (८मस्थ भौम अशुभ)
ति.८ सोम दि.३।१० व्यतिपात बाद हस्त मे शनिवेध।
ति.९ मंगल हस्त पूर्वदोष।
ति.१० बुध दि.४।४० से स्वाती में राहुवेध।
ति.११ गुरु सा.६।२१ तक स्वाती मे पूर्वदोष।
ति.१२ शुक्र रा.८।२९ से अनु. मृत्युबाण व्याप्ति।
ति.१३ शनि दि.१०।५ मृत्युबाण बाद रा.१०।५४ तक अनु. रे.८ दिन ल.६ (दि.११।१०से) इष्ट५ प्र.व.वि.१३॥ (७वां शनिदान) या दिन ल.७ (दि.१।२३ से) इष्ट६ प्र.व.वि.१५(८वां भौम अशुभ)। या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)
ति.१४ रवि रा.१।३० से मूल में रे.७ ल.१ (रा.१।३०से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१२ (१२स्थ शनि अशुभ)।
ति.१५ सोम रा.शे.४।७ तक मूल रे.७ दिन ल.७(दि.१।१५से) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५ (८मस्थ भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.१२ (रा.११।१२से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१०

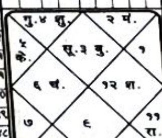
मूलविचार-श्लेषा/मघा ति.४ गुरु दि.४।२१ से। ति.६ शनि दि.२।४२ तक। ज्येष्ठ/मूल ति.१३ शनि रा.१०।५४ से। ति.१५ सोम रा.शे.४।७ तक।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

दि.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	मं	२	११	४२	२५	८५७	५४	०	२६	२८	३०	४३	४३	२	२३	२९	३४	५३	३२	३	४	४७	५६	३	८	५१	३६	६९	१२	११	१५	२६	३८	१०	१	१	५८
३	बु	२	२५	५८	११	८५२	४९	०	२७	१२	१४	४३	४३	२	२४	२३	६	४०	१३	३	५	०	२४	३	१०	०	४८	६९	१२	११	१५	३०	२	१०	८	५८	४७
४	गु	३	१०	०	२४	८४५	११	०	२७	५५	५७	४३	४३	२	२५	३	११	४०	१	३	५	१२	५२	३	११	१०	०	६९	१२	११	१५	३३	२५	१०	८	५५	३६
५	शु	३	२४	६	४९	८३६	१७	०	२८	३९	४१	४३	४३	२	२५	४३	२०	४०	१	३	५	२५	२०	३	१२	१९	१३	६९	१२	११	१५	३६	४९	१०	८	५२	२५
६	श	४	०	५४	२३	८२२	३७	०	२९	२३	२५	४३	४३	२	२६	२३	२२	४०	१	३	५	३७	४८	३	१३	२८	२५	६९	१२	११	१५	४०	१२	१०	८	४९	१५
७	र	४	२१	२८	२१	८०८	१८	१	०	७	८	४३	४३	२	२७	३	२३	२१	४७	३	५	५०	१६	३	१४	३७	३७	६९	१२	११	१५	४३	३३	१०	८	४६	४
८	चं	५	४	४९	४९	७९२	१७	१	०	५०	५२	४३	४३	२	२७	२५	१०	१०	२२	३	६	२	४४	३	१५	४६	५०	६९	१३	११	१५	४६	५५	१०	८	४२	५३
९	मं	५	१७	४९	३४	७७६	२१	१	१	३४	३५	४३	४३	२	२७	३५	३१	१०	१६	३	६	१५	१२	३	१६	५६	२	६६	४२	११	१५	५०	१६	१०	८	३९	४२
१०	बु	६	०	३६	५२	७६०	२९	१	२	१८	१९	४३	४३	२	२७	४५	४७	१०	१६	३	६	२७	४०	३	१८	२	४४	६६	३६	११	१५	५३	३७	१०	८	३६	३१
११	गु	६	१३	१०	३३	७४७	२८	१	३	२	२	४३	४३	२	२७	५६	३	१०	१६	३	६	४०	८	३	१९	९	२०	६६	३६	११	१५	५६	५८	१०	८	३३	२१
१२	शु	६	२५	३२	२०	७३४	५२	१	३	४५	४६	४३	४३	व	२८	६	१९	१६	३५	३	६	५२	३४	३	२०	१५	५७	६६	३६	११	१६	०	१९	१०	८	३०	१०
१३	श	७	७	४४	११	७२६	५४	१	४	२९	२९	४३	४३	२	२७	४९	४५	२२	३१	३	७	५	३	३	२१	२२	३३	६६	३६	११	१६	३	२६	१०	८	२६	५९
१४	र	७	१९	४९	५०	७२१	३७	१	५	१३	१३	४३	४३	२	२७	२७	१४	२२	३३	३	७	१७	३१	३	२२	२९	९	६६	३६	११	१६	५	३९	१०	८	२३	४८
१५	चं	८	०	५१	२७	७२१	३७	१	५	५६	५६	४३	३१	२	२७	४	४२	२२	३३	३	७	३०	८	३	२३	३५	४५	६६	३६	११	१६	७	५१	१०	८	२०	३७

१३पं० शुद्धज्येष्ठशुक्ल ८सोम सूर्योदय से स्पष्टग्रह लग्न ३।२७ अयनांश २४।१३।१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	२	३	३	११	१०	४
६	४	०	२७	६	१५	१५	८	८
३	४६	५०	२५	२	४६	४६	४२	४२
५१	४९	५२	१०	४७	५०	५१	५३	५३
५६	७९२	४३	१०	१२	६९	४	३	३
५६	१७	४३	२२	२८	१३	२१	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ चं. घं.	मि.
मिथुन	७	२५	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०
कर्क	९	४३	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८
सिंह	११	५७	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२
कन्या	२	१०	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५
तुला	४	२६	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१
वृश्चिक	६	४३	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
धनु	८	४९	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४
मकर	१०	३६	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१
कुम्भ	१२	७	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२
मीन	१	३५	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०
मेष	३	१२	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७
वृष	५	८	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३

१४पं० शुद्धज्येष्ठशुक्ल १५सोम सूर्योदय से स्पष्टग्रह लग्न ३।२८४ अयनांश २४।१३।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	२	३	३	११	१०	४
१२	०	५	२७	७	२३	१६	८	८
४२	५१	५६	४	३०	३५	७	२०	२०
१३	२७	५६	४२	८	४५	५१	३७	३७
५६	७२१	४३	२२	१२	६६	२	३	३
५२	३७	३१	३३ व	४१	३६	१२	११	११



❸रवियोग दि.२।४२ तक। ❹दि.२।२८ से। त्रिपुष्करयोग रा.७।४७ से। ❺(रा.८।२७)। स्त्री.स्त्री. सू.चं.योग खरवाहन सौम्यनाड़ी स्वामी गुरु वायु सौम्य वर्षायोग है। कामरूप कामाख्याधाम महोत्सव। कामाख्या पर्वत पर कामाख्या देवी का पूजन तथा उत्सव। ❻उदकुम्भ प्रदानेन *यास्यामि हरिमन्दिरम्''।* देव विवाह एकादशी (उड़ीसा)। रुक्मीणी विवाह (उड़ीसा)। गायत्री जयंती। रवि–योगयायीजययोग सा.६।२१ तक। ❼चम्पक द्वादशी–उड़ीसा। मृत्युबाण ८।५५ (दि.८।४७) से। स्थायीजययोग रा.८। २९ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग। ▼रवियोग रा.१०।५४ से पूर्व में यायीजययोग। ❽स्नानयात्रा (बङ्गाल, उड़ीसा)।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-भरणी। ति.१ मंगल कृत्तिका १५।४६ (दि.११।३१)। ति.६ शनि वृष ५०।१५ (रा.२।१९)॥ बुध-पुनर्वसु। ति.१२ शुक्र वक्री २२।५७ (दि.२।२४)॥ गुरु-ति.१० बुध पुष्य २ चरण ५९।२३ (रा.शे.४।५८)॥ शुक्र-पुष्य। ति.८ सोम श्लेषा में ४६।५ (रा.११।३९)॥ शनि-उ.भा. ४ चरण॥ राहु-शतभिष १ चरण॥ केतु-मघा ३ चरण॥

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष विचार- द्वितीया तिथि की हानि से पक्ष चौदह दिनों का है। **विशेष**-वैशाखशुक्ल प्रतिपदा को आर्द्रा मे वर्षा हो तो महादुर्भिक्ष संभव है। **१६ जून** को **चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य पदार्थो के मूल्यों में महँगी का रुख रहेगा। आज **सोपपदा** में वेद का अध्ययन निषेध है। **१८ जून** को **वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **२२ जून** को आर्द्रा में सूर्य प्रवेश से अम्बुवाची पर्व (कामाख्या धाम महोत्सव) शुरू होगा। आज शुक्लादेवी का पूजन तथा **२३ जून** को नवमी में देवी का उपवास सहित पूजन होगा। **२४ जून** को **बटुक भैरव जयन्ती** मनाई जायेगी। ☛

पक्ष मे विविधमुहूर्त-ति.१ मंगल आर्द्रा सूर्यभोग्य। रा.७।८ से पुनर्वसु सूतिकास्नान मुहूर्त। ति.३ बुध पुनर्वसु पुंसवन सीमंत जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय **मिथुन के चन्द्र मे पश्चिमदक्षिणदिशा की यात्रा कर्क के चन्द्र में पश्चिमोत्तर दिशा की यात्रा** विद्यारंभ(ल.३ प्रा.७।२० तक) **चौलकेशान्त-कर्णवेध** (ल.३ प्रा.७।२० तक या ल.७ दि. २।५ से) **उपनयन** (ल.३ प्रा.७।२० तक या ल.६ दि.११।५२ से ८वां भौ.दा.) नये अन्न का भक्षणशिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय मुहूर्त। ति.४ गुरु पुष्य रिक्ताभद्रा। ति.५ शुक्र श्लेषा मे **विद्यारंभ**(ल.३ प्रा.७।१२ तक) **उपनयन**(ल.३ प्रा.७।१२ तक या ल.४ प्रा.७।१२ से ८वां रा.दा.) धानकटाई मुहूर्त। ति.६ शनि मघा में केतुयुति। ति.७ रवि दि.४।३३ **व्यतिपात** पूर्व पू.फा मे नावनिर्माण **विद्यारंभ** (ल.३ दि.७।३ तक) शस्त्रनिर्माण **वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। दि.४।३३व्यतिपात पूर्व दि.२।२८ से उ.फा.सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या **विपणि धानकटाई गर्भाधान वरवरण(सगाई)** मुहूर्त। ति.८ सोम दि.३।१० व्यतिपात बाद उ.फा.शिशुताम्बूलभक्षण आभूषण निर्माण-टवैरी धानरोपाई शिल्पविद्या **विपणि धानकटाई मुहूर्त।** ति.९ मंगल हस्त शनिवेध। ति.१० बुध चित्रा जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नववस्त्रसुवर्णरत्नधारण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विद्यारंभ-अक्षरारंभ** (ल.३प्रा.६।५१तक)**चौलकेशान्त-कर्णवेध** (ल.३ प्रा.६।५१ तक या ल.४ प्रा.६।५१ से या ल.६ दि.११।२३ से) **गृहप्रवेश** (ल.६ दि.११।२३ से) **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.६ दि.११।२३ से) **बीजारोप्ति विपणि** वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.११ गुरु स्वाती मे राहुवेध। ति.१२ शुक्र विशाखा नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी चौपायो का क्रय विक्रय धानरोपाई नावनिर्माण मुहूर्त। रा.८।२९ से अनु.**गृहप्रवेश**(व.शु.) **कन्यावरण(सगाई)** मुहूर्त। ति.१३ शनि अनु. कान्सावस्त्रनीलमादिरत्नधारण **गृहप्रवेश**(ल.३ प्रा.६।४२ तक लग्न का शु.दा. या ल.६ दि.११।१४ से) **विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त। ति.१४ रवि ज्येष्ठा रिक्ता मे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। ति.१५ सोम दि.१।३५ भद्रा बाद मूल मे शिशुताम्बूलभक्षण टवैरी धानरोपाई औषधी सेवन **बीजोप्ति विपणि** धानकटाई मुहूर्त।

☛ **२५ जून** को **निर्जला एकादशी व्रत** सबका होगा, इसे **भीमसेनी एकादशी** भी कहते है। इस एकादशी व्रत में स्नान व आचमन के अलावा जरा भी जल ग्रहण नहीं करना चाहिये। इस एकादशी का व्रत रखने से सभी एकादशी व्रतों के फल की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। आज काशी के दशाश्वमेघ घाट से कलश यात्रा प्रारंभ होकर श्रीकाशी विश्वनाथजी को अर्पित की जाती है। **२७ जून** को सन्तान लाभ हेतु **शनि प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज दाक्षिणात्य **वटसावित्री व्रत** प्रारंभ होगा। **२८ जून** को **वट सावित्री व्रत** का द्वितीय दिन होगा। **२९ जून** को **स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा** तथा **संत कबीर जयंती** मनाई जायेगी तथा दाक्षिणात्य **वटसावित्री व्रत का समापन** भी होगा। आज भगवान् जगन्नाथ जी को जलाभिषेक (स्नान) कराया जायेगा, इसे **देव स्नान पूर्णिमा** भी कहते है। आज ज्येष्ठ पूर्णिमा मे छाता, चरणपादुका, अन्न दान से राजयोग की प्राप्ति होती है।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
३३	५४	१	मं	६०	०	समस्त			पू.षा.	६०	०	समस्त			ब्रह्म	२६	५०	दि	३	५७	वा	३०	४२	कौ	६०	०	मित्र
३३	५३	१	बु	३	०	प्रा	६	२५	पू.षा.	३	२२	प्रा	६	३३	ऐन्द्र	२७	५६	दि	४	२३	कौ	३	०	तै	३४	५५	श्रीवत्स
३३	५२	२	गु	६	५०	दि	७	५८	उ.षा.	८	४६	दि	८	४४	वैधृति	२८	१९	दि	६	३३	गर	६	५०	व	३८	१२	सौम्य
३३	५१	३	शु	९	३४	दि	९	३	श्रवण	१३	७	दि	१०	२८	विष्कुंभ	२७	४८	दि	४	२१	भ	९	३४	बव	४०	२३	धूम्र
३३	५१	४	श	११	१२	दि	९	४२	धनिष्ठा	१६	२१	दि	११	४६	प्रीति	२६	२५	दि	३	४८	बा	११	१२	कौ	४१	२१	प्रवर्द्धमान
३३	५०	५	र	११	३०	दि	९	४९	शतभिष	१८	१८	दि	१२	३३	आयुष्मान	२३	५९	दि	२	४९	तै	११	३०	गर	४१	०	राक्षस
३३	४९	६	चं	१०	३०	दि	९	२६	पू.भा.	१८	५८	दि	१२	४९	सौभाग्य	२०	३२	दि	१	२६	व	१०	३०	भ	३९	२४	मुसल
३३	४७	७	मं	८	१८	दि	८	३४	उ.भा.	१८	२७	दि	१२	३७	शोभन	१६	७	दि	११	४१	बव	८	१८	बा	३६	४१	सिद्धि
३३	४६	८	बु	५	४	प्रा	७	१६	रेवती	१६	५३	दि	१२	०	अतिगंड	१०	५२	दि	९	३५	कौ	५	४	तै	३२	५८	उत्पात
३३	४५	९	गु	०/५७	५२/५९	प्रा	५/३	३५/३५	अश्विनी	१४	३१	दि	११	३	सुकर्मा	४/५३	५४/२२	प्रा	७/४	१२/३३	गर	०	५२	व	२८/५५	२१/५९	मानस
३३	४४	११	शु	५०	१६	रा	१	२१	भरणी	११	२१	दि	९	४७	शूल	५१	९	रा	१	४२	बव	२३	३	बा	५०	१६	मुद्गर
३३	४३	१२	श	४४	१७	रा	१०	५८	कृत्तिका	७	३९	दि	८	१९	गंड	४३	४३	रा	१०	४५	कौ	१७	१७	तै	४४	१७	ध्वज
३३	४१	१३	र	३८	६	रा	८	३०	रोहिणी	३/५५	३५/४८	प्रा	६/५	४२/१	वृद्धि	३६	७	रा	७	४२	गर	११	१२	व	३८	६	धाता
३३	३९	१४	चं	३१	५४	सा	६	१	आर्द्रा	५५	१७	रा	३	२२	ध्रुव	२८	२८	दि	४	३९	भ	५	०	श	३१/५८	५४/५३	कालदण्ड
३३	३७	३०	मं	२५	५२	दि	३	३७	पुनर्वसु	५१	२७	रा	१	५१	व्याघात	२०	५९	दि	१	४०	ना	२५	५२	किं	५३	३	स्थिर

ति.	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ+		रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.
१	३०	१	१४	१५	१६	९			५	१३	६	४७	२	१३	३९	५	५६	५२	२३	१३	+	१	७	२५
१	जु	२	१५	१६	१७	१०	मकर	११।४३	५	१३	६	४७	२	१४	३५	५७	५६	५२	२३	९	+	१	८	७
२	२	३	१६	१७	१८	११			५	१४	६	४६	२	१५	३२	४९	५६	५१	२३	५	+	२	८	४५
३	३	४	१७	१८	१९	१२	कुम्भ	४४।४४	५	१४	६	४६	२	१६	२९	४०	५६	५१	२३	१	+	२	९	२१
४	४	५	१८	१९	२०	१३			५	१४	६	४६	२	१७	२६	३१	५६	५१	२२	५६	+	२	९	५२
५	५	६	१९	२०	२१	१४			५	१४	६	४६	२	१८	२३	२२	५६	५१	२२	५१	+	२	१०	२३
६	६	७	२०	२१	२२	१५	मीन	३।४८	५	१४	६	४६	२	१९	२०	१३	५६	५१	२२	४५	+	२	१०	५४
७	७	८	२१	२२	२३	१६			५	१५	६	४५	२	२०	१७	४	५६	५२	२२	३९	+	३	११	२७
८	८	९	२२	२३	२४	१७	मेष	१६।५३	५	१५	६	४५	२	२१	१३	५६	५६	५२	२२	३३	+	३	१२	३
९	९	१०	२३	२४	२५	१८			५	१५	६	४५	२	२२	१०	४८	५६	५२	२२	२६	+	३	१२	४४
११	१०	११	२४	२५	२६	१९	वृष	२५।२५	५	१५	६	४५	२	२३	७	४०	५६	५२	२२	१९	+	३	१	३२
१२	११	१२	२५	२६	२७	२०			५	१६	६	४४	२	२४	४	३२	५६	५३	२२	१२	+	३	२	२९
१३	१२	१३	२६	२७	२८	२१	मिथुन	३१।३०	५	१६	६	४४	२	२५	१	२६	५६	५४	२२	४	+	३	३	३५
१४	१३	१४	२७	२८	२९	२२			५	१६	६	४४	२	२५	५८	२०	५६	५४	२१	५५	+	३	४	४६
३०	१४	१५	२८	२९	३०	२३	कर्क	३७।२४	५	१७	६	४३	२	२६	५५	१४	५६	५५	२१	४७	+	३	-	-

आषाढ़कृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ६ आषाढ़ से २३ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक ३० जून से १४ जुलाई तक सन् २०२६ ई.।

आषाढ़मास के प्रथमपक्ष मे यदि सूर्यमण्डल बादलों,विद्युतगर्जन तथा वृष्टि रहित हो तो दो मास पर्यन्त तक वर्षा का अभाव होगा। **गुरु हरगोविन्दसिंह जयंती(सिख)।**
जुलाई ७। मकरराशि(दि.१।६)।
भ.रा.८।३१से (पाताल)। यायीजययोग दि.७।५८ से।
भ.दि.९।३तक (पाताल)। **कुम्भराशि**(रा.११।८)। **पंचक आरंभ** रा.११।८ से। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत** (च.उ.रा.९।२१)। स्थायीजययोग दि.९।३ से।▼
यायीजययोग दि.९।४२ से। पश्चात यायीजययोग। ▼ सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।२८ तक।
रवियोग दि.१२।३३ से।
भ.दि.९।२६से रा.९।०तक (मृत्युलोक)। **मीनराशि**(प्रा.६।४५)। ⊙**पुनर्वसु में सूर्य** ४१।५९(रा.१०।२)। पु.स्त्री.च.चं.योग जम्बूकवाहन सौम्यनाड़ी स्वामी❶
प्रदोष **कालाष्टमी।** सर्वार्थसिद्धियोग दि.१२।३७ तक।
मेषराशि(दि.१२।०)। **पंचक समाप्त** दि.१२।०। **श्रीशीतलाष्टमी ८व्रत।** आज बासी भोजन का ग्रहण शास्त्र विहित है। यात्रा व उत्सव।
भ.दि.४।३५से रा.शे.३।३५तक (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.११।३ तक। ❷ *गंगास्नान से करोड़ों सूर्य ग्रहण स्नान लाभ।*
वृषराशि(दि.३।२५)। **योगिनी एकादशी ११व्रत** स्मार्त। *अषाढ़कृष्णपक्ष में योगिनी व्रत के पुण्य से कुष्ठ(कोढ़) आदि का नाश होता है।* **श्रीदेवरहाबाबा पुण्यतिथि।**
वैष्णव एकादशी व्रत। यायीजययोग रा.१०।५८ से। सर्वार्थाअमृतसिद्धियोगत्रिपुष्करयोग दि.८।१९ से।
भ.रा.८।३०से (स्वर्ग)। **मिथुनराशि**(रा.५।५२)। **प्रदोष १३ व्रत। मासशिवरात्रि १३ व्रत। गुरुवृद्धत्व प्रारंभ** १४।४०(दि.११।८)।
भ.प्रा.७।१६तक (स्वर्ग)। ❶ गुरु अतिवृष्टियोग। **मृत्युबाण**४१।५९(रा.१०।२ तक)। रवियोग दि.१२।४९ तक।
कर्कराशि(रा.८।१५)। **भौमवती अमावस्या ३०।** स्नान दान श्राद्ध हेतु पुण्य। पापवार से दुर्भिक्ष तथा भय। *अमावस्या यदि भौमवार हो तो।*❷

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.१ बुध प्रा.६।३३से उ.षा.सूर्यवेध है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है।

ति.२ गुरु उ. षा.पूर्वदोष।

ति.६ सोम रा.१०।२मृत्युबाण बाद उ.भा.मे शनिवेध।

ति.७ मंगल उ.भा.में शनिवेध। दि.१२।३७ से रेवती में रे.६ **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.१०**(रा.७।२२से) इष्ट५प्र.व.वि.१३।। (७वां गुरुदान)। या **ल.१**(रा.१२।८ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१२(१२स्थ शनि अशुभ) या **ल.२** (रा.१।४५से) इष्ट५ प्र.व.वि.१३।।

ति.८ बुध दि.१२।०तक रेवती में रे.६ दिन में पञ्चेष्ठ लग्न का अभाव।

ति.१२शनि दि.८।१९ से रोहिणी में भौमयुति।

पश्चात मासान्त दोष।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	मं	८	१३	५५	५	७६४	५६	१	६	४०	२८	४२	२०	२	२६	४२	९	२३	०	३	७	४२	५८	३	२४	४२	२१	६६	३६	११	१६	१०	४	१०	८	१७	२७
१	बु	८	२७	१३	१६	७२५	५९	१	७	२२	४८	४१	५८	२	२६	१९	९	५१	१४	३	७	५५	४७	३	२५	४८	५७	६६	३६	११	१६	१२	१७	१०	८	१४	१६
२	गु	९	२०	३६	५६	७४५	५५	१	८	४	४६	४१	४८	२	२५	२७	५६	५१	२५	३	८	८	३७	३	२६	५५	३३	६६	३६	११	१६	१४	३०	१०	८	११	५
३	शु	१०	२	१३	९	७५९	५	१	८	४६	३५	४१	४८	२	२४	३६	३१	५१	२५	३	८	२१	२६	३	२८	२	९	६६	३६	११	१६	१६	४२	१०	८	७	५४
४	श	१०	१६	३	४१	७७४	४९	१	९	२८	२४	४१	४८	२	२३	४५	६	५१	२५	३	८	३४	१६	३	२९	८	४५	६६	३६	११	१६	१८	५५	१०	८	४	४३
५	र	१०	२९	९	५३	७९१	१२	१	१०	१०	१२	४१	४८	२	२२	५३	४२	५१	२५	३	८	४७	५	४	०	१५	२२	६६	३६	११	१६	२१	८	१०	८	१	३२
६	चं	११	१२	३१	५२	८०६	५६	१	१०	५२	१	४१	४८	२	२२	२	१७	५१	२५	३	८	५९	५५	४	१	२१	५८	६६	३६	११	१६	२३	२०	१०	७	५८	२२
७	मं	११	२६	८	५१	८२१	२६	१	११	३३	५०	४१	४८	२	२१	१०	५२	५१	२५	३	९	१२	४४	४	२	२८	३४	६६	३६	११	१६	२५	३०	१०	७	५५	११
८	बु	०	९	५८	३०	८३२	५१	१	१२	१५	३८	४१	४८	२	२०	१९	२८	५१	२५	३	९	२५	३४	४	३	३५	१०	६६	३६	११	१६	२७	४०	१०	७	५२	०
९	गु	०	२४	०	१४	८४४	३४	१	१२	५७	२६	४१	४८	२	१९	२८	३	५१	२५	३	९	३८	२४	४	४	४१	४६	६६	३६	११	१६	२९	५०	१०	७	४८	४९
११	शु	१	८	११	१८	८५२	३४	१	१३	३९	१४	४१	४८	२	१८	३६	३९	४०	५३	३	९	५१	१३	४	५	४८	२२	६६	५२	११	१६	३२	०	१०	७	४५	३८
१२	श	१	२२	२८	३२	८५७	५४	१	१४	२१	२	४१	४८	२	१७	५५	४६	२२	४२	३	१०	४	२	४	६	५५	१४	६६	५५	११	१६	३४	१०	१०	७	४२	२८
१३	र	१	२४	३१	३७	८६०	१२	१	१५	२	५०	४१	४८	२	१७	३३	४	२२	३३	३	१०	१६	५१	४	८	२	९	६६	५५	११	१६	३६	२०	१०	७	३९	१७
१४	चं	२	६	४८	३५	८५८	५५	१	१५	४४	३८	४१	४८	२	१७	१०	३१	२२	३३	३	१०	२९	४०	४	९	९	४	६६	५५	११	१६	३७	५३	१०	७	३६	६
३०	मं	२	२१	७	११	८५४	३५	१	१६	२६	२६	४१	४८	२	१६	४७	५९	२२	३३	३	१०	४२	२९	४	१०	१५	५९	६६	५५	११	१६	३८	३२	१०	७	३२	५५

१५पं० आषाढ़कृष्ण ८ बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३१९३
अयनांश २४।१३।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	१	२	३	४	११	१०	४
२१	९	१२	२०	९	३	१६	७	७
१३	५८	१५	१९	२५	३५	२७	५२	५२
५६	३०	३८	२८	३४	१०	४०	०	०
५६	८३२	४१	५१	१३	६६	२	३	३
५२	५१	४८	२५	५०	३६	१०	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि / ल. अं.	१ मं. घं.	मि.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ चं. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ चं. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
मिथुन	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०
कर्क	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८
सिंह	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२
कन्या	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१	२३	१	१९	१२	१५
तुला	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	३	३९	३	३५	२	३१
वृश्चिक	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८
ल. अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४
मकर	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१
कुम्भ	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२
मीन	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०
मेष	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७
वृष	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३

१६पं० आषाढ़कृष्ण ३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३२१९
अयनांश २४।१३।१४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	२	३	४	११	१०	४
२६	२१	१६	१६	१०	१०	१६	७	७
५५	७	२६	४७	४२	१५	३८	३२	३२
१४	११	२६	५९	२१	५९	३२	५५	५५
५६	८५४	४१	२२	१२	६६	०	३	३
५५	३५	४८	३३	४९	५५	३८	११	११



मूलविचार-रेवती/अश्विनी ति.७ मंगल दि.१२।३७ से। **ति.९** गुरु दि.११।३ तक। **पञ्चक विचार-ति.३** शुक्र रा.११।८ से। **ति.८** बुध दि.१२।० तक।

उपवासादि षड्विधंकर्म। उपवास-एकभक्त-नक्त आयाचित व्रतदानभेदात्।। अत्रोपवासे अहोरात्रस्तत्काल:। तस्याहोरात्रावभोजन सङ्कल्परूपत्त्वात्। तदहोरात्रावछिन्न द्वितीयभोजनाभाव विशिष्टमध्याह्न भोजनमेकभक्तम्। तादृशं प्रदोष भोजनं नक्तं। अयाचितलब्धस्य तादृश सकृद्भोजनमयाचितम्। तेऽप्यपिविशेष्यांशे मध्याह्नादि: विशेषणांशे चाहोरात्र एव काल:। एवं दानव्रतयोरपिप्रातरादि: तत्तत्कर्मणि तत्काल व्यापिनीतिथिरित्यर्थ:।।

अथाष्टमवर्षादूर्ध्वमशीतिवर्षपर्यन्तमेकादशीव्रताधिकार:। शक्तस्य तु अशीते-रूर्ध्वमप्यधिकार:। सभर्तृकाणां स्त्रीणां भर्त्रानुज्ञां पित्राद्यनुज्ञां वा विनोपवासव्रताद्या-चरणेव्रतवैफल्यं भर्त्रायु:क्षयो नरकश्च।। अशक्तानां तु नक्तं हविष्यान्नमनौदनं वा फलं तिला: क्षीरमथाम्बु चाज्यम्। यत्पञ्चगव्यं यदि वापि वायु: प्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तरञ्च।। इति पक्षेषु शक्तितारम्येनैकपक्षाश्रयणं न त्वेकादशीत्याग:।।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-कृत्तिका।। **ति.**४ शनि रोहिणी में ४५।२२ (रा.११।२३)।। **वक्रीबुध**-पुनर्वसु। **ति.**८ बुध आर्द्रा २२।४२ (दि.२।२०)।। **गुरु-ति.**११ शुक्र पुष्य ३ चरण ४१।७ (रा.९।४२)।। **शुक्र**-श्लेषा। **ति.**४ शनि मघा व सिंह मे ४६।११(रा.११।४२)।। **शनि**-उ.भा. ४ चरण।। **राहु**-शतभिष १ चरण।। **केतु**-मघा ३ चरण।।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष विचार-प्रतिपदा की वृद्धि तथा दशमी तिथि की हानि होने से यह पक्ष १५ दिनों का है। **३० जून** को आषाढ़ मास प्रारंभ हो रहा है। आषाढ़ मास के प्रथम दिन यदि सूर्यमण्डल बादलों व विद्युत् गर्जन तथा वृष्टि रहित हो तो दो मास पर्यन्त वर्षा का अभाव रहेगा। **३ जुलाई** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर रात्रि ९।२९ पर चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **७ जुलाई** को सप्तमी रात्रि में शीतला देवी का पूजन कर **८ जुलाई** को **श्रीशीतलाष्टमी बसिअउरा** बासी भोजन ☛

पक्ष मे विविधमुहूर्त-ति.१ मंगल पू.षा.में सूर्यवेध। **ति.**१ बुध पू.षा.पूर्वदोष। **ति.**२ गुरु उ.षा.सूर्यवेधकिन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.**३ शुक्र श्रवण रिक्ताभद्रा है। **ति.४** शनि दि.९।४२ रिक्ता बाद धनिष्ठा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.**५ रवि शत. चौपायो का क्रय विक्रय **विद्यारंभ (ल.३** प्रा. ६।६ तक) **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा(ल.६** दि.१०।३८ से) **उपनयन** (रोगबाण) नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.**६ सोम दि.९।२६ भद्रापूर्व पू.भा.धानरोपाई **वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। **ति.**७ मंगल उ.भा.शनियुति। **ति.८** बुध प्रा.७।१६ रिक्तापूर्व रेवती शिशुताम्बूलभक्षण नवीन **आसन** का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायों का क्रय विक्रय दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि** वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.**९ गुरु प्रा.५।३५ रिक्ता बाद दि.११।३तक अश्विनी में जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय **उत्तरदिशा को छोड़कर यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नाव निर्माण **हलप्रवहण विपणि व्यापार** वाहनक्रय **शस्त्रनिर्माण** शल्यक्रिया मुहूर्त। **ति.**११ शुक्र भरणी में केतुवेध। **ति.**१२ शनि भौमभुक्तकिन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **पश्चात मासान्त दोष है।**

☛ प्रसाद रूप में ग्रहण किया जायेगा। **१० जुलाई** को **योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त** जनों के लिये है। इस व्रत को करने से कुष्ठ (कोढ़) रोगादि का नाश होता है। आज ही प्रसिद्ध **संत देवरहा बाबा** की **पुण्यतिथि** मनाई जायेगी। **११ जुलाई** को **योगिनी एकादशी व्रत** वैष्णवजनों द्वारा किया जायेगा। **१२ जुलाई** को भगवान् शिवजी का सर्वकामना पूर्णकारक **प्रदोष व्रत** एवं निशीथ काल में त्रयोदशी युक्त चतुर्दशी में **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१४ जुलाई को स्नान-दान एवं श्राद्ध की भौमवती अमावस्या** मनाई जायेगी। भौमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान करने से सहस्त्र गोदान के समान फल प्राप्त होता है।

आषाढशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २४ आषाढ़ से ७ श्रावण तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १५ जुलाई से २९ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

गुरु पश्चिमास्त
ति.१बुध (१५-७-२६)

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु ॥

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की घ.	प.	क्रान्ति उ+		रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.
३३	३६	१	बु	२०	१५	दि	१	२२	पुष्य	४८	५	रा	१२	३१	हर्षण	१३	४८	दि	१०	४८	बव	२०	१५	बा	४७	४२	मातङ्ग	१५	१६	२९	३०	३१	२४			५	१७	६	४३	२	२७	५२	९	५६	५६	२१	३८	+	३	७	५२
३३	३४	२	गु	१५	९	दि	११	२०	श्लेषा	४५	२४	रा	११	२६	वज्र	७	५	दि	८	७	कौ	१५	९	तै	४३	१	अमृत	१६	१७	१	३१	३२	२५	सिंह	४५।२४	५	१७	६	४३	२	२८	४९	५	५६	५६	२१	२८	+	४	८	३४
३३	३२	३	शु	१०	५३	दि	९	३९	मघा	४३	३३	रा	१०	४३	सिद्धि	०/५४	५९/३४	प्रा	५/३	४१/३१	गर	१०	५३	व	३९	१२	काण	१७	१८	२	३२	१	२६			५	१८	६	४२	२	२९	४६	१	५६	५७	२१	१९	+	४	९	१०
३३	३१	४	श	७	३०	दि	८	१८	पू.फा.	४२	४१	रा	१०	२२	वरीयान	५१	१	रा	१	४२	भ	७	३०	बव	३६	२०	लुम्बक	१८	१९	३	१	२	२७	कन्या	५७।४५	५	१८	६	४२	३	०	४२	५८	५६	५८	२१	९	+	४	९	४४
३३	२९	५	र	५	१०	प्रा	७	२२	उ.फा.	४२	५८	रा	१०	२९	परिघ	४७	२३	रा	१२	१५	बा	५	१०	कौ	३४	३७	मित्र	१९	२०	४	२	३	२८			५	१८	६	४२	३	१	३९	५६	५६	५८	२०	५८	+	४	१०	१५
३३	२७	६	चं	४	४	प्रा	६	५६	हस्त	४४	३०	रा	११	६	शिव	४४	४७	रा	११	१३	तै	४	४	गर	३४	८	वज्र	२०	२१	५	३	४	२९			५	१९	६	४१	३	२	३६	५४	५६	५८	२०	४७	+	४	१०	४७
३३	२५	७	मं	४	१२	प्रा	६	५९	चित्रा	४७	१७	रा	१२	१३	सिद्ध	४३	९	रा	१०	३४	व	४	१२	भ	३४	५८	ध्वांक्ष	२१	२२	६	४	५	३०	तुला	११।३४	५	१९	६	४१	३	३	३३	५२	५७	०	२०	३६	+	४	११	२०
३३	२३	८	बु	५	४४	प्रा	७	३७	स्वाती	५१	१५	रा	१	५०	साध्य	४२	३१	रा	१०	२०	बव	५	४४	बा	३७	२	धूम्र	२२	२३	७	५	६	३१			५	२०	६	४०	३	४	३०	५२	५७	१	२०	२५	+	४	११	५५
३३	२०	९	गु	८	१९	दि	८	३९	विशाखा	५६	१९	रा	३	५१	शुभ	४२	४६	रा	१०	२६	कौ	८	१९	तै	४०	११	प्रवर्द्धमान	२३	२४	८	६	७	१	वृश्चिक	४०।३	५	२०	६	४०	३	५	२७	५३	५७	२	२०	१३	+	४	१२	३५
३३	१८	१०	शु	१२	४	दि	१०	१०	अनुराधा	६०	०	समस्त			शुक्ल	४३	४४	रा	१०	५०	गर	१२	४	व	४४	१९	राक्षस	२४	२५	९	७	८	२			५	२१	६	३९	३	६	२४	५५	५७	३	२०	०	+	४	१	१८
३३	१६	११	श	१६	३४	दि	११	५८	अनुराधा	२	१३	प्रा	६	१४	ब्रह्म	४५	७	रा	११	२४	भ	१६	३४	बव	४९	३	अमृत	२५	२६	१०	८	९	३			५	२१	६	३९	३	७	२१	५८	५७	४	१९	४८	+	४	२	६
३३	१४	१२	र	२१	३३	दि	१	५९	ज्येष्ठा	८	३८	दि	८	४९	ऐन्द्र	४६	४६	रा	१२	४	बा	२१	३३	कौ	५४	४	काण	२६	२७	११	९	१०	४	धनु	८।३८	५	२२	६	३८	३	८	१९	२	५७	५	१९	३५	+	४	२	५८
३३	१२	१३	चं	२६	३५	दि	४	०	मूल	१५	११	दि	११	२६	वैधृति	४८	१७	रा	१२	४०	तै	२६	३५	गर	५८	५४	लुम्बक	२७	२८	१२	१०	११	५			५	२२	६	३८	३	९	१६	७	५७	६	१९	२२	+	४	३	५३
३३	९	१४	मं	३१	१३	सा	५	५१	पू.षा.	२१	२५	दि	१	५५	विष्कुंभ	४९	२५	रा	१	७	व	३१	१३	भ	६०	०	मित्र	२८	२९	१३	११	१२	६	मकर	३७।४८	५	२२	६	३८	३	१०	१३	१३	५७	६	१९	८	+	४	४	५०
३३	६	१५	बु	३५	८	रा	७	२३	उ.षा.	२६	५९	दि	४	१०	प्रीति	४९	५५	रा	१	२१	भ	३	१०	बव	३५	८	वज्र	२९	३०	१४	१२	१३	७			५	२३	६	३७	३	११	१०	१९	५७	८	१८	५५	+	४	-	-

◡चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.३० सामान्य। गुप्तनवरात्र(नोड़ता)प्रारंभ। चन्द्रोदयव्यापिनि मनोरथ द्वितीया२—बङ्गाल। गुर्वस्तपश्चिम में १४।३७(दि.११।८)।
मु.सफर २ हि.१४४८। सिंहराशि(रा.११।२६)। रथयात्रा २। श्रीरामबलरामसुभद्रायात्रा। आज के दिन रथ में स्थित भगवान जगन्नाथ का दर्शन पूजन। मृत्युबाण ११।३०(दि.९।५३तक)। ❶
भ.रा.८।५९से (मृत्युलोक)। नेपाली श्रावणमासारंभ। मध्याह्न वैनायकीश्रीगणेश ४ व्रत। ☉सं.कर्क सूर्य १४।८८(दि.११।५२)। मु.३०समान्य पूर्व की १६या ३०घटी ❷
भ.दि.८।१८तक (मृत्युलोक)। सौरश्रावणमास। कन्याराशि(रा.४।२८)। रवियोग रा.१०।२२से। ❸ यायीजययोग दि.७।२२ तक।
श्रीस्कन्दपञ्चमी। हेरपंचमी(उड़ीसा)। तीन मुहूर्तन्यून षष्ठी से पञ्चमी विद्ध श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। कुमारषष्ठी ६। रवियोग सर्वार्थसिद्धियोग रा.१०।२९ तक। ❹
कर्दमषष्ठी(बङ्गाल)। ☉पुष्य में सूर्य ४५।२३(रा.११।२८)। स्त्री.स्त्री.सू.चं.योग महिषवाहन वहोनाड़ी स्वामी भौम मेघ आच्छादित मध्यम वृष्टियोग। यायीजययोग प्रा.६।५६ से।
भ.प्रा.६।५९से रा.७।१८ तक (पाताल)। तुलाराशि(दि.११।३३)। स्थायीजययोग प्रा.६।५९ से पूर्व द्विपुष्करयोग।
खर्चीपूजा(त्रिपुरा)। रवियोग रा.१।५० से।
राष्ट्रिय श्रावणमास। वृश्चिकराशि(रा.९।२१)। मेला शरीक भगवती(कश्मीर)। ☉सायन सिंहसूर्य १८।५२(दि.१२।२७)। रवियोगसमस्त दिन। सर्वार्थसिद्धियोग रा.३।५१ तक।
भ.रा.११।५से (स्वर्ग)। मन्वादि १०। सोपपदा १०। वेद अध्ययन का निषेध। रवियोग सर्वार्थसिद्धियोग समस्त दिन।
भ.दि.११।५८ तक (स्वर्ग)। श्रीविष्णुशयनी एकादशी ११व्रत सबका। रविशयनोत्सव। रविनारायण एकादशी(उड़ीसा)। हरिशयनी एकादशी। पुनर्यात्रा (उड़ीसा)। रवियोगयायीजययोग प्रा.६।१४ तक।
धनुराशि(दि.८।४९)। प्रदोष १२व्रत। चातुर्मास्यव्रत नियम प्रारंभ। शाक त्याग व्रतारंभ। द्वादशी में वामनपूजन। श्रीविष्णुशयनोत्सव। श्रीकृष्णद्वादशी। गोपद्मव्रतारम्भ। सर्वार्थसिद्धियोग दि.८।४९ से।
प्रदोष श्रीशिवशयनोत्सव। शिवपवित्रारोपण। मेलाज्वालामुखी(कश्मीर)। जयापार्वती व्रतारंभ (गुजरात)। रवियोग दि.११।२६ से।
भ.सा.५।५१ से (पाताल)। मकरराशि(रा.८।२९)। चौमासी चौदस(जैन)। शिवशयन चतुर्दशी(उड़ीसा)। रवियोगस्थायीजययोग दि.१।५५ तक।
भ.प्रा.६।३९तक (पाताल)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। श्रीगुरुपूर्णिमा १५। गुरुव्यास पूजा कर्णघण्टा कनखल में स्नान। मन्वादि १५। श्रीकोकिला १५व्रत। श्रीकोकिलारूपिणि शिव की प्रतिदिन पूजन। ❺

विवाह मुहूर्त
पञ्चेष्टलग्न विचार

मास प्रारंभ में गुरु अस्त तथा कर्क संक्रांति दोष से विवाह मुहूर्त का अभाव है।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	बु	३	५	२०	४७	८४७	३३	१	१७	८	१४	४१	४८	२	१६	२५	२६	४	३७	३	१०	५५	१९	४	११	२२	५५	६६	१७	११	१६	३१	११	१०	७	२९	४४
२	गु	३	१९	२६	२०	८३७	२७	१	१७	५०	२	४१	४८	मा	१६	२०	५०	१०	६	३	११	९	२	४	१२	२९	१२	६२	२९	११	१६	३१	५०	१०	७	२६	३८
३	शु	४	२	२०	५२	८२५	२७	१	१८	३१	५०	४१	४८	२	१६	३०	५६	१०	१६	३	११	२२	५६	४	१३	३१	४१	६२	३२	११	१६	४०	२९	१०	७	२३	२३
४	श	४	१७	२	३३	८११	४३	१	१९	१३	३८	४१	४८	२	१६	४१	१२	१०	१६	३	११	३६	५१	४	१४	३४	१३	६२	३३	११	१६	४१	७	१०	७	२०	१२
५	र	५	०	२९	४८	७९६	१४	१	१९	५५	२६	४१	४८	२	१६	५१	२८	१०	१६	३	११	५०	४५	४	१५	३६	४६	६२	३३	११	१६	४१	४६	१०	७	१७	१
६	चं	५	१३	४१	२७	७८०	३	१	२०	३७	१४	४१	४८	२	१७	१	४४	३१	४३	३	१२	४	३९	४	१६	३९	१८	६२	३३	११	१६	४२	२५	१०	७	१३	५०
७	मं	५	२६	३७	३०	७६४	३२	१	२१	१९	२	४१	४८	२	१७	३३	३७	३९	२१	३	१२	१८	३४	४	१७	४१	५१	६२	३३	११	१६	४३	४	१०	७	१०	४०
८	बु	६	८	१९	२	७५०	२३	१	२२	०	५०	४१	४८	२	१८	१२	५७	३९	२७	३	१२	३२	२८	४	१८	४४	२४	६२	३३	११	१६	४३	४०	१०	७	७	२९
९	गु	६	२१	४७	३५	७३७	४२	१	२२	४२	३८	४१	४८	२	१८	५२	२४	३९	२७	३	१२	४६	२२	४	१९	४६	५७	६२	३३	११	१६	४४	१६	१०	७	४	१८
१०	शु	७	४	४	४३	७२८	२२	१	२३	२४	२६	४१	४६	२	१९	३१	५१	३९	२७	३	१३	०	१७	४	२०	४९	३०	६३	३	११	१६	४४	५१	१०	७	१	७
११	श	७	११	३९	२६	७२४	३५	१	२४	६	१२	३९	५४	२	२०	११	१७	५९	५७	३	१३	१४	११	४	२१	५२	३२	६३	३६	११	१६	४५	२६	१०	६	५७	५६
१२	र	७	२८	१६	१	७२२	४२	१	२४	४६	७	३९	५४	२	२१	११	१४	६१	५	३	१३	२८	५	४	२२	५६	९	६३	३६	११	१६	४६	१	१०	६	५४	४६
१३	चं	८	१०	१७	२९	७२१	१५	१	२५	२६	२	३९	५४	२	२२	१२	११	६०	३०	३	१३	४२	०	४	२३	५९	४५	६३	३६	११	१६	४६	३६	१०	६	५१	३५
१४	मं	८	२२	२१	१९	७२४	४२	१	२६	५	५७	३९	५४	२	२३	१२	४१	५९	५५	३	१३	५५	५४	४	२५	३	२२	६३	३६	व	१६	४७	११	१०	६	४८	२४
१५	बु	९	३	३०	४६	७३२	४	१	२६	४५	५२	३९	५४	२	२४	१२	४५	६२	३९	३	१४	९	४८	४	२६	६	५८	६३	३६	११	१६	४६	५०	१०	६	४५	१३

१७ पं० आषाढ़शुक्ल ८बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह युगण३३०७
अयनांश२४।१३।५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१	३	३	४	११	१०	४
४	९	२२	१८	१२	१८	१६	७	७
१०	१९	०	१२	३२	४४	४३	७	७
५२	२	५०	५७	२८	२४	४०	२१	२१
५७	७५०	४१	३९	१३	६२	१	३	३
१	२३	४८	२७ व	३४	३३	३६	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ चं. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ चं. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
मिथुन	५	२६	५	२२	५	१९	कर्क	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	५०
कर्क	७	४४	७	४०	७	३७	सिंह	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	४
सिंह	९	५८	९	५४	९	५१	कन्या	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७
कन्या	१२	११	१२	७	१२	४	तुला	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३३
तुला	२	२७	२	२३	२	२०	वृश्चिक	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	५०
वृश्चिक	४	४४	४	४०	४	३७	धनु	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
धनु	६	५०	६	४६	६	४३	मकर	८	२४	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४३
मकर	८	३७	८	३३	८	३०	कुम्भ	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१४
कुम्भ	१०	८	१०	४	१०	१	मीन	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२
मीन	११	३६	११	३२	११	२९	मेष	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१९
मेष	१	१३	१	९	१	६	वृष	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१५
वृष	३	९	३	५	३	२	मिथुन	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२९

१८ पं० आषाढ़शुक्ल १५बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह युगण३३१४
अयनांश२४।१३।६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	२	३	४	११	१०	४
११	३	२६	२४	१४	२६	१६	६	६
१०	३०	४५	१२	९	६	४६	४५	४५
११	४६	५२	४५	४८	५८	५०	१३	१३
५७	७३२	३१	६२	१३	६३	०	३	३
८	४	५४	३९	५४	३६	५६ व	११	११



❶ रवियोग रा.११।२६ से। यायीजययोग दि.११।२० से। ❷ पुण्य। आज सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति पुण्यकाल। घी गौ का दान मन्दाकिनी में स्नान। निरयन दक्षिणायन असुरों का दिन देवों की रात्रि। अयन संक्रान्ती से तीन दिनो तक शुभ कार्य निषेध है। वर्षविश्वा १८सुभिक्षकर। वर्षाऋतु। कर्क के सूर्य में केश क्षौरादि कार्य वर्जित है। मासव्यापि मनसापूजा प्रारंभ (बङ्गाल)। रवियोग रा.१०।४३ तक। स्थायीजययोग दि.९।३९ से। ❹नक्त (रात्रि)में भोजन नियम प्रारंभ। सायकाल सर्व धान के ह्रास वृद्धि परीक्षण हेतु सायं काल सर्वधान्य को अलग अलग तौल लें। वायुपरीक्षण करें।

मूलविचार- श्लेषा/मघा ति.१ बुध रा.१२।३१ से। ति.३शुक्र १०।४३ तक। ज्येष्ठ/मूल ति.११ शनि प्रा.६।१४ से। ति.१३ सोम दि.११।२६ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। **भौम**-रोहिणी में। ति.९ गुरु मृगशिर ५३।३८ (रा.२।४७)।। **वक्रीबुध**-आर्द्रा। ति.२ गुरु मार्गी १८।४८ (दि.१२।४८)। ति.१० शुक्र पुनर्वसु ४२।५० (रा.१०।२९)।। **गुरु**-ति.११ शनि पुष्य ४ चरण २५।५ (दि.३।२४)।। **शुक्र**-मघा। ति.२ गुरु पू.फा.४८।४६(रा.१२।४७)। ति.१५ बुध उ.फा.३१।९(सा.५।५१)।। **शनि**-उ.भा.४ चरण। ति.२ गुरु रेवती १ चरण १६।० (दि.११।४१)। ति.१४ मंगल वक्री १६।८(दि.११।४९)।। राहु-शतभिष १ चरण।। **केतु**-मघा ३ चरण।।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष विचार-यह पक्ष पूरे पन्द्रह दिन का है। कर्क राशि में गुरु अस्त से राजभय तथा सुभिक्ष होगा। **१५ जुलाई** को **चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य पदार्थो के मूल्यों में समता रहेगी। **१६ जुलाई** के दिन **रथयात्रा उत्सव** पूरे देशभर में सर्वत्र, विशेषकर जगन्नाथपुरी में मनाया जायेगा। धार्मिक जनसमुदाय रथ पर विराज-☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ बुध पुष्य सूर्यभोग्य है। ति.२ गुरु श्लेषा धानकटाई मुहूर्त। **ति.**३ **शुक्र मघा केतुयुति। ति.**४ **शनि** दि.८।१८ रिक्ताभद्रा बाद पू.फा. शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.**५ रवि उ.फा.शनिवेध। **ति.**६ सोम हस्त शनिवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.**७ मंगल प्रा.६।५९ भद्रापूर्व चित्रा लालवस्त्रमूंगारत्नधारण **हलप्रवहण** वाहनक्रय शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.**८ बुध स्वाती में राहुवेध। **ति.**९ गुरु दि.८।३९ रिक्ता बाद विशाखा नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी चौपायो का क्रय विक्रय धानरोपाई नावनिर्माण मुहूर्त। **ति.**१० **शुक्र रा.११।५** भद्रापूर्व अनुराधा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी **पश्चिमदिशा को त्यागकर यात्रा** दर्वरी शिल्पविद्या नावनिर्माण **हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहनक्रय **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.**११ शनि दि.११।५८ भद्रा बाद ज्येष्ठा मे शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.**१२ **रवि ज्येष्ठा** मे शिशुताम्बूलभक्षण चौपायों का क्रय विक्रय नावनिर्माण **बीजोप्ति** शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.**१३ सोम दि.४।० रिक्तापूर्व मूल दर्वरी धानरोपाई औषधी सेवन **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.**१४ मंगल रिक्ताभद्रा है। **ति.**१५ बुध उ.षा. भौमवेध।

☛मान श्रीकृष्ण-बलराम-सुभद्राजी का दर्शनपूजन कर पुण्य के भागी होते हैं तथा रथ को खींचने में सहयोग करके भविष्य में होने वाले कष्टों से मुक्ति पाते हैं। **१७ जुलाई** को मध्याह्न में **वै.गणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **२५ जुलाई को हरिशयनी एकादशी व्रत** सबके लिये है। श्रीहरि (विष्णु) का शास्त्र-विधि व परम्परानुसार पूजनकर शयन कराना चाहिये। **२६ जुलाई को प्रदोष व्रत** होगा। आज चातुर्मास्य व्रत के अनुष्ठान हेतु संकल्प लेना चाहिये। **चातुर्मास** इसका यम-नियम पालन करने वाले व्रती शाक का त्याग करें। अत: आज से विवाहादि शुभ कार्यों का चार माह तक निषेध है। **२९ जुलाई स्नान-दान एवं व्रत की पूर्णिमा** होगी। **कोकिला व्रत** भी आज ही किया जायेगा। आज के दिन **गुरु पूर्णिमा** मनाई जायेगी। इस दिन गुरु व आचार्य की पूजा कर उपहार स्वरूप भेंट अर्पित करने का विशेष महत्त्व है। समस्त विद्याओं के जनकस्वरूप **आदि गुरु वेद व्यास जी की पूजा** की जायेगी। काशी स्थित **व्यास मन्दिर** में विशेष रूप से दर्शन पूजन किया जाता है।

श्रावणकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ८ श्रावण से २६ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक ३० जुलाई से १२ अगस्त तक सन् २०२६ ई.।

गुरु उदय पूर्व में
ति.१२सोम (१०-८-२६)

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण उत्तरगोल वर्षाऋतु ॥

दि.मा.		तिथि	वा	घ	प	स	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	स	घं	मि	योग	घ	प	स	घं	मि	करण	घ	प	करण	घ	प
३३	४	१	गु	३७	५८	रा	८	३५	श्रवण	३१	३५	सा	६	२	आयुष्मान	४१	३१	रा	१	१२	बा	६	३३	कौ	३७	५८
३३	१	२	शु	३९	४५	रा	९	१७	धनिष्ठा	३५	६	रा	७	२६	सौभाग्य	४८	११	रा	१२	४३	तै	८	५१	गर	३९	४५
३२	५९	३	श	४०	९	रा	९	२८	शतभिष	३७	११	रा	८	२०	शोभन	४६	१	रा	११	४९	व	९	५७	ब	४०	९
३२	५६	४	र	३९	१५	रा	९	६	पू.भा.	३८	१५	रा	८	४२	अतिगंड	४२	४४	रा	१०	३०	बव	९	४२	बा	३९	१५
३२	५३	५	चं	३७	९	रा	८	१७	उ.भा.	३७	५९	रा	८	४७	सुकर्मा	३८	२७	रा	८	४८	कौ	८	१२	तै	३७	९
३२	५०	६	मं	३३	५९	रा	७	१	रेवती	३६	३७	रा	८	४	धृति	३३	२१	रा	६	४६	गर	५	३४	व	३३	५९
३२	४८	७	बु	२९	५३	सा	५	२४	अश्विनी	३४	२८	रा	७	१४	शूल	२७	२७	दि	४	२५	भ	१	५६	बव	२९ ५७	५३ २५
३२	४५	८	गु	२४	५७	दि	३	२५	भरणी	३१	२५	सा	६	०	गंड	२०	५५	दि	१	४९	कौ	२४	५७	तै	५२	१०
३२	४२	९	शु	१९	२४	दि	१	१३	कृत्तिका	२७	४१	दि	४	३५	वृद्धि	१३	५१	दि	११	०	गर	१९	२४	व	४६	२६
३२	३९	१०	श	१३	२८	दि	१०	५१	रोहिणी	२३	४६	दि	२	५८	ध्रुव	६ ५२	२५ २४	प्रा	८ ४	१ ५१	भ	१३	२८	बव	४०	२२
३२	३६	११	र	७	१७	दि	८	२३	मृगशिर	११	३६	दि	१	११	हर्षण	५१	७	रा	१	५५	बा	७	१७	कौ	३४	१२
३२	३३	१२	चं	१ ५४	७ ०	प्रा	५ ३	५६ ३२	आर्द्रा	१५	२७	दि	११	४०	वज्र	४३	३३	रा	१०	५५	तै	१	७	गर	२८ ५५	७ ०
३२	३०	१४	मं	४९	२८	रा	१	१७	पुनर्वसु	११	३०	दि	१०	६	सिद्धि	३६	१६	रा	८	०	भ	२२	१८	श	४९	२८
३२	२७	३०	बु	४४	२२	रा	११	१५	पुष्य	७	५९	दि	८	४२	व्यतीपात	२९	२३	सा	५	१६	च	१६	५५	ना	४४	२२

योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की घ.	प.	क्रान्ति उ	+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.
ध्वज	३०	१	१५	१३	१४	८			५	२४	६	३६	३	१२	७	२७	५७	८	१८	४०	+	४	७	२२
धाता	३१	२	१६	१४	१५	९	कुम्भ	३।२१	५	२४	६	३६	३	१३	४	३५	५७	११	१८	२६	+	४	७	५५
आनंद	अग	३	१७	१५	१६	१०			५	२५	६	३५	३	१४	१	४६	५७	११	१८	११	+	४	८	२६
चर	२	४	१८	१६	१७	११	मीन	२३।१	५	२५	६	३५	३	१४	५८	५७	५७	११	१७	५६	+	४	८	५७
गद	३	५	१९	१७	१८	१२			५	२६	६	३४	३	१५	५६	८	५७	१३	१७	४१	+	४	९	२९
शुभ	४	६	२०	१८	१९	१३	मेष	३६।३७	५	२६	६	३४	३	१६	५३	२१	५७	१३	१७	२५	+	४	१०	३
मृत्यु	५	७	२१	१९	२०	१४			५	२७	६	३३	३	१७	५०	३४	५७	१६	१७	९	+	४	१०	४१
पद्म	६	८	२२	२०	२१	१५	वृष	४५।३१	५	२७	६	३३	३	१८	४७	५०	५७	१८	१६	५३	+	४	११	२५
छत्र	७	९	२३	२१	२२	१६			५	२८	६	३२	३	१९	४५	८	५७	१८	१६	३७	+	४	१२	१७
श्रीवत्स	८	१०	२४	२२	२३	१७	मिथुन	५१।४१	५	२८	६	३२	३	२०	४२	२६	५७	१९	१६	२०	+	४	१	१७
सौम्य	९	११	२५	२३	२४	१८			५	२९	६	३१	३	२१	३९	४५	५७	२०	१६	३	+	३	२	२४
कालदण्ड	१०	१२	२६	२४	२५	१९	कर्क	५७।२९	५	३०	६	३०	३	२२	३७	५	५७	२२	१५	४६	+	३	३	३५
स्थिर	११	१३	२७	२५	२६	२०			५	३०	६	३०	३	२३	३४	२७	५७	२३	१५	२८	+	३	४	४५
मातङ्ग	१२	१४	२८	२६	२७	२१			५	३१	६	२९	३	२४	३१	५०	५७	२५	१५	११	+	३	-	-

मैथिल नववर्षारंभ। श्रावणमास में चतुर्मास व्रती शाक त्याग करें। श्रीकाशीविश्वनाथ को नित्य बिल्वपत्र अर्पण। नित्य पार्थिव अर्चन प्रारंभ। चातुर्मास विधान। यायीजययोग सा.६।७ से।

कुम्भराशि(प्रा.६।४४)। **पंचक आरंभ** प्रा.६।४४ से। **अशून्यशयन २व्रत**(च.उ.रा.७।५५)। शय्या स्थित श्रीलक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य में सुख प्राप्ति। ▼

भ.दि.९।२४ से रा.९।२८ तक (मृत्युलोक)। **अगस्त८**। **जयापार्वती व्रत** (गुजरात)। ❶ वह्नीनाड़ी स्वामी भौम मंद वायु वृष्टियोग। यायीजययोग रा.८।१७ से।

मीनराशि(दि.२।३७)। **रविवतिसंकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत** (च.उ.रा.८।५७)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।४२ से। ▼[illegible]

नागपञ्चमी ५(बङ्गाल)। **मधुश्रावणी व्रतारंभ**(मिथिला)। **हरदेवी पूजा**(जयपुर)। **श्रावणसोमवारव्रत**(प्रदोषविधि से)। ⊙**श्लेषा में सूर्य** ४६।० (रा.११।५०)। पु.स्त्री.च.च.योग [illegible] ❶

भ.रा.७।१ से (मृत्यु—स्वर्ग)। **पंचक समाप्त** रा.८।४। **मेषराशि**(रा.८।४)। **मु.चेहलुम**। **केरपूजा**(त्रिपुरा)। **भौमव्रत**। दुर्गायात्रा—गौरीपूजा—हनुमद्दर्शन। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.८।४ से।

भ.प्रा.६।१३ तक (स्वर्ग)। प्रदोष **कालाष्टमी ८व्रत**। **श्रीशीतलासप्तमी व्रत**। रवियोग रा.८।१४ तक।

वृषराशि(रा.११।३९)। **श्रीशीतलाष्टमी व्रत**। **मन्वादि ८**। यायीजययोग दि.३।२५ से। यमघंटयोग सा.६।० से।

भ.रा.१२।२से (स्वर्ग)। यमघंटयोग दि.४।३५ से।

भ.दि.१०।५१ तक (स्वर्ग)। **मिथुनराशि**(रा.२।८)। यायीजययोग दि.१०।५१ से। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.२।५८ तक।

कामदा एकादशी ११ व्रत सबका। **कामिका एकादशी**। द्विपुष्करयोग दि.८।२३ से।

भ.रा.शे.३।३२से (मृत्युलोक)। **कर्कराशि**(रा.शे.४।३०)। **सोमप्रदोष १३ व्रत**। पुत्रकामना हेतु प्रशस्त। प्रा.५।५६ तक एकादशी व्रत पारण। **श्रावणसोमवारव्रत**(प्रदोष विधि से)। **गुरूदय पूर्व में** ५।५८(रा.७।५३)

भ.दि.२।२५ तक (मृत्युलोक)। **मासशिवरात्रि १४ व्रत**। **भौमव्रत**। दुर्गायात्रा—गौरीपूजा—हनुमद्दर्शन। स्थायीजययोग दि.१०।६ तक। ❷ **मु.शहादते इमाम हसन**। **मु.आखिरी चहारशम्बा**।

अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष व सुख। **मन्वादि ३०**। **कर्कटक ववु**(केरल)। **चिताउ अमावस्या**(उड़ीसा)। **हरियाली ३०**। अपगाह आड़िअमावस्या(ट.ना.)। ❷

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	गु	९	१६	४८	५३	७४३	२	१	२७	२५	४७	३९	५४	२	२५	१५	२४	७६	१०	३	१४	२३	४३	४	२७	१०	३५	६३	३६	११	१६	४५	५४	१०	६	४२	२
२	शु	९	२९	५७	५५	७५६	४२	१	२८	५	४२	३९	५४	२	२६	३१	३३	७६	१६	३	१४	३७	३७	४	२८	१४	११	६३	३६	११	१६	४४	५८	१०	६	३८	५२
३	श	१०	१२	०	१०	७७१	२९	१	२८	४५	३०	३९	५४	२	२७	४७	४९	७६	१६	३	१४	५१	३१	४	२९	१७	४८	६३	३६	११	१६	४४	२	१०	६	३५	४९
४	र	१०	२४	५७	४९	७८७	४४	१	२९	२५	३२	३९	५४	२	२९	४	५	७६	१६	३	१५	५	२६	५	०	२१	२४	६३	३६	११	१६	४३	६	१०	६	३२	३०
५	चं	११	८	११	१८	८०३	३४	२	०	५	२७	३९	२७	३	०	२०	२१	७९	५३	३	१५	१९	२०	५	१	२५	१	६३	३६	११	१६	४२	१०	१०	६	२९	१९
६	मं	११	२१	४०	२४	८१८	३८	२	०	४४	५४	३८	५६	३	१	४०	१४	८६	१६	३	१५	३३	१४	५	२	२८	३७	६३	३६	११	१६	४१	१४	१०	६	२६	८
७	बु	०	४	२३	२२	८२९	४३	२	१	२३	५१	३८	५६	३	३	६	३०	८६	२०	३	१५	४७	८	५	३	३२	१३	६३	३६	११	१६	४०	१८	१०	६	२२	५७
८	गु	०	१७	१८	४१	८४२	५०	२	२	२	४८	३८	५६	३	४	३२	४०	८६	२०	३	१६	१	३	५	४	३५	५०	६३	३६	११	१६	३९	२१	१०	६	१९	४७
९	शु	१	३	२५	२६	८५१	३	२	२	४१	४५	३८	५६	३	५	५९	१०	८६	२०	३	१६	१४	५७	५	५	३९	२६	६३	३६	११	१६	३८	२२	१०	६	१६	३६
१०	श	१	१७	४०	१०	८५७	५४	२	३	२०	४१	३८	५७	३	७	२५	३०	९१	१३	३	१६	२८	५१	५	६	४३	३	५७	४१	११	१६	३७	२२	१०	६	१३	२५
११	र	२	०	५१	१०	८५९	४२	२	३	५९	३९	३८	५७	३	८	५६	४२	९५	२	३	१६	४२	४६	५	७	४०	५२	५४	१४	११	१६	३६	२२	१०	६	१०	१४
१२	चं	२	१६	१८	४२	८५१	२६	२	४	३८	३६	३८	५७	३	१०	३१	४४	९४	३२	३	१६	५६	४०	५	८	३५	६	५४	१४	११	१६	३५	२२	१०	६	७	३
१४	मं	३	०	३५	५२	८५६	२२	२	५	१७	३४	३८	५७	३	१२	६	१७	९४	३२	३	१७	१०	३४	५	९	२१	२१	५४	१५	११	१६	३४	२२	१०	६	३	५३
१५	बु	३	१४	४६	५६	८४९	४८	२	५	५६	३१	३८	५७	३	१३	४०	४९	९४	३२	३	१७	२४	२९	५	१०	२३	३८	५४	१५	११	१६	३३	२२	१०	६	०	४२

११पं० श्रावणकृष्ण ८ गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३२२ अयनांश २४।१३।७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	३	३	४	११	१०	४
१८	११	२	४	१६	४	१६	६	६
४७	१८	२	३२	१	३५	३९	११	११
५०	४१	४८	५०	३	५०	२१	४७	४७
५७	८४२	३८	८६	१३	६३	०	३	३
१८	५०	५६	२० मा	५४	३६	५७ व	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ चं. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ चं. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	३० बु. घं.	मि.
कर्क	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६
सिंह	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	१०
कन्या	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२३
तुला	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९
वृश्चिक	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५६
धनु	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	२
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४९
कुम्भ	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	२०
मीन	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८
मेष	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५
वृष	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१
मिथुन	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३५

२०पं० श्रावणकृष्ण ३० बुध सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३२८ अयनांश २४।१३।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	३	५	११	१०	४
२४	१४	५	१३	१७	१०	१६	६	६
३१	४६	५६	४०	२४	२३	३३	०	०
५०	५६	३१	४९	२९	३८	२२	४२	४२
५७	८४९	३८	९४	१३	५४	०	३	३
२५	४८	५७	३२	५४	१५	५९ व	११	११



मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.५ सोम रा.८।४७ से। ति.७बुध रा.७।१४ तक। श्लेषा/ मघा ति.३० बुध दि.८।४२ से। **पञ्चक विचार**-ति.२ शुक्र प्रा.६।४४ से। ति.६ मंगल रा.८।४ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। **भौम**-मृगशिर । ति.४ रवि मिथुन में ५१।४९ (रा.२।९)॥ **मार्गीबुध**-पुनर्वसु। ति.४ रवि कर्क में ४४।०(रा.११।१)॥ ति.७ बुध पुष्य मे ९।२३(दि.९।१२)॥ **गुरु**-पुष्य ४ चरण। ति.१०शनि श्लेषा में १ चरण ४८।५ (रा.१२।४१)॥ **शुक्र**-उ.फा.। ति.३ शनि कन्या ३९।४९(रा.९।२१)॥ ति.१४ मंगल हस्त ३३।५३(रा.७।३)॥ **वक्रीशनि**-रेवती में १ चरण। ति.७ बुध उ.भा.४ चरण १४।४६(दि.११।२१)॥ **राहु**-शतभिष १ चरण। ति.१ गुरु धनिष्ठा ४ चरण॥ **केतु**-मघा ३ चरण। मघा २ चरण ३८।२७(रा.८।४७)॥

श्रावण कृष्ण पक्ष विचार-त्रयोदशी तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिनों का है। एक राशि में यदि चार या पाँच ग्रह स्थित हो तो अत्यधिक वर्षा अथवा युद्ध जनित क्षति हो। श्रावण कृष्ण प्रतिपदा गुरुवारी होने से उर्द, तिल तथा तेलों मे मँहगी होगी। **३० जुलाई** से श्रावण मास प्रारंभ हो रहा है। श्रावण मास में शिवजी को जल चढ़ाकर बेलपत्र, चन्दन, अक्षत, धूप, दीप से शिवपूजन का विशेष महत्त्व है।☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ गुरु श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण आभूषण निर्माण **पूर्वदक्षिणदिशा को त्यागकर यात्रा** दवँरी शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.२** शुक्र धनिष्ठा राहुयुति। **ति.३** शनि शत.राहुभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.४** रवि पू.भा.रिक्तादोष। **ति.५** सोम उ.भा.शनिभोग्य है। **ति.६** मंगल रेवती शनिभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.७** बुध प्रा.६।१३ भद्रा बाद अश्विनी जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय **उत्तरदिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **विपणि** वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.८** गुरु भरणी में केतुवेध। **ति.९** शुक्र कृत्तिका मे रिक्तादोष। दि.४।३५ से रोहिणी में **जीर्णादिगृहप्रवेश**(ल.११ रा.७।८ से लग्नस्थ रा.दा)। **ति.१०** शनि दि.१०।५१ भद्रा बाद रोहिणी में कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण **विपणि** मुहूर्त। **ति.११** रवि मृगशिर पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग बागवानी शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि** वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१२** सोम आर्द्रा धानकटाई मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

☛जो प्रतिदिन पूजा न कर सके उन्हें सोमवार के दिन शिवजी की पूजा और व्रत रखना चाहिये। इस मास में **लघुरुद्र, महारुद्र** अथवा **अतिरुद्र पाठ** करने का भी विधान है। श्रावण मे पार्थिव शिवपूजन का विशेष महत्त्व है। केसरिया वस्त्र धारण कर कावरियों का समूह सर्वत्र देशभर में स्थित शिवालयों में जाकर जलाभिषेक करते हैं। समस्त श्रावणमास में **मंगलवार** को देवीदर्शन व हनुमान्‌जी का दर्शन-पूजन करने से अभीष्ट कामना पूर्ण होती है। **३१ जुलाई** को **अशून्यशयन व्रत** होगा। शय्या स्थित लक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य-सुख की प्राप्ति होती है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर होने के पाप से मुक्त हो जाते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु की मूर्ति को लक्ष्मी सहित विशिष्ट शय्या पर स्थापित कर अनेक उपचारों द्वारा पूजन करें। दिनभर मौन रखे तथा सायं पुन: स्नान कर शयनोत्सव मनायें। चन्द्रोदय पर अर्घ्यपात्र में जल, फल, पुष्प, गन्धाक्षत रखकर मंत्र द्वारा अर्घ्य दें। **२ अगस्त** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर रात ८:५७ के बाद चन्द्रोदय मे अर्घ्य दें। **५ अगस्त को श्रीशीतला सप्तमी** का पूजन होगा। **६ अगस्त** को **श्रीशीतलाष्टमी बसिअउरा** किया जायेगा। **९ अगस्त** को **कामदा एकादशी व्रत सबका** होगा। **१० अगस्त** को आज सूर्योदय उपरान्त द्वादशी प्रा.५।५६ तक **एकादशी का पारण** करें। आज पुत्र कामना हेतु प्रशस्त **सोमप्रदोष व्रत** किया जायेगा। **११ अगस्त** को **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१२ अगस्त** को **स्नान-दान एवं श्राद्ध की अमावस्या** एवं **हरियाली अमावस** मनाई जायेगी। शुभवार से सुभिक्ष तथा शुभ है।

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण उत्तरगोल वर्षाऋतु ॥

दि.मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ	+	रे. अं. ±	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.
३२ २९	१	गु	४०	४	रा	९	३२	श्लेषा	५	५	प्रा	७	३३	वरीयान	२३	७	दि	२	४५	कि	१२	१३	बव	४०	४	अमृत	१३	१५	२९	२७	२८	२२	सिंह	५।५	५	३१	६	२९	३	२५	२९	१५	५७	२६	१४	५३	+	३	-	-
३२ १८	२	शु	३६	३८	रा	८	११	मघा	३	५	प्रा	६	४५	परिघ	१७	३१	दि	१२	३२	बा	८	२१	कौ	३६	३८	काण	१४	१६	३०	२८	२९	२३			५	३२	६	२८	३	२६	२६	४१	५७	२८	१४	३४	+	३	७	४०
३२ १५	३	श	३४	१६	रा	७	१५	पू.फा.	१	५५	प्रा	६	११	शिव	१२	४५	दि	१०	३९	तै	५	२७	गर	३४	१६	लुम्बक	१५	१७	१	२९	३०	२४	कन्या	१६।५४	५	३३	६	२७	३	२७	२४	९	५७	२९	१४	१६	+	२	८	१२
३२ १२	४	र	३३	६	रा	६	४७	उ.फा.	१	५४	प्रा	६	१८	सिद्ध	८	५२	दि	९	५	व	३	४१	भ	३३	६	मित्र	१६	१८	२	३०	३१	२५			५	३३	६	२७	३	२८	२१	३८	५७	३०	१३	५७	+	२	८	४५
३२ ८	५	चं	३३	१२	रा	६	५०	हस्त	३	४	प्रा	६	४७	साध्य	६	०	दि	७	५८	बव	३	९	बा	३३	१२	वज्र	१७	१९	३	३१	१	२६	तुला	३४।१८	५	३४	६	२६	३	२९	१९	८	५७	३२	१३	३८	+	२	९	१८
३२ ५	६	मं	३४	३९	रा	७	२६	चित्रा	५	३३	प्रा	७	४८	शुभ	४	७	प्रा	७	१३	कौ	३	५६	तै	३४	३९	ध्वांक्ष	१८	२०	४	१	२	२७			५	३५	६	२५	४	०	१६	४०	५७	३३	१३	१९	+	२	९	५३
३२ २	७	बु	३७	११	रा	८	२७	स्वाती	९	१६	दि	९	१७	शुक्ल	३	१७	प्रा	६	५३	गर	५	५५	व	३७	११	धूम्र	१९	२१	५	२	३	२८	वृश्चिक	५७।५२	५	३५	६	२५	४	१	१४	१३	५७	३५	१३	०	+	२	१०	३१
३१ ५९	८	गु	४०	५५	रा	९	५८	विशाखा	१४	५	दि	११	१४	ब्रह्म	३	१५	प्रा	६	५४	भ	९	३	बव	४०	५५	प्रवर्द्धमान	२०	२२	६	३	४	२९			५	३६	६	२४	४	२	११	४८	५७	३७	१२	४०	+	२	११	१३
३१ ५५	९	शु	४५	२४	रा	११	४६	अनुराधा	१९	४६	दि	१	३१	ऐन्द्र	३	५९	प्रा	७	१२	बा	१३	१०	कौ	४५	२४	राक्षस	२१	२३	७	४	५	३०			५	३७	६	२३	४	३	९	२५	५७	३९	१२	२१	+	१	१२	१०
३१ ५२	१०	श	५०	२३	रा	१	४६	ज्येष्ठा	२६	५	दि	४	२	वैधृति	५	१४	प्रा	७	४२	तै	१७	५४	गर	५०	२३	मुसल	२२	२४	८	५	६	३१	धनु	२६।५	५	३७	६	२३	४	४	७	४	५७	४०	१२	१	+	१	१२	५०
३१ ४९	११	र	५५	२८	रा	३	४९	मूल	३२	३७	रा	६	४०	विष्कुम्भ	६	४७	दि	८	२०	व	२२	५५	भ	५५	२८	सिद्धि	२३	२५	९	६	७	१			५	३८	६	२२	४	५	४	४४	५७	४२	११	४१	+	१	१	४५
३१ ४५	१२	चं	६०	०	समस्त			पू.षा.	३८	५७	रा	९	१३	प्रीति	८	१८	दि	८	५८	बव	२७	४९	बा	६०	०	उत्पात	२४	२६	१०	७	८	२	मकर	५५।२३	५	३९	६	२१	४	६	२	२६	५७	४५	११	२०	+	१	२	४१
३१ ४२	१२	मं	०	११	प्रा	५	४३	उ.षा.	४४	४१	रा	११	३१	आयुष्मान	९	२८	दि	९	२६	बा	०	११	कौ	३२	१२	मानस	२५	२७	११	८	९	३			५	३९	६	२१	४	७	०	११	५७	४६	११	.०	+	०	३	३८
३१ ३९	१३	बु	४	१३	प्रा	७	२१	श्रवण	४९	३२	रा	१	२८	सौभाग्य	१०	४	दि	९	४१	तै	४	१३	गर	३५	४२	छत्र	२६	२८	१२	९	१०	४			५	४०	६	२०	४	७	५७	५७	५७	४७	१०	३९	+	०	४	३४
३१ ३९	१४	गु	७	१०	दि	८	३३	धनिष्ठा	५३	१८	रा	३	०	शोभन	९	५०	दि	९	३७	व	७	१०	भ	३८	८	श्रीवत्स	२७	२९	१३	१०	११	५	कुम्भ	२१।२५	५	४१	६	१९	४	८	५५	४४	५७	४९	१०	१८	-	०	५	३०
३१ ३५	१५	श	९	६	दि	९	११	शतभिष	५५	४१	रा	४	०	अतिगंड	८	४५	दि	९	११	बव	९	६	बा	३९	२१	सौम्य	२८	३०	१४	११	१२	६			५	४१	६	१९	४	९	५३	३३	५७	५१	९	५७	-	०	-	-

श्रावणशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २२ श्रावण से ६ भाद्रपद तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १३ अगस्त से २८ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

सिंहराशि(प्रा.७।३३)। श्रीविष्णुशिव का अभिषेक प्रारंभ। यायीजययोग प्रा.७।३३ तक। **गुरुबालत्व निवृत्ति** ५।१०(प्रा.७।३५)।

◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.३०सामान्य। **धर्मसम्राट स्वामीकरपात्रि जयन्ती।** प्रदोष आडीपूरम (द.भा.)। ❶ **मु ईदि मिलाद(बारावफात)। मुहम्मद साहब जयंती।** रवियोग रा.१।२८ तक।

मु.रविउलूवल३ हि.१४४८। **कन्याराशि**(दि.१२।१९)। **मधुश्रवा(पश्चिम)। ठकुराईन जयन्ती**(पश्चिम)। स्वर्णगौरीव्रत। सुकृतव्रत। **तीजमेला**(जयपुर)। **हरियाली तीज ३। स्वतन्त्रा दिवस।** ❶

भ.प्रा.७।१९ से रा.६।४७ तक (पाताल)। रविवति **वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत।** रवियोग प्रा.६।१८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.६।१८ तक पुन.सर्वार्थअमृतसिद्धियोग। ❶ रवियायीजययोग प्रा.६।१९ से।

नं.भाद्रपदमास। **तुलाराशि**(रा.७।१७)। **श्रीनागपञ्चमी।** दीवार पर गोबर आदि से आकृत नागों का यथाशक्ति पूजन। **तक्षकपूजा ५।** काशी में नागकूप यात्रा तथा विविध व्यायाम प्रदर्शन। ❷

सौरभाद्रपदमास। **स्कन्दषष्ठी ६ व्रत।** सायाह्न **कल्किअवतार। लुण्ठनषष्ठी** (बङ्गाल)। **भौमव्रत।** दुर्गायात्रा–गौरीपूजा–हनुमद्दर्शन। रवियोग प्रा.७।४८ से।

भ.रा.८।२७ से (पा.–स्वर्ग)। **वृश्चिकराशि** (रा.शे.४।४४)। **गोस्वामी तुलसीदास जयंती। श्रीपार्श्वनाथजी निर्वाण**(जैन)। रवियोग दि.९।१७ तक।

भ.दि.९।१३तक (स्वर्ग)। **मेलानयनादेवी चिन्तपूर्णी**(हि.प्र.)। यायीजययोग रा.९।५८से।

वरालक्ष्मीव्रत(नेपाल)। रवियोग दि.१।३१ से पूर्व **सर्वार्थसिद्धियोग।**

धनूराशि (दि.४।२)। रवियोग समस्त दिन।

भ.दि.२।४८ से रा.३।४९ तक (पाताल)। रा.**भाद्रपदमास दि.३१। पुत्रदाएकादशी ११व्रत सबका। झूलनयात्रारंभ। दृश्यअगस्त्योदय**२०।१२ (दि.१।४३)। ⊙**सायन कन्या में सूर्य** ४२।४६ ❸

मकरराशि(रा.शे.३।४८)। **श्रावणसोमवारव्रत। श्रीविष्णुपवित्रारोपण।** शाक का दान। दधित्यागव्रत का प्रारंभ। छाछ का निषेध नहीं है। **दामोदर द्वादशी। बुद्ध द्वादशी १२।**

भौमप्रदोष १२व्रत। ऋणमुक्ति हेतु श्रेयस्कर। **भौमव्रत।** दुर्गायात्रा–गौरीपूजा–हनुमद्दर्शन। रवियोग रा.११।३१ से। ❹रात्रि में सर्पबलि। मध्याह्न में **ऋषि तर्पण।** प्रदोष **नारोलीपूर्णिमा।**

श्रीशिवाधिवासनपवित्रारोपण-रात्रिव्याप्त चतुर्दशी में। **आखेटक त्रयोदशी** (उड़ीसा)। पूर्वविद्ध (शुद्धश्रवण) **ऋग्वेदियों का उपाकर्म(श्रावणी)। कठउपाकर्म**(द.भा.)। ❹

भ.दि.८।३३से रा.८।५६ तक (पाताल–मृत्यु)। **कुम्भराशि** (दि.२।२५)। **पंचक आरंभ** दि.२।२५ से। **व्रत १५।** सायाह्न **हयग्रीवोत्पत्ति।** काशी में भदैनी स्थित मन्दिर में दर्शन पूजन। ❺

पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। **रक्षाबंधन (राखी)।** आपस्तम्ब माध्यंदिनी तैत्तरीयशाखा के अलावा पूर्णिमा मतावलम्बी अन्य शाखाजनों की **(श्रावणी)। संस्कृतदिवस। अमरनाथयात्रा।** ❻

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		भौम रा.	अं.	क.	वि.	गति		बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		गुरु रा.	अं.	क.	वि.	शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		वक्रीशनि रा.	अं.	क.	वि.	राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु	३	२८	४८	४७	८४०	३७	२	६	३५	२९	३८	४७	३	१५	१५	२१	११	११	३	१७	३८	२४	५	११	१७	५४	५४	१६	११	१६	३२	२२	१०	५	४७	३१
२	शु	४	१२	३७	२८	८२७	३५	२	७	१४	२७	३८	४७	३	१६	५४	३२	१००	४७	३	१७	५२	१८	५	१२	१२	१०	५४	१६	११	१६	३०	५	१०	५	४४	२०
३	श	४	२६	१३	५६	८१५	५१	२	७	५३	२४	३८	४७	३	१८	३५	११	१००	४८	३	१८	६	१३	५	१३	६	२७	५४	१६	११	१६	२७	३४	१०	५	४१	९
४	र	५	८	३४	४०	८००	१३	२	८	३२	२२	३८	४७	३	२०	१६	७	१००	४८	३	१८	२०	८	५	१४	०	४३	५४	१६	११	१६	२५	३	१०	५	३७	५९
५	चं	५	२२	३१	५३	७८४	४४	२	९	११	२०	३८	४७	३	२१	५६	५५	१००	४८	३	१८	३४	२	५	१४	५४	५९	५४	१६	११	१६	२२	३१	१०	५	३४	४८
६	मं	६	५	२८	५६	७६८	१२	२	९	५०	१७	३८	४७	३	२३	३७	४२	१०४	१७	३	१८	४७	१३	५	१५	४९	१६	५४	१६	११	१६	२०	०	१०	५	३१	३७
७	बु	६	१८	३	३९	७५३	२०	२	१०	२९	१५	३८	२	३	२५	२१	५९	१०४	३३	३	१९	०	३	५	१६	४३	३२	५४	१६	११	१६	१७	२९	१०	५	३८	२६
८	गु	७	०	२६	११	७४०	३३	२	११	७	१४	३७	२९	३	२७	६	३१	१०४	३३	३	१९	१२	५२	५	१७	३७	४८	५४	१६	११	१६	१४	५७	१०	५	२५	१५
९	शु	७	१२	३९	१५	७३०	४६	२	११	४४	४७	३७	२९	३	२८	५१	४	१०३	३७	३	१९	२५	४२	५	१८	३२	५	५४	१६	११	१६	१२	२६	१०	५	२२	५
१०	श	७	२४	४५	२१	७२३	४७	२	१२	२२	१७	३७	२९	४	०	३४	४१	१०३	४४	३	१९	३८	३२	५	१९	२६	२१	५४	१६	११	१६	९	५४	१०	५	१८	५४
११	र	८	५	४७	४१	७२१	२६	२	१२	५९	४७	३७	२९	४	२	१८	२५	१०८	९	३	१९	५१	२१	५	२०	२०	३७	५४	१६	११	१६	७	२२	१०	५	१५	४३
१२	चं	८	१८	५०	१५	७२३	३७	२	१३	३७	१७	३७	२९	४	४	६	३५	१०८	८	३	२०	४	११	५	२१	१४	५३	५४	१६	११	१६	४	५१	१०	५	२२	३२
१२	मं	९	०	५६	११	७३०	१३	२	१४	१४	४७	३७	२९	४	५	५४	४३	१०८	८	३	२०	१७	०	५	२२	९	१०	५४	१६	११	१६	२	८	१०	५	९	२१
१३	बु	९	१३	८	५७	७४०	१०	२	१४	५२	१७	३७	२९	४	७	४२	५१	१०८	८	३	२०	२९	४०	५	२३	३	२६	५४	१६	११	१५	५९	३३	१०	५	१६	११
१४	गु	९	२५	३१	११	७५२	४४	२	१५	२९	४७	३७	२९	४	९	३०	५९	१०८	२८	३	२०	४२	३९	५	२३	५७	४२	५४	१६	११	१५	५६	५८	१०	५	३	०
१५	श	१०	८	५	४४	७६७	४७	२	१६	७	१७	३७	२९	४	११	१९	२७	१०९	२२	३	२०	५५	२९	५	२४	५१	५९	५४	१६	११	१५	५४	२३	१०	५	९	४९

२१पं० श्रावणशुक्ल ८गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३३१
अयनांश २४।१३।१९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	३	३	५	११	१०	४
२	०	११	२७	१९	१७	१६	५	५
११	२६	७	६	१२	३७	१४	३५	३५
४८	११	१७	३१	५२	४८	५७	१५	१५
५७	७४०	३७	१०४	५५	५४	२	३	३
३७	३३	२९	३३	३३	१६	२९	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ चं. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
कर्क	५	५६	५	५१	५	४६	५	४१	५	३७	सिंह	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१४	७	११
सिंह	८	१०	८	५	८	०	७	५५	७	५१	कन्या	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४६	९	४२	९	३८	९	३५	९	३१	९	२७	९	२४
कन्या	१०	२३	१०	१८	१०	१३	१०	८	१०	४	तुला	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	२	११	५८	११	५४	११	५१	११	४७	११	४३	११	४०
तुला	१२	३९	१२	३४	१२	२९	१२	२४	१२	२०	वृश्चिक	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१९	२	१५	२	११	२	८	२	४	२	०	१	५७
वृश्चिक	२	५६	२	५१	२	४६	२	४१	२	३७	धनु	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	३
धनु	५	२	४	५७	४	५२	४	४७	४	४३	मकर	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	१२	६	८	६	४	६	१	५	५७	५	५३	५	५०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	६	४९	६	४४	६	३९	६	३४	६	३०	कुम्भ	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४३	७	३९	७	३५	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१
कुम्भ	८	२०	८	१५	८	१०	८	५	८	१	मीन	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७	९	३	९	०	८	५६	८	५२	८	४९
मीन	९	४८	९	४३	९	३८	९	३३	९	२९	मेष	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२६
मेष	११	२५	११	२०	११	१५	११	१०	११	६	वृष	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२
वृष	१	२१	१	१६	१	११	१	६	१	२	मिथुन	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६
मिथुन	३	३५	३	३०	३	२५	३	२०	३	१६	कर्क	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१६	५	१२	५	८	५	५	५	१	४	५७	४	५४

२२पं० श्रावणशुक्ल १५शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३४४
अयनांश २४।१३।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	२	४	३	५	११	१०	४
९	८	१६	११	२०	२४	१५	५	५
५३	५	७	१९	५५	५१	५४	९	९
३३	४४	१७	२७	२९	५९	२३	४९	४९
५७	७६७	३७	१०९	१२	५४	२	३	३
५१	४७	२९	२२	४९	१६	४०	११	११



❷ रात्रिव्यापिनि **जाग्रतगौरी पञ्चमी**(उड़ीसा)। ⊙**सं.मघासिंह में सूर्य** ४२।३७(रा.१०।३७) मु.३० सामान्य। पूर्व १६ घटी पुण्य। आज दिन घं.३ मि.२१ बजे से सूर्यास्त तक संक्रान्ति पुण्यकाल। छत्र स्वर्ण दान गङ्गा स्नान। स्त्री.स्त्री.सु.चं.योग चातकवाहन वाह्निनाड़ी स्वामी भौम मेघ आच्छादित वृष्टियोग। **मनसापूजा समाप्त–प्रधानदिन। श्रावणसोमवारव्रत** (प्रदोषविधि)। यायीजययोग प्रा.६।४७ तक। ❸ (रा.१०।४४)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.६।४० तक। ❻ **सोलोन** (दिल्ली)। **राखीपूर्णिमा। बलभद्रपूजा** (उड़ीसा)। **दुर्गारथयात्रा** (मिथिला)। यायीजययोग दि.८।३३ से।

मूलविचार-श्लेषा/मघा ति.२ शुक्र प्रा.६।४५ तक। **ज्येष्ठ/मूल** ति.९ शुक्र दि.१।३१ से। ति.११ रवि रा.६।४० तक। **पञ्चक विचार**-ति.१४ गुरु दि.२।१५ से।

☛ **१५ अगस्त को हरियाली तीज व्रत** किया जायेगा। आज **भारतीय स्वतंत्रता दिवस** मनाया जायेगा। राष्ट्रीय ध्वजारोहण, राष्ट्रगान तथा विविध उत्सवों का आयोजन होगा। **१६ अगस्त** को रविवार से प्रशस्त **वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत** होगा। **१७ अगस्त** को **नागपंचमी** का पर्व होगा। आज गृह-द्वार के दोनों तरफ नाग का चित्र (फोटो) लगाकर या गोबर से सर्प आकृति बनाकर घी, दूध एवं जल से तर्पण करके दही, दूर्वांकुर, धूप, दीप, पुष्प माला आदि से विधिपूर्वक पूजन कर गेहूँ, दूध, धान का लावा का भोग लगाना चाहिये। इससे पद्म, तक्षक आदि नागगण संतुष्ट होते है तथा पूजनकर्ता के सात कुलों तक सर्पभय नही होता है। **१९ अगस्त** को रामचरित मानस हनुमान चालीसा आदि के रचयिता **गोस्वामी तुलसीदासजी** की **जयंती** मनाई जायेगी। **२३ अगस्त को पुत्रदा एकादशी व्रत** सबका होगा। **२५ अगस्त** को ऋणमुक्ति हेतु **भौम प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२६ अगस्त** को **ऋग्वेदियों** का श्रवण नक्षत्र में **उपाकर्म (श्रावणी)** होगा। **२७ अगस्त को पूर्णिमा व्रत** किया जायेगा। **२८ अगस्त स्नान-दान की पूर्णिमा** होगा। आज **रक्षाबंधन** का पर्व मनाया जायेगा। आज ही **पूर्णिमा** मतावलम्बी तथा अन्यशाखा अनुयायियों का **उपाकर्म (श्रावणीकर्म)** सम्पन्न होगा। आज **संस्कृत दिवस** मनाया जायेगा।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ गुरु श्लेषा सूर्ययुति। **ति.२** शुक्र मघा सूर्यभोग्य है। **ति.३** शनि रा.७।१५ रिक्तापूर्व पू.फा. शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.४** रवि उ.फा.शनिवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.५** सोम हस्त शनिवेध। प्रा.६।४७ से चित्रा **जीर्णादिगृहप्रवेश(ल.६** दि.७।५१ से) मुहूर्त। **ति.६** मंगल चित्रा लालवस्त्रमूंगारत्नधारण वाहनक्रय शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.७** बुध स्वाती में राहुवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.८** गुरु विशाखा राहुवेध। **ति.९** शुक्र प्रा.७।१२ वैधृतिपूर्व अनुराधा रिक्ता रोगविमुक्तस्नान(९मी)मुहूर्त। **ति.१०** शनि प्रा.७।४२ वैधृति बाद ज्येष्ठा मे शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.११** रवि दि.२।४८ भद्रा पूर्व मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण बागवानी औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि** शस्त्रनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.१२** सोम पू.षा.भौमवेध। **ति.१२** मंगल उ.षा.भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है॥ **ति.१३** बुध प्रा.७।२१ रिक्ता पूर्व श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण **अन्नप्राशन** नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण **पूर्वदक्षिणदिशा को त्यागकर यात्रा** दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **गृहारंभ**(च.शु.) वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१४** गुरु रिक्ताभद्रा है। रा.८।५६ से धनिष्ठा **गृहारंभ(ल.२** रा.१०।२९ से))। **ति.१५** शुक्र शत. चौपायों का क्रय विक्रय दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **गृहारंभ(ल.९** दि.१।५७ से ८ वां गु.दा. या **ल.११** सा.५।५० से ८ वां शु.दा.) वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मृगशिर। **ति.१** गुरु आर्द्रा ६।५७ (दि.८।१८)॥ **बुध**-पुष्य। **ति.१** गुरु श्लेषा ५१।१२ (रा.२।०)। **ति.९** शुक्र मघा सिंह में ३९।५५(रा.९।३५)॥ **गुरु**-श्लेषा। **ति.११** रवि श्लेषा २ चरण ४०।२७ (रा.९।४९)॥ **शुक्र**-हस्त। **ति.१३** बुध चित्रा १८।१८(दि.१२।५९)॥ **वक्रीशनि**-उ.भा.४ चरण॥ **राहु**-धनिष्ठा ४ चरण॥ **केतु**-मघा २ चरण॥

श्रावण शुक्ल पक्ष विचार-इस पक्ष में १२ तिथि की वृद्धि होने के कारण यह पक्ष सोलह दिनों का है। एक नाड़ी स्थित चन्द्र शुक्ल से वर्षा हो किन्तु क्रूर ग्रह द्वारा दृष्य होने अथवा साथ से मेघ कम वर्षा करे। **१४ अगस्त को चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य पदार्थो के मूल्य सामान्य रहेंगे। आज धर्मसम्राट् **स्वामी करपात्रीजी महाराज की जयंती** सर्वत्र विशेषकर काशी नगरी में विविध आयोजनो के साथ मनाई जायेगी। ☛

भाद्रपदकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ७ भाद्रपद से २० तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २६ अगस्त से ११ सितम्बर तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण उत्तरगोल वर्षाऋतु ॥

दि.मा.		तिथि	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश (नक्षत्र)	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य फल घ.	प.	क्रान्ति उ +		रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
३१	३२	१	श	२	३६	दि	९	३२	पू.भा.	५७	१	रा	४	३०	सुकर्मा	६	३८	दि	८	२१	कौ	१	३६	तै	३९	१३	कालदण्ड	२९	१	१५	१२	१३	७	मीन	४१।४३	५	४२	६	१८	४	१०	५१	२४	५७	५४	९	३६	-	१	६	५९	मीनराशि(रा.१०।२३)। **अशून्यशयन २ व्रत**। चन्द्रोदय(रा.६।५९)। **गायत्री जप। षोडषकारणव्रतारंभ** (जैन)।
३१	२८	२	र	८	५१	दि	९	१५	उ.भा.	५७	२	रा	४	३१	धृति	३/५१	३०/५२	प्रा	७/५	६/२८	गर	८	५१	व	३७	५२	स्थिर	३०	२	१६	१३	१४	८			५	४३	६	१७	४	११	४९	१८	५७	५५	९	१५	-	१	७	३१	भ.रा.८।५२ से (मृत्यु)। **विन्ध्याचलभीमचण्डी देवी जयन्ती**। कज्जली निमित रात्रि जागरण(**रतजगा**)। प्रदोष **विशालाक्षीयात्रा**। यायीजययोग दि.९।१५ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.४।३१ तक।
३१	२१	३	चं	६	५३	दि	८	२८	रेवती	५५	५३	रा	४	४	गंड	५४	२३	रा	३	२८	भ	६	५३	बव	३५	२१	मातङ्ग	३१	३	१७	१४	१५	९	मेष	५५।५३	५	४३	६	१७	४	१२	४७	१३	५७	५६	९	५३	-	१	८	५	भ.दि.८।२८ तक (मृत्यु)। **मेषराशि**(रा.शे.४।४)। **पंचक समाप्त** रा.शे.४।४। **संकष्टी(बहुला)श्रीगणेश ४व्रत**(चं.उ.रा.८।५)। प्रदोष **बहुलाचतुर्थी**(म.प्र.)। **कज्जली(कजरी)३। गोपूजा ३।** ❶
३१	२१	४	मं	३/५५	४९/४९	प्रा	७/५	५५/३९	अश्विनी	५३	५३	रा	३	१७	वृद्धि	४८	३६	रा	१	१०	बा	३	४९	कौ	३१/५३	४९/४९	अमृत	सि	४	१८	१५	१६	१०			५	४४	६	१६	४	१३	४५	९	५८	०	८	३२	-	१	८	४२	**सितम्बर ९। रक्षापञ्चमी**(उड़ीसा)। **माधवदेव तिथि**(असम)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.३।१७ तक। स्थायीजययोग प्रा.७।१५ तक।
३१	१८	६	बु	५४	४९	रा	३	४४	भरणी	५१	२	रा	२	९	ध्रुव	४२	९	रा	१०	३६	गर	२७	२४	व	५४	४९	काण	२	५	१९	१६	१७	११			५	४५	६	१५	४	१४	४३	९	५८	०	८	१०	-	२	९	२४	भ.रा.शे.३।४४ से (स्वर्ग)। **हलषष्ठी व्रत(ललहीछठ)**। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोगढ़ रा.२।९ से।
३१	१४	७	गु	४९	३०	रा	१	३४	कृत्तिका	४७	३१	रा	१२	४६	व्याघात	३५	७	रा	७	४८	भ	२२	१५	बव	४९	३०	लुम्बक	३	६	२०	१७	१८	१२	वृष	५।९	५	४६	६	१४	४	१५	४१	९	५८	३	७	४८	-	२	१०	१३	भ.दि.२।४० तक (स्वर्ग)। **वृषराशि**(प्रा.७।५०)। **शीतलासप्तमी**। रवियोग रा.१२।४६ तक पश्चात यायीजययमघंटयोग रा.१२।४६ से।
३१	११	८	शु	४३	३८	रा	११	१३	रोहिणी	४३	३४	रा	११	११	हर्षण	२७	४३	सा	४	५१	बा	१६	३४	कौ	४३	३८	मित्र	४	७	२१	१८	१९	१३			५	४६	६	१४	४	१६	३९	१२	५८	५	७	२६	-	२	११	९	**कालाष्टमी व्रत**। रोहिणीयोग से प्रशस्त निशिथव्यापिनि अष्टमी में **श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत सबका** अष्टमीरोहिणी निशीथ में होने से जयंती नामक योग होगा जो सर्वपापहर्ता है। **श्रीकृष्णावतार**(च.उ.रा.११।९) ❷
३१	७	९	श	३७	३१	रा	८	४७	मृगशिर	३९	२३	रा	९	३२	वज्र	२०	६	दि	१	४९	तै	१०	३४	गर	३७	३१	वज्र	५	८	२२	१९	२०	१४	मिथुन	११।२९	५	४७	६	१३	४	१७	३७	१७	५८	६	७	४	-	३	१२	१२	**मिथुनराशि**(दि.१०।२३)। **दधिमहोत्सव। गंधर्वनवमी(गुग्गानवमी)।**
३१	४	१०	र	३१	२१	रा	६	१९	आर्द्रा	३५	११	रा	७	५१	सिद्धि	१२	२०	दि	१०	४३	व	४	२६	भ	३१/५८	२४/२१	ध्वांक्ष	६	९	२३	२०	२१	१५			५	४७	६	१३	४	१८	३५	२३	५८	९	६	४२	-	३	१	१९	भ.प्रा.७।३३ से रा.६।१९ तक (स्वर्ग)। ❸ **आलोक अमावस्या। सप्तपुरी अमावस्या**(उड़ीसा)। **कैलाशयात्रा समापन**(कश्मीर)।
३१	०	११	चं	२५	२१	दि	३	५६	पुनर्वसु	३१	८	सा	६	१५	व्यतीपात	४/५२	४२/३४	प्रा	७/४	४०/४२	बा	२५	२१	कौ	४२	३३	धूम्र	७	१०	२४	२१	२२	१६	कर्क	१७।९	५	४८	६	१२	४	१९	३३	३२	५८	१२	६	२०	-	४	२	२८	**कर्कराशि**(दि.१२।४०)। **जया एकादशी व्रत सबका**। यायीजययोग दि.३।५६ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा.६।१५ से।
३०	५६	१२	मं	१९	४६	दि	१	४२	पुष्य	२७	३१	सा	४	४८	परिघ	१०	१४	रा	१	५३	तै	१९	४६	गर	५७	१३	प्रवर्द्धमान	८	११	२५	२२	२३	१७			५	४८	६	१२	४	२०	३१	४४	५८	१२	५	५७	-	४	३	३४	**भौमप्रदोष १२व्रत**। ऋणमुक्ति हेतु श्रेयस्कर। स्थायीजययोग दि.१।४२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा.४।४८ से।
३०	५३	१३	बु	१४	४१	दि	११	४१	श्लेषा	२४	२६	दि	३	३१	शिव	४३	४५	रा	११	११	व	१४	४१	भ	४२	३३	राक्षस	९	१२	२६	२३	२४	१८	सिंह	२४।२६	५	४९	६	११	४	२१	२९	५६	५८	१४	५	३५	-	४	४	३८	भ.दि.११।४१ से रा.१०।५० तक (मृत्युलोक)। **सिंहराशि**(दि.३।३५)। **मासशिवरात्रि व्रत**। प्रदोष **अघोरचतुर्दशी**। दो दिनों की **कैलाश यात्रा प्रारंभ(कश्मीर)**। **पौराणिक अगस्त्योदय** २९।४(सा.५।२७)।
३०	४९	१४	गु	१०	२५	दि	१०	०	मघा	२२	१३	दि	२	४३	सिद्ध	३७	५६	रा	९	०	श	१०	२५	च	३८	४२	मुसल	१०	१३	२७	२४	२५	१९			५	५०	६	१०	४	२२	२८	१०	५८	१६	५	१२	-	५	५	३९	**श्राद्ध ३०**। मध्याह्न में **कुशोत्पाटिनी३०**। "ॐ हुं फट्" मंत्र द्वारा कुशग्रहण करें। शुद्ध कर कुशा बांध करके रख लें। मासपर्यन्त इसी कुशा का प्रयोग करें। प्रदोष **पिठोरी अमावस्या ३०**। ❸
३०	४६	३०	शु	६	५९	दि	८	३८	पू.फा.	२०	४८	दि	२	१०	साध्य	३२	५४	रा	७	०	ना	६	५९	किं	३५	४८	सिद्धि	११	१४	२८	२५	२६	२०	कन्या	३५।४२	५	५१	६	९	४	२३	२६	२६	५८	२०	४	४९	-	५	-	-	**कन्याराशि**(रा.८।८)। **अमावस्या ३०**। स्नानदान हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष व सुख। **रुद्रव्रत**(सायाह्न)।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

दि.क्र.	वार	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	श	१०	२०	५७	३१	७८४	४८	२	१६	३७	३७	३७	२९	४	१३	८	३९	१०१	२२	३	२१	८	११	५	२५	३६	१५	५४	१६	११	१५	५१	४२	१०	५	६	३८
२	र	११	२	५९	३६	७७९	३६	२	१७	२२	१७	३७	२९	४	१४	४८	११	१०१	२२	३	२१	२१	८	५	२६	४०	३१	५४	१६	११	१५	३७	४८	१०	५	३	२७
३	चं	११	१५	२०	२०	८५१	३७	२	१७	५१	३७	३७	२९	४	१६	३७	३३	५१	२२	३	२१	३३	४८	५	२७	३४	४८	५४	१६	११	१५	४४	१४	१०	५	०	१७
४	मं	०	०	५९	३७	८२७	३१	२	१८	३७	१७	३७	२९	४	१८	३६	५५	८८	१	३	२१	४५	४८	५	२८	२९	४	४०	४४	११	१५	४०	३०	१०	४	५७	६
६	बु	०	१४	२५	३७	८३९	५३	२	१९	१४	३७	३६	३७	४	२०	२५	३९	९८	४८	३	२१	५९	३७	५	२९	९	४८	२९	३६	११	१५	३६	४६	१०	४	५३	५५
७	गु	०	२८	३७	४०	८३९	४८	२	१९	५१	३४	३६	३६	४	२२	१४	१७	९८	३९	३	२२	१२	२६	५	२९	३९	२५	२९	३८	११	१५	३३	२	१०	४	५०	४४
८	शु	१	१२	५८	१०	८५६	२२	२	२०	२७	५१	३६	३६	४	२४	२	५६	९८	३९	३	२२	२४	४३	६	०	९	२	२९	३४	११	१५	२९	११	१०	४	४७	३३
९	श	१	२७	१५	३२	८६९	७	२	२१	४	४	३६	३६	४	२५	५१	३८	९८	३९	३	२२	३७	१८	६	०	३८	४८	२९	३४	११	१५	२५	३४	१०	४	४४	२२
१०	र	२	११	३५	३५	८८०	५२	२	२१	४०	२०	३६	३६	४	२७	४०	५४	९७	५७	३	२२	४९	३९	६	१	८	३२	२९	३४	११	१५	२१	५१	१०	४	४१	१२
११	चं	२	२५	५४	५०	८७७	५४	२	२२	१६	३५	३६	३६	४	२९	२८	११	९७	२५	३	२३	१	४७	६	१	३८	१७	२९	३४	११	१५	१८	६	१०	४	३८	१
१२	मं	३	१०	९	३५	८६१	८	२	२२	५२	५०	३६	३६	५	१	१६	३६	९७	२५	३	२३	१३	५७	६	२	८	३	२९	३४	११	१५	१४	१९	१०	४	३४	५०
१३	बु	३	२४	१६	३४	८४३	२०	२	२३	२९	५	३६	३६	५	३	३	२	९७	२६	३	२३	२६	१०	६	२	३७	४७	२९	३५	११	१५	१०	३२	१०	४	३१	३९
१४	गु	४	८	१२	२६	८३०	३१	२	२४	५	२०	३६	३६	५	४	५०	२७	९७	२६	३	२३	३८	२३	६	३	७	३८	३०	७	११	१५	६	४५	१०	४	२८	२८
३०	शु	४	२१	५५	५८	८१९	२०	२	२४	४१	४०	३६	३६	५	६	३७	५३	१०१	२५	३	२३	५०	३६	६	३	३७	५१	३०	७	११	१५	२	५८	१०	४	२५	१८

२३पं० भाद्रपदकृष्ण ८ शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह [illegible] ३३४१
अयनांश २४।१३।११

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	४	३	६	११	१०	४
१९	१२	२०	२४	२२	०	१५	४	४
३९	५८	३७	२	२४	१	२९	३७	३७
१२	१०	४९	५६	४३	२	११	३३	३३
५८	८५६	३६	९८	१३	२९	४	३	३
५	२२	१५	३९	२८	३५	३७	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	३० शु. घं.	मि.
सिंह	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५	६	४१	६	३८	६	३४	६	३०	६	२७	६	२३	६	२०
कन्या	९	२०	९	१६	९	१२	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५१	८	४७	८	४३	८	४०	८	३६	८	३३
तुला	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१७	११	१४	११	१०	११	७	११	३	१०	५९	१०	५६	१०	५२	१०	४९
वृश्चिक	१	५३	१	४९	१	४५	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१	१	२७	१	२४	१	२०	१	१६	१	१३	१	९	१	६
धनु	३	५९	३	५५	३	५१	३	४८	३	४४	३	४०	३	३७	३	३३	३	३०	३	२६	३	२२	३	१९	३	१५	३	१२
मकर	५	४६	५	४२	५	३८	५	३५	५	३१	५	२७	५	२४	५	२०	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५९
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५८	६	५५	६	५१	६	४८	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	३०
मीन	८	४५	८	४१	८	३७	८	३४	८	३०	८	२६	८	२३	८	१९	८	१६	८	१२	८	८	८	५	८	१	७	५८
मेष	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	१०	०	९	५६	९	५३	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८	९	३५
वृष	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	११	४९	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३१
मिथुन	२	३२	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	२	१३	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४५
कर्क	४	५०	४	४६	४	४२	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८	४	२४	४	२१	४	१७	४	१३	४	१०	४	६	४	३

पक्ष में विविध मुहूर्त-**ति.१** शनि पू.भा. शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.२** रवि उ.भा. शनियुति। **ति.३** सोम दि.८।२८ भद्रा बाद रिक्तादोष। **ति.४** मंगल अश्विनी सूर्यवेध। **ति.६** बुध भरणी में सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है॥ **ति.७** गुरु दि.२।४० भद्रापूर्व कृत्तिका में धानकटाई मुहूर्त। **ति.८** शुक्र रोहिणी में शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी दवँरी धानरोपाई शिल्पविद्या **विपणि** मुहूर्त। **ति.९** शनि रा.९।३२ रिक्ता बाद मृगशिर में वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.१०** रवि आर्द्रा भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.११** सोम पुनर्वसु व्यतिपात। **ति.१२** मंगल दि.१।४२ तक पुष्य लालवस्त्रमूँगारत्नधारण वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

२४पं० भाद्रपदकृष्ण ३० शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह [illegible] ३३४८
अयनांश २४।१३।१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	२	५	३	६	११	१०	४
२३	२१	२४	६	२३	३	१५	४	४
२६	५५	४१	३७	५०	३७	२	२५	२५
२६	५८	४०	५३	३६	५५	५८	१८	१८
५८	८१९	३६	१०१	१३	३०	३	३	३
२०	२०	१९	३५	१२	७	४६	११	११



❶ अलंकृत गायों का पूजन। **मु.ईदे ए मीलाद। तीजड़ी**(सिन्धी)। ⊙पू.फा.सूर्य३३।५६(रा.७।१७)। पु.स्त्री.च.सु.योग खरवाहन जलनाड़ी स्वामी बुध अतिवृष्टियोग। यायीजययोग दि.८।२८ तक। ❷ पञ्चरात्र **श्रीकृष्णजयन्ती। गोकुलाष्टमी**(नन्दोत्सव)। रोहिणी **श्रीजयंती**(रामानुज)। **दूर्वाष्टमी ८व्रत**। स्त्रीयों के नित्य काम्य हेतु। **संतज्ञानेश्वर जयंती**। यमघंटयोग रा.११।११ तक।

मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.२ रवि रा.शे.४।३१ से। **ति.४** मंगल रा.३।१७ तक। **श्लेषा/मघा ति.१२** मंगल सा.४।४८ से। **ति.१४** गुरु दि.२।४३ तक। **पञ्चक विचार-ति.३** सोम रा.४।४ तक।

☛ तथा सायं पुन: स्नान कर शयनोत्सव मनायें। चन्द्रोदय पर अर्घ्यपात्र में जल, फल, पुष्प, गन्धाक्षत रखकर मंत्र द्वारा अर्घ्य दें। **३० अगस्त को विन्ध्यावली भीमचण्डी देवी की जयंती** एवं कजली निमित्त **रतजगा** किया जायेगा। प्रदोषकाल में **विशालाक्षी यात्रा** होगी। **३१ अगस्त को कजली तीज** मनायी जायेगी। आज सौभाग्यवती स्त्रियाँ द्वारा अपनी सास को बयाना देकर आशीर्वाद लेती है तथा गीतसंगीत का आयोजन होता है। आज अत्यंत पुण्यदायी **संकष्टी बहुला श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। इस चतुर्थी व्रत को उपवास तथा गंध, पुष्प तथा दूर्वा आदि के द्वारा गणेश पूजन कर परिक्रमा करें तथा सायं समय सवत्सा गाय का पूजन करें। चन्द्रोदय रात ८।५ के बाद अर्घ्य दें। **२ सितम्बर** को पुत्र की दीर्घायुष्य कामना से मध्याह्न व्याप्त षष्ठी में **हलषष्ठी (ललही छठ) व्रत** किया जायेगा। **४ सितम्बर** को निशीथकाल में अष्टमी तिथि प्राप्त होने तथा रोहिणी नक्षत्र का योग प्राप्त होने से **सर्वत्र श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** का मान सबके लिये है। **विशेष**-भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि रोहिणी नक्षत्र से संयुक्त होने पर बालरूपी चतुर्भुज भगवान् श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे। अत: भाद्रपद कृष्णपक्ष में जब रोहिणी नक्षत्र युक्त अष्टमी तिथि अर्द्धरात्रि में हो तो उसे **श्रीकृष्ण जयंती** कहते हैं। यह तिथि समस्त पापों को हरण करने वाली होती है। **जन्माष्टमी व्रत का पारण**-स्मार्तजन तिथि के अन्त में या तिथि एवं नक्षत्र के अंत में व्रत का पारण करें। किन्तु द्वितीय दिन दो याम (प्रहर) से अधिक अष्टमी रहने पर भी प्रात:काल में स्मार्तजनों को जन्माष्टमी व्रत का पारण कर लेना चाहिये। **७ सितम्बर जया एकादशी व्रत** सबका होगा। यह एकादशी व्रत करने से पुनर्जन्म से मुक्ति मिलती है। **८ सितम्बर** ऋणमुक्ति हेतु **भौम प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **९ सितम्बर को मास शिवरात्रि व्रत** व प्रदोष अघोर चतुर्दशी होगा। **१० सितम्बर को श्राद्ध की अमावस्या** तथा **मध्याह्न** में व्याप्त होने से **कुशोत्पाटिनी अमावस्या** होगी। **विशेष**-"ॐ हुं फट्" मंत्र द्वारा कुशाग्रहण कर शुद्ध कर बांध लें। वर्षपर्यन्त इसी कुशा प्रयोग करें। **११ सितम्बर** आज **स्नानदान की अमावस्या** होगी।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-आर्द्रा। **ति.७** गुरु पुनर्वसु १३।५७ (दि.११।२१)॥ **बुध**-मघा। **ति.१** शनि पू.फा.६।७ (दि.८।१९)॥ **ति.९** शनि उ.फा.२६।४४ (दि.४।२९)॥ **ति.११** सोम कन्या १७।४६ (दि.१२।५४)॥ **गुरु**-श्लेषा २ चरण। **ति.१२** मंगल श्लेषा ३ चरण २९।४५ (सा.५।४२)॥ **शुक्र**-चित्रा। **ति.७** गुरु तुला ४१।४२ (रा.१०।२७)॥ **वक्रीशनि**-उ.भा.४ चरण॥ **राहु**-धनिष्ठा ४ चरण॥ **केतु**-मघा २ चरण॥

भाद्रपद कृष्ण पक्ष विचार-इस पक्ष में ५ तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिन का है। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को रोहिणी हो तो गेहूँ महँगे होंगे। चार्तुमास व्रती भाद्रपद मास में दही का त्याग करें। छाछ (मट्ठा) त्याग का निषेध नहीं है। **२९ अगस्त** को **अशून्यशयन व्रत** में आज शय्या स्थित लक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य-सुख की प्राप्ति होती है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर होने के पाप से मुक्त हो जाते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु की मूर्ति को लक्ष्मी सहित विशिष्ट शय्या पर स्थापित कर अनेक उपचारों द्वारा पूजन करें। दिन भर मौन रखें ☛

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति		रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त काशी घ.	मि.
३०	४२	१	श	४	३७	प्रा	७	४१	उ.फा.	२०	२७	दि	२	१	शुभ	२८	४५	सा	५	२१	बव	४	३७	बा	३४	३	उत्पात	१२	१५	२९	२६	२७	२१			५	५१	६	९	४	२४	२४	४६	५८	२२	४	४९	-	५	६	४२
३०	३८	२	र	३	२८	प्रा	७	१५	हस्त	२१	२१	दि	२	२४	शुक्ल	२५	३५	दि	४	६	कौ	३	२८	तै	३३	३१	मानस	१३	१६	१	२७	२८	२२	तुला	५२।२४	५	५२	६	८	४	२५	२३	८	५८	२३	४	२६	-	६	७	१५
३०	३५	३	चं	३	३५	प्रा	७	१८	चित्रा	२३	२८	दि	३	१६	ब्रह्म	२३	२१	दि	३	१३	गर	३	३५	व	३४	१९	मुद्गर	१४	१७	२	२८	२९	२३			५	५३	६	७	४	२६	२१	३१	५८	२६	४	४	-	६	७	४९
३०	३१	४	मं	५	२	प्रा	७	५४	स्वाती	२६	५५	सा	४	३९	ऐन्द्र	२२	१०	दि	२	४६	भ	५	२	बव	३६	१९	ध्वज	१५	१८	३	२९	३०	२४			५	५४	६	६	४	२७	१९	५७	५८	२८	३	४१	-	६	८	२६
३०	२७	५	बु	७	३५	दि	८	५७	विशाखा	३१	२६	रा	६	२९	वैधृति	२१	४८	दि	२	३८	बा	७	३५	कौ	३९	२८	धाता	१६	१९	४	३०	३१	२५	वृश्चिक	१५।१८	५	५५	६	५	४	२८	१८	२५	५८	३०	३	१८	-	७	९	७
३०	२४	६	गु	११	२०	दि	१०	२८	अनुराधा	३६	५७	रा	८	४२	विष्कुम्भ	२२	२०	दि	२	५२	तै	११	२०	गर	४३	३६	आनंद	१७	२०	५	३१	१	२६			५	५६	६	४	४	२९	१६	५५	५८	३२	२	५५	-	७	९	५२
३०	२०	७	शु	१५	५२	दि	१२	१६	ज्येष्ठा	४३	७	रा	११	१०	प्रीति	२३	२३	दि	३	१७	व	१५	५२	भ	४८	२३	चर	१८	२१	६	१	२	२७	धनु	४३।७	५	५६	६	४	५	०	१५	२७	५८	३५	२	३१	-	८	१०	४२
३०	१७	८	श	२०	५५	दि	२	११	मूल	४९	३८	रा	१	४८	आयुष्मान	२४	४८	दि	३	५२	बव	२०	५५	बा	५३	३०	गद	१९	२२	७	२	३	२८			५	५७	६	३	५	१	१४	२	५८	३७	२	८	-	८	११	३५
३०	१३	९	र	२६	४	सा	४	२३	पू.षा.	५६	१	रा	४	२२	सौभाग्य	२६	१८	सा	४	२९	कौ	२६	४	तै	५८	२८	शुभ	२०	२३	८	३	४	२९			५	५८	६	२	५	२	१२	३९	५८	३९	१	४५	-	८	१२	३०
३०	९	१०	चं	३०	५२	रा	६	११	उ.षा.	६०	०	समस्त			शोभन	२७	३०	सा	४	५९	गर	३०	५२	व	६०	०	मृत्यु	२१	२४	९	४	५	३०	मकर	१२।२९	५	५९	६	१	५	३	११	१८	५८	४१	१	२२	-	९	१	२६
३०	५	११	मं	३४	५८	रा	७	५८	उ.षा.	१	५४	प्रा	६	४५	अतिगंड	२८	१२	सा	५	१३	व	२	५५	भ	३४	५८	मानस	२२	२५	१०	५	६	३१			५	५९	६	१	५	४	९	५९	५८	४४	०	५९	-	९	२	२३
३०	२	१२	बु	३८	४	रा	९	१३	श्रवण	७	०	दि	८	४७	सुकर्मा	२८	१०	सा	५	१५	बव	६	३१	बा	३८	४	छत्र	२३	२६	११	६	७	१	कुम्भ	३८।५९	६	०	६	०	५	५	८	४३	५८	४६	±	३५	-	९	३	१९
२९	५८	१३	गु	४०	६	रा	१०	३	धनिष्ठा	१०	५८	दि	१०	२४	धृति	२७	१३	सा	४	५४	कौ	९	५	तै	४०	६	श्रीवत्स	२४	२७	१२	७	८	२			६	०	६	०	५	६	७	२९	५८	४८	±	११	-	१०	४	१५
२९	५५	१४	शु	४०	४६	रा	१०	२०	शतभिष	१३	४६	दि	११	३२	शूल	२५	१७	दि	४	८	गर	१०	२६	व	४०	४६	सौम्य	२५	२८	१३	८	९	३	मीन	५९।५६	६	१	५	५९	५	७	६	१७	५८	५०	०	३४	-	१०	५	१२
२९	५१	१५	श	४०	६	रा	१०	५	पू.भा.	१५	२०	दि	१२	१०	गण्ड	२२	२१	दि	२	५९	भ	१०	२६	बव	४०	६	कालदण्ड	२६	२९	१४	९	१०	४			६	२	५	५८	५	८	५	७	५८	५३	०	५८	-	१०	-	-

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण उत्तरगोल वर्षाऋतु ॥

भाद्रपदशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २१ भाद्रपद से ४ आश्विन तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १२ सितम्बर से २६ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.३० सामान्य। यायीजययोग प्रा.७।४९ तक। यमघण्टयोग दि.२।२४ से। त्रिपुष्करयोग प्रा.७।४९ से। ❶ रवियोग दि.२।२४ से। यायीजययोग प्रा.७।१५ से। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.२।२४ तक।
मु.रविउस्सानी ४ हि.१४४८। तुलाराशि(रा.२।५०)। मन्वादि(शुक्लपूर्वाह्न)। हस्त मे सामवेदीयों का उपाकर्म। अपराह्न वाराह अवतार। भादवामेला(राज.)—तीन दिन। शंकरदेव तिथि(असम)। ❶
भ.रा.७।३७ से (पाताल)। वैनायकी(वरद)श्रीगणेश ४ व्रत। हरितालिका ३(तीज)व्रत। स्त्रियों के नित्य कल्याण हेतु प्रशस्त। रोटतीज(जैन)। चतुर्थी तिथि मे आजचन्द्रदर्शन निषिद्ध है चन्द्रास्त(रा.७।४९)। पत्थरचौथ। ❷
भ प्रा.७।५४ तक (पाताल)। मध्याह्न ऋषिपञ्चमी ५व्रत। मध्याह्न मे सप्तर्षि पूजा। सात वर्षों तक ऋषी प्रतिमा पूजन कर ब्राह्मण को दान दे। आज बिना जोते भूमि से उत्पन्न शाक का ग्रहण। सौभाग्य चतुर्थी(बङ्गाल)। ❸
वृश्चिकराशि(दि.१२।२)। रक्षापञ्चमी(बङ्गाल)। गुरुपञ्चमी(उड़ीसा)। मेलापत प्रारंभ तीन दिन तक(कश्मीर)। रवियोगसर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.६।२९ से।
नेपाली आश्विनमास। श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। श्रीलोलार्कषष्ठी ६व्रत। काशी भदैनी स्थित लोलार्ककुण्ड मे संतान कामना से स्नान। सूर्यषष्ठी ६व्रत। देव ६। स्वामि कार्तिकेय दर्शन। ब्रह्महत्यादि पापनाश। ❺
भ दि.१२।१६ से रा.१।१७ तक (स्वर्ग)। धनुराशि(रा.११।१०)। सौरआश्विनमास। ज्येष्ठा देवीपूजन। महालक्ष्मीव्रतप्रारंभ(च.उ.रा.१०।४२)। आज से १६दिनों तक काशी मे लक्ष्मीकुण्ड मे स्नानदर्शन। ❻
मूल में ज्येष्ठा देवी का विसर्जन। मध्याह्न राधाष्टमी। दुर्गाशयनाष्टमी(उड़ीसा)। रवियोग रा.१।४८ से।
महारविवारव्रत। आज नमक रहित भोजनकार्य। महानन्दानवमी व्रत। अदुखनवमी। तालनवमी(बङ्गाल)। रवियोग समस्त दिन।
मकरराशि(दि.१०।५९)। दशावतारव्रत। समाधीश्रीनारायणगुरु(केरल)। रवियोगसमस्त दिन। यायीजययोग रा.६।१९ से। ❹ हरिताली चतुर्थी।
भ प्रा.७।१९से रा.७।५८ तक (पाताल)। पद्माएकादशी ११व्रत सबका। कर्माएकादशी(झारखण्ड)। डोलग्यारस(म.प्र.)। श्रवणमध्यभाग मे श्रीविष्णुपरिवर्तनोत्सव। दुग्धत्याग दधिव्रत प्रारंभ। हेकरहितोम्ब(मणिपुर)। ❼
कुम्भराशि(रा.९।३६)। पंचक आरंभ रा.९।३६ से। रा.आश्विनमासदि.३०। दि.८।४७ से एकादशी व्रत का पारण(हरिवासरयोग)। मु.फतिहायाजदहुम(ग्यारहवीं शरीफ)। ❽
प्रदोष १३व्रत। प्रदोष मे श्रीशिवपरिवर्तनोत्सव। रवियोग दि.१०।२४ से पूर्वयायीजययोग।
भ रा.१०।२० से (मृत्युलोक)। मीनराशि(रा.शे.५।५८)। अनंतचतुर्दशी १४व्रत। आज भोजन नमक रहित करे। गणपति विसर्जन। रवियोग दि.११।३२ तक पश्चात स्थायीजययोग।
भ दि.१०।२३तक (मृत्युलोक)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। उमामहेश्वर व्रत(अनंत विधि)। पूर्वाह्न पू.भा योग में लोकपाल पूजा। अपराह्न नान्दीमातामहश्राद्ध(पार्वणविधि द्वारा)। ▲

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	श	५	५	२५	४४	८०४	४१	२	२५	१८	०	३६	११	५	८	२१	१८	१००	२८	३	२४	२	४८	६	४	८	१२	३०	१७	११	१४	५१	११	१०	४	२२	७
२	र	५	१८	३९	३२	७८८	१०	२	२५	५४	२०	३६	११	५	१०	१	४६	१००	३०	३	२४	१५	१	६	४	३८	२९	३०	१७	११	१४	५५	२५	१०	४	१८	५६
३	चं	६	०	३७	४६	७७२	४४	२	२६	३०	४०	३५	१	५	११	४२	१६	१००	३०	३	२४	२७	१५	६	५	८	४६	३०	१७	११	१४	५१	१४	१०	४	१५	४५
४	मं	६	१४	२०	३८	७५६	३०	२	२७	५	४१	३४	५०	५	१३	२२	४७	१००	३०	३	२४	३९	३०	६	५	३९	२	३०	१७	११	१४	४८	१९	१०	४	१२	३४
५	बु	६	२६	५०	१४	७४३	५९	२	२७	४०	३१	३४	५०	५	१५	३	१७	९७	३२	३	२४	५१	४४	६	६	९	१९	३०	१७	११	१४	४१	२३	१०	४	९	२४
६	गु	७	८	८	४९	७३२	३८	२	२८	१५	२१	३४	५०	५	१६	४०	४८	९६	५४	३	२५	३	५९	६	६	३९	३६	३०	१७	११	१४	३६	२८	१०	४	६	१३
७	शु	७	२१	१८	४१	७२५	२६	२	२८	५०	११	३४	५०	५	१८	१७	४२	९६	५४	३	२५	१६	१४	६	७	९	५३	३०	१७	११	१४	३१	३२	१०	४	३	२
८	श	८	२	२३	३	७२१	३७	२	२९	२५	१	३४	५०	५	१९	५४	३६	९६	५४	३	२५	२८	२८	६	७	४०	१०	३०	१७	११	१४	२६	३७	१०	३	५९	५१
९	र	८	१५	२४	५६	७२३	४	२	२९	५९	५१	३४	५०	५	२१	३१	३१	९६	५४	३	२५	३९	५३	६	८	१०	२७	३०	१७	११	१४	२१	४१	१०	३	५६	४०
१०	चं	८	२७	२८	२४	७२८	३३	३	०	३४	४२	३४	५०	५	२३	८	२५	९९	९९	३	२५	५०	४०	६	८	४०	४३	३०	१७	११	१४	१६	४६	१०	३	५३	३०
११	मं	९	१०	४८	२२	७३२	२९	३	१	९	३२	३४	५०	५	२४	३९	४४	९०	५०	३	२६	१	२७	६	९	११	०	३०	१७	११	१४	११	५०	१०	३	५०	१९
१२	बु	९	२१	५३	५९	७३७	११	३	१	४४	२२	३४	५०	५	२६	१०	३४	८९	४२	३	२६	१२	१५	६	९	४१	१७	३०	१७	११	१४	६	५३	१०	३	४७	८
१३	गु	१०	३	२२	५१	७४०	२३	३	२	१९	१२	३४	५०	५	२७	४०	१६	८९	४२	३	२६	२३	२	६	१०	११	३४	३०	१७	११	१४	१	५४	१०	३	४३	५७
१४	शु	१०	१७	४	३८	७६४	११	३	२	५४	२	३४	५०	५	२९	९	५७	८९	४२	३	२६	३३	४९	६	१०	४१	५१	१५	१०	११	१३	५६	५६	१०	३	४०	४६
१५	श	११	०	०	४५	७७९	३८	३	३	२८	४२	३४	५०	६	०	३९	३९	८१	९२	३	२६	४४	३७	७	११	०	३७	८	५६	११	१३	५१	५७	१०	३	३७	३६

२५पं० भाद्रपदशुक्ल ८शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३५६
अयनांश २४।१३।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	५	३	६	११	१०	४
१	२	२९	११	२५	७	१४	३	३
१४	२३	२५	५४	२८	४०	२६	५९	५९
२	३	१	३६	२८	१०	३७	५१	५१
५८	७२१	३४	९६	११	३०	४	३	३
३७	३७	५०	५४	२५	१७	४६	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि लग्न अंश	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	तिथि लग्न अंश	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० चं. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
सिंह	६	१६	६	१२	६	९	६	५	६	२	५	५९	कन्या	८	८	८	४	८	०	७	५७	७	५३	७	४९	७	४६	७	४२	७	३९
कन्या	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१५	८	१२	तुला	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	२	९	५८	९	५५
तुला	१०	४५	१०	४१	१०	३८	१०	३४	१०	३१	१०	२८	वृश्चिक	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१९	१२	१५	१२	१२
वृश्चिक	१	२	१२	५८	१२	५५	१२	५१	१२	४८	१२	४५	धनु	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२	२	२८	२	२५	२	२१	२	१८
धनु	३	८	३	४	३	१	२	५७	२	५४	२	५१	मकर	४	३४	४	३०	४	२६	४	२३	४	१९	४	१५	४	१२	४	८	४	५
मकर	४	५५	४	५१	४	४८	४	४४	४	४१	४	३८	कुम्भ	६	५	६	१	५	५७	५	५४	५	५०	५	४६	५	४३	५	३९	५	३६
लग्न अंश	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		लग्न अंश	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	६	२६	६	२२	६	१९	६	१५	६	१२	६	९	मीन	७	३३	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१४	७	११	७	७	७	४
मीन	७	५४	७	५०	७	४७	७	४३	७	४०	७	३७	मेष	९	१०	९	६	९	२	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४१
मेष	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०	९	१७	९	१४	वृष	११	६	११	२	१०	५८	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४४	१०	४०	१०	३७
वृष	११	२७	११	२३	११	२०	११	१६	११	१३	११	१०	मिथुन	१	२०	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५८	१२	५४	१२	५१
मिथुन	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०	१	२७	१	२४	कर्क	३	३८	३	३४	३	३०	३	२७	३	२३	३	१९	३	१६	३	१२	३	९
कर्क	३	५९	३	५५	३	५२	३	४८	३	४५	३	४२	सिंह	५	५२	५	४८	५	४४	५	४१	५	३७	५	३३	५	३०	५	२६	५	२३

२६पं० भाद्रपदशुक्ल १५शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३६३
अयनांश २४।१३।१४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	३	६	३	६	११	१०	४
८	०	३	०	२६	११	१३	३	३
५	०	२८	३९	४४	०	५१	३७	३७
७	४५	४२	३९	३७	३७	५७	३६	३६
५८	७७९	३४	८१	१०	८	४	३	३
४३	३८	५०	९२	४७	५६	५८	११	११
					व	व		



❷ गौरीव्रत(उड़ीसा)। गणेशचतुर्थी। सरस्वतीपूजा(उड़ीसा)। वरद चतुर्थी। विनायकचतुर्थी (तमिलनाडु)। श्रीगणेशोत्सवारम्भ(महाराष्ट्र)। ☉उ.फा.सूर्य१८।५८(दि.१।२८)। स्त्री.स्त्री.मू.मू.योग मंडूकवाहन वह्निनाड़ी स्वामी भौम मेघाच्छादितवायुवर्षायोग। रवियोग दि.३।१६ तक। ❺ अनुराधा में ज्येष्ठा देवी का आवाहन। चर्पटाषष्ठी। मन्थानषष्ठी(बङ्गाल)। सोमनाथव्रत(उड़ीसा)। ☉सं.कन्या में सूर्य ४४।१९(रा.११।३६)। मु.१५ मुहूर्ती बाद १६ की घटी पुण्य अगले दिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्यकाल। गृहवस्त्र दान गोदावरी स्नान। शरदऋतु। विश्वकर्मा जयंती। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.८।४२ तक। यायीजययोग दि.१०।२८ से। ❻ मेलापट समापन(कश्मीर)। मुक्ताभरण व्रत। ललिता सप्तमी(उड़ीसा)। अपराजिता ७। सन्तान सप्तमी। स्थायीजययोग दि.१२।१६ से। ❼ जलझूलनी(राज.)। रवियोग प्रा.६।६५ तक। स्थायीजययोग रा.७।५८ से। ❽ शक्रध्वजोत्थापन। श्रवणद्वादशी व्रत। वामनावतार। वामन द्वादशी १२व्रत। इन्द्रपूजा(मिथिला)। कल्किद्वादशी। ☉सायन तुला में सूर्य ३८।५०(रा.९।३२)। ▲महावीरी झण्डा मेला(सीतामढ़ी)। इन्द्रगोविन्द पूजा(प्रदोष)—उड़ीसा। श्रीनारायणगुरु जयंती(केरल)।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.६ गुरु रा.८।४२ से। ति.८ शनि रा.१।४८ तक। **पञ्चक विचार-** ति.१२ बुध रा.९।३६ से.।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पुनर्वसु। ति.९ रवि कर्क में ०।१५ (प्रा.६।४)।। ति.१४ शुक्र पुष्य ४४।४३ (रा.११।५४)।। **बुध-**उ.फा.। ति.१ शनि हस्त ५८।५७ (रा.शे.५।२६)। ति.१० सोम चित्रा में ७।३७ (प्रा.९।२)। ति.१४ शुक्र तुला ३३।२९ (रा.७।२५)।। **गुरु-**ति.१४ शुक्र श्लेषा ४ चरण ३४।२० (रा.७।४३)।। **शुक्र-**चित्रा। ति.६ गुरु स्वाती ०।४७ (प्रा.६।१५)।। ति.१५ शनि वक्री २४।५८(दि.४।१)।। **वक्रीशनि-**उ.भा.४ चरण।। **राहु-**धनिष्ठा ४चरण।। **केतु-**मघा २ चरण।।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष विचार- यह पक्ष पूरे पन्द्रह दिन का है। भाद्रपद शुक्ल षष्ठी को अनुराधा होने से वर्षा तड़ित तथा मेघ हो धान की उपज उत्तम होगी। **१२ सितंबर** को **चंद्रदर्शन** मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थो के मूल्य सामान्य रहेंगे। **१३ सितंबर को** हस्त नक्षत्र में सामवेदियों का उपाकर्म होगा। **१४ सितंबर को हरितालिका (तीज) व्रत** किया जायेगा। जो कि स्त्रियों के सौभाग्य हेतु है। यह व्रत वैधव्य☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ शनि उ.फा. सुर्यभोग्य है। **ति.२** रवि हस्त शनिवेध। **ति.३** सोम प्रा.७।१८ रिक्तापूर्व चित्रा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.४** मंगल प्रा.७।५५ रिक्ता बाद दि.२।४६ वैधृति पूर्व स्वाती मे सूतीकास्नान लालवस्त्रमूँगारत्नधारण रोगविमुक्तस्नान (४थी) वाहनक्रय शल्यक्रियामुहूर्त। **ति.५** बुध विशाखा राहुवेध। **ति.६** गुरु अनुराधा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन सूतीकास्नान (७मी) नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी **पश्चिमदिशा** की यात्रा (७मी) दवँरी नये अन्न का भक्षण नावनिर्माण **विपणि व्यापार** वाहनक्रय शल्यक्रियामुहूर्त। **ति.७** शुक्र दि.१२।१७ भद्रापूर्व ज्येष्ठा मे शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना चौपायो का क्रय विक्रय दवँरी नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.८** शनि मूल भौमवेध। **ति.९** रवि पू.षा. रोगविमुक्तस्नान। सा.४।२३ रिक्ता बाद नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.१०** सोम उ.षा. जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.११ मंगल प्रा.७।१९ भद्रापूर्व उ.षा. पुंसवन सीमन्त सूतीकास्नान सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रमूँगारत्नधारण धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१२** बुध दि.८।४७ तक श्रवण जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.१३** गुरु धनिष्ठा राहुयुति। **ति.१४** शुक्र शत रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। **ति.१५** शनि दि.१०।२३ भद्रा बाद पू.भा. शस्त्रनिर्माण मुहूर्त।

☛दोषनाशक तथा पुत्र-पौत्रादि को बढ़ाने वाला होता है। आज सायंकाल में चतुर्थी के चन्द्रमा का दर्शन करने से दोष तथा आरोप लगता है, **अतः आज चन्द्रदर्शन से बचें।** अनचाहे दीख ही जाय तो गणेश चतुर्थी की कथा **(स्यमन्तक मणि की कथा)** सुनें। आज **वैनायकी वरद् श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** एवं **गणेशोत्सव** का आरंभ हो जायेगा। **१५ सितंबर को** मध्याह्न में **ऋषि पंचमी व्रत** मनाया जायेगा। मध्याह्न में सप्तर्षि पूजा करे तथा सात वर्षों तक **ऋषि प्रतिमा** का पूजन कर ब्राह्मण को दान करे। बिना जोते भूमि से उत्पन्न शाक को ग्रहण करें। **१७ सितंबर** को **लोलार्क षष्ठी व्रत** होगा। काशी में भदैनी स्थित लोलार्क कुण्ड पर स्नान करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। आज स्वामी कार्तिकेयजी का दर्शन पूजन करने से ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्ति मिलती है। आज ही सृष्टि के आदिदेवशिल्पी भगवान् **विश्वकर्मा** की **जयंती** का प्रसिद्ध पर्व धूमधाम से समारोह पूर्वक किया जायेगा। **१८ सितम्बर को महालक्ष्मी व्रत** का **प्रारंभ चन्द्रोदय** में होगा, (शेष पृष्ठ ८ पर)

आश्विनकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ५ आश्विन से १८ दिनांक तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २७ सितम्बर से १० अक्टूबर तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण उत्तरगोल शरदऋतु ॥

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	ध.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	ध.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	ध.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति		रे. अं.	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
२९	४७	१	र	३८	१६	रा	९	२१	उ.भा.	१५	३९	दि	१२	१८	वृद्धि	१८	२४	दि	१	२४	बा	९	११	कौ	३८	१६	स्थिर	२७	१	१५	१०	११	५			६	३	५	५७	५	९	४	०	५८	५६	१	२२	-	१०	६	४	फसलीनवर्षारंभ। सन् १४३४। महालयारंभ। प्रतिपदा श्राद्ध। तर्पणादि प्रारंभ। महालय में प्रतिदिन पितरों का तर्पण व श्राद्ध करने से वर्षभर सुख रहता है। आश्विन में दूध का त्याग किन्तु छाछ शुद्ध है। ❶
२९	४४	२	चं	३५	११	रा	८	११	रेवती	१४	४९	दि	११	५९	ध्रुव	१३	३४	दि	११	२९	तै	६	४७	गर	३५	११	मातङ्ग	२८	२	१६	११	१२	६	मेष	१४।४९	६	४	५	५६	५	१०	२	५६	५८	५८	१	४५	-	११	६	४१	मेषराशि(दि.११।५९)। पंचक समाप्त दि.११।५९। अशून्यशयन व्रत(चं.उ.रा.६।४२)। द्वितीयाश्राद्ध। मु.उर्स हजरत निजामुद्दीन औलिया(दिल्ली)।
२९	४०	३	मं	३१	२५	रा	६	३८	अश्विनी	१२	५९	दि	११	१६	व्याघात	७	५४	दि	९	१४	व	३	२२	भ	३१ ५९	२५ २	अमृत	२९	३	१७	१२	१३	७			६	५	५	५५	५	११	१	५४	५८	५९	२	८	-	११	७	२२	भ.प्रा.७।२६से रा.६।३८ तक (स्वर्ग)। अङ्गारक संकष्टीश्रीगणेश ४व्रत(चं.उ.रा.७।२२)। तृतीयाश्राद्ध। अपराह्न भरणीश्राद्ध। पर्वविधि। "भरणी में श्राद्ध करने से पितृपक्ष में गया में किये श्राद्ध सदृश फल की प्राप्ति" ❷
२९	३६	४	बु	२६	४०	सा	४	४४	भरणी	१०	१८	दि	१०	१२	हर्षण	१ ५३	३३ ३	प्रा	६ ३	४२ ५५	बा	२६	४०	कौ	५३	५९	काण	३०	४	१८	१३	१४	८	वृष	२४।२८	६	५	५	५५	५	१२	०	५३	५९	२	२	३१	-	१२	८	१०	वृषराशि(सा.३।५२)। चतुर्थीश्राद्ध। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।१२ से। ❷ सायं ललितादेवी यात्रा। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.११।१६ तक।
२९	३२	५	गु	२१	१७	दि	२	३६	कृत्तिका	६	५७	दि	८	५२	सिद्धि	४७	१४	रा	१२	५९	तै	२१	१७	गर	४८	२४	लुम्बक	अ	५	१९	१४	१५	९			६	६	५	५४	५	१२	५९	५५	५९	५	२	५५	-	१२	९	४	अक्टूबर १०। पञ्चमीश्राद्ध। अपराह्न में षष्ठीश्राद्ध। श्रीचन्द्रषष्ठीव्रत। चन्द्रोदयव्यापिनीग्राह्य(चं.उ.रा.९।४)। यायीजययोग दि.८।५२ से पूर्व में यमघंटयोग।
२९	२९	६	शु	१५	३०	दि	१२	११	रोहिणी	३ ५५	६ ५३	प्रा	७ ५	२१ ४२	व्यतीपात	३९	३४	रा	९	५६	व	१५	३०	भ	४२	२९	मित्र	२	६	२०	१५	१६	१०	मिथुन	३९।३	६	७	५	५३	५	१३	५९	०	५९	७	३	१८	-	१२	१०	६	भ.दि.१२।१९से रा.११।७तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि(रा.६।३२)। सप्तमीश्राद्ध। कपिलाषष्ठी योग। रवियोग प्रा.७।२१ से रा.शे.५।४२ तक। यमघंटयोग प्रा.७।२१ तक।
२९	२५	७	श	९	२८	दि	९	५४	आर्द्रा	५४	४५	रा	४	१	वरीयान	३१	४५	रा	६	४९	बव	९	२८	बा	३६	२५	मुद्गर	३	७	२१	१६	१७	११			६	७	५	५३	५	१४	५८	७	५९	८	३	४१	-	१३	११	११	प्रदोष में कालाष्टमी। अष्टमीश्राद्ध। जीवत्पुत्रिका व्रत(जीतिया)। जीमूतवाहनपूजा। श्रीमहालक्ष्मी८व्रत(चं.उ.रा.११।११)। श्रीमहालक्ष्मीव्रत समापन। लक्ष्मीव्रत चन्द्रोदय में अर्घ्यदान। ❸
२९	२१	८	र	३ ५४	२२ ४	प्रा	७ ५	३२ ६	पुनर्वसु	५०	४०	रा	२	२४	परिघ	२४	२	दि	३	४४	कौ	३	२२	तै	३० ५७	२४ २६	ध्वज	४	८	२२	१७	१८	१२	कर्क	३६।४२	६	८	५	५२	५	१५	५७	१५	५९	१३	४	५	-	१३	१२	१८	कर्कराशि(रा.८।४९)। दिन घं.७मि.२८ बजे बाद जीवत्पुत्रिकाव्रत का पारण। मातृनवमी। सौभाग्यवती स्त्रीयों का श्राद्ध। अन्वष्टकाश्राद्ध। मूलाष्टमी(उड़ीसा)। श्रीदुर्गानवमी(महाराष्ट्र)। ❹
२९	१८	१०	चं	५१	५२	रा	२	५३	पुष्य	४६	५६	रा	१२	५५	शिव	१६	२९	दि	१२	४४	व	२४	३९	भ	५१	५२	धाता	५	९	२३	१८	१९	१३			६	९	५	५१	५	१६	५६	२८	५९	१३	४	२८	-	१३	१	२४	भ.दि.४।०से रा.२।५३तक (मृत्युलोक)। दशमी श्राद्ध। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१२।५५ तक।
२९	१५	११	मं	४६	४९	रा	१२	५३	श्लेषा	४३	४२	रा	११	३९	सिद्ध	९	१५	दि	९	५२	बव	१९	२१	बा	४६	४९	आनंद	६	१०	२४	१९	२०	१४	सिंह	४३।४२	६	१०	५	५०	५	१७	५५	४१	५९	१६	४	५१	-	१४	२	२७	सिंहराशि(रा.११।३९)। इन्दिरा एकादशी ११व्रत सबका। एकादशीश्राद्ध। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।३९ तक।
२९	११	१२	बु	४२	३७	रा	११	१२	मघा	४१	१६	रा	१०	४०	साध्य	२ ५३	३२ ५६	प्रा	७ ४	१० ४५	कौ	१४	४३	तै	४२	३७	चर	७	११	२५	२०	२१	१५			६	१०	५	५०	५	१८	५४	५७	५९	१९	५	१४	-	१४	३	२७	मघाश्राद्ध। संन्यासी यति वैष्णवों का द्वादशी श्राद्ध।
२९	७	१३	गु	३९	१५	रा	९	५२	पू.फा.	३९	३८	रा	१०	२	शुक्ल	५१	११	रा	२	३९	गर	१०	५६	व	३९	१५	गद	८	१२	२६	२१	२२	१६	कन्या	५३।५३	६	११	५	४९	५	१९	५४	१६	५९	२१	५	३७	-	१४	४	२४	भ.रा.९।५२से (मृत्यु—पाताल)। कन्याराशि(रा.शे.३।४४)। प्रदोष १३व्रत। मासशिवरात्रि १३व्रत। त्रयोदशी श्राद्ध।
२९	३	१४	शु	३६	५७	रा	८	५८	उ.फा.	३९	२	रा	९	४८	ब्रह्म	४६	३८	रा	१२	५१	भ	८	६	श	३६	५७	शुभ	९	१३	२७	२२	२३	१७			६	१२	५	४८	५	२०	५३	३७	५९	२३	६	०	-	१४	५	२२	भ.दि.९।२६तक (पाताल)। अज्ञाततिथि तथा केवल विष तथा शस्त्रादि से मृत जनों का श्राद्ध। चतुर्दशी श्राद्ध। एकोद्दिष्टविधि श्राद्ध।
२९	०	३०	श	३५	५२	रा	८	३३	हस्त	३९	३९	रा	१०	४	ऐन्द्र	४३	३	रा	११	२६	च	६	२४	ना	३५	५२	मृत्यु	१०	१४	२८	२३	२४	१८			६	१३	५	४७	५	२१	५३	०	५९	२५	६	२३	-	१४	-	-	अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। पापवार से दुर्भिक्ष व भय। सर्वपैत्री ३०। पितृविसर्जन। श्रीमहाविष्णु की प्रसन्नता हेतु ब्राह्मण भोजन। महालया। अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध। ❺

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				वक्रीशुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	र	११	१३	१२	२६	७९५	४७	३	४	३	४२	३४	५०	६	२	०	५१	८१	२४	३	२६	५५	२४	६	१०	५१	४१	८	५६	११	१३	४६	५८	१०	३	३४	२५
२	चं	११	२६	३९	४०	८११	१६	३	४	३८	३२	३४	५०	६	३	२२	१५	८१	२४	३	२७	६	११	६	१०	४२	४५	८	५६	११	१३	४२	०	१०	३	३१	१४
३	मं	०	१०	२१	२६	८२५	१२	३	५	१३	२२	३४	५०	६	४	४३	३८	८१	२४	३	२७	१६	५९	६	१०	३३	४९	८	५६	११	१३	३७	१	१०	३	२८	३
४	बु	०	२४	१६	१४	८३७	२७	३	५	४८	१२	३२	४७	६	६	५	२	८०	३६	३	२७	२७	४६	६	१०	२४	५३	८	५६	११	१३	३२	३	१०	३	२४	५२
५	गु	१	२४	४	२३	८५८	५५	३	६	२१	१०	३२	११	६	७	२५	३८	७१	४३	३	२७	३८	३५	६	१०	१५	५७	८	५६	११	१३	२७	४	१०	३	२१	४१
६	शु	१	२१	५२	४१	०	०	३	६	५३	२१	३२	११	६	८	३७	२०	७१	५३	३	२७	४९	२४	६	१०	७	१	८	५६	११	१३	२२	६	१०	३	१८	३१
७	श	२	६	५४	३५	८६०	४३	३	७	२५	३२	३२	११	६	९	४९	१३	७१	५३	३	२८	०	१४	६	९	५८	५	८	५६	११	१३	१७	७	१०	३	१५	२०
८	र	२	२१	१५	७	८५८	२५	३	७	५७	४३	३२	११	६	११	१	६	७१	४३	३	२८	११	३	६	९	४९	९	८	५६	११	१३	१२	८	१०	३	१२	९
१०	चं	३	५	३२	४२	८५३	४	३	८	२९	४४	३२	११	६	१२	१२	५९	६८	४१	३	२८	२१	५२	६	९	४०	१३	८	५६	११	१३	७	१०	१०	३	८	५८
११	मं	३	१९	४४	१	८४६	३३	३	९	२	५	३२	११	६	१३	२१	४१	५५	२१	३	२८	३२	३४	६	९	३१	१७	८	५६	११	१३	२	११	१०	३	५	४७
१२	बु	४	२	४६	३१	८३३	४८	३	९	३४	१६	३२	११	६	१४	१७	१	५५	३५	३	२८	४१	५७	६	९	२२	२१	८	५६	११	१२	५७	१३	१०	३	२	३७
१३	गु	४	१७	३६	४६	८२२	२३	३	१०	६	२७	३२	११	६	१५	१२	३७	५५	३५	३	२८	५१	११	६	९	१३	२५	३६	४७	११	१२	५२	१४	१०	२	५९	२६
१४	शु	५	०	१४	५८	८०८	४	३	१०	३८	३८	३२	११	६	१६	८	१२	५५	३५	३	२९	०	४१	६	८	३६	३८	३३	३६	११	१२	४७	१५	१०	२	५६	१५
३०	श	५	१४	३६	४३	७९१	५१	३	११	१०	४९	३१	५२	६	१७	३	४७	५०	३२	३	२९	१०	३	६	८	३	२	३३	३६	११	१२	४२	१७	१०	२	५३	४

२७ पं० आश्विनकृष्ण ८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३३७१
अयनांश २४।१३।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	६	३	६	११	१०	४
१५	२१	७	११	२८	९	१३	३	३
४७	१५	४७	१	११	४१	१२	१२	१२
१५	७	४३	६	३	९	८	९	९
५९	८५८	३२	७१	१०	८	४	३	३
१३	२५	११	५३	४२	५६ व	५८ व	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	१० चं. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	३० श. घं.	मि.
कन्या	७	३६	७	३२	७	२८	७	२५	७	२१	७	१७	७	१४	७	१०	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४९
तुला	९	५२	९	४८	९	४४	९	४१	९	३७	९	३३	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१५	९	१२	९	८	९	५
वृश्चिक	१२	९	१२	५	१२	१	११	५८	११	५४	११	५०	११	४७	११	४३	११	४०	११	३६	११	३२	११	२९	११	२५	११	२२
धनु	२	१५	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९	१	४६	१	४२	१	३८	१	३५	१	३१	१	२८
मकर	४	२	३	५८	३	५४	३	५१	३	४७	३	४३	३	४०	३	३६	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१५
कुम्भ	५	३३	५	२९	५	२५	५	२२	५	१८	५	१४	५	११	५	७	५	४	५	०	४	५६	४	५३	४	४९	४	४६
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	७	१	६	५७	६	५३	६	५०	६	४६	६	४२	६	३९	६	३५	६	३२	६	२८	६	२४	६	२१	६	१७	६	१४
मेष	८	३८	८	३४	८	३०	८	२७	८	२३	८	१९	८	१६	८	१२	८	९	८	५	८	१	७	५८	७	५४	७	५१
वृष	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	१२	१०	८	१०	५	१०	१	९	५७	९	५४	९	५०	९	४७
मिथुन	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२६	१२	२२	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	८	१२	४	१२	१
कर्क	३	६	३	२	२	५८	२	५५	२	५१	२	४७	२	४४	२	४०	२	३७	२	३३	२	२९	२	२६	२	२२	२	१९
सिंह	५	२०	५	१६	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५८	४	५४	४	५१	४	४७	४	४३	४	४०	४	३६	४	३३

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ रवि उ.भा. शनियुति। ति.२ सोम रेवतीसूर्यवेध। ति.३ मंगल प्रा.७।२६ भद्रापूर्व अश्विनी सूतीकास्नान लालवस्त्रमूँगारत्नधारण रोगविमुक्तस्नान(४र्थी) वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रियामुहूर्त। ति.४ बुध भरणी में केतुवेध। ति.५ गुरु व्यतिपात पूर्व कृतिका धानकटाई मुहूर्त। ति.६ शुक्र रोहिणी में विष्टिव्यतिपातग्रह। ति.७ शनि आर्द्रा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। ति.८ रवि पुनर्वसु भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है।। ति.१० सोम पुष्य भौमयुति। ति.११ मंगल श्लेषा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। ति.१२ बुध मघा केतुयुति। **पश्चात मासान्तादि दोष।**

२८ पं० आश्विनकृष्ण ३० शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३३७७
अयनांश २४।१३।१६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	३	६	३	६	११	१०	४
२१	१४	११	१७	२९	८	१२	२	२
५३	३६	१०	३	१०	३	४२	५३	५३
०	४३	४९	४७	३	२	१७	४	४
५९	७९१	३१	५०	१	३३	४	३	३
२५	५१	५२	३२	२१	३६ व	५८ व	११	११



❶ ☉हस्त में सूर्य५७।१(रा.शे.४।५१)। पु.स्त्री.चं.सु योग मूषकवाहन वह्निनाड़ी स्वामी भौम मेघाच्छादित वायुवृष्टियोग। यायीजययोग दि.१२।१८ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग। ❸ श्रीलक्ष्मी कुण्ड मे स्नान की समाप्ति। अष्टकाश्राद्ध। पार्णवविधि। गयामध्याष्टमी। ओंगठन (मिथिला)। ❹अविधवा नवमी। णमोकार ३५व्रत ३१उपवास(जैन)। यायीजययोग प्रा.७।२८ से। ❺तर्पणलयबा(मणिपुर)। मेला फल्गु(राज.)। केदारगौरीव्रत(द.भा.)। यमघंटयोग रा.१०।४ तक।

मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.१ रवि दि.१२।१८ से। ति.३ मंगल दि.११।१६ तक। श्लेषा/मघा ति.१० सोम रा.१२।५५ से। ति.१२ बुध रा.१०।४० तक। पञ्चक विचार-ति.२ सोम दि.११।५९ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पुष्य।। **बुध**-चित्रा। ति.४ बुध स्वाती २६।२(सा.४।२७)।। **गुरु**-श्लेषा ४ चरण।। **वक्रीशुक्र**-स्वाती ।। **वक्रीशनि**-ति.६ शुक्र उ.भा.३ चरण २५।१३(सा.४।१२)।। **राहु**-ति.५ गुरु धनिष्ठा ३ चरण।। **केतु**-मघा १ चरण ३१।५४(रा.६।५२)।।

आश्विन कृष्ण पक्ष विचार-इस पक्ष में नवमी तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिनों का है। आश्विन कृष्ण अमावस्या रविवारी हो तो मध्यम वर्षा अथवा आधे भूभाग पर विपत्ति हो। चंद्रमा मंगल एक नाड़ी में गुरु से युक्त हो समस्त भूभाग पानी से प्लावित हो। **२७ सितम्बर** आज से **पितृपक्ष (महालया) श्राद्ध**, प्रतिपदा का श्राद्धकर्म तर्पणादि प्रारंभ हो जायेगा। **पितृपक्ष विशेष**—अपने पितरों एवं पूर्वजों सहित चराचर ब्रह्माण्ड स्थित जीव जन्तुओं को भी अपना पूर्वज मानकर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित करने के लिये पितृपक्ष भारतीय परम्परा की उदारता का परिचायक है। किंचित् देवताओं की पूजा में शिथिलता हो सकती है परन्तु प्रत्येक सनातनी हिन्दू को श्रद्धापूर्वक अपने पितरों को श्राद्ध एवं तर्पण से तृप्त करना चाहिये। इससे उनके आशीर्वाद से देवों की कृपा प्राप्ति के साथ स्वास्थ्य-सुत-धनादि की प्राप्ति होती है। **२९ सितम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात ७:२२ के बाद अर्घ्य दें। आज भरणी श्राद्ध, अपराह्न काल में भरणी नक्षत्र प्राप्त होने से इसमें श्राद्ध करने पर गयातीर्थश्राद्ध के समान फल प्राप्त होता है। **१ अक्टूबर** को **श्रीचन्द्र षष्ठी व्रत** किया जायेगा। **३ अक्टूबर** को **जीवत्पुत्रिका (जीउतिया) व्रत** मनाया जायेगा। चन्द्रोदयव्यापिनि ☛ अष्टमी में **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** के साथ **सोरहिया मेला** का समापन होगा। **४ अक्टूबर** को प्रा.७।२८ बाद नवमी में **जीउतिया का पारण** होगा। आज सौभाग्यवती मृतक स्त्रियों के लिये किया जाने वाला **मातृनवमी** का श्राद्ध किया जायेगा। **६ अक्टूबर** को **इन्दिरा एकादशी व्रत सबका** किया जायेगा। इस व्रत को करने से अधोयोनी में गये पितरों को मुक्ति प्राप्त होती है। **७ अक्टूबर** को **संन्यासी यति वैष्णवों का द्वादशीश्राद्ध होगा।** आज अपराह्न में **मघा त्रयोदशी श्राद्ध** होगा। **८ अक्टूबर** को सर्वकामनार्थ **प्रदोष व्रत** तथा **मासशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **९ अक्टूबर** को **अज्ञात तिथि** में तथा **शस्त्र से** मृत जनों का एकोद्दिष्टविधि द्वारा **चतुर्दशी श्राद्ध** होगा। **१० अक्टूबर** को **स्नान दान-श्राद्ध-तर्पण की अमावस्या** तथा **पितृ विसर्जन** किया जायेगा। आज **अज्ञात तिथि वालों** का श्राद्ध तथा **महालया का समापन** होगा। अशुभवार से भय व कष्ट होगा।

आश्विनशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १६ आश्विन से ४ कार्तिक तक १९४८ शक। अंग्रेजी दिनांक ११ अक्टूबर से २६ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

शुक्रपश्चिमास्त ति. ४ बुध (१४-१०-२६) **२९**

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायन उत्तरगोल शरदऋतु ॥

दि.	मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति प.	प.	क्रान्ति द	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.
२८	५६	१	र	३६	२	रा	८	३७	चित्रा	४१	३०	रा	१०	४९	वैधृति	४०	२९	रा	१०	२४	कि	५	५७	बव	३६	२	पद्म	११	१५	२९	२४	२५	११	तुला	१०।३५	६	१३	५	४७	५	२२	५२	२५	५९	२८	६	४५	-	१५	-	-
२८	५२	२	चं	३७	३४	रा	९	१५	स्वाती	४४	३८	रा	१२	५	विष्कुंभ	३८	५७	रा	९	४८	वा	६	४८	कौ	३७	३४	छत्र	१२	१६	३०	२५	२६	२०			६	१४	५	४६	५	२३	५१	५३	५९	३०	७	८	-	१५	६	२२
२८	४९	३	मं	४०	१२	रा	१०	१९	विशाखा	४८	५२	रा	१	४७	प्रीति	३८	१६	रा	९	३३	तै	८	५३	गर	४०	१२	श्रीवत्स	१३	१७	१	२६	२७	२१	वृश्चिक	३२।४९	६	१५	५	४५	५	२४	५१	२३	५९	३२	७	३०	-	१५	७	२
२८	४५	४	बु	४४	२	रा	११	५१	अनुराधा	५४	११	रा	३	५५	आयुष्मान	३८	२९	रा	९	३८	व	१२	७	भ	४४	२	सौम्य	१४	१८	२	२७	२८	२२			६	१५	५	४५	५	२५	५०	५५	५९	३५	७	५३	-	१६	७	४६
२८	४२	५	गु	४८	३८	रा	९	४३	ज्येष्ठा	६०	०	समस्त			सौभाग्य	३९	२१	रा	१०	०	बव	१६	२०	बा	४८	३८	कालदण्ड	१५	१९	३	२८	२९	२३			६	१६	५	४४	५	२६	५०	३०	५९	३८	८	१५	-	१६	८	३४
२८	३८	६	शु	५३	४८	रा	३	४८	ज्येष्ठा	०	१२	प्रा	६	२२	शोभन	४०	३८	रा	१०	३२	कौ	२१	१३	तै	५३	४८	चर	१६	२०	४	२९	३०	२४	धनू	०।१२	६	१७	५	४३	५	२७	५०	८	५९	३९	८	३७	-	१६	९	२५
२८	३५	७	श	५९	२	रा	५	५४	मूल	६	४२	दि	८	५८	अतिगंड	४२	४	रा	११	७	गर	२६	२५	व	५९	२	गद	१७	२१	५	३०	३१	२५			६	१८	५	४२	५	२८	४९	४७	५९	४२	९	०	-	१६	१०	११
२८	३३	८	र	६०	०	समस्त			पू.षा.	१३	९	दि	११	३३	सुकर्मा	४३	१९	रा	११	३७	भ	३१	२९	बव	६०	०	शुभ	१८	२२	६	३१	१	२६	मकर	२९।४०	६	१८	५	४२	५	२९	४९	२९	५९	४३	९	२२	-	१६	११	१५
२८	३१	८	चं	३	५६	प्रा	६	५३	उ.षा.	१९	१३	दि	२	०	धृति	४४	६	रा	११	५७	बव	३	५६	बा	३६	२	मृत्यु	१९	२३	७	१	२	२७			६	१९	५	४१	६	०	४९	१२	५९	४६	९	४३	-	१७	१२	१०
२८	२८	९	मं	८	७	दि	९	३४	श्रवण	२४	३३	दि	४	९	शूल	४४	१४	रा	१२	१	कौ	८	७	तै	३९	४२	लुम्बक	२०	२४	८	२	३	२८	कुम्भ	५६।४०	६	२०	५	४०	६	१	४८	५८	५९	४९	१०	५	-	१७	१	६
२८	२४	१०	बु	११	१६	दि	१०	५०	धनिष्ठा	२८	४७	रा	५	५०	गंड	४३	२६	रा	११	४२	गर	११	१६	व	४२	१९	मित्र	२१	२५	९	३	४	२९			६	२०	५	४०	६	२	४८	४७	५९	५०	१०	२७	-	१७	२	९
२८	२०	११	गु	१३	२२	दि	११	४१	शतभिष	३१	५६	रा	७	७	वृद्धि	४१	४६	रा	११	३	भ	१३	२२	बव	४३	४४	वज्र	२२	२६	१०	४	५	३०			६	२१	५	३९	६	३	४८	३७	५९	४३	१०	४८	-	१७	२	५७
२८	१६	१२	शु	१४	७	दि	१२	०	पू.भा.	३३	४८	रा	७	५३	ध्रुव	३९	४	रा	९	५९	वा	१४	७	कौ	४३	४९	ध्वांक्ष	२३	२७	११	५	६	१	मीन	१८।२०	६	२२	५	३८	६	४	४८	३०	५९	५५	११	९	-	१७	३	५४
२८	१३	१३	श	१३	३२	दि	११	४७	उ.भा.	३४	२४	रा	८	८	व्याघात	३५	२१	रा	८	३१	तै	१३	३२	गर	४२	३९	धूम्र	२४	२८	१२	६	७	२			६	२३	५	३७	६	५	४८	२५	५९	५७	११	३०	-	१८	४	५४
२८	१०	१४	र	११	४६	दि	११	५	रेवती	३३	४८	रा	७	५४	हर्षण	३०	४२	रा	६	३९	व	११	४६	भ	४०	२१	प्रवर्द्धमान	२५	२९	१३	७	८	३	मेष	३३।४८	६	२३	५	३७	६	६	४८	२२	५९	५७	११	५१	-	१८	५	५७
२८	६	१५	चं	८	५५	दि	९	५७	अश्विनी	३२	११	रा	७	१६	वज्र	२५	१२	सा	४	२८	बव	८	५५	वा	३७	०	राक्षस	२६	३०	१४	८	९	४			६	२४	५	३६	६	७	४८	१९	६०	२	१२	१२	-	१८	-	-

तुलाराशि(दि.१०।२७)। **शारदीयनवरात्रप्रारंभ**। चित्राकृति निषेध तथा अनुरोध से **अभिजित्मुहूर्त** दि.१०।४१ से दि.१२।९ तक। कलशस्थापन ... प्रतिपदा में केश पवित्र हेतु(चन्दन लेप व त्रिफला) तथा कंघी का अर्पण। ❶
◡ **चन्द्रदर्शन**। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.१५ महँगी। द्वितीया में रेशमी पट्ट केश हेतु। **ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन**। यायीजययोग रा.९।१५ से।
वृश्चिकराशि(रा.७।२३)। **मु.जमादिउलअव्वल ५ हि.१४४८**। तृतीया में दर्पण तथा सिर हेतु सिन्दूर चरण हेतु अलक्त प्रदान। **चित्रघंटा देवी दर्शन**। रवियोग रा.१।४७ से। स्थायीजययोग रा.१०।९२ से।
भ दि.११।६ से रा.११।५१ तक (स्वर्ग)। **वैना.श्रीगणेश ४ व्रत**। चतुर्थी में मधुपर्क(दही,मधु,घी का मिश्रण)तिलक हेतु चांदी का टुकड़ा। नेत्र हेतु अंजन। **मानचतुर्थी**(उड़ीसा)। **कुष्माण्डादेवी दर्शन**। ❷
मध्याह्न **उपाङ्गललिता ५व्रत**(महाराष्ट्र)। पञ्चमी में अङ्गराग एवं शक्तिनुसार आभूषण। **नटपञ्चमी**(उड़ीसा)। **स्कन्दमातादर्शन**।
धनूराशि(प्रा.६।२२)। **श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत**। सायं **बिल्ववृक्ष को आमंत्रण**। सायं षष्ठी में बेलवृक्ष को साक्षात दुर्गादेवी मानकर शयन से जगाने हेतु मंत्रों से बोधन करें। **कात्यायनी देवी दर्शन**। ❸
भ.रा.शे.५।५४ से (पाताल)। **दुर्गासप्तमी**। दि.८।५८ से पू.षा. **सरस्वती पूजन**। **पत्रिकाप्रवेशन**। रा.शे.५।५४ से **श्रीभवानीअन्नपूर्णापरिक्रमारंभ**। **ओली प्रारंभ**(जैन)। रवियोग दि.८।५८ तक।
भ.रा.६।५४ तक (पाताल)। **ने.कार्तिकमास**। **मकरराशि**(रा.६।१०)। **महाष्टमी व्रत**। **श्रीदुर्गाष्टमी**। **व्रत ८**। **महागौरीदर्शन**। अष्टमी को उपवास पूर्वक पञ्चशक्ति पूजन करें। अष्टमी में देवी की उपासना हेतु अनुष्ठान। त्रिशूलपूजन। ❹
सौरकार्तिकमास। प्रा.६।५३ तक **श्रीभवानीअन्नपूर्णा परिक्रमा**। अष्टमी नवमी तिथिसंधि में तंत्रपूजन। **महानवमी ९ व्रत**। **दुर्गानवमी**। आज समस्त नवमी रहते होम। आज समस्त नवमी होम कर ❺
कुम्भराशि(रा.शे.५।१०)। **पंचक आरंभ** रा.शे.५।१० से। **नवरात्रव्रत का पारण**। अपराह्न में व्याप्त तथा श्रवणयोग में **विजयादशमी १०**। पूजन हेतु चिह्न तथा प्रस्थान पूर्व देवीअपराजिता पूजन। ❻
भ.रा.११।१६ से (मृत्युलोक)। **जगद्गुरुमाधवाचार्य जयन्ती**। **सोपपदा १०**। वेद अध्ययन निषेध। **साईंबाबापुण्यतिथि**। रवियोग रा.५।५० तक।
भ दि.११।४१ तक (मृत्युलोक)। **पापाकुंशाएकादशी ११व्रत सबका**। काशी में प्रसिद्ध नाटीइमली **भरतमिलाप**।
मीनराशि(दि.१।४२)। **रा.कार्तिकमास दि.३०**। **प्रदोष १२व्रत**। **पद्मनाभद्वादशी १२ व्रत**। ⊙**सायन वृश्चिक में सूर्य** ५९।९३(रा.शे.६।३)। रवियोग रा.७।५३ से पूर्व में स्थायीजययोग।
⊙**स्वाती में सूर्य** ५१।३८(रा.३।२)। पु.स्त्री.चं.सू.योग मेषवाहन वह्निनाड़ी स्वामी भौम मेघ आच्छादित अतिवायु वृष्टियोग। रवियोग रा.८।८ तक पुनःरवियोग रा.३।२ से। यायीजययोग दि.११।४७ तक।
भ दि.११।५ से रा.१०।३१तक (मृत्युलोक—स्वर्ग)। **मेषराशि**(रा.७।५४)। **व्रत १५**। प्रदोष निशिथ पूर्णिमा तिथि में **शरत्पूर्णिमा १५**। **कोजागरी १५**। रवियोग रा.७।५४ तक। ❼
पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। **महर्षिबाल्मीकि जयन्ती**। **ओलीसमाप्त**(जैन)। **कुमारपूर्णिमा** उड़ीसा। **मीराबाई जयंती**। **महर्षिपराशर जयंती**।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्रः	गति	भौम	गति	बुध	गति	गुरु	वक्रीशुक्र	गति	वक्रीशनि	राहु
१	र	१ २७ ४३ १३	७७६ ४	३ ११ ४२ ४१	३१ २६	६ १७ ५४ ११	३५ १५	३ २९ ११ २५	६ ७ २९ २६	३३ ३६	११ १२ ३७ १८	१० २ ४९ ४३
२	चं	६ ९ ३४ २५	७६० १७	३ १२ १४ ८	३१ ३८	६ १८ २९ ३४	३५ २६	३ २९ २८ ४७	६ ६ ५५ ५१	३३ ३६	११ १२ ३२ २०	१० २ ४६ ४३
३	मं	६ २३ ११ २३	७७७ १६	३ १२ ४५ ४६	३१ ४४	६ १९ ५ ०	३५ २६	३ २९ ३८ ९	६ ६ २२ १५	३३ ३६	११ १२ २७ २१	१० २ ४३ ३२
४	बु	७ ५ ३६ २२	७३४ ५२	३ १३ १७ ३०	३१ ४४	६ १९ ४० २५	३५ २६	३ २९ ४७ ३१	६ ५ ४८ ३९	३३ ३६	११ १२ २२ २२	१० २ ४० २१
५	गु	७ १७ ५२ ४२	७२९ १७	३ १३ ४९ १५	३१ ४४	६ २० १५ ५१	२५ ५७	३ २९ ५६ ४३	६ ५ १५ ३	३३ ३६	११ १२ १७ २४	१० २ ३७ १०
६	शु	८ १ १० २९	७२७ १५	३ १४ २० ५९	३१ ४४	६ २० ४१ ४८	७ ४९	४ ० ६ १५	६ ४ ४१ २७	३३ ३६	११ १२ १३ २६	१० २ ३३ ५९
७	श	८ ११ ५९ २४	७२१ ४८	३ १४ ५२ ४३	३१ ४४	६ २० ४९ ३७	७ ५५	४ ० १५ ३८	६ ४ ७ ५२	३३ ३६	११ १२ ९ ३६	१० २ ३० ४९
८	र	८ २४ १ ४१	७२२ २०	३ १५ २४ २८	३१ ४४	६ २० ५७ ३२	७ ५५	४ ० २५ २	६ ३ ३४ १६	३३ ३६	११ १२ ५ ४६	१० २ २७ ३८
८	चं	९ ६ ७ १८	७२६ ३२	३ १५ ५६ १२	३१ ४४	६ २१ ५ २८	७ ५५	४ ० ३४ २६	६ ३ ० ४०	३३ ३६	११ १२ १ ५७	१० २ २४ २७
९	मं	९ १८ ११ २३	७३४ ४१	३ १६ २७ ५७	३१ ४४	७ २१ १३ २३	६ ३१	४ ० ४३ ५१	६ २ २६ ३९	३३ ३५	११ ११ ५८ ७	१० २ २१ १६
१०	बु	१० ० ४१ ३१	७७७ १६	३ १६ ५९ ४१	३१ ४४	६ २१ ६ ५१	२३ २९	४ ० ५३ १५	६ १ ५३ २८	३३ ३५	११ ११ ५४ १७	१० २ १८ ५
११	गु	१० १३ १५ २८	७६० ५	३ १७ ३१ २५	३१ ४४	६ २० ४३ २२	२३ २९	४ १ २ ३९	६ १ १९ ४३	३३ ३५	११ ११ ५० २७	१० २ १४ ५५
१२	शु	१० २६ २ ५६	७७५ ५१	३ १८ ३ १०	३१ ४४	६ २० १९ ४३	२३ २९	४ १ ११ ४	६ ० ४६ १७	३३ ३६	११ ११ ४६ ३७	१० २ ११ ४४
१३	श	११ ९ ५ ५२	७९२ ४	३ १८ ३४ ५४	३१ ४४	६ १९ ५६ २३	२३ २९	४ १ १८ ३९	६ ० १२ ४१	३३ ३६	११ ११ ४२ ४७	१० २ ८ ३३
१४	र	११ २२ २४ ४७	८०८ ४	३ १९ ६ ३८	३१ ४४	६ १९ ३२ ५४	४० १७	४ १ २६ १५	५ २९ ३९ ५	३३ ३६	११ ११ ३९ १	१० २ ५ २२
१५	चं	० ४ ५९ ०	८२२ ९	३ १९ ३८ २३	३१ ४४	६ १८ ५२ ३७	५१ ३३	४ १ ३३ ५०	५ २९ ५ २९	३३ ३६	११ ११ ३५ १४	१० २ २ ११

२९ पं० आश्विनशुक्ल ८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३८५
अयनांश २४।१३।१७

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	३	६	४	६	११	१०	४
२९	२४	१५	२०	०	३	१२	२	२
४९	१	२४	४७	२५	३४	५	२७	२७
२९	४१	२८	३२	२	१६	४६	३८	३८
५९	७२२	३१	७	९	३३	३	३	३
४३	२०	४४	५५	२४	३५ व	४९ व	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि लग्न अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	तिथि लग्न अं.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ चं. घं.	मि.
कन्या	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	३०	६	२६	६	२२	६	१९	तुला	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१६	८	१२	८	८	८	५
तुला	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४६	८	४२	८	३८	८	३५	वृश्चिक	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२२
वृश्चिक	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५२	धनु	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८
धनु	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५८	मकर	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२६	२	२२	२	१८	२	१५
मकर	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५६	२	५२	२	४८	२	४५	कुम्भ	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५७	३	५३	३	४९	३	४६
कुम्भ	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	मीन	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१७	५	१४
लग्न अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		लग्न अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५५	५	५१	५	४७	५	४४	मेष	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	२	६	५८	६	५४	६	५१
मेष	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	वृष	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७
वृष	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	९	२४	९	२०	९	१७	मिथुन	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	१२	११	८	११	४	११	१
मिथुन	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४२	११	३८	११	३४	११	३१	कर्क	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	३०	१	२६	१	२२	१	१९
कर्क	२	१५	२	११	२	७	२	३	२	०	१	५६	१	५२	१	४९	सिंह	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४४	३	४०	३	३६	३	३३
सिंह	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	३	कन्या	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५७	५	५३	५	४९	५	४६

३० पं० आश्विनशुक्ल १५ सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३३९३
अयनांश २४।१३।१८

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	३	६	४	५	११	१०	४
७	४	१९	१८	१	२९	११	२	२
४८	५९	३८	५२	३३	५	३५	२	२
१९	०	२३	३७	५०	२९	१४	११	११
६०	८२२	३१	५१	७	३३	३	३	३
२	९	४४	३३ व	३५	३५ व	४९ व	११	११



❶ शैलपुत्रीदर्शन। महाराज अग्रसेन जयंती। प्रतिपदामतानुसार देवीआगमनगजफल— वर्षा। नाती द्वारा नाना का श्राद्ध। ⊙चित्रा में सूर्य ५९।२७(रा.शे.६।१०)। स्त्री.स्त्री.सू.सू.योग जम्बुकवाहन वातनाड़ी स्वामी रवि मेघ आच्छादित वायुवृष्टियोग। **शुक्रवृद्धत्वप्रारंभ**४५।९५(रा.१२।९९)। ❷ **शुक्र अस्त पश्चिम में** ४५।१०(रा.१२।१९)। रवियोगसर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.३।४५ तक। ❸ प्रथम चरण मूल में सरस्वती आवाहन। बङ्गमतानुसार देवी आगमनदोलाफल—मरण। **दुर्गाषष्ठी ६**। **तपषष्ठी६**। रवियोग प्रा.६।२२ से। ❹ **महानिशापूजा** ५३।५५(रा.११।३६ से) ४५।२१(रा.१२।३६ तक)। दि.११।३३ से **उ.षा.सरस्वती बलिदान**। *समस्त अष्टमी तिथि में श्रीभवानीअन्नपूर्णा परिक्रमा।* ⊙**सं.तुला में सूर्य** १०।३४(दि.१०।२०)। मु.३०सामान्य। पूर्व तथा बाद की १० घटी पुण्य। आज दिन में सूर्योदय उपरांत संक्रान्ति का पुण्यकाल। दीपतिल गोरसादि का दान। गोदावरी में स्नान। **दक्षिणगोल**। **कावेरीसंक्रमण**(कूर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.११।३३ से। ❺ चण्डा देवी का पूजन कर अगले दिन तिथि के अंत में बलि(महाबलिदान)करें। **मन्वादि ९**। **सिद्धिदात्री देवी दर्शन**। श्रवण में सरस्वती विसर्जन। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.२।० से। यायीजययोग प्रा.६।५३ से। ❻ नगर सीमा लंघन पूर्व जयन्तीग्रहण। नीलकण्ठदर्शन शमीपूजन। अपराजितापूजन। **विजययात्रा**। **दुर्गाविसर्जन**। विर्सजनपश्चात शाबरोत्सव(वनवासी नृत्य)। **देवीका प्रस्थान चरणायुधफल—मरण**। सायं **बौद्धावतार १०**। श्रवणयोग में राजाओं का पट्टाभिषेकयोग्य **विजयादशमी १०**। **त्रिविक्रमआरंभ** (केरल)। रवियोग समस्त दिन। ❼ यायीजययोग दि.११।५ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.७।५४ से। **पंचक समाप्त** रा.७।५४।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.४ बुध रा.३।५५ से। ति.७ शनि दि.८।५८ तक। **रेवती/अश्विनी** ति.१३शनि रा.८।८ उ.। ति.१५सोम रा.७।१६ तक। **पञ्चक विचार-ति.९** मंगल रा.शे.५।० से। ति.१४ रवि रा.७।५४ तक।

ग्रहों का सञ्चार।। **भौम**-पुष्य। ति.९ मंगल श्लेषा २२।४८ (दि.३।२७)॥ **बुध**-स्वाती। ति.४ बुध विशाखा ३३।१० (रा.७।३१)॥ ति.९ मंगल वक्री ३२।५४ (रा.७।३०)। ति.१२ शुक्र स्वाती ५०।४६ (रा.२।४०)॥ **गुरु**-श्लेषा ४ चरण। ति.५ गुरु मघा सिंह में १ चरण १९।५८ (दि.२।२१)॥ **वक्रीशुक्र**-स्वाती। ति.२ सोम चित्रा २८।१७ (सा.५।३३)॥ ति.१३ शनि कन्या २२।३९ (दि.३।२७)॥ **शनि**-उ.भा.३ चरण॥ **राहु**-धनिष्ठा ३ चरण॥ **केतु**-मघा १ चरण॥

आश्विन शुक्ल पक्ष विचार-८ तिथि की वृद्धि हो रही है अतएव पक्ष सोलह दिनों का है। आश्विन शुक्ल नवमी मंगलवारी हो कपास, उर्द आदि का संग्रह लाभप्रद है। दो ग्रहों के वक्री होने से शासकों में क्षोभ की वृद्धि हो। आश्विन शुक्ल पक्ष आद्याप्रकृति पराम्बा जगदम्बा जगज्जननी भगवती दुर्गा की आराधना के लिये अत्यन्त प्रशस्त काल माना जाता है। साथ ही मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के शौर्य गाथा से परिपूर्ण होने से भी सनातन धर्मावलम्बी जनों के लिये अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण पक्ष (दिन) है। इसे हम ☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ रवि चित्रा वैधृति। **ति.२** सोम स्वाती में सूर्यभोग्य है। **ति.३** मंगल विशाखा राहुवेध। **ति.४** बुध अनुराधा रिक्ताभद्रा है। **ति.५** गुरु ज्येष्ठा में भौमवेध। **ति.६** शुक्र ज्येष्ठा में पूर्वदोष। प्रा.६।२२ से मूल शिशुताम्बूलभक्षण बागवानी दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.७** शनि मूल शस्त्रनिर्माण **विपणि** मुहूर्त। **ति.८** रवि रा.६।५४ भद्रा बाद पू.षा. नावनिर्माण मुहूर्त। **ति.८** सोम प्रा.६।५३ रिक्तापूर्व उ.षा. शिशुताम्बूलभक्षण शिल्पविद्या धानकटाई मुहूर्त। **ति.९** मंगल श्रवण दि.९।३४ रिक्ता बाद पुंसवन सीमन्त नये अन्न का भक्षण रोगविमुक्तस्नान(९मी) वाहनक्रय मुहूर्त। **अभिजित्मुहूर्त** १३।१६ (दि.११।३८ से)१५।१० (दि.१२।२४ तक)। **अपराह्नकाल** १७।४ (दि.१।१० से)२२।४५ (दि.३।२६ तक)। **विजयमुहूर्त** १८।५८ (दि.१।५५ से)२०।५१ (दि.२।४० तक)। **ति.१०** बुध धनिष्ठा राहुयुति। **ति.११** गुरु दि.११।४२भद्रा बाद शत. जातकर्म नामकरण चौपायों का क्रय विक्रय धानरोपाई नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय शल्यक्रिया धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१२ शुक्र** पू.भा. धानरोपाई नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.१३** शनि उ.भा. शनियुति। **ति.१४** रवि रेवती रिक्तादोष। **ति.१५** सोम शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण औषधी सेवन **विपणि व्यापर** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त।

☛ **शारदीय नवरात्र** के रूप में घर-घर कलश स्थापना के साथ दुर्गा सप्तशती का पाठ करते-कराते हुए मनाते हैं। नवरात्र में कलश स्थापन कराकर दुर्गासप्तशती का पाठ स्वयं या पुरोहित (ब्राह्मण) द्वारा कराने से हर तरह की बाधाओं से मुक्ति के साथ ही धन-धान्य, यश, ऐश्वर्य एवं परिवार में सुख-शांति की प्राप्ति होती है। **११ अक्टूबर** को **शारदीय नवरात्र** का प्रारंभ होगा। **कलश स्थापन** प्रातःकाल से मध्याह्न तक करें। कुछ स्थानों पर सूर्योदय प्रतिपदा के वार से दुर्गा वाहन विचार करते हैं। इस वर्ष **माँ का आगमन हाथी** पर है। हाथी पर आना अच्छी वर्षा व समृद्धि का सूचक है। प्रतिपदा में देवी को केश पवित्र हेतु (चंदन लेप व त्रिफला) तथा कंघी अर्पण करें। आज नाती द्वारा नाना का श्राद्ध होगा। आज महाराज **अग्रसेन की जयंती** मनाई जायेगी। (शेष पृष्ठ ८ पर)

कार्तिककृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ५ कार्तिक से १८ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २७ अक्टूबर से ६ नवम्बर तक सन् २०२६ ई.।

शुक्र पूर्वोदय
ति. २बुध(२८-१०-२६)

श्रीसंवत् २०८३ शाक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल शरदऋतु ॥

दि.	मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
२८	२	१	मं	१	१	प्रा	८	२७	भरणी	२९	४५	रा	६	१८	सिद्धि	१९	१	दि	२	१	कौ	५	५	तै	३२	४५
२७	५९	२	बु	०/५९	२५/५१	प्रा	६/४	३५/२७	कृतिका	२६	३२	सा	५	१	व्यतीपात	१२	९	दि	११	१६	गर	०	२५	व	२७/५५	४५/५
२७	५५	४	गु	४९	२४	रा	२	११	रोहिणी	२२	४८	दि	३	३३	वरीयान	४/५२	४९/२१	प्रा	८/५	२१/१८	वव	२२	१६	बा	४९	२४
२७	५३	५	शु	४३	२७	रा	११	४९	मृगशिर	१८	४१	दि	१	५५	शिव	४९	२१	रा	२	११	कौ	१६	२६	तै	४३	२७
२७	४९	६	श	३७	२६	रा	९	२५	आर्द्रा	१४	२९	दि	१२	१४	सिद्ध	४१	३०	रा	११	३	गर	१०	२६	व	३७	२६
२७	४६	७	र	३१	३५	रा	७	६	पुनर्वसु	१०	२०	दि	१०	३६	साध्य	३३	४९	रा	७	५९	भ	४	३०	वव	३१/५८	३५/५१
२७	४३	८	चं	२६	६	सा	४	५५	पुष्य	६	२९	दि	९	४	शुभ	२६	२५	सा	५	३	कौ	२६	६	तै	५३	३८
२७	३९	९	मं	२१	९	दि	२	५६	श्लेषा	३	७	प्रा	७	४३	शुक्ल	१९	२८	दि	२	१६	गर	२१	९	व	४९	५
२७	३६	१०	बु	१७	१	दि	१	१८	मघा	०/५८	२५/९	प्रा	६/५	४०/५५	ब्रह्म	१३	६	दि	११	४४	भ	१७	१	वव	४५	२१
२७	३३	११	गु	१३	४२	दि	११	५८	उ.फा.	५७	४३	रा	५	३५	ऐन्द्र	७	२४	दि	९	२७	बा	१३	४२	कौ	४३	३६
२७	३०	१२	शु	११	३०	दि	११	७	हस्त	५८	१	रा	५	४३	वैधृति	२/५७	३३/४	प्रा	७/५	३२/५०	तै	११	३०	गर	४१	०
२७	२७	१३	श	१०	३१	दि	१०	४४	चित्रा	५९	३३	रा	६	२१	प्रीति	५५	४१	रा	४	४८	व	१०	३१	भ	४०	४०
२७	२४	१४	र	१०	४९	दि	१०	५१	स्वाती	६०	०	समस्त			आयुष्मान	५३	४४	रा	४	१	श	१०	४९	च	४१	३८
२७	२१	३०	चं	१२	२८	दि	११	३२	स्वाती	२	२१	प्रा	७	२९	सौभाग्य	५२	४७	रा	३	३९	ना	१२	२८	किं	४३	५०

ति.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि (नक्षत्र)	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य की घ.	प.	क्रान्ति द.	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.
१	मुसल	२७	१	१५	९	१०	५	वृष	४३।५६	६	२५	५	३५	६	८	४८	२१	६०	४	१२	३२	-	१८	६	२
२	सिद्धि	२८	२	१६	१०	११	६			६	२५	५	३५	६	९	४८	२५	६०	६	१२	५३	-	१८	६	५६
४	उत्पात	२९	३	१७	११	१२	७	मिथुन	५०।४४	६	२६	५	३४	६	१०	४८	३१	६०	८	१३	१३	-	१८	७	५७
५	मानस	३०	४	१८	१२	१३	८			६	२७	५	३३	६	११	४८	३९	६०	९	१३	३३	-	१८	९	३
६	मुद्गर	३१	५	१९	१३	१४	९	कर्क	५६।२२	६	२७	५	३३	६	१२	४८	४८	६०	११	१३	५३	-	१८	१०	११
७	ध्वज	नव	६	२०	१४	१५	१०			६	२८	५	३२	६	१३	४८	५९	६०	१४	१४	१३	-	१८	११	१८
८	धाता	२	७	२१	१५	१६	११			६	२९	५	३१	६	१४	४९	१३	६०	१५	१४	३१	-	१८	१२	२१
९	आनंद	३	८	२२	१६	१७	१२	सिंह	३।७	६	२९	५	३१	६	१५	४९	२८	६०	१८	१४	५०	-	१८	१	२१
१०	चर	४	९	२३	१७	१८	१३			६	३०	५	३०	६	१६	४९	४६	६०	१९	१५	९	-	१८	२	१९
११	मातङ्ग	५	१०	२४	१८	१९	१४	कन्या	१३।२२	६	३०	५	३०	६	१७	५०	५	६०	२१	१५	२८	-	१८	३	१५
१२	अमृत	६	११	२५	१९	२०	१५			६	३१	५	२९	६	१८	५०	२६	६०	२४	१५	४६	-	१८	४	११
१३	काण	७	१२	२६	२०	२१	१६	तुला	२८।४७	६	३२	५	२८	६	१९	५०	५०	६०	२५	१६	४	-	१८	५	७
१४	लुम्बक	८	१३	२७	२१	२२	१७			६	३२	५	२८	६	२०	५१	१५	६०	२६	१६	२२	-	१८	६	४
३०	छत्र	९	१४	२८	२२	२३	१८	वृश्चिक	५०।१९	६	३३	५	२७	६	२१	५१	४१	६०	३०	१६	३९	-	१८	-	-

- (१) **वृषराशि**(रा.११।५९)। कार्तिक में द्विदल (दाल) का त्याग। समस्त कार्तिकमास में दीपदान का प्रारंभ करें। कार्तिक में लक्ष तुलसी दल द्वारा पूजन से श्री हरि प्रसन्न होते है। **अशून्यशयन २व्रत** (चं.उ.रा.६।२)। ❶
- (२) भ.सा.५।३१से रा.शे.४।२७तक (स्वर्ग)। **शुक्रोदय पूर्व में** २।५५(प्रा.७।३५)। सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।१ तक। ❷ दहि व छाछ को वर्जित करें। यायीजययोग दि.११।१८ तक।
- (४) **मिथुनराशि**(रा.२।२८)। **करक(करवा चौथ) संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत** (चं.उ.रा.७।५७)। चन्द्र को अर्घ्यदान। प्रदोष **दशरथचतुर्थी** बङ्गाल।
- (५)
- (६) भ.रा.९।२५से (स्वर्ग–मृत्यु)। **कर्कराशि**(रा.शे.५।१०)। **श्रीस्कन्दषष्ठी। कोकीलाषष्ठी ६**(मिथिला)। **अशोक चन्दनषष्ठी**(मिथिला)। **शुक्रबाल निवृति** २।५०(प्रा.७।३५)। रवियोग दि.१२।१४ से।
- (७) भ.प्रा.८।१६तक (मृत्युलोक)। **नवम्बर ११**। प्रदोष **कालाष्टमी। अहोई व्रत**(पश्चिम प्रसिद्ध)। चन्द्रोदयव्यापिनीग्राह्य(चं.उ.रा.११।१८)। रवियोगयायीजययोग दि.१०।३६ तक। सर्वार्थसिद्धिपुष्करयोग दि.१०।३६तक।
- (८) **कराष्टमी**(महाराष्ट्र)। **श्रीराधाष्टमी**। अरुणोदय में मथुरा के श्रीराधाकुण्ड में स्नान। यायीजययोग सा.४।५५ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।४ तक।
- (९) भ.रा.२।७ से (मृत्युलोक)। **सिंहराशि**(प्रा.७।४३)। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.७।४३ तक।
- (१०) भ.दि.१।१८तक (मृत्युलोक)। ❹ हाथ में उल्का (मशाल) लेकर पितरों का मार्गदर्शन करें। गोत्रिरात्रनिवृत्ति। प्रदोष **केथरगौरीव्रत**(द.भा.)।
- (११) **कन्याराशि**(दि.११।५१)। **रम्भाएकादशी व्रत सबका**। गोधूलि व्याप्त द्वादशी में **गोवत्सद्वादशी**। बछड़े सहित दुधारु गाय का पूजन। *आज भोजन विशेष–तेल तथा बटलोही का पकाया गौ दूध,घी।* ❷
- (१२) **प्रदोष १२ व्रत**। प्रदोष में **धनत्रयोदशी (धनतेरस)। यम को दीपदान**। प्रदोष में मृत्यु नाश हेतु यमराज को गृहद्वार पर चतुर्वर्ति नवदीप का दान। गोत्रिरात्रयमपञ्चकयोग प्रारंभ।
- (१३) भ.दि.१०।४८से रा.१०।४८तक (पाताल)। **तुलाराशि**(रा.६।३)। **मासशिवरात्रि १३व्रत। धन्वन्तरि रिजयन्ती। कामेश्वरी जयन्ती। नरक चतुर्दशी**(चं.उ.रा.५।७)। चन्द्रोदय में १४ योग से जुते खेत की ❸
- (१४) **श्राद्ध ३०**। प्रदोष **दीपावली ३०**। लक्ष्मी इन्द्र कुबेरादि पूजन। सायं देवालयो में दीपदान। प्रातःयमतर्पण। प्रात **हनुमद्दर्शन**। निशिथ में **महाकालीपूजा**। रात्रि शेष रहते दरिद्रानिस्सारण। गोत्रिरात्र निवृत्ति। ❹
- (३०) **वृश्चिकराशि**(रा.२।४१)। **सोमवतीअमावस्या ३०**। स्नानदान हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष व सुख। मध्याह्न दिन ११।३२ से प्रतिपदा में **अन्नकूट**। काशीसे अन्यत्र **गोवर्द्धनपूजा**। ❺

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		भौम रा.	अं.	क.	वि.	गति		वक्रीबुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		गुरु रा.	अं.	क.	वि.	वक्रीशुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		वक्रीशनि रा.	अं.	क.	वि.	राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	मं	०	१९	४६	३४	८३३	४८	३	२०	१०	७	२७	४५	६	१८	१	३	५१	३३	४	१	४१	२५	५	२८	३१	५४	३३	३६	११	११	३१	२७	१०	१	५९	१
२	बु	१	३	४६	११	८४	१९	३	२०	३७	४३	२७	१	६	१७	९	३०	५१	३३	४	१	४९	१	५	२७	५८	१८	३३	३६	११	११	२७	४०	१०	१	५५	५०
४	गु	१	१७	५५	५०	८५३	४	३	२१	४	५५	२७	१	६	१६	१७	५७	५१	३३	४	१	५६	३६	५	२७	२४	४२	३३	३६	११	११	२३	५३	१०	१	५२	३९
५	शु	२	२	१२	३२	८५८	५५	३	२१	३१	५६	२७	१	६	१५	२६	२३	५१	३३	४	२	४	११	५	२६	५१	६	३३	३६	११	११	२०	६	१०	१	४९	२८
६	श	२	१६	३२	२१	८६०	१२	३	२१	५८	५८	२७	१	६	१४	३४	५०	५१	३३	४	२	११	४७	५	२६	१७	३०	३८	३०	११	११	१६	३०	१०	१	४६	१७
७	र	३	०	५१	५९	८५९	२६	३	२२	२५	५९	२७	१	६	१३	४३	१६	५१	३३	४	२	१९	२२	५	२५	३९	१	८	५६	११	११	१३	५२	१०	१	४३	६
८	चं	३	१५	७	३८	८५४	५१	३	२२	५३	१	२७	१	६	१२	५१	४३	५१	३३	४	२	२६	५८	५	२५	३०	५	८	५६	११	११	११	१४	१०	१	३९	५६
९	मं	३	२९	१५	५८	८४७	३३	३	२३	२०	२	२७	१	६	१२	०	१०	५१	३३	४	२	३४	३५	५	२५	२१	९	८	५६	११	११	८	३६	१०	१	३६	४५
१०	बु	४	१३	१४	११	८३७	४१	३	२३	४७	३	२७	१	६	११	८	३६	२५	२८	४	२	४२	१३	५	२५	१२	१३	८	५६	११	११	५	५७	१०	१	३३	३४
११	गु	४	२६	५९	२३	८२५	२९	३	२४	१४	५	२७	१	६	१०	४३	९	२३	३६	४	२	४९	५२	५	२५	३	१७	८	५६	११	११	३	१९	१०	१	३०	२३
१२	शु	५	९	३०	१८	८१६	१	३	२४	४१	६	२७	१	६	१०	१९	३३	२३	४२	४	२	५७	३०	५	२४	५४	२१	८	५६	११	११	०	४१	१०	१	२७	१२
१३	श	५	२३	४५	४७	८०३	३	३	२५	८	८	२७	१	६	९	५५	५१	२३	४२	४	३	५	८	५	२४	४५	२५	८	५६	११	१०	५८	३	१०	१	२४	२
१४	र	६	६	४५	५७	७९४	२	३	२५	३५	९	२७	१	६	९	३२	१०	२१	४३	४	३	१२	४५	५	२४	३६	२९	८	५६	११	१०	५५	२४	१०	१	२०	५१
३०	चं	६	२०	५	४४	७६४	११	३	२६	२	११	२७	१	मा	९	१०	२७	०	४२	४	३	१८	१२	५	२४	२७	३३	८	५६	११	१०	५२	४७	१०	१	१७	४०

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-श्लेषा में।। **वक्रीबुध**-स्वाती। **ति.**३० सोम मार्गी ४४।१८ (रा.१२।१६)।। **गुरु-ति.**३० सोम मघा २ चरण १९।४३ (दि.२।२६)।। **वक्रीशुक्र**-चित्रा।। **शनि**-उ.भा.३ चरण।। **राहु**-धनिष्ठा ३ चरण।। **केतु**-मघा १ चरण।।

कार्तिक कृष्ण पक्ष विचार-इस पक्ष में ३ तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिन का है। कार्तिक मास में दाल का सेवन न करे तथा समस्त कार्तिक मास में दीपदान करें। कार्तिक मास में लक्ष तुलसीदल (पत्र) द्वारा विष्णुपूजन से प्रत्येक पत्र पर मोती अर्पण सदृश फल की प्राप्ति होती है। **२७ अक्टूबर को अशून्यशयन व्रत** किया जायेगा। **२९ अक्टूबर को संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी करवा चौथ व्रत** होगा। आज चन्द्रोदय रात ७।५७ पर अर्घ्य दिया जायेगा। काशी की अत्यन्त प्रसिद्ध चेतगंज की **नक्कटैया लीला** विविध लाग-विमान के साथ आज मनाई जायेगी। ☛

३१ पं० कार्तिककृष्ण ८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह इगण ३४००
अयनांश २४।१३।१९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	३	६	४	५	११	१०	४
१४	१५	२२	१२	२	२५	११	१	१
४९	७	५३	५१	२६	३०	११	३९	३९
१३	३८	१	४३	५८	५	१४	५६	५६
६०	८५४	२७	५१	८	८	२	३	३
१५	५१	१	३३	३७	५६	३८	११	११
			व		व	व		



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	३० चं. घं.	मि.
तुला	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	१०
वृश्चिक	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२७
धनु	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३३
मकर	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	२०
कुम्भ	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५१
मीन	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१९
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६
वृष	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५२
मिथुन	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	६
कर्क	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२४
सिंह	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३८
कन्या	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५१

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ मंगल भरणी में केतुवेध। **ति.**२ बुध सा.५।३१ भद्रापूर्व दि.११।१६ व्यतिपात बाद कृतिका में धानकटाई मुहूर्त। **ति.**४ गुरु रोहिणी में रिक्तादोष। **ति.**५ शुक्र मृग. पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग बागवानी **विपणि व्यापार गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.**६ शनि रा.९।२५ भद्रापूर्व आर्द्रा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.**७ रवि प्रा.८।१६ भद्रा बाद पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीन वस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायो का क्रय विक्रय **कर्क के चन्द्र उत्तरदिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी **सेवन** नावनिर्माण वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.**८ सोम पुष्य भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है।। **ति.**९ मंगल श्लेषा भौमयुति। **ति.१०** बुध दि.१।१८ भद्रा बाद मघा दवँरी वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.**११ गुरु दि.९।२७ वैधृतिपूर्व उ.फा. पुंसवन सीमन्त **जातकर्म** नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना दोलारोहण सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग **सौभाग्यवती** को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण बागवानी दवँरी धानरोपाई **विपणि** धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.**१२ शुक्र हस्त शनिवेध। **पश्चात मासान्तादि दोष।**

३२ पं० कार्तिककृष्ण ३०सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह इगण ३४०७
अयनांश २४।१३।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	३	६	४	५	११	१०	४
२१	२०	२६	९	३	२४	१०	१	१
५१	५	२	१०	१८	२७	५२	१७	१७
४१	४४	११	२७	१२	३३	४७	४०	४०
६०	७६४	२७	७	५	८	२	३	३
३०	११	१	४२	२७	५६	३५	११	११
			मा		व	व		



❶ शय्यास्थित श्रीलक्ष्मीसहित विष्णुपूजन से अखण्डन तथा दाम्पत्य में सुख प्राप्ति। **प्रार्थना**– [illegible] *भर्तांभार्या समुद्भवमनानुवर्ति। यथा दुख दाम्पत्यानि तथा कुरु।* सर्वार्थसिद्धियोग रा.६।१८से। ❸ मिट्टी से युक्त आपामार्ग (ऊंगा)की शाखा को लोटे मे तीन बार घुमाकर साभ्यङ्ग(तेललेपन) स्नान। प्रातःयम को तर्पण। मेषलग्न सायं ४।२६ से **हनुमत्जन्म**। ⊙**विशाखा में सूर्य** ९।५(दि.१०।१०)। यायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.६।२१ से। ❺ "सोमवती अमावस्या को पीपलवृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करके विधान पूर्वक सुर्यसोपचार पूजनकर स्त्रीयो को सौभाग्य वृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिये।" **महावीरनिर्वाण दिवस**(जैन)। **बलिप्रतिपद**। रात्रि **बलिपूजा**। अपराह्न गोपूजन। सायं गोक्रीडा। रात्रि सर्पबलि। मार्गपालीबंधन(बंदनवार)अल्पाह्न से अशोक के पत्तो का बंदरवार लगायें रस्सीखींच प्रतियोगिता करें।

मूलविचार-श्लेषा/ मघा ति.८ सोम दि.९।४ से। **ति.**१० बुध प्रा.६।४० तक।

☛ **१ नवम्बर** को **अहोई अष्टमी व्रत** चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में मनायी जायेगी। **२ नवम्बर राधाष्टमी व्रत** एवं **राधा जयन्ती** मनायी जायेगी। अरुणोदय मे मथुरा के राधाकुण्ड मे स्नान करने से पुण्य लाभ होता है। **५नवम्बर** को **रम्भा एकादशी व्रत** सबका पापमुक्ति तथा सुखी जीवन हेतु किया जायेगा। आज **गोवत्स द्वादशी** को दुधारु गाय का बछड़े सहित पूजन करें। **६ नवम्बर** आज **धनतेरस** (यम से संबंधित), आज मृत्यु नाश हेतु सायं काल से यम के लिये गृहद्वार पर चार बत्तीयो वाला दीप जलायें। **७ नवम्बर** को **मासशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। आज ही **धन्वन्तरि जयन्ती** तथा **नरकचतुर्दशी** (चन्द्रोदय ग्राह्य) होगी। चन्द्रोदय चतुर्दशी में १४ योग से जुते खेत की मिट्टी से युक्त अपामार्ग की शाखा को लोटे में तीन बार घुमाकर साभ्यङ्ग स्नान करें। **विशेष**- आज से दिपावली तक **पञ्चकयोग** का प्रारंभ है। **हनुमत् जयन्ती** सायं मेषलग्न(सा.४।२६) में मनायी जायेगी। **८ नवम्बर को श्राद्ध की अमावस्या** तथा प्रदोष में **दीपावली** का उत्सव मनाया जायेगा। जिसमें प्रदोष काल तथा वृष लग्न की प्रधानता है। आज निशिथ में **कालीपूजा** भी सम्पन्न होगी। रात्रि शेष में वंशपात्र (सूप) बजाकर दरिद्रता का निःसारण किया जाता है। **९ नवम्बर** को आज **स्नान-दान की सोमवती अमावस्या** है। मध्याह्न प्रतिपदा में **अन्नकूट** पर्व होगा। आज काशी से अन्यत्र **गोवर्धन पूजा** भी संपन्न होगी। अपराह्न में गोपूजा रात्रि में बलि पूजन आदि कृत्य होंगे।

कार्त्तिकशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १९ कार्तिक से ३ अग्रहायण तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक १० नवम्बर से २४ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल शरदऋतु॥

दि.	मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
२७	१८	१	मं	१५	१२	दि	१२	३८	विशाखा	६	१९	दि	९	५	शोभन	५२	४१	रा	३	३८	बव	१५	१२	बा	४७	११	श्रीवत्स
२७	१५	२	बु	१९	९	दि	२	१३	अनुराधा	११	२४	दि	११	७	अतिगंड	५३	२०	रा	३	५४	कौ	१९	९	तै	५१	३१	सौम्य
२७	१२	३	गु	२३	५२	सा	४	७	ज्येष्ठा	१७	१६	दि	१	२९	सुकर्मा	५४	२६	रा	४	२१	गर	२३	५२	व	५६	३०	कालदण्ड
२७	९	४	शु	२९	७	रा	६	१३	मूल	२३	४०	दि	४	२	धृति	५५	४९	रा	४	५४	भ	२९	७	बव	६०	०	स्थिर
२७	६	५	श	३४	२७	रा	८	२२	पू.षा.	३०	११	रा	६	४०	शूल	५७	६	रा	५	२६	बव	१	४७	बा	३४	२७	मातंङ्ग
२७	३	६	र	३९	२४	रा	१०	२९	उ.षा.	३६	२९	रा	९	८	गंड	५८	०	रा	५	४८	कौ	६	५६	तै	३९	२४	अमृत
२७	०	७	चं	४३	४०	रा	१२	५	श्रवण	४१	५२	रा	११	२१	वृद्धि	५८	१९	रा	५	५६	गर	११	३२	व	४३	४०	सिद्धि
२६	५५	८	मं	४६	५१	रा	१	२१	धनिष्ठा	४६	२५	रा	१	१०	ध्रुव	५७	४४	रा	५	४२	भ	१५	१५	बव	४६	५१	उत्पात
२६	५२	९	बु	४८	५९	रा	२	१३	शतभिष	४९	५२	रा	२	३४	व्याघात	५६	२२	रा	५	१०	बा	१७	५५	कौ	४८	५९	मानस
२६	५०	१०	गु	४९	४२	रा	२	३०	पू.भा.	५२	१	रा	३	२६	हर्षण	५३	५५	रा	४	१२	तै	१९	२१	गर	४९	४२	मुद्गर
२६	४७	११	शु	४९	९	रा	२	१८	उ.भा.	५२	५५	रा	३	४९	वज्र	५०	२९	रा	२	५०	व	१९	२६	भ	४९	९	ध्वज
२६	४५	१२	श	४७	२४	रा	१	३६	रेवती	५२	३७	रा	३	४१	सिद्धि	४६	३	रा	१	४	बव	१८	१६	बा	४७	२४	धाता
२६	४२	१३	र	४४	३५	रा	१२	२९	अश्विनी	५१	१३	रा	३	९	व्यतीपात	४०	४८	रा	१०	५९	कौ	१६	०	तै	४४	३५	आनंद
२६	४०	१४	चं	४०	४८	रा	१०	५९	भरणी	४९	१	रा	२	१६	वरीयान	३४	४६	रा	८	३४	गर	१२	४१	व	४०	४८	चर
२६	३९	१५	मं	३६	९	रा	९	८	कृत्तिका	४५	५७	रा	१	३	परिघ	२८	३	रा	५	५४	भ	८	२८	बव	३६	९	गद

ति.	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति व	-	रे. अं. -	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.
१	१०	१५	२९	२३	२४	१९			६	३४	५	२६	६	२२	५२	११	६०	३१	१६	५६	-	१८	५	४१
२	११	१६	१	२४	२५	२०			६	३४	५	२६	६	२३	५२	४२	६०	३३	१७	१३	-	१८	६	२७
३	१२	१७	२	२५	२६	२१	धनु	१७।१६	६	३५	५	२५	६	२४	५३	१५	६०	३४	१७	३०	-	१८	७	१८
४	१३	१८	३	२६	२७	२२			६	३५	५	२५	६	२५	५३	४९	६०	३६	१७	४६	-	१८	८	११
५	१४	१९	४	२७	२८	२३			६	३६	५	२४	६	२६	५४	२५	६०	३८	१८	२	-	१८	९	६
६	१५	२०	५	२८	२९	२४	मकर	४६।४३	६	३६	५	२४	६	२७	५५	३	६०	४०	१८	१८	-	१८	१०	१
७	१६	२१	६	२९	३०	२५			६	३७	५	२३	६	२८	५५	४३	६०	४०	१८	३३	-	१८	१०	५५
८	१७	२२	७	३०	१	२६	कुम्भ	१४।८	६	३७	५	२३	६	२९	५६	२३	६०	४३	१८	४८	-	१८	११	४९
९	१८	२३	८	१	२	२७			६	३८	५	२२	७	०	५७	६	६०	४५	१९	३	-	१७	१२	४३
१०	१९	२४	९	२	३	२८	मीन	३६।२८	६	३८	५	२२	७	१	५७	५१	६०	४६	१९	१८	-	१७	१	३८
११	२०	२५	१०	३	४	२९			६	३९	५	२१	७	२	५८	३७	६०	४८	१९	३२	-	१७	२	३५
१२	२१	२६	११	४	५	३०	मेष	५२।३७	६	३९	५	२१	७	३	५९	२५	६०	५०	१९	४५	-	१६	३	३६
१३	२२	२७	१२	५	६	१			६	४०	५	२०	७	५	०	१५	६०	५१	१९	५९	-	१६	४	४१
१४	२३	२८	१३	६	७	२			६	४०	५	२०	७	६	१	६	६०	५१	२०	१२	-	१६	५	५०
१५	२४	२९	१४	७	८	३	वृष	३।१५	६	४१	५	१९	७	७	१	५७	६०	५२	२०	२४	-	१६	-	-

१. ◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग शुभिक्षकर। मु.३० सामान्य। दिन १२।३८ से द्वितीया तिथि में **काशी में गोवर्द्धनपूजा। भातृद्वितीया**(भइयादूज)आज बहन के घर भोजनवस्त्रादि से ❶
२. मु.जमादिउस्सानी ६ हि.१४४८। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.११।७ तक।
३. भ.रा.शे.५।११से (पाताल)। धनुराशि(दि.१।२९)। **आलोचनागौरी व्रत**। रवियोग दि.१।२९ से। ❺सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.३।४९ से।
४. भ.रा.६।१३तक (पाताल)। **वैना. श्रीगणेश४ व्रत**। तीन दिनों का **श्रीसूर्यषष्ठीव्रत प्रारंभ**। नागचतुर्थी। रवियोग दि.४।२ तक पश्चातस्थायीजययोग।
५. **श्रीसूर्यषष्ठी व्रत** द्वितीयदिन। ज्ञानपञ्चमी जैन। रवियोगयायीजययोग रा.६।४० से।
६. मकरराशि(रा.१।१७)। **स्कन्दषष्ठी व्रत। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत(डालाछठ)**–बिहार। सायंकालीन सूर्य को अर्घ्यदान। रात्रिशेष अरुणोदय(उदितसूर्य) में द्वितीय अर्घ्यदान। ❷
७. भ.रा.१२।५से (पाताल)। **सूर्यषष्ठीव्रतका पारण। कल्पादि ७**। यायीजययोग रा.११।२१ से पूर्व मेंसर्वार्थसिद्धियोग।
८. भ.दि.१२।४३तक (पाताल)। **कुम्भराशि**(दि.१२।१६)। **पंचक आरंभ** दि.१२।१६ से। **नेपाली मार्गशीर्ष। गोपाष्टमी**। गायों को अलंकृत कर पूजन। ❸
९. **सौरमार्गशीर्ष। अक्षयनवमी**। कूष्माण्ड में रत्नादि का दान। आवला वृक्ष के नीचे भोजन। **कृतयुगादि ९**। नवमी में अयोध्या मथुरा परिक्रमा। **श्रीविष्णुत्रिरात्रारंभ**। ❹
१०. मीनराशि(रा.९।१३)। **श्रीकृष्ण विजयोत्सव**(ब्रज)। रवियोग रा.३।२६ तक। ❻**मन्वादि १२। नारायण द्वादशी। वृन्दावनद्वादशी। गरुडद्वादशी**(उड़ीसा)।
११. भ.दि.२।२५से रा.२।१८तक (मृत्युलोक)। **प्रबोधिनीएकादशी११व्रत सबका**। दिन २।२५ भद्रा पूर्व ईखरसपान। **तुलसीविवाह। भीष्मपञ्चकप्रारंभ। ⊙अनुराधा में सूर्य** २१।६(दि.३।१५)। ❺
१२. मेषराशि(रा.३।४१)। **पंचक समाप्त** रा.३।४१तक। दि.९।१९ से **एकादशी व्रत का पारण। प्रबोधन उत्सव। चातुर्मास्यव्रत समाप्ति**। दुग्धदान। द्विदल(दाल)त्याग कर व्रतारंभ। श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्ति। ❻
१३. रा.अग्रहायण दि.३०। **प्रदोष १३ व्रत**। रात्रिव्यापिनि **पाषाण चतुर्दशी**(उड़ीसा)। **⊙सायन धनु में सूर्य** ४७।२५(रा.१।३८)। रवियोग रा.३।९ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
१४. भ.रा.१०।५९से (स्वर्ग)। **श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिन**। प्रदोष निशिथ में **श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी १४ व्रत**। अरुणोदय में **श्रीमहाविष्णुपूजा**। मणिकर्णिका स्नान। श्रीनमंदिर को तुलसी समर्पण। **रासयात्रा**(निशिथ)। ❼
१५. भ.दि.१०।८ तक (स्वर्ग)। **वृषराशि**(प्रा.७।५९)। **कार्तिकपूर्णिमा १५**। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। कार्तिकव्रत नियमादि की समाप्ति। कार्तिक व्रतपारण। **कार्त्तिकेय दर्शन। मन्वादि१५। गुरुनानकदेव जयन्ती। त्रिपुरोत्सव**। ❽

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.११ शुक्र रा.शे.३।४९से रेवती में रे.६ ल.७ (रा.शे.४।६से) इष्ट ५प्र.व.वि.९॥ (६वां चंद्र अशुभ)॥

ति.१२ शनि रा.१।४ व्यतिपात पूर्व रेवती में रे.६ **दिन ल.१०**(दि.१०।४४ से) इष्ट६ प्र.व.वि.१३॥ (८वां भौम अशुभ)॥ या **दिन ल.२**(सा.५।७ से)इष्ट ५ प्र.वि.वि.१३॥ (७वां सू.दा.) या **ल.३** (सा.७।३ से)इष्ट ६ प्र.व. वि.१३॥

ति.१५ मंगल रा.१।३से रोहिणी में रे.९ ल.७ (रा.३।५०से) इष्ट ५ प्र.व.वि.९॥ (८वां चन्द्र अशुभ)

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		गुरु				वक्रीशुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	मं	७	१	१	०	७५०	२३	३	२६	२९	१२	२७	१	६	९	१८	९	७	२५	४	३	२३	४०	५	२४	१८	३७	८	५६	११	१०	५०	१२	१०	१	१४	२९
२	बु	७	१४	११	५२	७३७	३०	३	२६	५६	१४	२७	१	६	९	२५	३४	७	२५	४	३	२९	८	५	२४	९	४१	८	५६	११	१०	४७	३७	१०	१	११	१८
३	गु	७	२६	३०	१७	७२८	४४	३	२७	२३	१५	२७	१	६	९	३२	५९	७	२५	४	३	३४	३५	५	२४	०	४५	८	५६	११	१०	४५	१	१०	१	८	८
४	शु	८	८	३४	५२	७२२	५३	३	२७	५०	१७	२७	७	६	९	४०	२४	१२	२	४	३	४०	३	५	२३	५१	४८	८	५६	११	१०	४२	२६	१०	१	४	५७
५	श	८	२०	३६	५९	७२१	३७	३	२८	१७	२४	२७	३९	६	९	५२	२५	३४	४२	४	३	४५	३१	५	२४	७	५२	३०	१७	११	१०	३९	५१	१०	१	१	४६
६	र	९	१	४०	३०	७२५	२६	३	२८	४५	४	२७	३९	६	१०	२७	७	३४	३४	४	३	५०	५८	५	२४	३८	९	३०	१७	११	१०	३७	१६	१०	०	५८	३५
७	चं	९	१४	४८	४७	७३२	३८	३	२९	१२	४४	२७	३९	६	११	१	४१	३४	३४	४	३	५६	२६	५	२५	८	२६	३०	१७	११	१०	३५	११	१०	०	५५	२४
८	मं	९	२७	४	४४	७४३	३६	३	२९	४०	२३	२७	३९	६	११	३६	१५	३४	३४	४	४	१	५४	५	२५	३८	४३	३०	४५	११	१०	३४	१५	१०	०	५२	१४
९	बु	१०	९	३१	१६	७५६	३०	४	०	८	३	२७	३९	६	१२	१०	४९	३९	२३	४	४	७	२२	५	२६	९	२७	३०	४९	११	१०	३३	११	१०	०	४९	३
१०	गु	१०	२२	१०	२६	७७२	१९	४	०	३५	४३	२७	३९	६	१२	४०	११	५४	२४	४	४	१२	५०	५	२६	४०	१६	३०	४९	११	१०	३२	७	१०	०	४५	५२
११	शु	११	४	४	५२	७८८	१०	४	१	३	२३	२७	३९	६	१३	४४	३६	५४	२४	४	४	१८	२१	५	२७	११	५	३०	४९	११	१०	३१	३	१०	०	४२	४१
१२	श	११	१८	१४	५५	८०४	१	४	१	३१	३	२७	३९	६	१४	३९	०	५४	२४	४	४	२३	५३	५	२७	४१	५३	३०	४९	११	१०	२९	५९	१०	०	३९	३०
१३	र	०	०	४०	४८	८१९	६	४	१	५८	४३	२७	३९	६	१५	३३	२४	५४	२४	४	४	२९	२५	५	२८	१२	४२	३०	४९	११	१०	२८	५६	१०	०	३६	२०
१४	चं	०	१५	२१	३४	८३०	२६	४	२	२६	२३	१९	३५	६	१६	२७	४९	५८	४१	४	४	३४	५६	५	२८	४३	३१	३०	४९	११	१०	२७	५२	१०	०	३३	९
१५	मं	०	२९	१४	२०	८४३	५	४	२	४५	५९	१९	४	६	१७	२६	२९	६१	२७	४	४	४०	२८	५	२९	१४	११	३०	४९	११	१०	२६	४८	१०	०	२९	५८

३३पं० कार्तिकशुक्ल ८ मंगल सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण३४१५ अयनांश२४।१३।२१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	३	६	४	५	११	१०	४
२९	२७	२९	११	४	२५	१०	०	०
५६	४	४०	३६	१	३८	३४	५२	५२
२३	४४	२३	१५	५४	४३	१५	१४	१४
६०	७४३	२७	३४	५	३०	१	३	३
४३	३६	३९	३४	२८	४५	५४	११	११
			मा		व	व		



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ चं. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ चं. घं.	मि.	१५ मं. घं.	मि.
तुला	७	६	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	वृश्चिक	८	५१	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६
वृश्चिक	९	२३	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	धनु	१०	५७	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२
धनु	११	२९	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	मकर	१२	४४	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९
मकर	१	१६	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	कुम्भ	२	१५	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०
कुम्भ	२	४७	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	मीन	३	४३	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८
मीन	४	१५	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	मेष	५	२०	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	५	५२	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	वृष	७	१६	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१
वृष	७	४८	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	मिथुन	९	३०	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५
मिथुन	१०	२	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	कर्क	११	४८	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३
कर्क	१२	२०	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	सिंह	२	२	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७
सिंह	२	३४	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	कन्या	४	१५	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०
कन्या	४	४७	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	तुला	६	३१	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ मंगल विशाखा सूर्ययुति। **ति.२** बुध अनुराधा **सूर्यभोग्य है। ति.३** गुरु ज्येष्ठा में भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से **अशुभ है।** । दि.१।२९से सा.४।७ रिक्तापूर्व मूल बागवानी दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन नांवनिर्माण **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.४** शुक्र सा.६।१३ रिक्ता बाद पू.षा. नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.५** शनि पू.षा. शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.६** रवि उ.षा. जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना सूतीकास्नान(७मी) नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण बागवानी शिल्पविद्या नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.७** सोम श्रवण जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन आभूषण निर्माण **पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा** दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान कूपनिर्माण(बोरिंग)** मुहूर्त। **ति.८** मंगल धनिष्ठा में राहुयुति। **ति.९** बुध शत.सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। । **ति.१०** गुरु पू.भा.धानरोपाई नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.११** शुक्र दि.२।२५ भद्रापूर्व उ.भा.शनियुति। **ति.१२** शनि रेवती कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण **जीर्णादिगृहप्रवेश(ल.११** दि.१२।३१ से ८वां शुक्र दान या **ल.१२** दि.२।२ से ८ वां बु.दा. या **ल.३** रा.७।३ से ४र्थ शु.दा.) **विपणि** मुहूर्त। **ति.१३** रवि रा.१०।५९ व्यतिपात बाद अश्विनी सूतीकास्नान मुहूर्त। **ति.१४** सोम भरणी में केतुवेध। **ति.१५** मंगल कृत्तिका में राहुवेध।

३४पं० कार्तिकशुक्ल १५मंगल सूर्योदय से स्पष्टग्रह घुगण ३४२२ अयनांश २४।१३।२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	४	६	४	५	११	१०	४
७	२९	२	१७	४	२९	१०	०	०
१	१४	४५	२६	४०	१४	२६	२९	२९
५७	२०	४९	२९	२८	११	४८	५८	५८
६०	८४३	१९	६९	४	३०	१	३	३
५२	५	४	२७	११	४९	१	११	११
			मा		व	व		



❶भगिनीपूजन। **यमद्वितीया२**। अपराह्न में यमुना स्नान कर यम को तर्पण। **यमपञ्चकनिवृत्ति। मत्स्याधार(दवात)पूजा**(बिहार)। दूतचित्रगुप्त सहित यमपूजा। प्रातः स्त्रीयों द्वारा नीराजन(आरती)। पूर्वाह्न द्यूतक्रीड़ा। अभ्यङ्गस्नान। **कालिदास जयंती। श्रीवीरसंवत् २०५३। नेपाली संवत् ११४७। गुर्जर नवसंवत् प्रारंभ २०८३।** ❷**नाड़ीषष्ठी**। रवियोग रा.९।४ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग। ❸**⊙सं.वृश्चिक में सूर्य**३।३४ (दि.८।३)। मु.३० सामान्य। पूर्व १६घटी पुण्य। दीपवस्त्रदान नर्मदा में स्नान। आज सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्यकाल। **हेमन्तऋतु। कार्तिक पूजा**(बङ्गाल)। रवियोग रा.१।१० से। ❹**स्वर्णमयी श्रीविष्णुमूर्ति तथा तुलसी संग पूजन द्वादशी में दान। श्रीजगद्धात्री पूजा** (बङ्गाल)। **अनलानवमी**(उड़ीसा)। **दुर्गानवमी ९। गौरीव्रत**। रवियोग समस्त दिन। ❼**चौमासी चौदस** (जैन)। **बड़ओसा** (उड़ीसा)। **भरणीदीप(द.भा.)**। रवियोग रा.२।१६ तक। ❽**काशी में देवदीपावली**। पुष्कर में त्रिपुर को दीपदान। सायं क्षीरसागरादि दान। **भीष्मपञ्चकनिवृत्ति। केदारव्रत**(उड़ीसा)। **रथयात्रा** (जैन)। **अन्नाभिषेक**(द.भा.)। **कृत्तिकादीपम**(द.भा.)। प्रदोष **वैखानसदीप। रानीलक्ष्मीबाई जयंती**। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।३ तक।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.२ बुध दि.११।७ से। **ति.४** शुक्र दि.४।२ तक। **रेवती/अश्विनी ति.११** शुक्र रा.३।४९से। **ति.१३** रवि रा.३।९ तक। **पञ्चक विचार-ति.८** मंगल दि.१२।१६से। **ति.१२** शनि रा.३।४१ तक।

भौमादि ग्रहों का सञ्चार।। भौम-श्लेषा में। ति.८ मंगल मघा सिंह में ४२।३२ (रा.११।३८)॥ **मार्गीबुध**-स्वाती॥ **गुरु**-मघा २ चरण॥ **वक्रीशुक्र**-चित्रा॥ **ति.५** शनि मार्गी १६।३७ (दि.१।१५) ॥ **शनि**-उ.भा.३ चरण॥ **राहु**-धनिष्ठा ३ चरण ॥ **केतु**-मघा १ चरण॥

कार्तिक शुक्ल पक्ष विचार- यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। कार्तिक अथवा मार्गशीर्ष में संक्रांति के दिन वर्षा हो पौष मास में महँगी तथा मध्यम मास में धान्यों की वृद्धि हो। **१० नवम्बर** को काशी में **गोवर्धन पूजा** मनाई जायेगी। आज ही अपराह्न में प्राप्त द्वितीया तिथि में **भइया दूज (भातृ द्वितीया)** है। आज के दिन भाई बहन के घर भोजन करे तथा वस्त्रादि प्रदान करें। **चित्रगुप्त पूजा, मत्स्याधार (दावात) पूजा, यम पूजा** होगी। **१३ नवम्बर** को **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी** व्रत किया जायेगा। आज काशी में तुलसीघाट पर विश्व प्रसिद्ध **नागनथैया** की कृष्ण लीला सम्पन्न होगी। आज से तीन दिनों तक चलने वाला वर्ष भर का सबसे लोकप्रिय श्रीसूर्यदेव का प्रसिद्ध पर्व सर्वत्र देश में ☛ विशेषकर बिहार-झारखण्ड में किया जाने वाला **डाला छठ (श्रीसूर्यषष्ठी व्रत)** का प्रारंभ होगा। **१४ नवम्बर** को डाला छठ दूसरे दिन का कृत्य होगा। **१५ नवम्बर** को **सायं अस्तगामी सूर्यदेव को छठ व्रत कर अर्घ्यदान** करें। पुनः **१६ नवम्बर** को रात्रि शेष रहते **अरुणोदय में भगवान् सूर्य को द्वितीय अर्घ्य दान** देकर **व्रत** पूर्ण किया जायेगा। इसके बाद **व्रत का पारण** करें। **१७ नवम्बर** को **गोपाष्टमी** का पर्व मनाया जायेगा। इसमें अलंकृत गौ को चारा-दाना खिलाकर परिक्रमा करनी चाहिए। **१८ नवम्बर** को **अक्षय नवमी** में आज कुष्माण्ड में रत्नादि का दान, आँवला वृक्ष के मूल में भोजन करना चाहिए। नवमी में अयोध्या मथुरा की प्रिक्रमा करें। आज से तीन दिनों तक विष्णुरात्रि प्रारंभ होगा। आज से तीन दिनों तक विष्णु की स्वर्णमयी प्रतिमा का पूजन तुलसीदल से करें। **२० नवम्बर** को **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत** सबका होगा। (शेष पृष्ठ ८ पर)

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ४ अग्रहायण से १७ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २५ नवम्बर से ८ दिसम्बर तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल हेमन्तऋतु॥

दि.	मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.
२६	३६	१	बु	३०	५४	रा	७	२	रोहिणी	४२	२०	रा	११	३६	शिव	२०	४८	दि	३	०	वा	३	३२	कौ	३० ५८	५४ ४	शुभ	२५	१	१५	८	९	४
२६	३५	२	गु	२५	१४	सा	४	४७	मृगशिर	३८	१६	रा	१०	०	सिद्ध	१३	१२	दि	११	५८	गर	२५	१४	व	५२	१७	मृत्यु	२६	२	१६	९	१०	५
२६	३१	३	शु	१९	२०	दि	२	२६	आर्द्रा	३४	५	रा	८	२०	साध्य	५ ५२	२४ ४	प्रा	८ ५	५१ ४०	भ	१९	२०	बव	४६	२२	पद्म	२७	३	१७	१०	११	६
२६	२९	४	श	१३	२४	दि	१२	३	पुनर्वसु	२९	५५	रा	६	४०	शुक्ल	४९	४०	रा	२	३४	वा	१३	२४	कौ	४०	३२	छत्र	२८	४	१८	११	१२	७
२६	२७	५	र	७	३९	दि	९	४६	पुष्य	२५	५९	सा	५	६	ब्रह्म	४२	६	रा	११	३३	तै	७	३९	गर	३४	५७	श्रीवत्स	२९	५	१९	१२	१३	८
२६	२५	६	चं	२ ५५	१८ ९	प्रा	६ ५	३७ ४०	श्लेषा	२२	२८	दि	३	४२	ऐन्द्र	३४	५४	रा	८	४०	व	२	१६	भ	२९ ५७	५० २४	सौम्य	३०	६	२०	१३	१४	९
२६	२४	८	मं	५३	२२	रा	४	४	मघा	१९	३५	दि	२	३४	वैधृति	२८	१६	रा	६	२	वा	२५	२३	कौ	५३	२२	कालदण्ड	दि	७	२१	१४	१५	१०
२६	२२	९	बु	५०	१२	रा	२	४८	पू.फा.	१७	३४	दि	१	४५	विष्कुंभ	२२	१९	सा	३	३९	तै	२१	४७	गर	५०	१२	स्थिर	२	८	२२	१५	१६	११
२६	२०	१०	गु	४८	७	रा	१	५८	उ.फा.	१६	२६	दि	१	१८	प्रीति	१७	१०	सा	१	३६	व	१९	९	भ	४८	७	मातङ्ग	३	९	२३	१६	१७	१२
२६	१८	११	शु	४७	१४	रा	१	३८	हस्त	१६	२७	दि	१	१९	आयुष्मान	१२	५३	सा	११	५४	बव	१७	४०	वा	४७	१४	अमृत	४	१०	२४	१७	१८	१३
२६	१७	१२	श	४७	४१	रा	१	४९	चित्रा	१७	३७	दि	१	४७	सौभाग्य	९	३४	सा	१०	३४	कौ	१७	२७	तै	४७	४१	काण	५	११	२५	१८	१९	१४
२६	१६	१३	र	४९	३०	रा	२	३३	स्वाती	२०	८	दि	२	४८	शोभन	७	१६	दि	९	३९	गर	१८	३६	व	४९	३०	लुम्बक	६	१२	२६	१९	२०	१५
२६	१४	१४	चं	५२	२५	रा	३	४२	विशाखा	२३	५२	सा	४	१७	अतिगंड	६	०	दि	९	९	भ	२०	५७	श	५२	२५	मित्र	७	१३	२७	२०	२१	१६
२६	१३	३०	मं	५६	३०	रा	५	२२	अनुराधा	२८	४१	रा	६	१४	सुकर्मा	५	३३	प्रा	८	५९	च	२१	२८	ना	५६	३०	वज्र	८	१४	२८	२१	२२	१७

ति.	चन्द्र राशि प्रवेश (नक्षत्र)	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द	-	रे. अ. -	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
१			६	४१	५	१९	७	८	२	४९	६०	५४	२०	३६	-	१५	५	४०	**मृत्युबाण** ५६।२०(रा.शे.५।२३ से)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।३६ तक।
२	मिथुन	१०।१८	६	४२	५	१८	७	९	३	४३	६०	५६	२०	४८	-	१५	६	४६	भ.रा.३।३७से (स्वर्ग)। **मिथुनराशि** (दि.१०।४९)। **मृत्युबाण** ५५।२५तक(रा.शे.४।५२)। यायीजययोग सा.४।४७ से।
३			६	४२	५	१८	७	१०	४	३९	६०	५७	२१	०	-	१५	७	५७	भ.दि.२।२६तक (स्वर्ग)। **संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत**। चन्द्रोदय (रा.७।५७)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।२० से।
४	कर्क	१५।५८	६	४२	५	१८	७	११	५	३६	६०	५९	२१	११	-	१४	९	७	**कर्कराशि** (दि.१।५)। **श्रीमनसादेवी शयन पञ्चमी**(रात्रिव्यापिनि)। यायीजययोग दि.१२।३ से।
५			६	४३	५	१७	७	१२	६	३५	६०	५९	२१	२१	-	१४	१०	१३	रवियोग सा.५।६ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।६ तक।
६	सिंह	२२।२८	६	४३	५	१७	७	१३	७	३४	६१	१	२१	३१	-	१३	११	१५	भ.प्रा.६।३७ से रा.६।३९ तक (मृत्युलोक)। **सिंहराशि** (दि.३।४२)। रवियोग दि.३।४२ तक। यायीजययोग प्रा.७।३७ से।
८			६	४४	५	१६	७	१४	८	३५	६१	१	२१	४१	-	१३	१२	१४	**दिसम्बर १२। श्रीभैरवाष्टमी व्रत**। श्रीभैरवउत्पत्ति दर्शनपूजन। *"आज कालभैरव हेतु पूजन तथा व्रत तथा अर्घ्य दें।* ❶
९	कन्या	३२।१७	६	४४	५	१६	७	१५	९	३६	६१	३	२१	५१	-	१३	१	११	**कन्याराशि** (रा.७।३९)। **काञ्ची अनला नवमी**(उड़ीसा)।
१०			६	४४	५	१६	७	१६	१०	३९	६१	५	२२	०	-	१२	२	६	भ.दि.२।२४से रा.१।५८तक (पाताल)। ⊙**ज्येष्ठा में सूर्य** २८।४९(सा.६।२६)।
११	तुला	४७।२	६	४५	५	१५	७	१७	११	४४	६१	६	२२	८	-	१२	३	२	**तुलाराशि** (रा.१।३३)। **उत्पन्ना एकादशी ११व्रत सबका**।
१२			६	४५	५	१५	७	१८	१२	५०	६१	७	२२	१६	-	१२	३	५८	**मृत्युबाण** ४६।२८(रा.१२।२६से)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।४७ से। द्विपुष्करयोग दि.१।४७ तक। ▼यमघंटयोग सा.४।१७ तक।
१३			६	४५	५	१५	७	१९	१३	५७	६१	८	२२	२४	-	११	४	५४	भ.रा.२।३३ से (पाताल)। **प्रदोष १३ व्रत**। **मृत्युबाण** ४५।२१(रा.११।४९) तक। यायीजययोग रा.२।३३ से।
१४	वृश्चिक	७।५६	६	४५	५	१५	७	२०	१५	५	६१	८	२२	३१	-	११	५	५१	भ.दि.३।८तक (पाताल—स्वर्ग)। **वृश्चिकराशि** (दि.९।५५)। **मासशिवरात्रि १४ व्रत। मेलापुरमण्डल**(जम्मू)। सर्वार्थसिद्धियोग सा.४।१७ से।▼
३०			६	४६	५	१४	७	२१	१६	१३	६१	११	२२	३८	-	११	-	-	**भौमवती अमावस्या ३०**। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष तथा भय। **दीपावली अमावस्या**(उड़ीसा)। **द्वापरयुगादि** ३०।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति. १ बुध रोहिणी में रे.६ **दिन ल. १०** (दि.१०।२० से) इष्ट ५ प्र.व.वि.११॥ या **ल. गोधूलि** (सूर्यास्त काल) या **ल. ३**(सा.६।४६से) इष्ट ६ प्र.वि.वि.१३॥ रा.शे.५।२३ मृत्युबाण पूर्व रा.११।३६ से मृग में रे.९ **ल. ७** (रा.३।४५से) इष्ट ५ प्र.व. वि.९॥(८वां चन्द्र अशुभ)॥

ति. २ गुरु मृग. मृत्युबाण व्याप्ति।

ति. ६ सोम दि.३।४२ से मघा मे भौमयुति।

ति. ८ मंगल मघा पूर्व दोष

ति. ९ बुध दि.१।४५ से उ.फा. रे.७ **ल. गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल. ३**(सा.६।१६से) इष्ट७ प्र.व.वि.१५॥ या **ल. ७** (रा. ३।१५से) इष्ट ५ प्र.व.वि.९॥

ति. १० गुरु उ.फा.रे.७ **दिन ल. १०** (दि.९।५३से) इष्ट ५ प्र.व.वि.११॥ (८वां भौम अशुभ)॥ दि.१।१८ से हस्त शनिवेध।

ति. ११ शुक्र हस्त शनिवेध।

मूलविचार - श्लेषा/मघा ति.५ रवि सा.५।६ से। **ति.८** मंगल दि.२।३४ से। **ज्येष्ठ/मूल ति. ३०** मंगल रा.६।१४ से।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				मार्गीशुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	बु	१	१३	११	२१	८२१	१८	४	३	५	४	११	४	६	१८	३५	५६	६९	२७	४	४	४४	३९	५	२९	४५	८	३०	४९	११	१०	२५	४६	१०	०	२६	४७
२	गु	१	२७	३२	४१	८४८	९	४	३	२४	८	११	४	६	१९	४५	२३	६९	२७	४	४	४७	१७	६	०	१५	४७	३०	४९	११	१०	२४	४७	१०	०	२३	३६
३	शु	२	११	५१	३०	८११	४७	४	३	४३	१३	११	४	६	२०	५४	५०	६९	२७	४	४	४९	५५	६	०	४६	४५	३०	४९	११	१०	२३	४७	१०	०	२०	२६
४	श	२	२६	११	२१	८११	४२	४	४	२	१८	११	४	६	२२	४	१७	७२	१६	४	४	५२	३३	६	१	१७	३४	३०	४९	११	१०	२२	४७	१०	०	१७	१५
५	र	३	१०	२९	१५	८५६	७	४	४	२१	२३	११	४	६	२३	१६	३३	७८	३९	४	४	५५	११	६	१	४८	२३	३०	४९	११	१०	२१	४७	१०	०	१४	४
६	चं	३	२४	४१	४८	८४१	४८	४	४	४०	२८	११	४	६	२४	३५	१२	७८	३९	४	४	५७	४८	६	२	१९	११	३०	४९	११	१०	२०	४७	१०	०	१०	५३
८	मं	४	८	४५	४२	८४०	२३	४	४	५९	३३	११	४	६	२५	५३	५१	७८	३९	४	५	०	२६	६	२	५०	०	३०	४९	मा	१०	१९	४७	१०	०	७	४२
९	बु	४	२२	३७	३८	८२७	४९	४	५	१८	३८	११	४	६	२७	१२	३०	७८	३९	४	५	३	४	६	३	२०	४९	३०	४९	११	१०	१९	४७	१०	०	४	३१
१०	गु	५	६	१६	४०	८१५	२४	४	५	३७	४३	११	४	६	२८	३१	९	८१	१०	४	५	५	४२	६	३	५१	३७	३०	४९	११	१०	२०	१९	१०	०	१	२१
११	शु	५	१९	४०	४४	७९१	४६	४	५	५६	४८	११	४	६	२९	५२	११	८६	४०	४	५	८	२०	६	४	२२	२६	३०	४९	११	१०	२०	५०	९	२९	५८	१०
१२	श	६	२	४९	३५	७८४	४४	४	६	१५	५३	११	४	७	१	१८	५१	८६	४०	४	५	१०	५७	६	४	५३	१५	३०	४९	११	१०	२१	२१	९	२९	५४	५९
१३	र	६	१५	४२	२२	७७०	४७	४	६	३४	५८	११	४	७	२	४५	३९	८६	४०	४	५	१३	३७	६	५	२४	३	३०	४९	११	१०	२१	५३	९	२९	५१	४८
१४	चं	६	२८	२०	२५	७५३	८	४	६	५४	२	११	४	७	४	१२	१९	८६	४०	४	५	१६	१८	६	५	५४	५२	३४	१६	११	१०	२२	२४	९	२९	४८	३७
३०	मं	७	१०	४५	५९	७४०	३३	४	७	१३	७	१८	५५	७	५	३८	५९	८९	४९	४	५	१९	०	६	६	२९	८	५५	२	११	१०	२२	५५	९	२९	४५	२७

३५पं० मार्गशीर्षकृष्ण ८मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३४२९
अयनांश २४।१३।२३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	४	६	४	६	११	१०	४
१४	८	४	२५	५	२	१०	०	०
८	४५	५९	५३	०	५०	१९	७	७
३५	४२	३३	५१	२६	०	४७	४२	४२
६१	८४०	११	७८	२	३०	०	३	३
१	२३	४	३९	३८	४१	० मा	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि / ल. अं.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ चं. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ चं. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
वृश्चिक	८	२१	८	१६	८	१२	८	८	८	४	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६
धनु	१०	२७	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२
मकर	१२	१४	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९
कुम्भ	१	४५	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०
मीन	३	१३	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८
मेष	४	५०	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५
ल. अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	६	४६	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१
मिथुन	९	०	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५
कर्क	११	१८	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३
सिंह	१	३२	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	२०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७
कन्या	३	४५	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०
तुला	६	१	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६

३६पं० मार्गशीर्षकृष्ण ३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३४३६
अयनांश २४।१३।२४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	४	७	४	६	११	९	३
२१	९	७	५	५	६	१०	२९	२९
१६	४५	१३	३८	१९	२९	२२	४५	४५
१३	५९	७	५९	०	८	५५	२७	२७
६१	७४०	१८	८९	२	५५	०	३	३
११	३३	५५	४९	४९	२ मा	२१ व	११	११



भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मघा ॥ **बुध**-स्वाती में॥ **ति.२** गुरु विशाखा १२।३८ (दि.११।४५)॥ **ति.११** शुक्र वृश्चिक ५।१९ (प्रा.८।५३)। **ति.१३** रवि अनु. २३।४७ (सा.४।१६)॥ **गुरु**-मघा २ चरण ॥ **शुक्र**-चित्रा॥ **ति.१** बुध तुला २८।५७(रा.६।१६)। **ति.३०** मंगल स्वाती में ११।५१(दि.११।३०)॥ **वक्रीशनि**-उ.भा.३ चरण॥ **ति.८** मंगल मार्गी ५९।१९ (रा.६।२८)॥ **राहु-ति.१०** गुरु मकर में धनिष्टा २ चरण॥ **केतु**-मघा १ चरण॥ कर्क श्लेषा मे ४ चरण २५।१६ (सा.४।५०)॥

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष विचार-सप्तमी तिथि की हानि से यह पक्ष पूरे १४ दिनों का है। बुध शुक्र एक राशि में हो तो वायु तथा अग्निभय हो। मंगल गुरु वर्षा काल में एक साथ हो वर्षा का अभाव हो। **२७ नवम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय में रात ७।५७ पर अर्घ्य दें। **२९ नवम्बर** मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को काशी में **माता अन्नपूर्णा देवी का व्रत-पूजन-शृंगार** का १६ दिनात्मक अनुष्ठान प्रारम्भ होगा। इसमें काशी एवं आसपास के जनपदों के किसान धान की कटाई का प्रथम धान्य पुंज (बालियाँ)☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ बुध रोहिणी में पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण दवँरी धानरोपाई शिल्पविद्या **वधूप्रवेश(ल.८** प्रा.८।२१ तक या **ल.२** सा.४।५० से) **द्विरागमन(ल.२** सा.४।५० से या **ल.३** रा.६।४६ से) **विपणि** मुहूर्त। २या **गृहारंभ(ल.३** रा.६।४६ से १२स्थ चं.दा.) मुहूर्त। **ति.२** गुरु मृग. पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग बागवानी **पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा** शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **गृहारंभ(ल.११** दि.१२।९ से लग्नस्थ रा.दा.) **वधूप्रवेश(ल.११** दि.१२।९ से या **ल.२** सा.४।४५ से) **द्विरागमन (ल.२** सा.४।४५ से या **ल.३** सा.६।४१ से) **विपणि व्यापार** वाहनक्रय शल्यक्रिया धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.३** शुक्र दि.२।२६ भद्रावाद आर्द्रा रिक्तादोष। **ति.४** शनि दि.१२।३ रिक्ताबाद पुनर्वसु शिशुताम्बूलभक्षण सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्र मूँगारत्न धारण वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.५** रवि पुष्य पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्ण रत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय **पूर्वदिशा की यात्रा** ◆

❶*उपवास तथा रात्रि जागरण करें"*। **कालाष्टमी८ व्रत। प्रथमाष्टमी**(उड़ीसा)। **रुक्मणी अष्टमी ८ व्रत। वैक्काष्टमी** (केरल)। स्थायीजययोग दि.२।३४ तक।

◆नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.६** सोम श्लेषा सूर्यवेध। **ति.८** मंगल मघा भौमयुति। **ति.९** बुध पू.फा.रिक्तादोष रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। **ति.१०** गुरु दि.२।२४ भद्रापूर्व उ.फा.दोलारोहण अन्नप्राशन सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषणनिर्माण बागवानी दवँरी धानरोपाई शिल्पविद्या **जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११** दि.११।४० से लग्नस्थ रा.दा.) **वधूप्रवेश (ल.८** प्रा.७।४७ तक) **विपणि** धानकटाई **गर्भाधान कूपनिर्माण (बोरिंग) वरवरण (सगाई)** मुहूर्त। **ति.११** शुक्र हस्त शनियुति। **ति.१२** शनि चित्रा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय **जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११** दि.११।३१ से) **विपणि** मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

☛ माता अन्नपूर्णा को समर्पित करते हैं। जिसे प्रसाद रूप में वितरित किया जाता है। उन्नत पैदावार की कामना से कृषक श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर अगले वर्ष के लिये बीज रूप में रखते हैं। **३० नवम्बर** को षष्ठी में काशी के रामेश्वर तीर्थ में **लोटा-भण्टा का मेला** लगेगा। भगवान् श्रीराम द्वारा स्थापित पूजित रामेश्वर महादेव को श्रद्धा पूर्वक **बाटी-चोखा** बनाकर अर्पण करने की परम्परा है। **१ दिसम्बर** को प्रदोषकाल में **श्रीकाल भैरवाष्टमी** मनाई जायेगी। यह **श्रीकाल भैरव की जयंती** (उत्पत्ति) रूप में मनाई जाती है। देशभर में तथा काशी में कालभैरव मन्दिर सहित यहाँ **आठों भैरव मन्दिरों** में मनाई जायेगी। शास्त्रों के अनुसार प्राणी के किये गये पाप दर्शन मात्र से छूट जाते हैं। आज पूजन उपरान्त तीन बार अर्घ्य दें तथा उपवास कर जागरण करें। **४ दिसम्बर** को **उत्पन्ना एकादशी व्रत सबका** है। इस एकादशी के दिन **व्रतारंभ** करें। **६ दिसम्बर** को सन्तान सुख हेतु **प्रदोष व्रत** होगा। **७ दिसम्बर** को **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **८ दिसम्बर को स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या** भी है। आज के दिन गंगा स्नान करने से सूर्यग्रहण के समान पुण्य फल मिलता है।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १८ अग्रहायण से ३ पौष तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक ९ दिसम्बर से २४ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द.		रे.अं.	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.
२६	१३	१	बु	६०	०	समस्त			ज्येष्ठा	३४	२३	रा	८	३९	धृति	५	५८	प्रा	९	९	कि	२८	४५	बव	६०	०	ध्वांक्ष	९	१५	२८	२२	२३	१८	धनु	३४।२३	६	४६	५	१४	७	२२	१७	२४	६१	११	२२	४५	-	१०	-	-
२६	१२	१	गु	१	२१	प्रा	७	१८	मूल	४०	४१	रा	११	२	शूल	६	४३	दि	९	३१	बव	१	२१	बा	३४	२	धूम्र	१०	१६	२९	२३	२४	१९		.	६	४६	५	१४	७	२३	१८	३५	६१	१२	२२	५१	-	१०	६	५
२६	१०	२	शु	६	४३	दि	१	२७	पू.षा.	४७	१३	रा	१	३९	गड	८	१२	दि	१०	२	कौ	६	४३	तै	३९	२५	प्रवर्द्धमान	११	१७	१	२४	२५	२०			६	४६	५	१४	७	२४	१९	४७	६१	१३	२२	५६	-	९	६	५९
२६	९	३	श	१२	८	दि	११	३७	उ.षा.	५३	३२	रा	४	१०	वृद्धि	१	३१	दि	१०	३४	गर	१२	८	व	४४	३८	राक्षस	१२	१८	२	२५	२६	२१	मकर	३।४८	६	४६	५	१४	७	२५	२१	०	६१	१३	२३	१	-	९	७	५४
२६	८	४	र	१७	८	दि	१	३८	श्रवण	५९	१४	रा	६	२८	ध्रुव	१०	३३	दि	११	०	व	१७	८	बव	४९	१७	गद	१३	१९	३	२६	२७	२२			६	४७	५	१३	७	२६	२२	१३	६१	१५	२३	६	-	८	८	४८
२६	७	५	चं	२१	२६	दि	३	२१	धनिष्ठा	६०	०	समस्त			व्याघात	११	४	दि	११	१२	बा	२१	२६	कौ	५३	१	शुभ	१४	२०	४	२७	२८	२३	कुम्भ	३१।३८	६	४७	५	१३	७	२७	२३	२८	६१	१५	२३	१०	-	८	९	४२
२६	६	६	मं	२४	३७	प्रा	४	३७	धनिष्ठा	४	३	प्रा	८	२४	हर्षण	१०	४१	दि	११	६	तै	२४	३७	गर	५५	४१	उत्पात	१५	२१	५	२८	२९	२४			६	४७	५	१३	७	२८	२४	४३	६१	१७	२३	१४	-	७	१०	३५
२६	६	७	बु	२६	४५	रा	५	२८	शतभिष	७	४७	दि	९	५३	वज्र	१	४१	दि	१०	३९	व	२६	४५	भ	५७	६	मानस	१६	२२	६	२९	१	२५	मीन	५४।४०	६	४७	५	१३	७	२९	२६	०	६१	१७	२३	१७	-	७	११	२८
२६	५	८	गु	२७	२८	रा	५	४६	पू.भा.	१०	१८	दि	१०	५४	सिद्धि	७	३४	दि	९	४८	बव	२७	२८	बा	५७	१०	मुद्गर	१७	२३	७	१	२	२६			६	४७	५	१३	८	०	२७	१७	६१	१८	२३	१९	-	६	१२	२२
२६	५	९	शु	२६	५२	रा	५	३१	उ.भा.	११	३०	दि	११	२२	व्यतीपात	४	२६	प्रा	८	३३	कौ	२६	५२	तै	५५	५९	ध्वज	१८	२४	८	२	३	२७			६	४७	५	१३	८	१	२८	३५	६१	१९	२३	२२	-	६	१	१९
२६	४	१०	श	२५	१	रा	४	४९	रेवती	११	३२	दि	११	२३	वरीयान	०/५९	५१/५८	प्रा	१/१	५१/५३	गर	२५	१	व	५३	४०	धाता	१९	२५	९	३	४	२८	मेष	११।३२	६	४७	५	१३	८	२	२९	५४	६१	२०	२३	२४	-	५	२	२०
२६	४	११	र	२२	१४	दि	३	४०	अश्विनी	१०	२३	दि	१०	२६	शिव	४९	२९	रा	२	३४	भ	२२	१४	बव	५०	१९	आनंद	२०	२६	१०	४	५	२९			६	४७	५	१३	८	३	३१	१४	६१	२०	२३	२५	-	५	३	२५
२६	४	१२	चं	१८	२४	दि	२	८	भरणी	८	२५	दि	१०	८	सिद्ध	४२	५८	रा	११	५८	बा	१८	२४	कौ	४६	४	चर	२१	२७	११	५	६	३०	वृष	२२।४२	६	४७	५	१३	८	४	३२	३४	६१	२१	२३	२६	-	४	४	३४
२६	४	१३	मं	१३	४४	दि	१२	१६	कृत्तिका	५	३४	प्रा	९	०	साध्य	३५	१२	रा	९	७	तै	१३	४४	गर	४१	७	गद	२२	२८	१२	६	७	१			६	४७	५	१३	८	५	३३	५५	६१	२१	२३	२६	-	४	५	४५
२६	४	१४	बु	८	२९	दि	१०	१०	रोहिणी	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	शुभ	२८	२२	रा	६	७	व	८	२९	भ	३५	४०	शुभ	२३	२९	१३	७	८	२	मिथुन	३०।६	६	४७	५	१३	८	६	३५	१६	६१	२१	२३	२६	-	३	-	-
२६	४	१५	गु	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	५४	१	रा	४	२३	शुक्ल	२०	३३	दि	३	०	बव	२	५०	बा	[illegible]	[illegible]	काण	२४	३०	१४	८	९	३			६	४७	५	१३	८	७	३६	३७	६१	२१	२३	२६	-	३	-	-

धनुराशि (रा.८।३१)। रुद्रव्रत(पीड़िया)।
◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.३०सामान्य।
मु.रजब ७ हि.१४४८। मु.उर्स प्रारंभ मोइनउद्दीन चिश्ती(अजमेर शरीफ)। रवियोग रा.१।३९ से।
भ रा.१२।३७से (पाताल)। मकरराशि (प्रा.८।१७)। रवियोग रा.४।१०तक। यायीजययोग दि.११।३७तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.४।१० से।
भ दि.१।३८ तक (पाताल)। रविवति वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। रवियोग रा.शे.६।२८ से।
कुम्भराशि (रा.७।२६)। पंचक आरंभ रा.७।२६ से। श्रीराम विवाहोत्सव। द्वितीय नागपञ्चमी। पञ्चमी मे नागपूजा कार्य। ❶
श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। चम्पाषष्ठी व्रत(महाराष्ट्र)। मूलकरूपिणीषष्ठी(मूलकषष्ठी)। गुहषष्ठी। सुब्रमण्यषष्ठी(कुर्ग)। रवियोग प्रा.८।२४ तक।
भ रा.५।२८से रा.शे.५।३७तक (मृत्युलोक)। मीनराशि(रा.४।३९)। नेपाली पौषमास। मित्र(सूर्य)सप्तमी।☉स.मूल व धनु में सूर्य ३३।१७❷
सौरपौषमास। यायीजययोग सा.५।४६ से।
महानन्दानवमी ९ व्रत। देवी पूजन से विष्णुलोकप्राप्ति। कल्पादि ९। रवियोगसर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.११।२२ से।
भ रा.४।१५से (स्वर्ग)। मेषराशि (दि.११।२३)। पंचक समाप्त दि.११।२३।। रवियोग समस्त दिन।
भ दि.३।४०तक (स्वर्ग)। मोक्षदा एकादशी ११व्रत सबका। गीता जयन्ती। वैकुण्ठ एकादशी(द.भा.)। मौनएकादशी(जैन)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।२६ तक पश्चात यायीजययोग।
वृषराशि (दि.३।४३)। सोमप्रदोष १२व्रत। पुत्र कामना हेतु व्रतारंभ का विधान। मत्स्यद्वादशी व्रत। अखण्डद्वादशी। व्यञ्जनदानद्वादशी(उड़ीसा)। दानद्वादशी(उड़ीसा)।
रा.पौषमास दि.३१। अपराह्न चतुर्दशी में पार्वण श्राद्ध। काशी पिशाचमोचन यात्रा। *पिशाच मुक्ति हेतु पार्वण श्राद्ध*। कपर्दीश्वर दर्शन। रात्रिव्यापिनि–पाषाण चतुर्दशी(बङ्गाल)। ❸
भ दि.१०।१०से रा.९।३तक(पाताल)। मिथुनराशि(रा.६।४९)। व्रत १५। प्रदोष श्रीदत्तात्रेय जयन्ती १५(प्रदोष)। नगरपरिक्रमा। षोडशी त्रिपुरसुन्दरी जयंती। मु.हजरतअली जयंती। ❺
पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। हुर्गीप्रारंभ (कुर्ग)। अरुद्रदर्शन (द.भा.)।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.१ बुध रा.८।३१से मूल मे रे.१०ल. **गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.७** (रा.२।४५से) इष्ट६ प्र.व.वि.१५

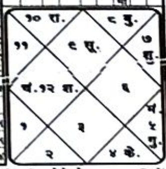
ति.१ गुरु रा.११।२तक मूल मे रे.१० दिन पंचेष्ट लग्न का अभाव। **खरमास प्रारंभ।**

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रहाः।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		मार्गीशनि				राहु			
१	बु	७	२३	१	२०	७३०	३५	४	७	३२	३	१८	५१	७	७	८	४७	९४	१९	४	५	२१	४९	६	७	२४	९	५५	२	११	१०	२३	२७	९	२९	४२	१६
१	गु	८	५	१	६	७२३	५८	४	७	५०	५४	१८	५१	७	८	४३	६	९४	१९	४	५	२४	२३	६	८	१९	११	५५	७	११	१०	२३	५८	९	२९	३९	५
२	शु	८	१७	१२	१६	७२१	२६	४	८	९	४५	१८	५१	७	१०	१७	२५	९४	१९	४	५	२७	४	६	९	१४	१८	५५	७	११	१०	२४	३३	९	२९	३५	५४
३	श	८	२९	१४	१३	७२३	४७	४	८	२८	३५	१८	५१	७	११	५१	४४	९४	१९	४	५	२७	३१	६	१०	९	२५	५५	७	११	१०	२५	८	९	२९	३२	४३
४	र	९	११	१८	४५	७३०	३५	४	८	४७	२७	१८	५१	७	१३	२६	३	९५	३५	४	५	२७	४०	६	११	४	३२	५५	७	११	१०	२५	४३	९	२९	२९	३३
५	चं	९	२३	३०	६	७३९	५३	४	९	६	१८	१८	५१	७	१५	१	३८	९७	४९	४	५	२७	५०	६	११	५९	४०	५५	७	११	१०	२६	१८	९	२९	२६	२२
६	मं	१०	६	४७	२८	७४९	११	४	९	२५	९	१८	५१	७	१६	३९	२६	९७	४९	४	५	२७	५९	६	१२	५४	४७	५५	७	११	१०	२६	५३	९	२९	२३	११
७	बु	१०	१८	२२	१८	७६३	८	४	९	४४	०	२०	४	७	१८	१७	१५	९७	४९	४	५	२८	९	६	१३	४९	५४	५५	७	११	१०	२७	२८	९	२९	२०	०
८	गु	११	०	८	१२	७८४	४७	४	१०	४	५	२०	४४	७	१९	५५	३	९७	४८	४	५	२८	१८	६	१४	४५	२	५५	७	११	१०	२८	३	९	२९	१६	४९
९	शु	११	१४	१	४०	८०८	१८	४	१०	२४	४९	२०	४४	७	२१	३२	५१	९९	४०	४	५	२८	२८	६	१५	४०	९	५५	७	११	१०	३०	०	९	२९	१३	३९
१०	श	११	२७	२६	१८	८३९	३३	४	१०	४५	३३	२०	४४	७	२३	१२	३१	१०३	१८	४	५	२८	३७	६	१६	३५	१६	५५	७	११	१०	३२	६	९	२९	१०	२८
११	र	०	१०	१८	५१	८७५	३७	४	११	६	१७	१०	३३	७	२४	५५	४९	१०३	५३	४	५	२८	४७	६	१७	३०	२४	५५	७	११	१०	३४	१३	९	२९	[illegible]	[illegible]
१२	चं	०	२४	४३	५८	८२७	६	४	११	१६	५१	२	२२	७	२६	३९	४२	१०३	५३	४	५	२८	५६	६	१८	२५	३१	५५	७	११	१०	३६	१९	९	२९	४	६
१३	मं	१	८	४२	५	८३९	५२	४	११	१९	१४	२	२२	७	२८	२३	३४	१०३	५२	४	५	२९	६	६	१९	२०	३८	५५	७	११	१०	३८	२५	९	२९	०	५५
१४	बु	१	२३	४९	२९	८१६	७	४	११	२१	३७	२	२२	८	०	७	२७	१०४	२६	४	५	२९	२०	६	२०	१५	४५	५५	७	११	१०	४०	३२	९	२८	५७	४४
१५	गु	२	७	६	२९	७९९	११	४	११	२३	५९	२	२२	८	१	५१	५३	१०५	४	४	५	२९	३५	६	२१	११	१	५५	३३	११	१०	४२	३८	९	२८	५४	३४

३७पं० मार्गशीर्षशुक्ल ८गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह सूर्य १४४५ अयनांश २४।१३।२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	४	७	४	६	११	९	३
०	०	१०	१९	५	१४	१०	२९	२९
२७	८	४	५१	२८	३५	२८	१६	१६
१७	१२	५	३	५८	२	३	४९	४९
६१	७६७	२०	१७	०	५५	०	३	३
५८	४७	४४	४८	९	७	३५ मा	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

लग्न	१ बु. पं.	मि.	१ गु. पं.	मि.	२ शु. पं.	मि.	३ श. पं.	मि.	४ र. पं.	मि.	५ चं. पं.	मि.	६ मं. पं.	मि.	७ बु. पं.	मि.
वृश्चिक	७	२१	७	१६	७	१२	७	७	७	३	६	५८	६	५४	६	५०
धनु	९	२७	९	२२	९	१८	९	१३	९	९	९	४	९	०	८	५६
मकर	११	१४	११	९	११	५	११	०	१०	५६	१०	५१	१०	४७	१०	४३
कुम्भ	१२	४५	१२	४०	१२	३६	१२	३१	१२	२७	१२	२२	१२	१८	१२	१४
मीन	२	१३	२	८	२	४	१	५९	१	५५	१	५०	१	४६	१	४२
मेष	३	५०	३	४५	३	४१	३	३६	३	३२	३	२७	३	२३	३	१९
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
वृष	५	४६	५	४१	५	३७	५	३२	५	२८	५	२३	५	१९	५	१५
मिथुन	८	०	७	५५	७	५१	७	४६	७	४२	७	३७	७	३३	७	२९
कर्क	१०	१८	१०	१३	१०	९	१०	४	१०	०	९	५५	९	५१	९	४७
सिंह	१२	३२	१२	२७	१२	२३	१२	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	१२	५	१२	१
कन्या	२	[illegible]	२	४०	२	३६	२	३१	२	२७	२	२२	२	१८	२	१४
तुला	५	१	४	५६	४	५२	४	४७	४	४३	४	३८	४	३४	४	३०

लग्न	८ गु. पं.	मि.	९ शु. पं.	मि.	१० श. पं.	मि.	११ र. पं.	मि.	१२ चं. पं.	मि.	१३ मं. पं.	मि.	१४ बु. पं.	मि.	१५ गु. पं.	मि.
धनु	८	५१	८	४६	८	४२	८	३८	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१
मकर	१०	३८	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८
कुम्भ	१२	९	१२	४	१२	०	११	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९
मीन	१	३७	१	३२	१	२८	१	२४	१	१९	१	१५	१	११	१	७
मेष	३	१४	३	९	३	५	३	१	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४
वृष	५	१०	५	५	५	१	४	५७	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
मिथुन	७	२४	७	१९	७	१५	७	११	७	६	७	२	६	५८	६	५४
कर्क	९	४२	९	३७	९	३३	९	२९	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२
सिंह	[illegible]	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६
कन्या	२	९	२	४	२	०	१	५६	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९
तुला	४	२५	४	२०	४	१६	४	१२	४	७	४	३	३	५९	३	५५
वृश्चिक	६	४२	६	३७	६	३३	६	२९	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२

३८पं० मार्गशीर्षशुक्ल १५गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह सूर्य १४५२ अयनांश २४।१३।२६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	४	८	४	६	११	९	३
७	७	११	१	५	२१	१०	२८	२८
३६	६	२३	५१	२९	११	४२	५७	५७
३०	२९	५९	५३	३५	१	३८	२७	२७
६१	८५९	२	१०५	०	५५	२	३	३
२१	११	२२	४	५८	३३	६	[illegible]	[illegible]



❶ **गुरुतेगबहादुर शहीद दिवस**। रवियोग समस्त दिन। यायीजययोग दि.३।२१ तक। ❷(रा.८।६)। मु.३०सामान्य। बाद कर १६ घटी पुण्य। दूसरे दिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति पुण्यकाल। वस्त्र तथा अन्न का दान गोदावरी में स्नान। **खरमासारंभ**। ❸रवियोग प्रा.९।७ से पूर्व मेंसर्वार्थसिद्धियोग। ❺रवियोग प्रा.७।३६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.६।२ तक।

मूलविचार-ज्येष्ठ-मूल ति.१ गुरु रा.११।२ तक। **रेवती/अश्विनी ति.९** शुक्र दि.११।२२ से। ति.११रवि दि.१०।२६ तक। **पञ्चक विचार-ति.५** सोम रा.७।२६ से। **ति.१०** शनि दि.११।२३ तक।

◆**विपणि** मुहूर्त। **ति.११** रवि दि.३।४० भद्रा बाद भरणी मे नवीन आसन का प्रयोग धानकटाई मुहूर्त। **ति.१२** सोम भरणी में धानकटाई मुहूर्त। दि.१०।८ से कृत्तिका में **वर कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। **ति.१३** मंगल दि.१२।१६ रिक्तापूर्व कृत्तिका में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.१४** बुध रोहिणी में रिक्तादोष। दि.१०।१० रिक्ता बाद मृग.भद्रा है। **ति.१५** गुरु आर्द्रा धानकटाई मुहूर्त।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मघा ।। **बुध**-अनुराधा। ति.६ भौम ज्येष्ठा में ०।२१(प्रा.६।५५)। **ति.१३** मंगल मूल व धनु मे ५५।४२ (रा.५।४)।। **गुरु**-मघा मे २ चरण ।। **शुक्र**-स्वाती मे।। **ति.१३** मंगल विशाखा ४२।५१ (रा.११।५५)।। **मार्गीशनि**-उ.भा.मे ३ चरण।। **राहु**-धनिष्ठा २ चरण।। **केतु**-श्लेषा ४ चरण।।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष विचार-इस पक्ष मे प्रतिपदा की वृद्धि होने से पक्ष १६ दिनों का है। मार्गशीर्ष मे धनु संक्रांति हो तो दुर्भिक्ष ना हो तो सुभिक्ष। **९ दिसम्बर** को प्रदोष काल में मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा प्राप्त होने से **रुद्रव्रत पीड़िया पर्व** मनाया जायेगा। **१० दिसम्बर को चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। **१३ दिसम्बर** को रविवार से प्रशस्त **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **१४ दिसम्बर को श्रीरामविवाहोत्सव** का पर्व मनाया जायेगा। ☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ बुध ज्येष्ठा में सूर्ययुति। **ति.१** गुरु मूल सूर्यभोग्य है। **ति.२** शुक्र पू.षा.नावनिर्माण **कूपनिर्माण(बोरिंग) वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। ति.३ शनि दि.११।३७ रिक्तापूर्व उ.षा.सौभाग्यवती को छोड़कर कालावस्त्र नीलमादिरत्नधारण मुहूर्त। **ति.४** रवि दि.१।३८ रिक्ताभद्रा बाद श्रवण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय धानकटाई **वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। **ति.५** सोम धनिष्ठा में राहुयुति। **ति.६** मंगल धनिष्ठा मे पूर्वदोष। प्रा.८।२४ से शत. वाहनक्रय शल्यक्रिया **गर्भाधान**(७मी)मुहूर्त। **ति.७** बुध दि.९।५३ तक शत.जातकर्म नामकरण चौपायो का क्रय विक्रय दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **गृहारंभ-जीर्णादिगृहप्रवेश**(**ल.८** प्रा.६।५० तक १२स्थ शु.दा.) वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.८** गुरु दि.९।४८ व्यतिपात पूर्व पू.भा.धानरोपाई नावनिर्माण धानकटाई मुहूर्त। **ति.९** शुक्र उ.भा.शनियुति। **ति.१०** शनि रेवती कालावस्त्र नीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय ◆

☛**१६ दिसम्बर को सूर्य का धनु राशि में प्रवेश** से **खरमास** आरम्भ हो जायेगा। **१८ दिसम्बर** को **महानन्दा नवमी** को **देवी पूजन** से विष्णुलोक प्राप्ति होती है। **२० दिसम्बर** को अज्ञान नाशक **मोक्षदा एकादशी व्रत सबका** तथा **गीता जयन्ती** मनाई जायेगी। आज ही भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा गीता का उपदेश दिया गया था। **२१ दिसम्बर** को सन्तान लाभ हेतु प्रशस्त **सोम प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२२ दिसम्बर को** आज अपराह्न चतुर्दशी में पार्वणश्राद्ध तथा **काशी में पिशाचमोचन** की यात्रा होगी। **२३ दिसम्बर** आज **व्रत की पूर्णिमा** मनायी जायेगी। प्रदोष पूर्णिमा तिथि मे **दत्तात्रेय जयंती** मनाई जायेगी। **२४ दिसम्बर** को **स्नान-दान-पूर्णिमा** मनायी जायेगी।

पौषकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ४ पौष से १७ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २५ दिसम्बर से ७ जनवरी तक सन् २०२६-२७ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
२६	४	२	शु	५१	४	रा	३	१२	पुनर्वसु	४९	५०	रा	२	४३	ब्रह्म	१२	३६	दि	११	४९	तै	२४	१	गर	५१	४	लुम्बक
२६	५	३	श	४५	२१	रा	१२	५५	पुष्य	४५	५०	रा	१	७	ऐन्द्र	४/५२	५६/११	प्रा	८/५	४५/३७	व	१८	१२	भ	४५	२१	मित्र
२६	५	४	र	४०	३	रा	१०	४८	श्लेषा	४२	१५	रा	११	४९	विष्कुंभ	४९	४४	रा	२	४०	बव	१२	४२	बा	४०	३	वज्र
२६	५	५	चं	३५	१६	रा	८	५३	मघा	३९	१४	रा	१०	२८	प्रीति	४२	५४	रा	११	५६	कौ	७	३९	तै	३५	१६	ध्वांक्ष
२६	६	६	मं	३१	२१	रा	७	११	पू.फा.	३७	४	रा	९	३६	आयुष्मान	३६	४४	रा	९	२८	गर	३	१८	व	३१/५१	२१/४९	धूम्र
२६	६	७	बु	२८	१८	रा	६	६	उ.फा.	३५	४३	रा	९	४	सौभाग्य	३१	१८	रा	७	१८	बव	२८	१८	बा	५७	११	प्रवर्द्धमान
२६	७	८	गु	२६	२०	रा	५	११	हस्त	३५	२८	रा	८	५८	शोभन	२६	४१	रा	५	२७	कौ	२६	२०	तै	५५	५८	राक्षस
२६	८	९	शु	२५	३६	सा	५	०	चित्रा	३६	२४	रा	९	११	अतिगंड	२३	३	सा	३	५१	गर	२५	३६	व	५५	५३	मुसल
२६	९	१०	श	२६	९	सा	५	१३	स्वाती	३८	३७	रा	१०	१२	सुकर्मा	२०	२५	दि	२	५६	भ	२६	९	बव	५७	७	सिद्धि
२६	१०	११	र	२८	५	रा	५	५९	विशाखा	४२	७	रा	११	३६	धृति	१८	४९	दि	२	१७	बा	२८	५	कौ	५९	३६	उत्पात
२६	११	१२	चं	३१	७	रा	७	१२	अनुराधा	४६	४३	रा	१	२७	शूल	१८	४	दि	१	५१	तै	३१	७	गर	६०	०	मानस
२६	१२	१३	मं	३५	१८	रा	८	५३	ज्येष्ठा	५२	१७	रा	३	४०	गंड	१८	१३	दि	२	३	गर	३	१३	व	३५	१८	मुद्गर
२६	१३	१४	बु	४०	१५	रा	१०	५०	मूल	५८	३०	रा	६	९	वृद्धि	१९	०	दि	२	२१	भ	७	४७	श	४०	१५	ध्वक्ष
२६	१५	३०	गु	४५	३९	रा	१	०	पू.षा.	६०	०	समस्त			ध्रुव	२०	१२	दि	२	४९	च	१२	५७	ना	४५	३९	धाता

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द	-	रे. अं. +/-	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
२५	१	१५	९	१०	४	कर्क	२५।५३	६	४७	५	१३	८	८	३७	५८	६१	२२	२३	२५	-	२	६	४४	**कर्कराशि** (रा.९।८)। **हुर्थी समापन**। सर्वार्थसिद्धियोग रा.२।४३ तक।
२६	२	१६	१०	११	५			६	४७	५	१३	८	९	३९	२०	६१	२२	२३	२३	-	२	७	५५	भ.दि.२।४ से रा.१२।५५तक (मृत्युलोक)। तीन दिनों का **जोरमेला प्रारंभ** (पंजाब)।
२७	३	१७	११	१२	६	सिंह	४२।१५	६	४७	५	१३	८	१०	४०	४२	६१	२४	२३	२१	-	१	९	२	**सिंहराशि** (रा.११।८९)। **रविवति संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत**(च.उ.रा.९।२)।
२८	४	१८	१२	१३	७			६	४७	५	१३	८	११	४२	६	६१	२४	२३	१९	-	१	१०	५	तीन दिन का **जोरमेला समाप्त**(पंजाब)। रवियोग रा.१०।२८। ❶ तक त्रिपुष्करयोग रा.९।३६।
२९	५	१९	१३	१४	८	कन्या	५१।४३	६	४७	५	१३	८	१२	४३	३०	६१	२४	२३	१६	-	१	११	४	भ.रा.७।१९से रा.शे.६।४३ तक (मृत्यु–पाताल)। **कन्याराशि**(रा.३।३८)। **⊙पू.षा. में सूर्य** २७।५२(रा.५।५६)। रवियोग रा.९।३६ ❶
३०	६	२०	१४	१५	९			६	४७	५	१३	८	१३	४४	५४	६१	२४	२३	१२	-	०	१२	१	सर्वार्थसिद्धियोग रा.९।४। ❷**गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती** (नवीनमत)। स्थायीजययोग रा.८।५३।
३१	७	२१	१५	१६	१०			६	४७	५	१३	८	१४	४६	१८	६१	२५	२३	९	+	०	१२	५७	**कालाष्टमी। अष्टकाश्राद्ध**। पार्वणविधि। यायीजययोग रा.५।१९।
जन	८	२२	१६	१७	११	तुला	५।५६	६	४७	५	१३	८	१५	४७	४३	६१	२५	२३	४	+	१	१	५३	भ.रा.शे.५।७से (पाताल)। **तुलाराशि** (दि.९।८)। **जनवरी १। खीष्टीयनववर्षारंभ सन् २०२७। अन्वष्टकाश्राद्ध**।
२	९	२३	१७	१८	१२			६	४६	५	१४	८	१६	४९	८	६१	२५	२३	०	+	१	२	४९	भ.सा.५।२३तक (पाताल)। **पौषदशमी १०**(जैन)। यायीजययोग सा.५।२३। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१०।२२ तक।
३	१०	२४	१८	१९	१३	वृश्चिक	२६।१५	६	४६	५	१४	८	१७	५०	३३	६१	२५	२२	५४	+	२	३	४६	**वृश्चिकराशि** (सा.५।२६)। **सफला एकादशी व्रत सबका। श्रीपार्श्वनाथजयंती**(जैन)।
४	११	२५	१९	२०	१४			६	४६	५	१४	८	१८	५१	५९	६१	२५	२२	४९	+	२	४	४१	यायीजययोग रा.७।१२ पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। ❸**दर्श हवेला अमावस्या**(नेपाल)। **कालबादेवी यात्रा**(मुम्बई)।
५	१२	२६	२०	२१	१५	धनु	५२।१७	६	४६	५	१४	८	१९	५३	२४	६१	२५	२२	४३	+	३	५	३३	भ.रा.८।५३से (स्वर्ग–पाताल)। **धनुराशि** (रा.३।४०)। **भौमप्रदोष व्रत**। ऋणमुक्ति हेतु श्रेयस्कर। **मासशिवरात्रि १३व्रत**। ❷
६	१३	२७	२१	२२	१६			६	४५	५	१३	८	२०	५४	४९	६१	२५	२२	३६	+	३	६	२२	भ.दि.९।५२तक (पाताल)। **मु.शब ए मिराज**(पूर्वरात्रि)। यमघंटयोग रा.शे.६।९ तक।
७	१४	२८	२२	२३	१७			६	४५	५	१३	८	२१	५६	१४	६१	२४	२२	२९	+	४	-	-	**अमावस्या ३०**। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष व सुख। कपिलधारा तीर्थ में श्राद्ध। **बकुल अमावास्या–उड़ीसा**। ❸

गुलिक प्राणपद साधन

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	वार
७	६	५	४	३	२	१	दिन गुणक
३	२	१	७	६	५	४	रात्रि गुणक

उदाहरण। कल्पितदिनमान ३३/१२ इसका अष्टम भाग ४/९,बुधवार जातक जन्मदिन के दिन गुणक से गुणित कर १६/३६। गुलिक अष्टमभाग स्पष्टलग्न ४/६। रविवार से शनिवार पर्यन्त गुलिक साधन होता है। दिनमान का अष्टम भाग प्रथम खण्ड होगा। उसका अधिपति वारेश होगा। रात्रि साधन से जो प्रथमखण्ड होगा उसका स्वामी वारेश से पञ्चम होगा। **प्राणपदसाधन**–इष्ट घटी को चतुर्गुणित कर पलों में १५ का भाग देकर लब्धि को उस चतुर्गुणित घटी में जोड़कर १२ से भाग दे कर शेष प्राणपद राशि होगी। शेष पलों को २ से गुणा करने से अंश होगा। इसको सूर्य राश्यादि में जोड़ने से स्पष्ट प्राणपद होगा। **अथवा**– इष्टकाल को पलात्मक बनाकर १५ से भाग देने से लब्धि में राशि शेष में २ से गुणा कर अंश रखें तो मध्यम प्राणपद होगा। फिर सूर्य में जोड़ने पर स्पष्ट प्राणपद होगा।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्ट चन्द्रभौमादि ग्रह।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
२	शु	२	२१	२५	४५	८५९	५७	४	११	२६	२२	२	२२	८	३	३६	५६	१०५	३	४	५	२९	५०	६	२२	६	३४	५१	३३	११	१०	४४	४५	९	२८	५१	२३
३	श	३	५	४५	१४	८५७	८	४	११	२८	४५	२	२२	८	५	२२	०	१०५	४	४	५	३०	५	६	२३	२	६	५५	३३	११	१०	४६	५१	९	२८	४८	१२
४	र	३	२०	०	५३	८५०	४८	४	११	३१	८	२	२२	८	७	७	३	१०५	४१	४	५	३०	२०	६	२३	५७	३९	५५	३३	११	१०	४९	१	९	२८	४५	१
५	चं	४	४	९	१२	८४२	[illegible]	[illegible]	११	३३	३०	२	२२	८	८	५२	७	१०५	४	४	५	२९	३०	६	२४	५३	१२	५५	३३	११	१०	५१	११	९	२८	४१	५१
६	मं	४	१८	७	१६	८२९	५८	४	११	३५	५३	२	२२	८	१०	३७	१०	१०५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	२५	४८	४५	५५	३३	११	१०	५३	२१	९	२८	३८	४०
७	बु	५	०	५२	३९	८१८	२५	४	११	३८	१६	२	२२	८	१२	२२	१४	१०६	२४	४	५	२२	४७	६	२६	४४	१८	५५	३३	११	१०	[illegible]	[illegible]	९	२८	३५	२९
८	गु	५	१५	२५	८	८०३	२०	४	११	४०	३९	२	२२	८	१४	८	३७	१०६	३०	४	५	१९	२५	६	२७	३९	५०	५५	३३	११	१०	५७	४१	९	२८	३२	१८
९	शु	५	२८	३२	६	७८७	४७	४	११	४३	१	२	२२	८	१५	५५	७	१०६	३९	४	५	१६	३	६	२८	३५	२३	६०	२	११	१०	५९	५१	९	२८	२९	७
१०	श	६	११	४३	२०	७७१	२९	४	११	४५	२४	२	२२	८	१७	४१	३८	१०६	४४	४	५	१२	४१	६	२९	३१	२५	६४	५८	११	११	२	१	९	२८	२५	५६
११	र	६	२४	२१	२७	७५५	५७	४	११	४७	४७	२	२२	८	१९	२७	२२	१०५	५८	४	५	९	२०	७	०	४०	२३	६५	०	११	११	५	२७	९	२८	२२	४६
१२	चं	७	७	१	२८	७४३	२	४	११	५०	९	२	२२	८	२१	१२	४०	१०५	५८	४	५	५	५८	७	१	४५	२३	६५	१	११	११	८	४५	९	२८	१९	३५
१३	मं	७	१९	२२	४	७३२	४	४	११	५२	३२	२	२२	८	२२	५७	५८	१०५	५८	४	५	२	३६	७	२	५०	२४	६५	१	११	११	१२	४	९	२८	१६	२४
१४	बु	८	०	३३	५४	७२४	५३	४	११	५४	५५	२	२२	८	२४	४३	१५	१०५	२३	४	४	५९	१४	७	३	५५	२६	६५	१	११	११	१५	२२	९	२८	१३	१३
३०	गु	८	१३	३९	३९	७२१	४	४	११	५७	१८	२	२२	८	२६	२८	३८	१०१	५७	४	४	५५	५३	७	५	०	२७	६५	१	११	११	१८	४१	९	२८	१०	२

३१पं० पौषकृष्ण ८गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह पुरुषा ३४५१
अयनांश २४।१३।२७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	४	८	४	६	११	९	३
१४	१५	११	१४	५	२७	१०	२८	२८
४६	२५	४०	८	११	३९	५७	३२	३२
१८	८	३९	३७	२५	५०	४१	१८	१८
६१	८०३	२	१०५	४६	६०	२	३	३
२५	२०	२२	३०	३०	२	१०	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि / ल.अं.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ चं. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ चं. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	३० गु. घं.	मि.
धनु	८	१७	८	१२	८	८	८	३	७	५९	७	५४	७	५०	७	४५	७	४१	७	३६	७	३२	७	२७	७	२३	७	१९
मकर	१०	४	९	५९	९	५५	९	५०	९	४६	९	४१	९	३७	९	३२	९	२८	९	२३	९	१९	९	१४	९	१०	९	६
कुम्भ	११	३५	११	३०	११	२६	११	२१	११	१७	११	१२	११	८	११	३	१०	५९	१०	५४	१०	५०	१०	४५	१०	४१	१०	३७
मीन	१	३	१२	५८	१२	५४	१२	४९	१२	४५	१२	४०	१२	३६	१२	३१	१२	२७	१२	२२	१२	१८	१२	१३	१२	९	१२	५
मेष	२	४०	२	३५	२	३१	२	२६	२	२२	२	१७	२	१३	२	८	२	४	१	५९	१	५५	१	५०	१	४६	१	४२
वृष	४	३६	४	३१	४	२७	४	२२	४	१८	४	१३	४	९	४	४	४	०	३	५५	३	५१	३	४६	३	४२	३	३८
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	६	५०	६	४५	६	४१	६	३६	६	३२	६	२७	६	२३	६	१८	६	१४	६	९	६	५	६	०	५	५६	५	५२
कर्क	९	८	९	३	८	५९	८	५४	८	५०	८	४५	८	४१	८	३६	८	३२	८	२७	८	२३	८	१८	८	१४	८	१०
सिंह	११	२२	११	१७	११	१३	११	८	११	४	१०	५९	१०	५५	१०	५०	१०	४६	१०	४१	१०	३७	१०	३२	१०	२८	१०	२४
कन्या	१	३५	१	३०	१	२६	१	२१	१	१७	१	१२	१	८	१	३	१२	५९	१२	५४	१२	५०	१२	४५	१२	४१	१२	३७
तुला	३	५१	३	४६	३	४२	३	३७	३	३३	३	२८	३	२४	३	१९	३	१५	३	१०	३	६	३	१	२	५७	२	५३
वृश्चिक	६	८	६	३	५	५९	५	५४	५	५०	५	४५	५	४१	५	३६	५	३२	५	२७	५	२३	५	१८	५	१४	५	१०

४०पं० पौषकृष्ण ३०गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह पुरुषा ३४६६
अयनांश २४।१३।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	४	८	४	७	११	९	३
२१	१३	११	२६	४	५	११	२८	२८
५६	३९	५७	२८	५५	०	१८	१०	१०
१४	३१	१८	३८	५३	२७	४१	२	२
६१	७२१	२	१०१	३	६५	३	३	३
२४	४	२२	४७	२०	१	१८	११	११



मूलविचार- श्लेषा/मघा ति.३ शनि रा.१।७ से। ति.५ सोम रा.१०।२८ तक। ज्येष्ठ/मूल ति.१२सोम रा.१।२७ से। ति.१४ बुध रा.शे.६।९ तक।

अनेक प्रकार के प्रश्नों का योग- प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा तीन का भाग दे, सम शेष से धातु,विषम शेष से जीव तथा शून्य शेष से मूल सम्बन्धी प्रश्न होता है। **दृष्टि द्वारा प्रश्न कथन-** प्रश्न कर्ता प्रश्नकाल में यदि उपर देखे तो जीव,नीचे देखे तो मूल एवं सम्मुख देखे तो धातु संबंधी प्रश्न होगा। **राशि द्वारा प्रश्न ज्ञान**-मेषादि राशियों के प्रश्न लग्न से क्रमशः मनुष्य, चतुष्पद, गर्भ, व्यवहार, भोग,स्त्री, व्यापार, दुःखभय,धन,कलह,गर्भ,एवं स्थान सम्बन्धी चिन्ता होती है। **कार्य सिद्धि सम्बन्धी प्रश्न ज्ञान**-गर्ग के अनुसार तात्कालिक लग्न में शीर्षोदय राशि पूर्ण चन्द्र से युक्त हो तो कार्य सिद्धि होगी पुनः ग्रह केंद्र व त्रिकोण में स्थित हों तथा पापग्रह ३,६,११ में हो तो भी कार्य सिद्ध होगा तथा वांछित व्यक्ति का आगमन होता है। **प्रश्नअक्षर द्वारा कार्य सिद्धि**-प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा पुनः तीन का भाग दे एकादि शेष से क्रमशः सफलता,यथा स्थिति एवं असफलता प्राप्त होती है। **कार्य सिद्धि का काल ज्ञान**-प्रश्न काल में चन्द्रमा यदि चरराशि का हो तो शीघ्र,स्थिर का हो तो यथा स्थिति एवं द्विस्वभाव राशि का हो तो देर से कार्य सफल होता है। **प्रश्न द्वारा दूर एवं समीप का ज्ञान**-नष्ट एवं ज्ञात वस्तु के लाभ सम्बन्धी प्रश्न के ज्ञान में चर लग्न से दूर, स्थिर से स्वगृह में एवं द्विस्वभाव में घर के बाहर वस्तु लाभ होता है। इसके विचार में ग्रहयोग भी विचार लें। **लाभ प्रश्न में दिशा ज्ञान**- प्रश्न काल के बलवान केन्द्रगत ग्रह की दिशा में नष्टधन को गया हुआ जाने। यदि बलवान ग्रह केन्द्रगत न हो तो लग्न राशि की दिशा में ही नष्टधन को समझना चाहिए अथवा चर राशि का होकर बलवान चन्द्रमा लग्न में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो उसकी दिशा में द्रव्य लाभ होता है। **धनुराशि के सूर्य में शुभकार्यों का निषेध**-धनु एवं मीन राशि के सूर्य, सिंह के गुरु,तथा सूर्य एवं गुरु के परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थिति के समय कोई शुभ कृत्य न करें।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मघा ।। **बुध**-मूल। ति.७ बुध पू.षा.में२८।४(सा.६।१)।। **ति.३०** गुरु उ.षा.में ६।४२ (दि.९।२६)।। **गुरु**-मघा २ चरण। **ति.४** रवि वक्री १३।५१ (दि.१२।१९)।। **शुक्र**-विशाखा। **ति.१०** शनि वृश्चिक २२।४२ (दि.३।५१)। **ति.१३** मंगल अनु.२७।१७ (रा.५।४१)।। **शनि**-उ.भा.३ चरण।। **राहु**-धनिष्ठा २ चरण।। **केतु**-श्लेषा ४ चरण।।

पौष कृष्ण पक्ष विचार-इस पक्ष में प्रतिपदा तिथि की हानि होने यह पक्ष १४ दिनो का है। **महाभारत** के अनुसार पौष मास में एक बार भोजन ग्रहण करने से मनुष्य सुन्दर दर्शनीय तथा यश को प्राप्त करता है। वामनपुराण के अनुसार गृह, वाहनादि के दान से दानकर्ता से श्रीहरि प्रसन्न रहते है। **२५ दिसम्बर** को ईसाई धर्म के अनुयायीयों का सबसे बड़ा पर्व **क्रिसमस डे (बड़ा दिन)** परम्परानुसार मनाया जायेगा तथा भारत के दो महापुरुषों **अटल बिहारी बाजपेयी** एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक ☛ **महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती** अंग्रेजी तारीख अनुसार आज मनाई जायेगी। **२७ दिसम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय में रात ९:२ के बाद अर्घ्य दें। **३१ दिसम्बर को अष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) होगा। **१ जनवरी** को **ईसाई** अर्थात् **अंग्रेजी नववर्ष २०२७ ईस्वी** का आरम्भ होगा। पूरे विश्व में शुभकामनाओं का आदान-प्रदान की धूम मचेगी। आज **अन्वष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु किया जायेगा। **३ जनवरी** को **सफला एकादशी व्रत सबका** है। आज जैन धर्म का प्रमुख पर्व **श्री पार्श्वनाथ की जयंती** मनाई जायेगी। **५ जनवरी** को ऋणमुक्ति के लिये **भौम प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज ही **मासशिवरात्रि व्रत** होगा। **७ जनवरी** को **स्नान-दान-श्राद्ध अमावस्या** होगी। शुभवार से शुभ है।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.२ शुक्र पुनर्वसु सूर्यवेध। **ति.३** शनि पुष्य सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है।। **ति.४** रवि श्लेषा केतुयुति। **ति.५** सोम मघा दवँरी धानकटाई मुहूर्त। **ति.६** मंगल रा.७।१९ भद्रापूर्व पू.फा.शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.७** बुध उ.फा.पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण दवँरी धानरोपाई शिल्पविद्या **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.८** गुरु हस्त शनिवेध। **ति.९** शुक्र सा.५।० रिक्ता बाद चित्रा नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१०** शनि सा.५।१३ भद्रा बाद स्वाती में कालावस्त्र नीलमादि रत्नधारण वाहनक्रय **विपणि** मुहूर्त। **ति.११** रवि विशाखा राहुवेध। **ति.१२** सोम अनुराधा केतुवेध। **पश्चात मासान्त दोष है।**

पौषशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १८ पौष से २ माघ तक १९४८ शक।
अंग्रेजी ८ जनवरी से २२ दिनांक तक सन् २०२७ ई.।

श्रीसंवत् २०८३ शक १९४८ दक्षिणायण दक्षिणगोल हेमन्तऋतु॥

दि.	मा.	तिथि ति.	वा	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द	-	रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.	पौषशुक्लपक्ष
२६	१६	१	शु	५१	४	रा	३	१०	पू.षा.	५	४	प्रा	७	४६	व्याघात	२१	३३	दि	३	२२	किं	१८	२१	वव	५१	४	प्रवर्द्धमान	८	१५	२९	२३	२४	१८	मकर	९।४०	६	४५	५	१५	८	२२	५७	३८	६१	२४	२२	२२	+	४	-	-	मकरराशि (दि.१०।३७)। ❸ रवियोग दि.१२।२९ तक। यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग दि.१२।२९ से।
२६	१८	२	श	५६	३	रा	५	९	उ.षा.	११	२९	दि	११	१९	हर्षण	२२	४४	दि	३	४९	वा	२३	३३	कौ	५६	३	राक्षस	९	१६	३०	२४	२५	१९			६	४४	५	१६	८	२३	५९	२	६१	२४	२२	१४	+	५	६	४४	◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरभृग सुभिक्ष। मु.३०सामान्य। त्रिपुष्करयोग दि.११।२९ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग।
२६	१९	३	र	६०	०	समस्त			श्रवण	१७	२४	दि	१	४१	वज्र	२३	२७	दि	४	६	तै	२८	१०	गर	६०	०	गद	१०	१७	१	२५	२६	२०	कुम्भ	४९।५६	६	४४	५	१६	८	२५	०	२६	६१	२२	२२	५	+	५	७	३७	मु.सावान८ हि.१४४८। कुम्भराशि (रा.२।४२)। पंचक आरंभ रा.२।४२ से। यायीजययोग दि.१।४१ से।
२६	२१	३	चं	०	१७	प्रा	६	५१	धनिष्ठा	२२	२९	सा	३	४३	सिद्धि	२३	३०	दि	४	७	गर	०	१७	व	३१	५०	शुभ	११	१८	२	२६	२७	२१			६	४४	५	१६	८	२६	१	४८	६१	२२	२१	५७	+	५	८	३०	भ रा ७।२८से (मृत्युलोक)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। ☉उ.षा.सूर्य ३७।२१(रा.९।४०)। यायीजययोग प्रा.६।५१तक।
२६	२३	४	मं	३	२३	प्रा	८	४	शतभिष	२६	२८	रा	५	१८	व्यतीपात	२२	३८	दि	३	४६	भ	३	२३	वव	३४	२४	मृत्यु	१२	१९	३	२७	२८	२२			६	४३	५	१७	८	२७	३	१०	६१	२१	२१	४७	+	६	९	२३	भ प्रा ८।४ तक (मृत्युलोक)। राष्ट्रिय युवा दिवस । स्वामी विवेकानन्द जयंती(नवीन मत)।
२६	२४	५	बु	५	२४	प्रा	८	५३	पू.भा.	२९	१७	रा	६	२५	वरीयान	२०	५३	दि	३	४	वा	५	२४	कौ	३५	४३	पद्म	१३	२०	४	२८	२९	२३	मीन	१३।३४	६	४३	५	१७	८	२८	४	३१	६१	२१	२१	३८	+	६	१०	१५	मीनराशि (दि.१२।१९)। रवियोग रा.६।२५ से।
२६	२६	६	गु	६	२	दि	९	७	उ.भा.	३०	५०	रा	७	३	परिघ	१८	८	दि	१	५८	तै	६	२	गर	३५	४३	छत्र	१४	२१	५	२९	३०	२४			६	४३	५	१७	८	२९	५	५२	६१	२१	२१	२८	+	७	११	१०	श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। अन्नरूपाषष्ठी व्रत(बङ्गाल)। लोहरी(पंजाब)। भोगी(द.भा.)।☉सं.मकर में सूर्य ५२।५६(रा.३।५३)। ❶
२६	२८	७	शु	५	२३	प्रा	८	५१	रेवती	३१	९	रा	७	९	शिव	१४	२१	दि	१२	२६	व	५	२३	भ	३४	२७	श्रीवत्स	१५	२२	६	१	१	२५	मेष	३।१९	६	४२	५	१८	९	०	७	१३	६१	२०	२१	१७	+	७	१२	७	भ प्रा ८।५१से रा ८।२९तक (मृत्युलोक)। मेषराशि (रा.७।१९)। पंचक समाप्त रा.९।७ तक। सौर व नेपाली माघ मासारम्भ। ❷
२६	३०	८	श	३	३०	प्रा	८	६	अश्विनी	३०	१९	रा	६	४९	सिद्ध	९	३९	दि	१०	३३	वव	३	३०	बा	३२	२	सौम्य	१६	२३	७	२	२	२६			६	४२	५	१८	९	१	८	३३	६१	१९	२१	६	+	७	१	८	तै पोंगल(द.भा.)। रवियोगयायीजययोग सा.६।४९ से।
२६	३२	९	र	०/५६	३३/८	प्रा	६/५	५४/३५	भरणी	२८	३०	रा	६	४	साध्य	४/५३	५/४४	प्रा	८/५	११/४९	कौ	०	३३	तै	२८/५६	३७/४९	कालदण्ड	१७	२४	८	३	३	२७	वृष	४२।४९	६	४१	५	१९	९	२	९	५२	६१	१९	२०	५५	+	८	२	१३	वृषराशि (रा.११।४९)। साम्बदशमी(उड़ीसा)। सूर्यपूजा(उड़ीसा)। रवियोग समस्तदिन। यायीजययोग प्रा.६।५८ तक।
२६	३४	११	चं	५१	८	रा	३	२८	कृत्तिका	२५	४९	सा	५	०	शुक्ल	५०	५६	रा	३	३	व	२४	२०	भ	५१	५८	स्थिर	१८	२५	९	४	४	२८			६	४१	५	१९	९	३	११	११	६१	१८	२०	४३	+	८	३	२१	भ दि.४।२५से रा.३।२८तक (स्वर्ग)। पुत्रदाएकादशी ११व्रत स्मार्त। मन्वादि ११। रवियोग सा.५।१० तक। पूर्व में यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग सा.५।१० से।
२६	३७	१२	मं	४६	४२	रा	१	२१	रोहिणी	२२	२९	दि	३	४०	ब्रह्म	४३	३३	रा	१२	६	वव	११	२०	[illegible]	५६	४२	मातङ्ग	१९	२६	१०	५	५	२९	मिथुन	५०।३४	६	४१	५	१९	९	४	१२	२९	६१	१७	२०	३१	+	८	४	२८	मिथुनराशि (रा.२।५५)। वैष्णावों की एकादशी व्रत। कूर्मद्वादशी। स्थायीजययोगद्विपुष्करयोग दि.३।४० से।
२६	३९	१३	बु	४१	२	रा	११	४	मृगशिर	१८	३९	दि	२	७	ऐन्द्र	३५	५३	रा	९	१	कौ	१३	५२	तै	४१	२	अमृत	२०	२७	११	६	६	३०			६	४०	५	२०	९	५	१३	४६	६१	१६	२०	१९	+	९	५	३२	प्रदोष १३ व्रत। ☉सायनकुम्भ में सूर्य ३३।४४(दि.८।२०)। रवियोग दि.२।७ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
२६	४१	१४	गु	३५	९	रा	८	४३	आर्द्रा	१४	३४	दि	१२	२९	वैधृति	२८	२	रा	५	५२	गर	८	५	व	३५	९	काण	२१	२८	१२	७	७	१	कर्क	५६।२५	६	४०	५	२०	९	६	१५	२	६१	१४	२०	६	+	९	६	२९	भ रा.८।४३से (स्वर्ग–मृत्यु)। कर्कराशि(रा.शे.५।२४)। रा.माघ मासारंभ दि.३१। ☉अभिजित में प्रविष्ट सूर्य २४।२८(सा.६।२७)। हेमूकलाणी शहीद दिवस(सिंध)। ❸
२६	४४	१५	शु	२९	१६	रा	६	२१	पुनर्वसु	१०	२३	दि	१०	४८	विष्कुंभ	२०	९	दि	२	४२	भ	२	१३	वव	२९/५६	१६/२७	लुम्बक	२२	२९	१३	८	८	२			६	३९	५	२१	९	७	१६	१६	६१	१४	१९	५३	+	९	-	-	भ प्रा.७।३२तक (मृत्युलोक)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।४८ तक।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार ३५

ति.११ सोम सा.५।० से रोहिणी में रे.८ ल.३(सा.५।०से) इष्ट ५ प्र.व.वि.११॥ (६वां शुक्र अशुभ)। या ल.५(रा.७।२० से) इष्ट ६प्र.व.वि.१३॥ या ल.७ (रा.११।४७ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१० (८वां चन्द्र दान)। या ल.८(रा.२।३ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३ (१०वां मंगल अशुभ)।

ति.१२ मंगल रोहिणी में रे.८ दिन ल.१२(दि.९।४३से)इष्ट७ प्र.व.वि.१८॥ या **दिन ल.३ (दि.२।४४ से) इष्ट५प्र.व.वि.११॥** दि.३।४० से मृग. सूर्यवेध।

ति.१३ बुध दि.२।७ तक मृग. सूर्यवेध।

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		भौम				गति		बुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	शु	८	२६	५८	२	७३७	४२	४	११	५९	४०	२	२२	८	२८	१०	२५	१००	३०	४	४	५२	३२	७	६	५	२९	६५	५९	११	११	२१	५९	९	२८	६	५२
२	श	९	७	४१	४१	७२२	४२	४	१२	२	३	२	२२	८	२९	५०	५५	१००	४५	४	४	४९	१४	७	७	११	२७	६६	५	११	११	२५	१७	९	२८	३	४१
३	र	९	१९	४८	४९	७२८	११	४	१२	४	२६	२	२२	९	१	३१	४१	१०२	३२	४	४	४५	४७	७	८	१७	३२	६६	५	११	११	२८	३६	९	२८	०	३०
३	चं	१०	१	३	३८	७३७	३०	४	१२	६	४९	२	२२	९	३	१४	१२	१०२	३३	४	४	४२	३९	७	९	२३	३०	६६	५	११	११	३१	५५	९	२७	५७	१९
४	मं	१०	१४	२९	५	७५०	११	४	१२	९	११	२	२२	९	४	५६	४५	९९	२२	४	४	३९	२१	७	१०	२९	४२	६६	५	११	११	३५	१६	९	२७	५४	८
५	बु	१०	२७	७	४	७६४	७	४	१२	११	३४	२	२२	९	६	३६	८	९८	५१	४	४	३६	४	७	११	३५	४८	६६	५	११	११	३८	३७	९	२७	५०	५८
६	गु	११	९	५९	१५	७७९	५१	४	१२	१३	५७	२	२२	९	८	१४	५९	९८	५१	४	४	३१	२	७	१२	४१	५३	६६	५	११	११	४१	५८	९	२७	४७	४७
७	शु	११	२३	६	५१	७९५	४७	४	१२	१६	२०	२	२२	९	९	५३	५०	९८	५१	४	४	२५	१३	७	१३	४७	५८	६६	५	११	११	४५	१९	९	२७	४४	३६
८	श	०	५	३०	५	८११	१६	४	१२	१८	४२	२	२२	९	११	३२	४१	९८	४३	४	४	१९	२४	७	१४	५४	३	६६	५	११	११	४८	४०	९	२७	४१	२५
९	र	०	२०	८	८	८२७	५८	४	१२	२१	५	०	६	९	१३	११	३३	९२	४३	४	४	१३	३४	७	१६	०	८	६६	५	११	११	५२	१	९	२७	३८	१४
११	चं	१	३	५९	४०	८३७	२७	४	१२	२१	५२	१३	१	९	१४	४४	१७	९२	४३	४	४	७	४५	७	१७	६	१३	६६	५	११	११	५५	४३	९	२७	३५	४
१२	मं	१	१८	२	३५	८४७	३	४	१२	८	५१	१३	१	९	१६	१७	०	९२	४३	४	४	१	५६	७	१८	१२	१८	६६	५	११	१२	०	१२	९	२७	३१	५३
१३	बु	२	२	१४	२२	८५४	३५	४	११	५५	५०	१३	१	९	१७	४९	४३	९२	४४	४	३	५६	७	७	१९	१८	२३	६६	५	११	१२	४	४२	९	२७	२८	४२
१४	गु	२	१६	३१	३६	८५८	२५	४	११	४२	५०	१३	१	९	१९	२२	२७	९१	५०	४	३	५०	१७	७	२०	२४	२८	६६	५	११	१२	९	११	९	२७	२५	३१
१५	शु	३	०	५१	११	८५९	५७	४	११	२९	४९	१३	१	९	२०	५४	१७	८४	४१	४	३	४४	२८	७	२१	३०	३३	६६	१२	११	१२	१३	४१	९	२७	२२	२०

४१ पं० पौषशुक्ल ८ शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३४७४
अयनांश २४।१३।२९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	४	९	४	७	११	९	३
९	५	१२	११	४	१४	११	२७	२७
८	३०	१८	३२	१९	५४	४८	४१	४१
३३	५	४२	४१	२४	३	४०	२५	२५
६१	८११	२	९८	५	६६	४	३	३
११	१६	२२	५३	४० व	५	२१	११	११



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि ल.अं.	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	११ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	१५ शु. घं.	मि.
धनु	७	१५	७	१०	७	५	७	१	६	५६	६	५१	६	४७	मकर	८	२९	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०
मकर	९	२	८	५७	८	५२	८	४८	८	४३	८	३८	८	३४	कुम्भ	१०	०	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१
कुम्भ	१०	३३	१०	२८	१०	२३	१०	१९	१०	१४	१०	९	१०	५	मीन	११	२८	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९
मीन	१२	१	११	५६	११	५१	११	४७	११	४२	११	३७	११	३३	मेष	१	५	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
मेष	१	३८	१	३३	१	२८	१	२४	१	१९	१	१४	१	१०	वृष	३	१	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
वृष	३	३४	३	२९	३	२४	३	२०	३	१५	३	१०	३	६	मिथुन	५	१५	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
मिथुन	५	४८	५	४३	५	३८	५	३४	५	२९	५	२४	५	२०	कर्क	७	३३	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४
कर्क	८	६	८	१	७	५६	७	५२	७	४७	७	४२	७	३८	सिंह	९	४७	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८
सिंह	१०	२०	१०	१५	१०	१०	१०	६	१०	१	९	५६	९	५२	कन्या	१२	०	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१
कन्या	१२	३३	१२	२८	१२	२३	१२	१९	१२	१४	१२	९	१२	५	तुला	२	१६	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७
तुला	२	४९	२	४४	२	३९	२	३५	२	३०	२	२५	२	२१	वृश्चिक	४	३३	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४
वृश्चिक	५	६	५	१	४	५६	४	५२	४	४७	४	४२	४	३८	धनु	६	३९	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०

४२पं० पौषशुक्ल १५ शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३४८२
अयनांश २४।१३।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	४	९	४	७	११	९	३
७	०	११	२०	३	२१	१२	२७	२७
१६	५१	२९	५४	४४	३०	१३	२२	२२
१६	११	४९	१७	२८	३३	४१	२०	२०
६१	८५९	१३	८४	५	६६	४	३	३
१४	५७	१	४१	४९ व	१२	२१	११	११



❶मु.३०समासमताकर। बाद की २०व ४०घटी पुण्य। दूसरेदिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति पुण्यकाल। रवियोग रा.७।३तक। पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग। ❷गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (तिथिमत)। पोंगल (द.भा.)। मकरादि(बङ्गाल)। मघाबिहू(असम)। मृत्युबाण ५९।३८से (रा.३।२१)। यायीजयस्थायीजययोगश्च रा.७।१९ से। सर्वार्थाअमृतसिद्धियोग रा.७।१९ से पुन सर्वार्थसिद्धियोग।

मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.६ गुरु रा.७।३ से। **ति.८** शनि रा.६।४९ तक। **पञ्चक विचार-ति.३** रवि रा. २।४२ से। **ति.७** शुक्र रा.७।९ तक।

◆ **ति.१२** मंगल रोहिणी में लालवस्त्र मूँगारत्नधारण शिल्पविद्या शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.१३** बुध रा.९।१ वैधृति पूर्व मृग पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना **पूर्वदिशा की यात्रा** शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा(ल.२ दि.१२।४४ से) विपणि** वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.१४** गुरु आर्द्रा रिक्तावैधृति। **ति.१५** शुक्र प्रा.७।३२ भद्रा बाद पुनर्वसु शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्वती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा(ल.१२ दि.९।३१ से)** वाहनक्रय मुहूर्त।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ शुक्र पू.षा.सूर्ययुति। **ति.२** शनि उ.षा.सूर्यभोग्य है। **ति.३** रवि दि.१।४१ तक श्रवण पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.३** सोम प्रा.६।५१ रिक्तापूर्व धनिष्ठा मे राहुयुति। **ति.४** मंगल दि.३।४६ रिक्ताव्यतिपात बाद शत.रोगविमुक्तस्नान(४र्थी) वाहनक्रय शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.५** बुध पू.भा. धानरोपाई शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.६** गुरु उ.भा.शनियुति। **ति.७** शुक्र प्रा.८।५१ भद्रापूर्व रेवती पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्ण रत्नधारण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय **पश्चिमदिशा को त्यागकरयात्रा** दर्वी शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **अक्षरारम्भ-जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा(ल.१२** दि.१०।० से) **विपणि व्यापार कूपनिर्माण(बोरिंग)**मुहूर्त। **ति.८** शनि प्रा.८।६ रिक्ता पूर्व अश्विनी कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण **विपणि** वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.९** रवि भरणी में भौमवेध। **ति.११** सोम दि.४।२५ भद्रापूर्व कृत्तिका मे धानकटाई **वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। ◆

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मघा॥ ति.९ रवि वक्री २२।५४ (दि.३।५१)॥ **बुध-उ.षा.। ति.२** शनि मकर में ५।२४ (प्रा.८।५४)। **ति.७** शुक्र श्रवण ३।४५ (प्रा.८।१२)॥ **वक्रीगुरु-मघा २ चरण॥ शुक्र-अनुराधा। ति.९** रवि ज्येष्ठा ३६।१० (रा.९।१९)॥ **शनि-उ.भा.में ३ चरण॥ राहु-धनिष्ठा २** चरण॥ **केतु-श्लेषा ४ चरण॥**

पौष शुक्ल पक्ष विचार-तृतीया की वृद्धि एवं १० तिथि की हानि होने से यह पक्ष १५ दिनों का है। पौष शुक्ल एकादशी को कृत्तिका हो तो लाल पदार्थो से लाभ तथा पहले मेघ तक धान से लाभ हो। **महाभारत** के अनुसार पौष मास में एक बार भोजन ग्रहण करने से मनुष्य सुन्दर दर्शनीय तथा यश को प्राप्त करता है। **वामनपुराण** के अनुसार गृह, वाहनादि के दान से दान-कर्ता से श्रीहरि प्रसन्न रहते हैं। ९ **जनवरी** को **चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य ☛ पदार्थो का मूल्य सामान्य रहेगा। **११ जनवरी** को **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **१४ जनवरी** को पंजाब के क्षेत्र में **लोहड़ी** का पर्व तथा दक्षिण भारत मे **भोगी** मनाई जायेगी। आज **मकर के सूर्य** रात्रि ३:५३ पर प्रवेश करेगे। अतः दूसरे दिन **१५ जनवरी** को सूर्योदय उपरान्त **मकर संक्रान्ति** का पुण्यकाल रहेगा। संक्रान्ति पर सर्वत्र गंगा नदी एवं अन्य नदियों के तीर्थ सहित तालाब, कुँआ आदि पर स्नान करके दान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। ऊनी वस्त्र, स्वेटर, शाल, कम्बल, जूता तथा धार्मिक पुस्तके एवं पंचांग का दान विशेष पुण्य फल देने वाला होता है। आज से **खरमास समाप्त** होगा। **१८ जनवरी** को **पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त्त** जनो द्वारा किया जायेगा। **१९ जनवरी को वैष्णवों** की **एकादशी व्रत** होगा। **२० जनवरी को प्रदोष व्रत** होगा। **२२ जनवरी** को **स्नान-दान व्रत** का **पौषी पूर्णिमा** मनाई जायेगी।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.
श्रीसंवत २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु॥		तिथि							नक्षत्र						योग						करण						योग	तारीखें					
२६	४६	१	श	२३	३७	दि	४	५	पुष्य	६	२१	दि	९	११	प्रीति	१२	२६	दि	११	३७	कौ	२३	३७	तै	५१	०	मित्र	२३	१	१४	९	९	३
२६	४८	२	र	१८	२२	दि	१	२८	श्लेषा	२ / ५६	३९ / ४९	प्रा	७ / ६	४१ / २५	आयुष्मान	४ / ५३	५९ / १	प्रा	८ / ५	३७ / ५०	गर	१८	२२	व	४६	१	वज्र	२४	२	१५	१०	१०	४
२६	५१	३	चं	१३	४०	दि	१२	६	पू.फा.	५७	८	रा	५	२९	शोभन	५१	३८	रा	३	१७	भ	१३	४०	वव	४१	४५	ध्वज	२५	३	१६	११	११	५
२६	५४	४	मं	९	५०	दि	१०	३३	उ.फा.	५५	३४	रा	४	५०	अतिगंड	४५	५६	रा	१२	५९	वा	९	५०	कौ	३८	२३	धाता	२६	४	१७	१२	१२	६
२६	५६	५	बु	६	५६	दि	९	२२	हस्त	५५	४	रा	४	३७	सुकर्मा	४१	४	रा	११	१	तै	६	५६	गर	३६	०	आनंद	२७	५	१८	१३	१३	७
२६	५९	६	गु	५	५	प्रा	८	३७	चित्रा	५५	४५	रा	४	५३	धृति	३७	७	रा	९	२६	व	५	५	भ	३४	४६	चर	२८	६	१९	१४	१४	८
२७	२	७	शु	४	२८	प्रा	८	२२	स्वाती	५७	४२	रा	५	३९	शूल	३४	११	रा	८	१५	वव	४	२८	वा	३४	४८	गद	२९	७	२०	१५	१५	९
२७	५	८	श	५	८	प्रा	८	३८	विशाखा	६०	०	समस्त			गंड	३२	१५	रा	७	२९	कौ	५	८	तै	३६	११	शुभ	३०	८	२१	१६	१६	१०
२७	८	९	र	७	१४	दि	९	२७	विशाखा	०	५६	प्रा	६	५६	वृद्धि	३१	१७	रा	७	४	गर	७	१४	व	३८	४७	उत्पात	३१	९	२२	१७	१७	११
२७	१०	१०	चं	१०	२१	दि	१०	४२	अनुराधा	५	१६	प्रा	८	४०	ध्रुव	३१	१२	रा	७	२	भ	१०	२१	वव	४२	२९	मानस	फ	१०	२३	१८	१८	१२
२७	१३	११	मं	१४	३७	दि	१२	२३	ज्येष्ठा	१०	४०	दि	१०	४९	व्याघात	३१	५१	रा	७	१७	वा	१४	३७	कौ	४७	६	मुद्गर	२	११	२४	१९	१९	१३
२७	१६	१२	बु	१९	३५	दि	२	२२	मूल	१६	४६	दि	१	१४	हर्षण	३२	५८	रा	७	४३	तै	१९	३५	गर	५२	१७	ध्वांक्ष	३	१२	२५	२०	२०	१४
२७	२०	१३	गु	२४	५९	सा	४	३१	पू.षा.	२३	१९	सा	३	५१	वज्र	३४	२१	रा	८	१६	व	२४	५९	भ	४७	४०	धाता	४	१३	२६	२१	२१	१५
२७	२३	१४	शु	३०	२१	रा	६	३९	उ.षा.	२९	४९	रा	६	२६	सिद्धि	३५	३९	रा	८	४६	श	३०	२१	च	६०	०	आनंद	५	१४	२७	२२	२२	१६
२७	२६	३०	श	३५	१४	रा	८	३६	श्रवण	३५	५२	रा	८	५१	व्यतीपात	३६	३५	रा	९	९	च	२	४७	ना	३५	१४	स्थिर	६	१५	२८	२३	२३	१७

माघकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ३ माघ से १७ तिथि तक १९४८ शक। अंग्रेजी दिनांक २३ जनवरी से ६ फरवरी तक सन् २०२७ ई.।

मकर सूर्य तथा चान्द्रमास में गृहारंभ शुभ है।

अं. (तारीख)	चन्द्र राशि प्रवेश (नक्षत्र)	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति व	-	रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	माघकृष्णपक्ष
२३			६	३९	५	२१	९	८	१७	३०	६१	१३	१९	३९	+	१०	६	३९	किसी एक तीर्थ को स्वीकार कर माघ मासपर्यन्त प्रयाग स्मरण कर तीर्थ जल में नित्यस्नान करें। माघ में मूली भक्षण न करें। माघमास पर्यंत स्नान करें। ❶
२४	सिंह	२।३९	६	३८	५	२२	९	९	१८	४३	६१	१२	१९	२५	+	१०	७	४५	भ.रा.१।२ से (मृत्युलोक)। **सिंहराशि** (प्रा.७।४१)।⊙**श्रवण में सूर्य** ४०।२९(रा.१०।५०)। **यमघंटयोग** प्रा.७।४१से।
२५			६	३८	५	२२	९	१०	१९	५५	६१	१०	१९	११	+	१०	८	४८	भ.१३।४० तक (मृत्युलोक)(दि.१२।६)। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत**(चं.उ.रा.८।४८)। *माघकृष्ण चतुर्थी में गणेशजन्म। चन्द्र को अर्घ्यदान। सर्वदिवमय* ❷
२६	कन्या	११।४४	६	३७	५	२३	९	११	२१	५	६१	१०	१८	५६	+	१०	९	४९	**कन्याराशि**(दि.११।१९)। ❶**नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती। प्रयाग माघमेला प्रारंभ। थईपूषम**(द.भा.)। यायीजययोग दि.९।११ से।
२७			६	३६	५	२४	९	१२	२२	१५	६१	१०	१८	४१	+	११	१०	४७	रवियोग रा.शे.४।३७ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.४।३७ तक। ❸**त्रिवेणीआवस्या**(उड़ीसा)। **करवावु**(केरल)। **थई आवस्या**(द.भा.)। **दर्शआवस्या**(नेपाल)।■
२८	तुला	२५।२४	६	३६	५	२४	९	१३	२३	२५	६१	८	१८	२६	+	११	११	४५	भ.प्रा.८।३७से रा.८।३०तक (पाताल)। **तुलाराशि** (दि.४।४६)। रवियोग रा.शे.४।५३ तक।
२९			६	३५	५	२५	९	१४	२४	३३	६१	७	१८	१०	+	११	१२	४२	प्रदोष में **कालाष्टमी**। अपराह्न मे **अष्टकाश्राद्ध**। पार्वणविधि। **मासाष्टक। स्वामीविवेकानन्द जयंती(तिथिमत)।**
३०	वृश्चिक	४५।७	६	३५	५	२५	९	१५	२५	४०	६१	६	१७	५४	+	११	१	३९	**वृश्चिकराशि** (रा.१२।३७)। अपराह्न **अन्वष्टकाश्राद्ध**। ■ ⊙**धनिष्ठा में सूर्य** ४६।२५(सा.५।१)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।५१ तक।
३१			६	३४	५	२६	९	१६	२६	४६	६१	५	१७	३८	+	११	२	३५	भ.रा.७।१८से (स्वर्ग)। यायीजययोग प्रा.६।५६ से। ❷⊙**अभिजित निवृत्त सूर्य** २९।३१(रा.६।२६)। **मृत्युबाण** ३९।१९(रा.१०।२२तक)।
फ			६	३४	५	२६	९	१७	२७	५१	६१	४	१७	२१	+	११	३	२९	भ.दि.१०।४२तक (स्वर्ग)। **फरवरी २**। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.८।४० तक।
२	धनु	१०।४०	६	३३	५	२७	९	१८	२८	५५	६१	४	१७	५	+	१२	४	१९	**धनुराशि** (दि.१०।४९)। **षट्तिला एकादशी ११व्रत सबका। मृत्युबाण** ३०।२२(सा.६।४६ से)।
३			६	३२	५	२८	९	१९	२९	५९	६१	२	१६	४७	+	१२	५	४	**प्रदोष १२व्रत। मृत्युबाण** २९।३०(सा.६।२०तक)।
४	मकर	३९।५६	६	३२	५	२८	९	२०	३१	१	६०	५९	१६	३०	+	१२	५	४५	भ.सा.४।३१से रा.शे.५।३६तक (पाताल)। **मकरराशि** (रा.१०।३०)। **मासशिवरात्रि १३व्रत। कलियुगादि। मेरुत्रयोदशी १३**(जैन)। यायीजययोग सा.३।५१ से।
५			६	३१	५	२९	९	२१	३२	०	६०	५९	१६	१२	+	१२	६	२२	सूर्योदय पूर्व **यम को तर्पण**। रात्रिव्यापिनि **रटन्तीकलिका पूजन**(बङ्गाल)। स्थायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोगश्च सा.६।२६ से।
६			६	३१	५	२९	९	२२	३२	५९	६०	५७	१५	५४	+	१२	-	-	**मौनी आवस्या**। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष व भय। आज मौनव्रत धारणकर स्नान। प्रयाग व काशी दशाश्वमेध में स्नान। ❸

॥सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.	वा.	चन्द्र				गति		वक्रीभौम				गति		मार्गीबुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	श	३	१५	९	१४	८५७	३९	४	११	१६	४८	१३	१	९	२२	१८	५८	८४	४१	४	३	३८	३९	७	२२	३६	४५	६६	२६	११	१२	१८	१०	९	२७	११	१०
२	र	४	०	३५	२९	८४४	४९	४	११	३	४७	१३	१	९	२३	४३	३९	८४	४१	४	३	३२	५०	७	२३	४३	११	६६	२६	११	१२	२२	३९	९	२७	१५	५९
३	चं	४	१३	२७	२४	८३२	२२	४	१०	५०	४७	१३	१	९	२५	८	२०	८४	४२	४	३	२७	३	७	२४	४९	३८	६६	२६	११	१२	२७	९	९	२७	१२	४८
४	मं	४	२७	१९	१५	८२१	२६	४	१०	३७	४६	१३	१	९	२६	३३	२	८१	३९	४	३	२१	१७	७	२५	५६	४	६६	२६	११	१२	३१	३८	९	२७	९	३७
५	बु	५	९	५९	३६	८०६	४३	४	१०	२४	४५	१३	१	९	२७	५४	४१	७४	४८	४	३	१५	३२	७	२७	२	३०	६९	५८	११	१२	३६	९	९	२७	६	२६
६	गु	५	२४	२५	२	७९०	५९	४	१०	११	४४	१३	१	९	२९	९	२९	७४	४८	४	३	९	४६	७	२८	१२	२९	७०	२५	११	१२	४०	४१	९	२७	३	१६
७	शु	६	७	३४	५३	७७४	४९	४	९	५८	४३	१३	१	१०	०	२४	१८	७४	४८	४	३	४	०	७	२९	१२	२९	७०	२५	११	१२	४५	१३	९	२७	०	५
८	श	६	२०	२९	३२	७७०	२७	४	९	४५	४३	१३	१	१०	१	३९	६	७४	५७	४	२	५८	८	८	०	३३	१८	७०	२५	११	१२	४९	४५	९	२६	५६	५४
९	र	७	३	४९	६	७५९	५	४	९	३२	४२	१३	१	१०	२	५३	५६	६७	१७	४	२	५०	१२	८	१	४३	४३	७०	२५	११	१२	५४	१७	९	२६	५३	४३
१०	चं	७	१५	३४	३०	७४६	६	४	९	१९	४१	१३	१	१०	४	१	१३	५८	४५	४	२	४२	१७	८	२	५४	८	७०	२५	११	१२	५८	४९	९	२६	५०	३२
११	मं	७	२७	४९	३१	७३३	५६	४	९	६	४०	१३	१	१०	४	५९	५८	५८	४५	४	२	३४	२२	८	४	४	३३	७०	२५	११	१३	३	२१	९	२६	४७	२१
१२	बु	८	९	५७	५	७२६	१०	४	८	५३	४०	३३	४७	१०	५	५८	४२	५८	४५	४	२	२६	२६	८	५	१४	४८	७०	२५	११	१३	८	२६	९	२६	४४	११
१३	गु	८	२१	५९	४३	७२१	१५	४	८	१९	५२	२४	४५	१०	६	५७	२७	५९	२६	४	२	१८	३१	८	६	२५	२३	७०	२५	११	१३	१४	६	९	२६	४१	०
१४	शु	९	४	१	१८	७२१	४८	४	७	५५	८	२४	४५	१०	७	५६	५३	४५	५९	४	२	१०	३६	८	७	३५	४७	७०	२५	११	१३	१९	४७	९	२६	३७	४९
३०	श	९	१६	५	३५	७२६	४३	४	७	३०	२३	२४	४५	१०	८	४२	५२	३८	१८	४	२	२	४०	८	८	४६	१२	७०	२५	११	१३	२५	२७	९	२६	३४	३८

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। वक्रीभौम-मघा॥ **बुध**-श्रवण। **ति.१** शनि धनिष्ठा ४३।१४ (रा.११।५७)। **ति.६** गुरु कुम्भ ४०।३१ (रा.१०।४८)। **ति.१२** बुध शतभिष ४२।११(रा.११।२४)॥ **वक्रीगुरु-ति.४** मंगल मघा में १ चरण १३।२४(दि.१२।१०)॥ **शुक्र**-ज्येष्ठा। **ति.७** शुक्र मूलधनु में ३१।३७(रा.७।१४)॥ **शनि-ति.१४** शुक्र उ.भा.४ चरण २।२१(प्रा.७।२७)॥ **राहु-ति.१३** गुरु धनिष्ठा १ चरण॥ **केतु**-श्लेषा में ३ चरण ०।२३(प्रा.६।४१)॥

माघ कृष्ण पक्ष विचार-यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। आज से **माघ स्नान का व्रत** नियम प्रारंभ होगा। प्रतिदिन काशी के दशाश्वमेध तीर्थ तथा प्रयाग तीर्थ में स्नान का विधान है। गंगा आदि किसी एक तीर्थ को स्वीकार कर माघ पर्यन्त प्रयाग तीर्थ का स्मरण करके तीर्थजल में नित्य स्नान करें। माघ मास में मूली भक्षण न करें। आज से **प्रयाग में माघ मेला** प्रारंभ हो जायेगा। माघ मास में प्रतिपदा को पवन तथा मेघ (बादल) न हो तो सुगन्धित पदार्थ महँगे होंगे। लोक भाषा में **माघ गणेश चौथ व्रत**☛

४३ पं० माघकृष्णा ८ शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३४८९
अयनांश २४।१३।३१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	४	१०	४	८	११	९	३
१५	२०	९	१	२	०	१२	२६	२६
२५	२९	४५	३९	५८	३३	४९	५६	५६
४०	३२	४३	६	८	१८	४५	५४	५४
६१	७७०	१३	७४	७	७०	४	३	३
६	२७	१	५७	४६	२५	३२	११	११
		व		व				



॥ दैनिक लग्न सारिणी ॥

तिथि / ल.अं.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ चं. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० चं. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	३० श. घं.	मि.
मकर	७	५६	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३	७	२७	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८
कुम्भ	९	२७	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९
मीन	१०	५५	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७
मेष	१२	३२	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४
वृष	२	२८	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०
मिथुन	४	४२	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	७	०	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२
सिंह	९	१४	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६
कन्या	११	२७	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९
तुला	१	४३	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५
वृश्चिक	४	०	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२
धनु	६	६	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ शनि पुष्य सौभाग्वती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण **विपणि बीजोप्ति** वाहनक्रय मुहूर्त। ति.२ रवि श्लेषा केतुयुति। प्रा.७।४१ से मघा भौमयुति। ति.३ सोम दि.१२।६ भद्रा बाद पू.फा. **विद्यारंभ (ल.१२ दि.९।१८ से) वर-कन्या वरण(सगाई)**मुहूर्त। ति.४ मंगल दि.१०।३३ रिक्ता बाद उ.फा.पुंसवन सीमन्त सूतीकास्नान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण रोगविमुक्तस्नान(४थी) **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.५ बुध हस्त शनिवेध। ति.६ गुरु प्रा.८।३७ भद्रापूर्व चित्रा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्र स्वर्ण रत्नधारण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि व्यापार** वाहनक्रय शल्यक्रिया धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.७ शुक्र स्वाती में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीनवस्त्र स्वर्ण रत्नधारण आभूषण निर्माण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.८ शनि विशाखा राहुवेध। ति.९ रवि रा.७।१८ भद्रापूर्व विशाखा पूर्वदोष। दि.९।२७ रिक्ता बाद अनुराधा शिशुताम्बूलभक्षण सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्र स्वर्ण रत्नधारण बागवानी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या नावनिर्माण **विपणि** वाहनक्रय शल्यक्रिया **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.१० सोम प्रा.८।४० तक अनुराधा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना दोलारोहण अन्नप्राशन **पश्चिमदिशा की यात्रा** दवँरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **विपणि व्यापार** वाहनक्रय **गर्भाधान कूपनिर्माण(बोरिंग)**मुहूर्त। ति.११ मंगल ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया मुहूर्त। ति.१२ बुध दि.२।२२ तक मूल शिशुताम्बूलभक्षण दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

४४ पं० माघकृष्णा ३० शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३४९५
अयनांश २४।१३।३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	४	१०	४	८	११	९	३
२	१६	७	८	२	८	१३	२६	२६
३२	५	३०	४२	२	४६	२५	३४	३४
५९	३५	२३	५२	४०	१२	२७	३८	३८
६०	७२६	२४	३८	७	७०	५	३	३
५७	४३	४५	१८	५५	२५	४०	११	११
		व	मा	व				



मूलविचार-श्लेषा/मघा ति.१ शनि दि.९।११ से। **ति.२** रवि रा.शे.६।२५ तक। **ज्येष्ठ/मूल ति.१०** सोम प्रा.८।४० से। **ति.१२** बुध दि.१।१४ तक।

☛जो कि माताएँ पुत्र के दीर्घायु की कामना से करती हैं, यह **२५ जनवरी** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर रात ८।४८ पर चन्द्रोदय में अर्घ्य दिया जायेगा। आज के दिन श्री गणेश जी की उत्पत्ति हुई थी, इसे **वक्रतुण्ड चतुर्थी** एवं **तिलकुटी चौथ** भी कहते हैं। **२६ जनवरी** को **भारतीय गणतन्त्र दिवस** का पर्व ध्वजारोहरण, राष्ट्रगान के साथ विविध उत्सवों का आयोजन होगा। **२९ जनवरी** को **अष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) होगा। **स्वामी विवेकानन्द जयंती** मनाई जायेगी। **३० जनवरी** को **अन्वष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु होगा। **२ फरवरी को षट्तिला एकादशी व्रत सबका** है। आज तिलयुक्त जल द्वारा स्नान, उबटन, होम, जलग्रहण, भोजन तथा दान छः प्रकार से व्यवहार करे। **३ फरवरी को प्रदोष व्रत** होगा। **४ फरवरी** को **मास शिवरात्रि व्रत** है। **६ फरवरी को स्नान-दान-श्राद्ध की मौनी अमावस्या** मनाई जायेगी। प्रयाग में माघ मास का **मुख्य स्नान** आज ही होगा।

विवाह मुहूर्त
पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.२ रवि प्रा.७।४१ से मघा में भौमयुति। रा.१०।४९ से मृत्युबाण।

ति.३ सोम रा.शे.५।२९ से उ.फा.में रे.९ रात्रि में पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.४ मंगल उ.फा.में रे.९ **दिन ल.१२** (दि.९।१४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३॥ (६वां चन्द्र अशुभ) या **दिन ल.३** (दि.२।१५से) इष्ट५ग्र.व.वि.१४॥ (६वां शुक्र अशुभ) या **ल.गोधूलि**(सूर्यास्तकाल) या **ल.५** (रा.६।४७ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३(लग्न का चन्द्र दान) या **ल.७**(रा.११।१४ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१५।

ति.५ बुध हस्त शनिवेध।

ति.६ गुरु रा.शे.४।५३ से स्वाती में रे.७ रात्रि पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.७ शुक्र स्वाती में रे.७ **दिन ल.१२** (दि.९।२ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३॥ (८वां चन्द्र अशुभ) या **ल.गोधूलि**(सूर्यास्तकाल) या **ल.५**(रा.६।३५ से) इष्ट७ग्र.व.वि.१८॥ या **ल.८**(रा.११।१८ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १२ (१०वां भौम अशुभ)। या **ल.९**(रा.३।३५ से) इष्ट५ग्र.व.वि.१३॥

ति.९ रवि प्रा.८।५६ से अनु. रे.८ **दिन ल. १२** (दि.८।५३से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३॥ या **ल.गोधूलि**(सूर्यास्तकाल) या **ल.५** (रा.६।२६ से) इष्ट६ग्र.व.वि.१३॥ या **ल.७** (रा.१०।५३ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३(३ स्व शुक्र अशुभ) या **ल.८**(रा.१।९ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१२(१०वां भौम अशुभ)॥

ति.१० सोम प्रा.८।४० तक अनु. रे.८ दिन पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.११ मंगल सा.६।४६ मृत्युबाण पूर्व मूल रे.६ **दिनल.१२** (दि.८।४५से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११॥ या **ल.३**(दि.१।४६से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११॥(७वां चन्द्र दान) या **ल. गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.५**(रा.६।१८ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.११॥ (७वां बुध दान)

ति.१२ बुध दि.१।१४ तक मूल में मृत्युबाण।

पश्चात मासान्त दोष है।

माघशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथिं १८ माघ से १ फाल्गुन तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक ७ फरवरी से २० दिनांक तक सन् २०२७ ई.।

श्रीसंवत २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.प.		तिथि ति.	वा	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द	-	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त काशी घ.	प.	माघशुक्लपक्ष
२७	२९	१	र	३९	२२	रा	१०	१४	धनिष्ठा	४१	१२	रा	१०	५८	वरीयान	३६	५६	रा	९	१६	कि	७	१८	बव	३९	२२	मातङ्ग	७	१६	२९	२४	२४	१८	कुम्भ	८।३२	६	३०	५	३०	९	२३	३३	५६	६०	५७	१५	३५	+	१२	-	-	कुम्भराशि(दि.९।५५)। पंचक आरंभ दि.९।५५। गुप्तनवरात्र(नोड़ता)प्रारंभ। बलुभ जयंती। यायीजययोग रा.१०।२४ तक।
२७	३२	२	चं	४२	१९	रा	११	२४	शतभिष	४५	२५	रा	१२	३९	परिघ	३६	२३	रा	९	२	बा	१०	५०	कौ	४२	२९	अमृत	८	१७	३०	२५	२५	१९			६	२९	५	३१	९	२४	३४	५३	६०	५६	१५	१७	+	१२	७	१९	◡ चन्द्रदर्शन। समश्रृंग समताकर। मु.१५ महँगी। ❶मध्याह्न गणेश जयंती। सोपपदा ४। वेद अध्ययन का निषेध। रवियोग रा.४।३७ तक।
२७	३५	३	मं	४४	११	रा	१२	९	पू.भा.	४८	३३	रा	१	५४	शिव	३५	१	रा	८	२९	तै	१३	१५	गर	४४	११	काण	९	१८	१	२६	२६	२०	मीन	३२।४६	६	२९	५	३१	९	२५	३५	४९	६०	५३	१४	५८	+	१२	८	१२	मु.रमजान ९ हि.१४४८। मीनराशि(रा.७।३५)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.१।५४ से। स्थायीजययोग रा.१२।९ से।
२७	३८	४	बु	४४	४२	रा	१२	२०	उ.भा.	५०	२४	रा	४	३७	सिद्ध	३२	३७	रा	७	३०	व	१४	२७	म	४४	४२	लुम्बक	१०	१९	२	२७	२७	२१			६	२८	५	३२	९	२६	३६	४२	६०	५३	१४	३९	+	१२	९	५	भ दि.१२।२५से रा.१२।२०तक (मृत्युलोक)। वैना.श्रीगणेश ४व्रत। तिल ४। प्रदोष कुन्द ४ चतुर्थी कुन्दपुष्प से शिवपूजन। वरदाचतुर्थी(बं.)। ❶
२७	४२	५	गु	४३	५५	रा	१२	०	रेवती	५१	१	रा	२	५१	साध्य	२९	१३	रा	६	८	बव	१४	१८	बा	४३	५५	मित्र	११	२०	३	२८	२८	२२	मेष	५१।१	६	२७	५	३३	९	२७	३७	३५	६०	५१	१४	१९	+	१२	१०	१	मेषराशि(रा.२।५१)। पंचक समाप्त रा.२।५१। श्रीवसन्तपञ्चमी ५। सरस्वतीपूजा। वागीश्वरी जयन्ती यात्रा। रतिकाम महोत्सव। श्री ५। ❷
२७	४५	६	शु	४१	५४	रा	११	१२	अश्विनी	५०	२२	रा	२	३५	शुभ	२४	४९	सा	४	२२	कौ	१२	५४	तै	४१	५४	वज्र	१२	२१	४	२९	२९	२३			६	२७	५	३३	९	२८	३८	२६	६०	४९	१४	०	+	१२	११	०	श्रीस्कन्द षष्ठी ६ व्रत। श्रीशीतलाषष्ठी(बङ्गाल)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.२।३५ तक।
२७	४९	७	श	३८	५०	रा	९	५८	भरणी	४८	४८	रा	१	५७	शुक्ल	१९	३५	दि	२	१५	गर	१०	२२	व	३८	५०	ध्वांक्ष	१३	२२	५	३०	१	२४			६	२६	५	३४	९	२९	३९	१५	६०	४८	१३	४०	+	१२	१२	२	भ रा.९।५८से (स्वर्ग)। ने.फाल्गुनमास। अचलासप्तमी ७ व्रत। षष्ठी में एक भुक्त व्रत रखकर अरुणोदय में सप्तमी में स्नान करें। मन्वादि ७। रथसप्तमी। ❸
२७	५२	८	र	३४	५२	रा	८	२१	कृत्तिका	४६	२१	रा	१२	५७	ब्रह्म	१३	३७	दि	११	५१	भ	६	५१	बव	३४	५२	धूम्र	१४	२३	६	१	२	२५	वृष	३।११	६	२५	५	३५	१०	०	४०	३	६०	४७	१३	२०	+	१२	१	६	भ दि.९।९तक (स्वर्ग)। वृषराशि(प्रा.७।४१)। सौर फाल्गुनमास। मध्याह्न भीष्माष्टमी ८। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तर्पण। श्राद्धकार्य से संतान प्राप्ति होती है। ❹
२७	५५	९	चं	३०	४	रा	६	२६	रोहिणी	४३	९	रा	११	४०	ऐन्द्र	६ ५२	५९ ४९	प्रा	९ ६	१२ २०	बा	२	२८	कौ	३० ५७	४ २४	प्रवर्द्धमान	१५	२४	७	२	३	२६			६	२५	५	३५	१०	१	४०	५०	६०	४६	१२	५९	+	१२	२	१२	श्रीहरसूब्रह्मदेव जयन्ती। चैनपुर–भभुआ(बिहार)। महानन्दानवमी। मृत्युबाण १८।५५(दि.१।५९ तक)। रवियोग समस्त दिन। ❺
२७	५९	१०	मं	२४	४५	सा	४	१७	मृगशिर	३९	२७	रा	१०	१०	विष्कुंभ	५२	१६	दि	३	१८	गर	२४	४५	व	५१	५३	राक्षस	१६	२५	८	३	४	२७	मिथुन	११।१८	६	२४	५	३६	१०	२	४१	३६	६०	४४	१२	३९	+	१२	३	१५	भ रा.३।९से (स्वर्ग)। मिथुनराशि(दि.१०।५५)। रवियोग रा.१०।४० तक। ❹मृत्युबाण १९।४९(दि.२।२१ से)। रवियोग रा.१२।५७ से।
२८	२	११	बु	१९	१	दि	१	५९	आर्द्रा	३५	२३	रा	८	३२	प्रीति	४४	३२	रा	१२	११	भ	१९	१	बव	४६	३	मुसल	१७	२६	९	४	५	२८			६	२३	५	३७	१०	३	४२	२०	६०	४२	१२	१८	+	१२	४	१३	भ दि.१।५९तक (स्वर्ग)। जया एकादशी ११व्रत सबका। भक्तपुण्डरीक उत्सव (पण्ढरपुर)। भैमी एकादशी (बङ्गाल)।
२८	६	१२	गु	१३	६	दि	११	३७	पुनर्वसु	३१	१३	रा	६	५२	आयुष्मान	३६	३९	रा	९	२	बा	१३	६	कौ	४०	९	सिद्धि	१८	२७	१०	५	६	२९	कर्क	१७।१६	६	२३	५	३७	१०	४	४३	२	६०	४१	११	५७	+	१२	५	५	कर्कराशि(दि.१।२७)। प्रदोष १२व्रत। भीष्मद्वादशी १२। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तर्पण। श्राद्धकार्य से संतान प्राप्ति होती है। तिलद्वादशी १२। ❻
२८	९	१३	शु	७	१२	दि	९	१४	पुष्य	२७	९	सा	५	१३	सौभाग्य	२८	५६	रा	५	५६	तै	७	१२	गर	३४	२२	उत्पात	१९	२८	११	६	७	३०			६	२२	५	३८	१०	५	४३	४३	६०	३८	११	३६	+	१२	५	५०	कल्पादि १३। मरुमहोत्स आरंभ–तीन दिनों तक(राज.)। ⊙शतभिष में सूर्य५५।४२(रा.शे.४।३९)। रवियोग सा.५।२३ तक।
२८	१३	१४	श	१ ५४	३२ ४४	प्रा	६ ४	५७ ५१	श्लेषा	२३	२२	दि	३	४२	शोभन	२१	२७	दि	२	५५	व	१	३२	भ	२८ ५६	५४ १६	मानस	२०	२९	१२	७	८	१	सिंह	२३।२२	६	२१	५	३९	१०	६	४४	२१	६०	३६	११	१५	+	१२	-	-	भ प्रा.६।५७ से रा.५।५५तक (मृत्युलोक)। सिंहराशि(दि.३।४२)। रा.फाल्गुनमास दि.३१। माघी पूर्णिमा १५। स्नान दान व्रत हेतु पुण्य। ❼

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.३ मंगल रा.१।५४ से उ.भा. शनियुति।

ति.४ बुध उ.भा.पूर्वदोष। रा.४।३७ से रेवती में रे.८ रात्रिपञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.५ गुरु दि.३।१७ मत्युबाण पूर्व रेवती में रे.८ दिन ल.१२(दि.८।६ से) इष्ट५ग्र.व.वि.११।(लग्न का चन्द्र दान) या ल.३(दि.१।७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।(७वां शुक्र दान)

ति.८ रवि रा.१२।५७ से रोहिणी में मृत्यबाण।

ति.९ सोम रोहिणी में मृत्युबाण। रा.११।४० से मृगशिर वैधृति दोष है।

ति.१० मंगल रा.१०।१० तक मृग. रे.७ दिन ल.१२ (प्रा.७।४६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३। या ल.५(सा.५।१९ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१३(७ वां सूर्य दान)।

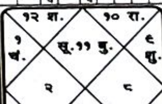
ति.१४ शनि दि.३।४२ से मघा में भौमयुति।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

दि.	वा.	चन्द्र				गति		वक्रीभौम				गति		बुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	र	९	२८	१५	३१	७३४	४१	४	७	५	३८	२४	४५	१०	९	२१	१०	३८	१८	४	१	५४	४५	८	९	५६	३७	७०	२५	११	१३	३१	७	९	२६	३१	२७
२	चं	१०	१०	३४	१२	७७७	२८	४	६	४०	५४	२४	४५	१०	९	५९	२८	३८	१८	४	१	४६	५०	८	११	७	२	७०	२५	११	१३	३६	४७	९	२६	२८	१७
३	मं	१०	२३	४	४८	७६०	१७	४	६	१६	९	२४	४५	१०	१०	३७	४६	३८	१३	४	१	३८	५४	८	१२	१७	२७	७०	२५	११	१३	४२	२८	९	२६	२५	६
४	बु	११	५	४८	६	७७६	४	४	५	५१	२४	२४	४५	१०	११	१५	५९	१४	५१	४	१	३०	५९	८	१३	२७	५२	७०	२५	११	१३	४८	८	९	२६	२१	५५
५	गु	११	१८	४६	४२	७९१	५१	४	५	२६	४०	२४	४५	१०	११	३०	५०	९	३६	४	१	२३	३	८	१४	३८	१७	७०	२५	११	१३	५३	४८	९	२६	१८	४४
६	शु	०	२	१	५	८०८	४५	४	५	१	५५	२४	४५	१०	११	४०	२५	९	३६	४	१	१५	८	८	१५	४८	४१	७०	२५	११	१३	५९	३१	९	२६	१५	३३
७	श	०	१५	३१	५३	८२१	२६	४	४	३७	१०	२४	०	१०	११	५०	१	९	३५	४	१	७	१३	८	१६	५९	६	७०	२५	११	१४	५	१४	९	२६	१२	२३
८	र	०	२९	१५	४१	८३४	३	४	४	१२	२६	२४	४५	१०	११	५९	३६	९	३१	४	०	५९	१७	८	१८	९	३१	७०	२५	११	१४	१०	५६	९	२६	९	१२
९	चं	१	१३	१२	१५	८४५	४	४	३	४७	४१	२४	४५	१०	१२	९	७	२२	३६	४	०	५१	२२	८	१९	१९	५६	७०	२५	११	१४	१६	३९	९	२६	६	१
१०	मं	१	२७	१९	२६	८५२	३४	४	३	२२	५६	२४	४५	१०	११	४६	३१	२२	४९	४	०	४३	२७	८	२०	३०	२१	७०	२५	११	१४	२२	२२	९	२६	२	५०
११	बु	२	११	३३	५५	८५८	९	४	२	५८	१२	२४	४५	१०	११	२३	४३	२२	४९	४	०	३५	३१	८	२१	४०	४६	७०	२५	११	१४	२८	५	९	२५	५९	३९
१२	गु	२	२५	५२	४३	८५९	४२	४	२	३३	२७	२४	४५	१०	११	०	५४	२२	५०	४	०	२७	३६	८	२२	५१	११	७०	२५	११	१४	३३	४८	९	२५	५६	२९
१३	शु	३	१०	११	४१	८५८	९	४	२	८	४२	२४	४५	१०	१०	३८	४	२७	४०	४	०	१९	४०	८	२४	१	३५	७०	२५	११	१४	४०	०	९	२५	५३	१८
१४	श	३	२४	२७	२९	८५३	५०	४	१	४३	५८	२४	४५	१०	१०	१०	२४	५१	२७	४	०	११	४५	८	२५	१२	०	७०	७	११	१४	४६	२९	९	२५	५०	७

४५ पं० माघशुक्ल ८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह गुणण १५०४
अयनांश २४।१३।३३

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	४	१०	४	८	११	९	३
०	२९	४	११	०	१८	१४	२६	२६
४०	१५	१२	५९	५९	९	१०	९	९
३	४१	२६	३६	१७	३१	५६	१२	१२
६०	८३४	२४	९	७	७०	५	३	३
४७	३	४५ व	३१	५५ व	२५	४३	११	११

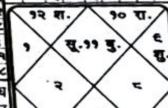


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.आ.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	तिथि ल.आ.	८ र. घं.	मि.	९ चं. घं.	मि.	१० मं. घं.	मि.	११ बु. घं.	मि.	१२ गु. घं.	मि.	१३ शु. घं.	मि.	१४ श. घं.	मि.
मकर	६	५३	६	४८	६	४४	६	४०	६	३५	६	३१	६	२७	कुम्भ	७	५४	७	५०	७	४६	७	४३	७	३९	७	३५	७	३२
कुम्भ	८	२४	८	१९	८	१५	८	११	८	६	८	२	७	५८	मीन	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७	९	३	९	०
मीन	९	५२	९	४७	९	४३	९	३९	९	३४	९	३०	९	२६	मेष	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३७
मेष	११	२९	११	२४	११	२०	११	१६	११	११	११	७	११	३	वृष	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३३
वृष	१	२५	१	२०	१	१६	१	१२	१	७	१	३	१२	५९	मिथुन	३	९	३	५	३	१	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७
मिथुन	३	३९	३	३४	३	३०	३	२६	३	२१	३	१७	३	१३	कर्क	५	२७	५	२३	५	१९	५	१६	५	१२	५	८	५	५
ल.आ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.आ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	५	५७	५	५२	५	४८	५	४४	५	३९	५	३५	५	३१	सिंह	७	४१	७	३७	७	३३	७	३०	७	२६	७	२२	७	१९
सिंह	८	११	८	६	८	२	८	५८	८	५३	८	४९	७	४५	कन्या	९	५४	९	५०	९	४६	९	४३	९	३९	९	३५	९	३२
कन्या	१०	२४	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	६	१०	२	९	५८	तुला	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५१	११	४८
तुला	१२	४०	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२२	१२	१८	१२	१४	वृश्चिक	२	२७	२	२३	२	१९	२	१६	२	१२	२	८	२	५
वृश्चिक	२	५७	२	५२	२	४८	२	४४	२	३९	२	३५	२	३१	धनु	४	३३	४	२९	४	२५	४	२२	४	१८	४	१४	४	११
धनु	५	३	४	५८	४	५४	४	५०	४	४५	४	४१	४	३७	मकर	६	२०	६	१६	६	१२	६	९	६	५	६	१	५	५८

४६ पं० माघशुक्ल १४ शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह गुणण ३५१२
अयनांश २४।१३।३४

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	४	१०	४	८	११	९	३
६	२४	१	१०	०	२५	१४	२५	२५
४४	२७	४३	१०	११	१२	४६	५०	५०
२१	२९	५८	२४	४५	०	२९	७	७
६०	८५३	२४	५१	७	७०	६	३	३
३६	५०	४५ व	२७	५५ व	७	२८	११	११



❷ मदनपञ्चमी। तक्षकपूजा ५। मत्याधार (लेखनीपूजा) बङ्गाल। मृत्युबाण २२।६(दि.३।२७ से)। रवियोग रा.२।५१ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। यायीजययोग रा.१२।० तक। ❸विधानसप्तमी। आरोग्य सप्तमी। चन्द्रभागा सप्तमी। ⊙सं.कुम्भ में सूर्य २०।२८(दि.२।३७)। मु.१५मँहगी। पूर्व की १६घटी पुण्य। आज दिन में ८।२३ उपरान्त संक्रान्ति पुण्यकाल। गो अन्न तिल का दान गोदावरी में स्नान। यायीजययोग रा.९।५६ तक। ❺यायीजययोग रा.६।२६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।४० तक। ❻आज तिल द्वारा विष्णुपूजन होम कार्य। सोपपदा १२। वेद अध्ययन का निषेध। आमलकी द्वादशी। सन्तान द्वादशी। वराहद्वादशी। गुरुगोरखनाथ जयंती। रवियोग रा.६।५२ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। यायीजययोग दि.११।३७ से। ❼ तिलपात्र उनीवस्त्र कम्बलादि का दान। माघस्नानव्रतनियमादि समाप्ति। संत रविदास जयन्ती। काशी सीरगोवर्धन ग्राम यात्रा दर्शन। होलिका रोपण। अग्न्युत्सव-रात्रिव्यापिनि(उड़ीसा)। यायीजययोग प्रा.६।५७ से।

मूलविचार-रेवती/ अश्विनी ति.४ बुध रा.४।३७ से। ति.६ शुक्र रा.२।३५ तक। **श्लेषा/मघा** ति.१३ शुक्र सा.५।१३ से। **पञ्चक विचार-**ति.१ रवि दि.९।५५से। ति.५ गुरु रा.२।५१ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। वक्रीभौम-मघा।। **बुध-**शतभिष। ति.९ सोम वक्री १७।४७ (दि.१।३२)।। **वक्रीगुरु-**मघा १ चरण।। **शुक्र-**मूल।। **ति.३** मंगल पू.षा. में ४६।२९ (रा.१।५)।। **शनि-**उ.भा.में ४ चरण।। **राहु-**धनिष्ठा १ चरण।। **केतु-**श्लेषा ३ चरण।।

माघ शुक्ल पक्ष विचार-पूर्णिमा तिथि की हानि है अत: पक्ष चौदह दिनों का है। माघशु. पूर्णिमा शनिवारी हो तो कष्ट तथा युद्ध हो। **७ फरवरी** को **गुप्तनवरात्र** का प्रारंभ होगा। **८ फरवरी को चन्द्रदर्शन** विचार से खाद्य पदार्थ मँहगे रहेंगे। **१० फरवरी को वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत** व **तिल चतुर्थी** मनायी जायेगी। **११ फरवरी को वसंत पंचमी** को सर्वत्र धूमधाम से **सरस्वती पूजन** का कार्यक्रम होगा। आज वागीश्वरी जयंती के साथ वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव, विद्यार्थी एवं विद्यानुरागीजन देवी ☛ की प्रतिमा स्थापित कर पूजन के साथ मनाते हैं। **१३ फरवरी** को **रथसप्तमी**, सूर्य सप्तमी एवं **अचला सप्तमी व्रत** किया जायेगा। **१४ फरवरी** को **भीष्माष्टमी-गंगापुत्र भीष्म पितामह** के लिये श्राद्ध व तर्पण करने से सन्तान सुख की प्राप्ति होती है। **१५ फरवरी** को **श्रीहरसूब्रह्मदेवजी की जयंती** भभुआ (बिहार) में मनायी जायेगी। **१७ फरवरी** को पिशाचत्व नाश हेतु **जया एकादशी व्रत** सबका होगा। **१८ फरवरी** को **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज भीष्म को तर्पण व श्राद्ध हेतु **भीष्मद्वादशी व्रत** होगा। **२० फरवरी** को **स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा** है। आज **माघ पूर्णिमा स्नान नियम** की समाप्ति हो जायेगी। आज ऊनी वस्त्र, कम्बलादि का दान करें। आज **संत रविदास जयंती** मनायी जायेगी। काशी के सीर गोवर्धनपुर ग्राम तक शोभायात्रा निकाली जायेगी तथा विविध आयोजनों के साथ दर्शन होगा।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ रवि धनिष्ठा राहुयुति। **ति.२** सोम शत.सूर्यभोग्य है। **ति.३** मंगल पू.भा.शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.४** बुध उ.भा.शनियुति। **ति.५** गुरु रेवती पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण सूतीकास्नान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण बागवानी चौपायों का क्रय विक्रय **पश्चिमोत्तरदिशा की यात्रा** दर्वैरी नये अन्न का भक्षण **अक्षरारंभ-चौल-कर्णवेध-जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा**(ल.१२ दि.८।६ से) **उपनयन**(ल.११ प्रा.६।३५ से ५वां के.दा. या **ल.३** दि.१।७ से ८वां रा.दा.) **हलप्रवहण विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त। ति.६ शुक्र अश्विनी जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण सूतीकास्नान नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायों का क्रय विक्रय दर्वैरी धानरोपाई औषधी सेवन **विद्यारंभ-जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा**(ल.१२ दि.८।२ से १२वां बु.दा.) **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.७** शनि भरणी मे भौमवेध। **ति.८** रवि कृत्तिका में सूर्यवेध। **ति.९** सोम रोहिणी में रिक्तावैधृति। **ति.१०** मंगल मृग.पुंसवन सीमन्त सूतीकास्नान वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया **हलप्रवहण गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.११** बुध दि.१।५९ भद्रा बाद आर्द्रा धानकटाई मुहूर्त। **ति.१२** गुरु पुनर्वसु जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण चौपायों का क्रय विक्रय **कर्क के चन्द्र पश्चिमोत्तर दिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **विद्यारंभ-कर्णवेध**(ल.१२ प्रा.७।३९ से)**गृहारंभ**(ल.११ दि.७।३५ तक १२वां रा.दा.) **हलप्रवहण** वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.१३** शुक्र दि.९।१४ रिक्तापूर्व पुष्य पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन चौपायों का क्रय विक्रय **पश्चिमोत्तरदिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.१४** शनि श्लेषा केतुयुति।

दि.मा		श्रीसंवत २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।। तिथि: ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति द-		रे. अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.
२८	१६	१	र	५१	३६	रा	२	५८	मघा	२०	७	दि	२	२२	अतिगंड	१४	२१	दि	१२	४	वा	२३	५६	कौ	५१	३६	मुद्गर	२१	१	१३	८	९	२			६	२०	५	४०	१०	७	४४	५७	६०	३५	१०	५३	+	१२	६	२७
२८	२०	२	चं	४७	४७	रा	१	५६	पू.फा.	१७	३२	दि	१	२०	सुकर्मा	७	४८	दि	९	२७	तै	१९	४२	गर	४९	४७	ध्वज	२२	२	१४	९	१०	३	कन्या	३२।२१	६	२०	५	४०	१०	८	४५	३२	६०	३४	१०	३२	+	१२	७	२९
२८	२३	३	मं	४४	५१	रा	१२	१७	उ.फा.	१५	४८	दि	१२	३८	धृति	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	व	१६	२१	म	४४	५५	धाता	२३	३	१५	१०	११	४			६	१९	५	४१	१०	९	४६	६	६०	३१	१०	१०	+	१२	८	३०
२८	२७	४	बु	४३	८	रा	११	३३	हस्त	१५	४	दि	१२	११	गंड	५२	४१	दि	३	२२	बव	१४	२	बा	४३	८	आनंद	२४	४	१६	११	१२	५	तुला	४५।१७	६	१८	५	४२	१०	१०	४६	३७	६०	३०	९	४८	+	११	९	३०
२८	३०	५	गु	४२	३४	रा	११	११	चित्रा	१५	३१	दि	१२	३०	वृद्धि	४९	२७	दि	२	४	कौ	१२	५१	तै	४२	३४	चर	२५	५	१७	१२	१३	६			६	१८	५	४२	१०	११	४७	७	६०	२८	९	२६	+	११	१०	३०
२८	३४	६	शु	४३	१७	रा	११	३५	स्वाती	१७	१४	दि	१	१०	ध्रुव	४७	१५	दि	१	११	गर	१२	५६	व	४३	१७	गद	२६	६	१८	१३	१४	७			६	१७	५	४३	१०	१२	४७	३५	६०	२८	९	४	+	११	११	२९
२८	३८	७	श	४५	२६	रा	१२	२६	विशाखा	२०	१०	दि	२	२०	व्याघात	४६	६	दि	१२	४२	म	१४	२२	बव	४५	२६	शुभ	२७	७	१९	११	१५	८	वृश्चिक	४।२६	६	१६	५	४४	१०	१३	४८	३	६०	२३	८	४१	+	१०	१२	२६
२८	४१	८	र	४८	३७	रा	१	४१	अनुराधा	२४	१६	प्रा	३	५७	हर्षण	४५	४५	दि	१२	३३	बा	१७	२	कौ	४८	३७	मृत्यु	२८	८	२०	१५	१६	९			६	१५	५	४५	१०	१४	४८	२६	६०	२२	८	१९	+	१०	१	२२
२८	४४	९	चं	५२	५४	रा	३	२४	ज्येष्ठा	२९	२९	रा	६	२	वज्र	४६	१६	दि	१२	४५	तै	२०	४६	गर	५२	५४	पद्म	मा	९	२१	१६	१७	१०	धनु	२९।२९	६	१५	५	४५	१०	१५	४८	४८	६०	२१	७	५६	+	१०	२	१३
२८	४८	१०	मं	५७	५३	रा	५	२३	मूल	३५	२८	रा	८	२५	सिद्धि	४७	११	रा	१	९	व	२५	२४	म	५७	५३	छत्र	२	१०	२२	१७	१८	११			६	१४	५	४६	१०	१६	४९	९	६०	१९	७	३३	+	१०	३	१
२८	५२	११	बु	६०	०	समस्त			पू.षा.	४१	५८	रा	११	०	व्यतीपात	४८	४२	रा	१	४१	बव	३०	३४	बा	६०	०	श्रीवत्स	३	११	२३	१८	१९	१२	मकर	५८।३६	६	१४	५	४६	१०	१७	४९	२८	६०	१६	७	११	+	१०	३	४३
२८	५६	११	गु	३	१६	प्रा	७	३०	उ.षा.	४८	३२	रा	१	३६	वरीयान	५०	८	रा	२	१५	बा	३	१६	कौ	३५	५४	सौम्य	४	१२	२४	१९	२०	१३			६	१३	५	४७	१०	१८	४९	४४	६०	१५	६	४८	+	१०	४	२९
२९	०	१२	शु	८	३२	दि	९	३६	श्रवण	५४	४४	रा	४	१	परिघ	५१	१५	रा	२	४२	तै	८	३२	गर	४०	५५	धूम्र	५	१३	२५	२०	२१	१४			६	१२	५	४८	१०	१९	४९	५९	६०	१३	६	२५	+	१०	४	५६
२९	३	१३	श	१३	१८	दि	११	३०	धनिष्ठा	६०	०	समस्त			शिव	५१	५१	रा	२	५५	व	१३	१८	म	४५	१८	प्रवर्द्धमान	६	१४	२६	२१	२२	१५	कुम्भ	२७।२९	६	११	५	४९	१०	२०	५०	१२	६०	१०	६	१	+	१०	५	२८
२९	७	१४	र	१७	१७	दि	१	४	धनिष्ठा	०	१५	प्रा	६	१६	सिद्ध	५१	४१	रा	२	५०	श	१७	१७	च	४८	४१	मातङ्ग	७	१५	२७	२२	२३	१६			६	१०	५	५०	१०	२१	५०	२२	६०	१०	५	३८	+	९	५	५९
२९	११	३०	चं	२०	५	दि	२	११	शतभिष	४	४६	प्रा	८	३	साध्य	५०	३९	रा	२	२४	ना	२०	५	किं	५०	५६	अमृत	८	१६	२८	२३	२४	१७	मीन	५२।२०	६	१०	५	५०	१०	२२	५०	३२	६०	५	५	१५	+	९	-	-

फाल्गुनकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २ फाल्गुन से १७ तिथि तक १९४८ शक।
अंग्रेजी दिनांक २१ फरवरी से ८ मार्च तक सन् २०२७ ई.।

यमघंटयोग दि.२।२२ तक।
कन्याराशि(रा.७।१६)। रोगबाण १४।२० (दि १२।४ तक)।
भ.दि.१२।५१से रा.१२।२७ तक (पाताल)। **मृत्युबाण** १३।४७ (दि.११।५०) से।
तुलाराशि(रा.१२।२५)। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत** चन्द्रोदय (रा.९।३०)। **मृत्युबाण** १३।१६(दि.११।३६) तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१२।१९ तक।
यायीजययोग दि.१२।३०से।
भ.रा.११।३५से (पाताल)। रवियोग दि.१।१०से।
भ.दि.१२।० तक (पाताल)। **वृश्चिकराशि**(प्रा.८।२)। रवियोगत्रिपुष्करयोग दि.२।२० तक पश्चात् यायीजययोग। ❶आज श्राद्ध अवश्य करें।
प्रदोष **कालाष्टमी ८। सीताष्टमी ८। श्रीजानकी जयन्ती८। अष्टकाश्राद्ध**। पार्वणविधि। **साकाष्टका**। अन्य अष्टकाश्राद्ध यदि संभव न हो तो ❶
धनुराशि(रा.६।२)। **मार्च ३। अन्वष्टकाश्राद्ध**।
भ.सा.४।२३से रा.शे.५।२३तक (पाताल)। **स्वामी दयानंदसरस्वती जयन्ती**(आर्यसमाज संस्थापक)
मकरराशि(रा.शे.५।४०)। ❷ चतुर्दशी में चतुर्दशलिङ्गपूजा। **वैद्यनाथजयन्ती**। कृत्तिवासेश्वर दर्शन। यायीजययोग दि.११।३० तक।
विजया एकादशी व्रत सबका। **मृत्युबाण** १०।१३(दि.१०।१८)से। यायीजययोग प्रा.७।३० तक।
प्रदोष १२व्रत। ☉पू.भा.में सूर्य ९।५९ (दि.१०।१२)। स्थायीजययोग दि.९।३६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.४।५ तक।
भ.दि.११।३०से रा.१२।१८तक (मृत्युलोक)। **कुम्भराशि** (सा.५।१०)। **पंचक आरंभ** सा.५।१० से। **श्रीमहाशिवरात्रि १३व्रत**। रात्रिव्यापिनि ❷
शिवरात्रिव्रत का पारण। ❸को प्रतिमा स्थापित करके विधान पूर्वक सुर्वस्वोपचार पूजनकर स्त्रीयों को सौभाग्य वृद्धि हेतु प्रदक्षिणा करनी चाहिये।" **युगादि ३०। मन्वादि३०।**
मीनराशि(रा.३।६)। **सोमवती अमावस्या ३०**। स्नानदान श्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष व सुख। "सोमवतीअमावस्या को पीपलवृक्ष के नीचे भगवान विष्णु ❸

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति. १ रवि मघा में भौमयुति।

ति. २ सोम दि.१।२० से उ.फा. में रे.७ **दिन ल. २** (दि.१०।२८ से) इष्ट५ग्र.व.वि.१३ (८वां शुक्र दान) या **ल. ३**(दि.१२।२४ से) इष्ट५ग्र.व.वि.१३(७वां शुक्र दान) या **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.६** (रा.७।१० से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.११(७ वां शनिदान)।

ति. ३ मंगल दि.११।५० मृत्युबाण पूर्व उ.फा. रे.७ दिन मे पञ्चेष्ट लग्न का अभाव।

ति. ४ बुध हस्त शनिवेध मृत्युबाण।

ति. ५ गुरु दि.१२।३० से स्वाती में सूर्यवेध।

ति. ६ शुक्र स्वाती में पूर्वदोष।

ति. ७ शनि दि.२।२० से अनु.रे.६ **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.६**(रा.६।५२ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१५।। (७ वां शनिदान)। या **ल.७**(रा.९।५ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (१०वां भौम अशुभ)।

ति.८ रवि सा.३।५७ तक अनु. रे.६ **दिन ल. २** (दि.१०।६ से) इष्ट६ग्र.व.वि.११।। (७वां चंद्र दान)।

ति. ९ सोम रा.६।२ से मूल में रे.८ **ल. ६** (रा.६।४४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.९।। (७ वां शनिदान)। या **ल. ७** (रा.८।५७ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१३।। (१०वां भौम अशुभ)।

ति. १० मंगल रा.८।२५ तक मूल में **दिनल. २** (दि.९।५९ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.११।।(८वां चंद्र दान) या **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.६**(रा. ६।४१ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.९।। (७ वां शनिदान)।

ति. ११ बुध रा.१।४१ व्यतिपात बाद उ.षा.में रे.६ **ल. ९** (रा.१।४१ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१४ (८वां भौम अशुभ)।

ति.११ गुरु दि.१०।१८ मृत्युबाण पूर्व उ.षा.में रे.६ **दि.ल. २** (दि.९।५१ से) इष्ट६ ग्र.व.वि.११।। **पश्चात मासान्त दोष।**

मूलविचार- श्लेषा/ मघा ति. १ रवि दि.२।२२ तक। **ज्येष्ठ/मूल ति.**८ रवि सा.३।५७ से। **ति.**१० मंगल रा.८।२५ तक। **पञ्चक विचार-ति.** १३ शनि सा.५।१० से।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्ट चन्द्रभौमादिग्रह।।

दि.वा.		चन्द्र	गति	वक्रीभौम	गति	वक्रीबुध	गति	वक्रीगुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१	र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	चं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	मं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	गु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	चं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	मं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	गु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	चं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

४७ पं० फाल्गुनकृष्णा ८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३५२०
अयनांश २४।१३।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	३	१०	३	९	११	९	३
१४	११	२८	३	२२	४	१५	२५	२५
४८	३७	२६	१८	८	४६	३८	२४	२४
२६	८	०	४७	१७	२८	१७	४०	४०
६०	७४८	२४	५१	७	७२	६	३	३
२२	४९	४५	२६	५९	२७	३०	११	११
		व	व	व				



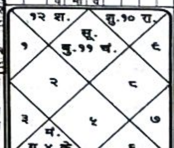
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल. अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	९ चं. घं.	मि.	१० मं. घं.	मि.	११ बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	३० चं. घं.	मि.
कुम्भ	७	२७	७	२३	७	१९	७	१६	७	१२	७	८	७	५	७	१	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६	६	४३	६	३९	६	३५	६	३२
मीन	८	५५	८	५१	८	४७	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४	८	११	८	७	८	३	८	०
मेष	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८	९	४४	९	४०	९	३७
वृष	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	६	१२	२	११	५८	११	५५	११	५१	११	४७	११	४४	११	४०	११	३६	११	३३
मिथुन	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१	२	२७	२	२३	२	२०	२	१६	२	१२	२	९	२	५	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४७
कर्क	५	०	४	५६	४	५२	४	४९	४	४५	४	४१	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२	४	८	४	५
ल. अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	३०	६	२६	६	२२	६	१९
कन्या	९	२७	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	५	९	१	८	५७	८	५४	८	५०	८	४६	८	४३	८	३९	८	३५	८	३२
तुला	११	४३	११	३९	११	३५	११	३२	११	२८	११	२४	११	२१	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	२	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८
वृश्चिक	२	०	१	५६	१	५२	१	४९	१	४५	१	४१	१	३८	१	३४	१	३०	१	२७	१	२३	१	१९	१	१६	१	१२	१	८	१	५
धनु	४	६	४	२	३	५८	३	५५	३	५१	३	४७	३	४४	३	४०	३	३६	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	११
मकर	५	५३	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८	५	३४	५	३१	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५८

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ रवि मघा भौमयुति। ति.२ सोम पू.फा.दर्वी **उपनयन(ल.३** दि.१२।२४ से ८वां रा.दा.) मुहूर्त। दि.१।२० से उ.फा.**वधूप्रवेश(ल.८** रा.११।३९ से) **द्विरागमन(ल.६** रा.७।१० से) **गृहारंभ(ल.६** रा.७।१० से १२वां भौमदान) **कूपनिर्माण(बोरिंग) वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। **ति.**३ मंगल दि.१२।५१ भद्रापूर्व पुंसवन सीमन्त सूतीकास्नान सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्र मूंगारत्न धारण मुहूर्त। **ति.**४ बुध हस्त शनिवेध। **ति.**५ गुरु चित्रा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण बागवानी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा-विद्यारंभ-कर्णवेध-चौलकेशान्त-उपनयन(**ल.२ दि.१०।१७ से) **वधूप्रवेश (ल.११** प्रा.७।१२या. या **ल.२** दि.१०।१७ से) **द्विरागमन (ल.१२** दि.७।१२ से या **ल.६** रा.६।५९ से) **गृहारंभ(ल.११** प्रा.७।१२ से १२वां रा.दा. या **ल.** २ दि.१०।१७ से) **बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। ति.६ शुक्र स्वाती में **सूर्यवेध। ति.**७ शनि विशाखा राहुवेध। **ति.**८ रवि अनुराधा भौमवेध। **ति.**९ सोम ज्येष्ठा में रिक्तादोष। **ति.**१० मंगल सा.४।२३ भद्रापूर्व मूल पुंसवन सीमन्त शस्त्रनिर्माण **हलप्रवहण** मुहूर्त। ति.११ बुध पू.षा.व्यतिपातदोष। उ.षा.**हलप्रवहण** मुहूर्त। **ति.**११गुरु उ.षा.पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना सूतीकास्नान नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या नावनिर्माण **वधूप्रवेश (ल.११** प्रा.६।४६ तक या **ल.२** दि.९।५१से) **द्विरागमन(ल.१२** प्रा.६।४६ से या **ल.६** रा.६।३३ से) **गृहप्रवेश(ल.११** प्रा.६।४६ तक लग्नस्थ सु.दा. या **ल.१२** प्रा.६।४६ से लग्नस्थ श.दा. या **ल.२** दि.९।५१ से या **ल.६** सा.६।३३ से) धानकटाई **गर्भाधान वर-कन्या वरण(सगाई)** मुहूर्त। ति.१२ शुक्र श्रवण जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण दर्वी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **वधूप्रवेश (ल.११** प्रा.६।४३ तक) **द्विरागमन(ल.१२** प्रा.६।४३ से) **हलप्रवहण** वाहनक्रय **गर्भाधान** मुहूर्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

४८ पं० फाल्गुनकृष्ण ३० सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण ३५२८
अयनांश २४।१३।३६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	३	१०	३	९	११	९	३
२२	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	२४	२४
५०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३१	५९	५९
३२	५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३९	१४	१४
६०	७४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	३	३
५	४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५	११	११



भौमादिग्रहों का संचार।। वक्रीभौम-मघा ति.४ बुध कर्क श्लेषा में १२१-(दि.११।८)।। **वक्रीबुध**-शतभिष ति.४ बुध धनिष्ठा ५।२१ (प्रा.८।२६)।। ति.१४ रवि मार्गी २।५०(प्रा.७।१८)।। **वक्रीगुरु**-मघा १ चरण। ति.१ रवि कर्क श्लेषा में ४ चरण २८।५९ (रा.५।५६)।। **शुक्र**-पू.षा.। ति.१ रवि उ.षा. में १३।४(दि.११।३४)।। ति.४ बुध मकर में २।४६(प्रा.७।२४)।। ति.११ गुरु श्रवण में १९।४०(दि.२।५)।। **शनि**-उ.भा.में ४ चरण ।। **राहु**-धनिष्ठा १ चरण।। **केतु**-श्लेषा ३ चरण।।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष विचार-एकादशी तिथि की वृद्धि होने से यह पक्ष सोलह दिन का है। फाल्गुन कृ. षष्ठी को स्वाती से दुर्भिक्ष होता है। **२४ फरवरी** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात ९।३० के बाद अर्घ्य दें। **२८ फरवरी** को जनक नन्दिनी **माता सीता की जयंती** विविध उत्सवों के साथ **जानकी जयन्ती** का पर्व हर्षोल्लास पूर्वक सर्वत्र विशेषकर मिथिलांचल में मनाया जायेगा। आज **अष्टकाश्राद्ध** (पार्वणविधि) होगा। **१ मार्च** को **अन्वष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु किया जायेगा। ☛

☛ **४ मार्च** को समस्त कार्य में विजय हेतु **विजया एकादशी व्रत** सबका होगा। **५ मार्च** को सन्तान लाभ हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **६ मार्च** को प्रदोष तथा निशीथ काल में चतुर्दशी प्राप्त होने से **महाशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। यह पर्व परब्रह्म निराकार शिवजी का लिंग रूप में साकार होने का पर्व है। संपूर्ण विश्व में फैले शिवभक्त इस दिन श्रद्धा-भक्ति पूर्वक जलाभिषेक, रुद्राभिषेक, दुग्धाभिषेक आदि अनेक प्रकार से पूजन-आराधना करते है। विशेषत: काशी में काशी विश्वनाथ सहित चतुर्दश शिव लिंगों का दर्शन-पूजन किया जाता है। काशी का कण-कण, कोना-कोना शिवभक्ति में लीन हो जाती है। शास्त्रों में कहा गया है कि आज के दिन शिवजी का विवाह माता पार्वती के साथ हुआ था। इस उपलक्ष्य में जगह-जगह शिवालयों से शिव-बारात निकलती है। **७ मार्च** को शिवरात्रि व्रत का पारण। **८ मार्च** को **स्नान-दान-श्राद्ध की सोमवती अमावस्या** मनाई जायेगी। **सोमवती अमावस्या** को सुहागिन स्त्रियाँ पीपल-वृक्ष के नीचे भगवान् श्रीविष्णु की प्रतिमा स्थापित करके विधानपूर्वक षोडषोपचार पूजन कर वृक्ष की यथासंख्या १०८, ५१, २१ परिक्रमा करके अपने सौभाग्य की वृद्धि की कामना करती है।

फाल्गुनशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १८ फाल्गुन से १ चैत्र तक १९४८-४९ शक।
अंग्रेजी दिनांक ६ मार्च से २२ दिनांक तक सन् २०२७ ई.।

मीन के सूर्य (खरमास आरंभ) ति.७ सोम(१५।३।२७)

श्रीसंवत २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.	मा.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग
२९	१४	१	मं	२१	४७	दि	२	५१	पू.भा.	८	११	दि	९	२५	शुभ	४८	३६	रा	१	३५	बव	२१	४७	बा	५१	५८	काण
२९	१८	२	बु	२२	९	दि	२	५९	उ.भा.	१०	१७	दि	१०	१४	शुक्ल	४५	३३	रा	१२	२१	कौ	२२	९	तै	५१	४१	लुम्बक
२९	२१	३	गु	२१	१३	दि	२	३६	रेवती	११	९	दि	१०	३५	ब्रह्म	४१	३४	रा	१०	४४	गर	२१	१३	व	५०	८	मित्र
२९	२५	४	शु	१९	४	दि	१	४५	अश्विनी	१०	५०	दि	१०	२७	ऐन्द्र	३६	४१	रा	८	४६	भ	१९	४	बव	४७	२७	वज्र
२९	२९	५	श	१५	५१	दि	१२	२६	भरणी	९	२३	दि	९	५१	वैधृति	३१	०	रा	६	३०	बा	१५	५१	कौ	४३	४	ध्वांक्ष
२९	३३	६	र	११	४६	दि	१०	४७	कृत्तिका	७	१०	दि	८	५८	विष्कुंभ	२४	३७	दि	३	५५	तै	११	४६	गर	३९	११	धूम्र
२९	३७	७	चं	६	५२	दि	८	५०	रोहिणी	४	६	प्रा	७	४३	प्रीति	१७	३९	दि	१	७	व	६	५२	भ	३४	१०	प्रवर्द्धमान
२९	४०	८	मं	१ / ५४	२७ / १२	प्रा	६ / ४	३७ / १८	मृगशिर	० / ५५	३० / ०	प्रा	६ / ४	१८ / ३९	आयुष्मान	१०	१६	दि	१०	९	बव	१	२७	बा	२८ / ५५	३३ / ४०	राक्षस
२९	४४	१०	बु	४१	४२	रा	१	५४	पुनर्वसु	५२	२०	रा	२	५९	सौभाग्य	२ / ५२	३६ / १२	प्रा	७ / ३	४ / ४७	तै	२२	४१	गर	४९	४२	गद
२९	४८	११	गु	४३	४६	रा	११	३२	पुष्य	४८	१५	रा	१	१९	अतिगंड	४७	७	रा	१२	५२	व	१६	४४	भ	४३	४६	शुभ
२९	५२	१२	शु	३८	४	रा	९	१४	श्लेषा	४४	२४	रा	११	४८	सुकर्मा	३९	३५	रा	२१	५१	बव	१०	५५	बा	३८	४	मृत्यु
२९	५५	१३	श	३२	४५	रा	७	५	मघा	४०	५९	रा	१०	२४	धृति	३२	२४	रा	६	५७	कौ	५	२४	तै	३२	४५	पद्म
२९	५९	१४	र	२८	४	सा	५	१४	पू.फा.	३८	१४	रा	९	१८	शूल	२५	४५	सा	४	१७	गर	०	२४	व	२८ / ५६	४ / ९	छत्र
३०	३	१५	चं	२४	१३	दि	३	४०	उ.फा.	३६	२३	रा	८	३२	गंड	११	४४	दि	१	५२	बव	२४	१३	बा	५२	४७	श्रीवत्स

ति.	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ/द	-/+	रे. अं. +	मि.	चन्द्रास्त काशी घं.	मि.	
१	१	१७	२९	२४	२५	१८			६	९	५	५१	१०	२३	५०	३७	६०	५	४	५२	+	९	-	-	◡ चन्द्रदर्शन। दक्षिणशृंग दुर्भिक्ष। मु.४५ सस्तो। **कल्याणेश्वराजजनकपुर परिक्रमा प्रारंभ**(मिथिला)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।२५ से।
२	१०	१८	१	२५	२६	१९			६	८	५	५२	१०	२४	५०	४२	६०	३	४	२८	+	९	७	५६	मु.सव्वाल १०हि.१४४८। **ईद उल फितर(ईद)। श्रीरामकृष्णपरहंस जयंती। फुलेरा दूज**(नेपाल)।
३	११	१९	२	२६	२७	२०	मेष	११।९	६	८	५	५२	१०	२५	५०	४५	६०	२	४	४	+	८	८	५४	भ.रा.२।११ से (स्वर्ग)। **मेषराशि**(दि.१०।३६)। **पंचक समाप्त** दि.१०।३६। रवियोग दि.१०।३४ से पूर्व में यायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग।
४	१२	२०	३	२७	२८	२१			६	७	५	५३	१०	२६	५०	४७	५९	५९	३	४१	+	८	९	५५	भ.दि.१।४५तक (स्वर्ग)। **वैनायकीश्रीगणेश ४व्रत। संतचतुर्थी**(उड़ीसा)। रवियोगस्थायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।२५ तक।
५	१३	२१	४	२८	२९	२२	वृष	२३।५०	६	६	५	५४	१०	२७	५०	४६	५९	५५	३	१७	+	८	१०	५९	**वृषराशि**(दि.३।५८)। रवियोग दि.९।५१ से पूर्व में यायीजययोग। ❶**मृत्युबाण** ९।२०(दि.९।५० तक)। रवियोग दि.८।५७ तक।
६	१४	२२	५	२९	३०	२३			६	६	५	५४	१०	२८	५०	४१	५९	५४	२	५४	+	८	१२	४	**श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। गोरूपिणी षष्ठी**(बङ्गाल)। **होलाष्टकारंभ**। केवल सतलुज,व्यास,रावी नदी के क्षेत्रों तथा त्रिपुष्कर क्षेत्र में विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है।❶
७	१५	२३	६	१	१	२४	मिथुन	३२।१८	६	५	५	५५	१०	२९	५०	३५	५९	५२	२	३०	+	७	१	७	भ.दि.८।४०से रा.७।४५तक (स्वर्ग)। **मिथुनराशि**(रा.७।०)। **कामदा सप्तमी ७ व्रत। ⊙सं.मीन में सूर्य** ९।२६(दि.९।५१)। मु.३०सामान्य। बाद को १६ ❷
८	१६	२४	७	२	२	२५			६	४	५	५६	११	०	५०	२७	५९	५०	२	७	+	७	२	५	रवियोग प्रा.६।१४ से पुन: रवियोग समस्त दिन। स्थायीजययोग प्रा.६।१४ तक पश्चात यमघंटयोग प्रा.६।१४से।
१०	१७	२५	८	३	३	२६	कर्क	३८।२३	६	३	५	५७	११	१	५०	१७	५९	४८	१	४३	+	७	२	५७	**कर्कराशि**(रा.९।२४)। फगुदशमी(उड़ीसा)। रवियोग रा.२।५७ तक। ❸**⊙उ.भा.में सूर्य** ३०।१(सा.६।२)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.१।१९ तक।
११	१८	२६	९	४	४	२७			६	२	५	५८	११	२	५०	५	५९	४५	१	१९	+	६	३	४३	भ.दि.१२।४४ से रा.११।३२तक (मृत्युलोक)। **आमलकी ११एकादशी व्रत सबका। रङ्गभरी एकादशी। श्रीकाशीविश्वनाथ शृंगारदिन।** ❸
१२	१९	२७	१०	५	५	२८	सिंह	४४।२४	६	२	५	५८	११	३	४९	५०	५९	४३	०	५५	+	६	४	२४	**सिंहराशि**(रा.११।४८)। **श्रीनृसिंहद्वादशी १२।** ❹**उपवास**(जैन)। रवियोग रा.९।१६ तक पश्चात यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग।
१३	२०	२८	११	६	६	२९			६	१	५	५९	११	४	४९	३३	५९	४१	०	३२	+	६	५	१	**शनिप्रदोष १३ व्रत**। पुत्राकामना से व्रतारंभ का विधान। **⊙सायन मेष में सूर्य** ५७।७(रा.शे.४।५२)। रवियोग रा.१०।२४ से।
१४	२१	२९	१२	७	७	३०	कन्या	५२।४६	६	०	६	०	११	५	४९	१४	५९	३८	द -	८	+	६	५	३६	भ.सा.५।१४ से रा.शे.४।२८ तक (मृत्युलोक)। **कन्याराशि**(रा.३।१६)। **व्रत १५**। भद्रा रा.शे.४।३८ **बाद होलिकादहन। हुताशनीजन्म। चौमासी चौदस**(जैन)। ❹
१५	२२	३०	१३	८	८	१			५	५९	६	१	११	६	४८	५२	५९	३७	उ +	१६	+	५	-	-	**पूर्णिमा १५**। स्नानदान हेतु पुण्य। **राष्ट्रियनववर्ष चैत्रमास प्रारंभ दि.३०। शक १९४९ प्रारंभ। होली(रङ्गोत्सव)**। सायं प्रतिपत्योग से आज चतुष्षष्ठीदेवी का दर्शन व यात्रा(काशी)। ❺

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विचार

ति.१ मंगल दि.९।२५ से उ.भा. शनियुति। **ति.२** बुध उ.भा.में पूर्वदोष। दि.१०।१४ से रेवती में शनियुति। **ति.३** गुरु रेवती में पूर्वदोष। **ति.६** रवि दि.९।५० मृत्युबाण उपरान्त रोहिणी में **दिनल.२** (दि.९।५० से) इष्ट ६ प्र.व.वि.११।। (लग्नस्थ चन्द्र दान)। या **ल.गोधूलि** (सूर्यास्तकाल) या **ल.६** (रा.५।५५ से) इष्ट६प्र.व.वि.१३।। **पश्चात् मीन में सूर्य(खरमासारंभ)।**

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		वक्रीभौम				गति		मार्गीबुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	मं	११	०	३६	४६	७५६	५३	३	२५	३१	१३	१३	१	१०	०	३८	८	९	३६	३	२८	६	४५	१	१५	३५	४६	७१	३४	११	१६	३८	५५	१	२४	५६	३
२	बु	११	१४	२७	३२	७७२	५६	३	२५	१८	१३	१३	१	१०	०	४७	४४	९	४०	३	२८	०	५६	१	१६	४७	२०	७१	३४	११	१६	४६	१०	१	२४	५२	५२
३	गु	११	२७	३३	२७	७८८	३६	३	२५	५	१२	१३	१	१०	०	५७	२४	३४	२९	३	२७	५५	७	१	१७	५८	५४	७१	३४	११	१६	५३	२६	१	२४	४९	४२
४	शु	०	१०	५४	४७	८०४	१४	३	२४	५२	११	१३	१	१०	१	३१	५३	३८	२९	३	२७	४९	१७	१	१९	१०	२८	७१	३४	११	१७	०	४१	१	२४	४६	३१
५	श	०	२४	३१	४७	८१९	४८	३	२४	३९	१०	१३	१	१०	२	१०	२३	३८	३५	३	२७	४३	२८	१	२०	२२	२	७१	३४	११	१७	७	५७	१	२४	४३	२०
६	र	१	८	२०	४७	८३०	४१	३	२४	२६	९	१३	१	१०	२	४८	५८	३८	३६	३	२७	३७	३९	१	२१	३३	३५	७१	३४	११	१७	१५	१२	१	२४	४०	९
७	चं	१	२२	२२	२३	८४३	५	३	२४	१३	९	१३	१	१०	३	२७	३४	३९	५१	३	२७	३१	५०	१	२२	४५	९	७१	३४	११	१७	२२	२८	१	२४	३६	५८
८	मं	२	६	४७	५	८४९	३३	३	२४	०	८	१३	१	१०	४	७	२५	५९	५५	३	२७	२५	५७	१	२३	५६	४३	७१	३४	११	१७	२९	४५	१	२४	३३	४८
१०	बु	२	२०	४३	२२	८६७	२८	३	२३	४७	७	१३	१	१०	५	७	२१	५९	५५	३	२७	२०	४	१	२५	८	१७	७१	३४	११	१७	३७	२	१	२४	३०	३७
११	गु	३	५	९	४१	८५८	२५	३	२३	३४	६	१३	१	१०	६	७	१६	५९	५५	३	२७	१४	१०	१	२६	१९	५१	७१	३४	११	१७	४४	१९	१	२४	२७	२६
१२	शु	३	१९	२७	२५	८५४	५१	३	२३	२१	६	१३	१	१०	७	७	१२	५९	५८	३	२७	८	१७	१	२७	३१	२५	७१	५६	११	१७	५१	३७	१	२४	२४	१५
१३	श	४	३	४०	३४	८४८	१८	३	२३	८	५	१३	१	१०	८	७	९	६४	३	३	२७	२	२४	१	२८	४३	२१	७२	१५	११	१७	५८	५४	१	२४	२१	४
१४	र	४	१७	४५	४४	८३८	२५	मा	२३	९	३४	६	३२	१०	९	११	१२	७६	१६	३	२६	५६	५४	१	२९	५५	३६	७२	१५	११	१८	६	११	१	२४	१७	५४
१५	चं	५	०	३९	२७	८२२	२७	३	२३	१६	६	६	३२	१०	१०	२७	२८	७६	१६	३	२६	५१	३२	१०	१	७	५१	७२	१५	११	१८	१३	२८	१	२४	१४	४३

४१पं० फाल्गुनशुक्ल ८मंगल सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगम ३५।३१ अयनांश २४।१३।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	३	१०	३	१	११	१	७
०	६	२४	४	२७	२३	१७	२४	२४
४०	४७	०	७	२५	५६	२९	३३	३३
२७	५	८	२५	५७	४३	४५	४८	४८
५९ ५०	८४९ ४८	१३ १ व	५९ ५५ मा	५ ४३ व	७१ ३४	७ १७	३ ११	३ ११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि लग्न अंश	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ चं. घं.	मि.
कुम्भ	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५
मीन	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३
मेष	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	१०
वृष	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	६
मिथुन	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	२०
कर्क	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३८
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
सिंह	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५२
कन्या	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	५
तुला	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१
वृश्चिक	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८
धनु	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४४
मकर	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१

तिथि लग्न अंश	८ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ चं. घं.	मि.
मीन	७	२९	७	२५	७	२१	७	१८	७	१४	७	१०	७	७
मेष	९	६	९	२	८	५८	८	५५	८	५१	८	४७	८	४४
वृष	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०
मिथुन	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	१	१२	५७	१२	५४
कर्क	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	३	१९	३	१५	३	१२
सिंह	५	४८	५	४४	५	४०	५	३७	५	३३	५	२९	५	२६
ल.अं.	राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि		राशि	
कन्या	८	१	७	५७	७	५३	७	५०	७	४६	७	४२	७	३९
तुला	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	६	१०	२	९	५८	९	५५
वृश्चिक	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	१२
धनु	२	४०	२	३६	२	३२	२	२९	२	२५	२	२१	२	१८
मकर	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२	४	८	४	५
कुम्भ	५	५८	५	५४	५	५०	५	४७	५	४३	५	३९	५	३६

५०पं० फाल्गुनशुक्ल १५सोम सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगम ३५।४२ अयनांश २४।१३।३८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	१०	३	१०	११	१	७
६	०	२३	१०	२६	१	१८	२४	२४
४८	३९	१५	२७	५३	७	१३	१४	१४
५२	२७	६	२८	३२	५१	२८	४३	४३
५९ ३७	८२२ २७	६ ३२ मा	७६ १६ मा	३ २१ व	७२ १५	८ ०	३ ११	३ ११



❷घटी पुण्य। आज सूर्योदय उपरान्त दिन में घं.४ मि.१५ तक संक्रान्ति का पुण्यकाल। गो अन्न तिल का दान गोदावरी में स्नान। **वसंत ऋतु। खरमासप्रवृत्ति।** यायीजययोग सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.७।४२ तक। ❺साभ्यङ्ग (तैल)स्नान-स्पर्श-होलिकाभस्म धारण। **मन्वादि १५। दोलोत्सव** (बङ्गाल)। **दोलयात्रा। श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती।** यायीजययोग दि.३।४० तक।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी ति.२ बुध दि.१०।१४ से। ति.४ शुक्र दि.१०।२७ तक। श्लेषा/मघा ति.११ गुरु रा.२।१९ से। ति.१३ शनि रा.१०।२४ तक। पञ्चक विचार-ति.३ गुरु दि.१०।३५ तक।

भौमादि ग्रहों का सञ्चार।। वक्रीभौम-श्लेषा। ति.१४ रवि मार्गी। ४८।५३ (रा.१।३३)।। **मार्गीबुध-**धनिष्ठा। ति.११ गुरु शतभिष ३२।४६(रा.७।८)।। **वक्रीगुरु-**श्लेषा में ४ चरण।। **शुक्र-**श्रवण। **ति.७** सोम धनिष्ठा २९।१२ (सा.५।४६)।। **ति.१४** रवि कुम्भ ३।३९(प्रा.७।२८)।। **शनि-**उ.भा.४ चरण। **ति.१** मंगल रेवती १ चरण ८।५८ (दि.९।४४)।। **राहु-**धनिष्ठा१ चरण।। **केतु-**श्लेषा ३ चरण।।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष विचार-नवमी तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिन का है। फाल्गुन मास में मीन संक्रांति हो तथा मंगलवार को तिथि क्षय हो तो दुर्भिक्ष होता है। **९ मार्च** को **चन्द्रदर्शन** विचार से सस्ती का रुख रहेगा। **१२ मार्च** को **वैनायकीगणेश चतुर्थी व्रत** होगा। **१४ मार्च** को **होलाष्टक** का आरंभ हो रहा है। इसका दोष केवल सतलुज व्यास रावी नदी तथा त्रिपुष्कर क्षेत्रो मे विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। **विशेष- होलाष्टक** वार संबंधी होने के कारण होलिका दहन ☛

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति.१ मंगल पू.भा.सूर्ययुति। **ति.२** बुध उ.भा.सूर्यभोग्य है। **ति.३** गुरु रेवती शनियुति। दि.१०।३५ से अश्विनी **विद्यारंभ(ल.१२** प्रा.६।२० से या **ल.२** दि.९।२५ से) मुहूर्त। ति.४ शुक्र दि.१।४५ रिक्ताबाद रा.८।४६ वैधृतिपूर्व ५मी अश्विनी जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्र स्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी पौधारोपण का क्रय विक्रय **उत्तरदिशा की यात्रा नये अन्न** का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण **विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त। ति.५ शनि भरणी में वैधृति रा.६।३० से कृत्तिका में (६) शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। ति.६ रवि कृत्तिका में शस्त्रनिर्माण धानकटाई वर-कन्या **वरण(सगाई)** मुहूर्त। दि.१०।४७ से रोहिणी में (७मी) **उपनयन ल.२** (दि.१०।४७ से लग्नस्थ मृ.दा.) मुहूर्त। ति.७ सोम दि.८।५० भद्रापूर्व रोहिणी में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण **अन्नप्राशन** आभूषण निर्माण दवाँरी धानरोपाई शिल्पविद्या **वधूप्रवेश(ल.११** प्रा.६।१५ तक) **द्विरागमन(ल.१२** प्रा.६।१५ से) **गृहारंभ(ल.११** प्रा.६।१५ तक १२ मध्य रा.दा.) **हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि** धानकटाई **कूपनिर्माण(बोरिंग)** मुहूर्त। ति.८ मंगल मृग. वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण **शल्यक्रिया मुहूर्त। ति.१०** बुध पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर **नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न** धारण आभूषण निर्माण गोक्रय-विक्रय **पश्चिमदिशा की यात्रा** नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय मुहूर्त। **ति.११ गुरु पुष्य** पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण बागवानी पौधारोपण का क्रय विक्रय **पश्चिमोत्तरदिशा की यात्रा** शिल्पविद्या **औषधी सेवन** नावनिर्माण **विपणि व्यापार** शल्यक्रिया वाहनक्रय धानकटाई मुहूर्त। **ति.१२** शुक्र श्लेषा भौमयुति। ति.१३ शनि मघा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.१४** रवि पू.फा.रिक्ताभद्रा है। **ति.१५** सोम उ.फा. शनिवेध।

☛ के आठ दिन पूर्व यह प्रारंभ होगा। **१५ मार्च** को **सूर्यदेव मीन राशि** में प्रवेश कर रहे हैं। आज से **खरमास आरंभ** होने से विवाहादि शुभ कार्य के लिये मुहूर्त का अभाव हो जायेगा। **१८ मार्च** को **आमलकी-रंगभरी एकादशी व्रत** का मान सबके लिये है। आज काशी विश्वनाथ का शृंगार दिन है। काशी में **रंगभरी एकादशी** मनायी जायेगी। ऐसी मान्यता है कि आज के ही दिन भगवान् शिव ने माता पार्वतीजी का गौना कराकर काशी लेकर आये। इस परम्परा का निर्वहन करते हुए रजत पालकी मे विराजमान माता गौरा-पार्वती के विग्रह का पूजन करके काशीवासी अबीर-गुलाल उड़ाते हुए भक्ति भाव से सराबोर हो निहाल होते है। **१९ मार्च** को **नृसिंह द्वादशी व्रत** किया जायेगा। पुष्य योग प्राप्त होने पर **गोविन्दद्वादशी** होती है। **२० मार्च** को पुत्रलाभ हेतु **शनिप्रदोष व्रत** होगा। **२१ मार्च** को सा.५।१४ से पूर्णिमा प्रारंभ है अत: आज **व्रत की पूर्णिमा** तथा सूर्यास्त पश्चात भद्रा को त्याग कर **होलिका दहन** किया जायेगा। **२२ मार्च** आज **स्नान दान** की **पूर्णिमा** है तथा चैत्रकृष्ण प्रतिपदा दि.३।४० से सूर्योदय सूर्यास्त के मध्य प्राप्त है। अत: प्रतिपदा के निमित्त **रङ्गोत्सव** (होली) मनाया जायेगा तथा होलिका की धूलि धारण होगा। आज काशी में सायंकाल चतुषष्ठी देवी यात्रा व दर्शन पूजन किया जाता है। आज **श्रीचैतन्य महाप्रभुजी की जयन्ती** भी मनायी जाती है। दोलयात्रा आदि कृत्य आज होंगे।

चैत्रकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २ चैत्र से१६ तिथि तक १९४९ शक।
अंग्रेजी दिनांक २३ मार्च से ६ अप्रैल तक सन् २०२७ ई.।

श्रीसंवत २०८३ शक १९४८ उत्तरायण दक्षिणगोल बसंतऋतु।।

दि.मा. घं.	दि.मा. मि.	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश नक्षत्र	प्रवेश घ.प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य गति घ.	प.	क्रान्ति उ.	+	रे.अं. +	मि.	चन्द्रोदय काशी घं.	मि.	
३०	७	१	मं	२१	२०	दि	२	३०	हस्त	३५	२३	रा	८	७	वृद्धि	१४	३१	दि	११	४६	कौ	२१	२०	तै	५०	२७	सौम्य	२३	१	१४	९	९	२			५	५९	६	१	११	७	४८	२९	५९	३४	0	४२	+	५	७	१२	**वसंत उत्सव**। आमकुसुम का प्राशन। गीतवादन से काममहोत्सवादि के सभी कार्यों का विधान। **होलामेला**(पंजाब)।
३०	११	२	बु	१९	३३	दि	१	४६	चित्रा	३५	३४	रा	८	१०	ध्रुव	१०	६	दि	९	५९	गर	१९	३३	व	४९	१५	कालदण्ड	२४	२	१५	१०	१०	३	तुला	५।२९	५	५८	६	२	११	८	४८	३	५९	३२	१	४	+	५	८	१३	भ.रा.१।४०से (पाताल)। **तुलाराशि** (प्रा.८।१०)। **संत तुकाराम जयंती।**
३०	१४	३	गु	१८	५८	दि	१	३२	स्वाती	३६	५९	रा	८	४४	व्याघात	६	४१	दि	८	३७	भ	१८	५८	वव	४९	११	स्थिर	२५	३	१६	११	११	४			५	५७	६	३	११	९	४७	३५	५९	३०	१	२७	+	४	९	१३	भ.दि.१।३२तक (पाताल)। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत** चन्द्रोदय (रा.९।१३)। **कल्पादि३**। यायीजययोग दि.१।३२ से।
३०	१८	४	शु	११	४१	दि	१	४८	विशाखा	३९	४०	रा	९	४८	हर्षण	४	१६	प्रा	७	३८	वा	११	४१	कौ	५०	४५	मातङ्ग	२६	४	१७	१२	१२	५	वृश्चिक	२४।०	५	५७	६	३	११	१०	४७	५	५९	२७	१	५१	+	४	१०	१३	**वृश्चिकराशि** (दि.३।३३)। स्थायीजययोग दि.१।४८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.९।४८ से।
३०	२२	५	श	२१	४८	दि	२	३८	अनुराधा	४३	३३	रा	११	२०	वज्र	२	५५	प्रा	७	४	तै	२१	४८	गर	५३	२३	अमृत	२७	५	१८	१३	१३	६			५	५६	६	४	११	११	४६	३२	५९	२५	२	१४	+	४	११	१०	**रङ्गपञ्चमी ५। विजय गोविन्दजी हलंकर** (मणिपुर)। रवियोग रा.११।२० से। यायीजययोग दि.२।३८ से।
३०	२५	६	र	२४	५८	दि	३	५३	ज्येष्ठा	४८	३३	रा	१	२०	सिद्धि	२	२३	प्रा	६	५१	व	२४	५८	भ	५७	५	काण	२८	६	१९	१४	१४	७	धनु	४८।३३	५	५५	६	५	११	१२	४५	५७	५९	२२	२	३८	+	४	१२	४	भ दि.३।५४ से रा.शे.४।४५तक (स्वर्ग–पाताल)। **धनुराशि** (रा.१।२०)। **श्रीस्कन्दषष्ठी**(बङ्गाल)। रवियोग रा.१।१९ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग।
३०	२९	७	चं	२९	१२	सा	५	३४	मूल	५४	२४	रा	३	३९	व्यतीपात	२	४५	प्रा	७	0	वव	२९	१२	वा	६०	0	लुम्बक	२९	७	२०	१५	१५	८			५	५४	६	६	११	१३	४५	१९	५९	२०	३	१	+	४	१२	५४	**श्रीशीतला सप्तमी ७ व्रत।**
३०	३३	८	मं	३४	७	रा	७	३१	पू.षा.	६०	0	समस्त			वरीयान	३	४४	प्रा	७	२२	वा	१	३९	कौ	३४	७	मित्र	३०	८	२१	१६	१६	९			५	५४	६	६	११	१४	४४	३९	५९	१८	३	२५	+	३	१	३९	कालाष्टमी ८। **श्रीशीतलाष्टमी** (बसिअउरा)। आज बासी भोजन का ग्रहण शास्त्र विहित है। यात्रा व उत्सव। **काशी में वृद्धाङ्गारक पर्व (बुढ़वामंगल)। वर्षीतपारम्भ**–जैन। स्थायीजययोग रा.७।३१ तक।
३०	३७	९	बु	३९	२५	रा	९	३८	पू.षा.	0	४९	प्रा	६	१३	परिघ	५	७	प्रा	७	५४	तै	६	४६	गर	३९	२५	श्रीवत्स	३१	९	२२	१७	१७	१०	मकर	१७।२८	५	५३	६	७	११	१५	४३	५७	५९	१६	३	४८	+	३	२	१८	**मकरराशि** (दि.१२।५२)। **श्रीऋषभनाथ जी जयंती (जैन)। ⊙रेवती में सूर्य** ५६।४४(रा.शे.४।३५)।
३०	४०	१०	गु	४४	३८	रा	११	४३	उ.षा.	७	२५	दि	८	५०	शिव	६	३९	दि	८	४१	व	१२	२	भ	४४	३८	सौम्य	अप्रै	१०	२३	१८	१८	११			५	५२	६	८	११	१६	४३	१३	५९	१३	४	११	+	२	२	५४	भ दि.१०।४१से ४४।३८ तक(रा.११।४३) (पाताल)। **अप्रैल ४।** यायीजययोग रा.११।४३ से।
३०	४४	११	शु	४९	१९	रा	१	३४	श्रवण	१३	४५	दि	११	२१	सिद्ध	७	५७	दि	९	१	वव	१६	५९	वा	४९	१९	धूम्र	२	११	२४	१९	१९	१२	कुम्भ	४६।३५	५	५१	६	९	११	१७	४२	२६	५९	११	४	३४	+	२	३	२७	**कुम्भराशि** (रा.१२।२९)। **पंचक आरंभ** रा.१२।२९ से। **पापमोचनीएकादशी ११व्रत सबका।** सर्वार्थसिद्धियोग दि.११।२१ तक।
३०	४८	१२	श	५३	११	रा	३	६	धनिष्ठा	१९	२६	दि	१	३६	साध्य	८	४७	दि	९	२०	कौ	२१	१५	तै	५३	११	प्रवर्द्धमान	३	१२	२५	२०	२०	१३			५	५०	६	१०	११	१८	४१	३७	५९	९	४	५८	+	२	३	५९	द्विपुष्करयोग दि.१।३६ तक।
३०	५१	१३	र	५५	५१	रा	४	१०	शतभिष	२४	११	दि	३	३०	शुभ	८	५६	दि	९	२४	गर	२४	३१	व	५५	५१	राक्षस	४	१३	२६	२१	२१	१४			५	५०	६	१०	११	१९	४०	४६	५९	६	५	२१	+	१	४	२९	भ.रा.शे.४।१०से (मृत्युलोक)। **प्रदोष १३ व्रत।** दि.३।३० तक **महावारुणी पर्वयोग।**
३०	५५	१४	चं	५७	२४	रा	४	४६	पू.भा.	२८	४५	सा	५	१८	शुक्ल	८	१०	दि	९	५	भ	२६	३८	श	५७	२४	मुसल	५	१४	२७	२२	२२	१५	मीन	१७।१०	५	४९	६	११	११	२०	३९	५२	५९	४	५	४४	+	१	५	0	भ.सा.४।२८ तक (मृत्युलोक)। **मीनराशि**(दि.१२।५१)। **मासशिवरात्रि १४ व्रत।**
३०	५९	३०	मं	५७	३६	रा	४	५०	उ.भा.	३०	१६	रा	५	५४	ब्रह्म	६	३०	दि	८	२४	च	२७	३०	ना	५७	३६	सिद्धि	६	१५	२८	२३	२३	१६			५	४८	६	१२	११	२१	३८	५६	५९	२	६	६	+	१	५	३४	**भौमवतीअमावस्या ३०।** स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष व भय। भौमवारी अमावस्या में गङ्गा स्नान से सहस्र गायों के दान का फल मिलता है। सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।५४ तक।

।।सूर्योदय से दैनिक स्पष्ट चन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	चन्द्र				गति		मार्गीभौम				गति		बुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	मं	५	१५	२०	१४	८१३	३३	३	२३	२२	३९	५	५२	१०	११	४३	४३	७६	१६	३	२६	५०	१०	१०	२	२०	६	७२	१५	११	१८	२१	२१	९	२४	११	३२
२	बु	५	२८	४७	१३	७९७	३३	३	२३	२८	३२	२	२२	१०	१२	५९	५९	७६	१८	३	२६	४६	४८	१०	३	३२	२०	७२	१५	११	१८	२१	३१	९	२४	८	२१
३	गु	६	११	५८	१६	७८१	३२	३	२३	३०	५४	२	२२	१०	१४	१६	१७	८०	४५	३	२६	४३	२७	१०	४	४४	३५	७२	१५	११	१८	३७	३४	९	२४	५	१०
४	शु	६	२४	५३	४५	७६५	४५	३	२३	३३	१७	२	२२	१०	१५	३७	३	८६	३८	३	२६	४०	५	१०	५	५६	५०	७२	१५	११	१८	४५	३६	९	२४	२	0
५	श	७	७	३४	३८	७५१	२२	३	२३	३५	४०	२	२२	१०	१७	३	४०	८७	५९	३	२६	३६	४३	१०	७	९	५	७२	१५	११	१८	५३	३९	९	२३	५८	४९
६	र	७	२०	२	२८	७३८	२७	३	२३	३८	२	२	२२	१०	१८	३१	३९	८७	५९	३	२६	३३	२१	१०	८	२१	१९	७२	१५	११	१९	१	४२	९	२३	५५	३८
७	चं	८	१	११	६	७२८	५५	३	२३	४०	२५	२	२२	१०	१९	५९	३७	८८	५	३	२६	३०	0	१०	९	३३	३४	७२	१५	११	१९	९	४४	९	२३	५२	२७
८	मं	८	१४	२८	१८	७३१	४२	३	२३	४२	४८	२	२२	१०	२१	२७	४३	९४	१	३	२६	२६	३८	१०	१०	४५	४९	७२	१५	११	१९	१७	४७	९	२३	४९	१६
९	बु	८	२७	४७	२७	७२२	४२	३	२३	४५	११	२	२२	१०	२३	१	४४	९६	५८	३	२६	२३	१६	१०	११	५८	४	७२	१५	११	१९	२५	५०	९	२३	४६	५
१०	गु	९	८	३०	५५	७२०	४३	३	२३	४७	३३	२	२२	१०	२४	३८	४१	९६	५८	३	२६	१९	५४	१०	१३	१०	१९	७२	१५	११	१९	३३	५४	९	२३	४२	५५
११	शु	९	२०	३४	१०	७२३	३७	३	२३	४९	५६	२	२२	१०	२६	१५	३९	९६	५८	३	२६	१६	२६	१०	१४	२२	३३	७२	१५	११	१९	४१	५८	९	२३	३९	४४
१२	श	१०	१	४३	१९	७३०	४६	३	२३	५२	१९	२	२२	१०	२७	५२	३६	९७	४	३	२६	१२	५९	१०	१५	३४	४८	७२	१५	११	१९	५०	३	९	२३	३६	३३
१३	र	१०	१५	१	१३	७४१	१८	३	२३	५४	४२	२	२२	१०	२९	२९	४०	१०२	४७	३	२६	९	३१	१०	१६	४७	३	७२	१५	११	१९	५८	७	९	२३	३३	२२
१४	चं	१०	२७	२३	४७	७४३	२५	३	२३	५७	४	२	२२	११	१	१२	२७	१०३	२३	३	२६	६	३	१०	१७	५९	१८	७२	१५	११	२०	६	११	९	२३	३०	११
३०	मं	११	१०	६	२४	७८०	१६	३	२३	५९	२७	२	२२	११	२	५५	५०	१०३	२३	३	२६	२	३६	१०	१९	११	३३	७२	१५	११	२०	१४	१५	९	२३	२७	१

५१ पं०चैत्रकृष्णा ८ मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण १५५०
अयनांश २४।१३।३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	३	१०	३	१०	११	९	३
१४	१४	२३	२१	२६	१०	११	२३	२३
४४	२८	४२	२७	२६	४५	१७	४९	४९
३९	१८	४८	४३	३८	४९	४७	१६	१६
५९	७३१	२	१४	३	७२	८	३	३
११	४२	२२ मा	१	२२ व	१५	३	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि लग्न	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ चं. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ चं. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
मीन	७	४	७	0	६	५६	६	५२	६	४९	६	४५	६	४१	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२३	६	१९	६	१५	६	१२
मेष	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१५	८	११	८	७	८	३	८	0	७	५६	७	५२	७	४९
वृष	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५६	९	५२	९	४८	९	४५
मिथुन	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९
कर्क	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५४	२	५०	२	४६	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२८	२	२४	२	२०	२	१७
सिंह	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	८	५	४	५	0	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७	७	१३	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४
तुला	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३७	९	३३	९	२९	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७	९	३	९	0
वृश्चिक	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५४	११	५०	११	४६	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७
धनु	२	१५	२	११	२	७	२	३	२	0	१	५६	१	५२	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०	१	२६	१	२३
मकर	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४७	३	४३	३	३९	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२१	३	१७	३	१३	३	१०
कुम्भ	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	१०	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१

५२ पं०चैत्रकृष्ण ३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह सुगण १५५७
अयनांश २४।१३।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	३	११	३	१०	११	९	३
२१	१०	२३	२	२६	१९	२०	२३	२३
३८	६	५९	५५	२	११	१४	२७	२७
५६	२४	२७	५०	३६	३३	१५	१	१
५९	७८०	२	१०३	१	७२	८	३	३
२	१६	२२ मा	२३	२७ व	१५	४	११	११



मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल ति.५ शनि रा.११।२० से। **ति.**७ सोम रा.३।३९ तक। **रेवती/अश्विनी** ति.३० मंगल रा.५।५४ से। **पञ्चक विचार-ति.** ११ शुक्र रा.१२।२९ से।

वारुणीपर्वयोग–वारुणी पर्व योग मधुकृष्ण(चैत्रकृष्ण)में त्रयोदशी शतभिष नक्षत्रों से युक्त होने पर सम्पन्न होता है। इस योग में गङ्गास्नान करने पर कोटि(करोड़ों)सूर्यग्रहण के समकक्ष फल मिलता है।१। उपयुक्त योग यदि शनिवार को हो तो **महावारुणी** होता है। शुभ योग से शनिवार तथा शतभिष नक्षत्र यदि युक्त हो तो इस योग को **महा महा वारुणी** नाम से विख्यात है तथा यह योग तीन करोड़ कुल का उद्धार करता है। आज के दिन गङ्गा स्नान से उपयुक्त फल प्राप्त होता है। चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को जो मनुष्य शिव सानिध्य में गङ्गा स्नान करता है। उसे कभी भी प्रेत योनी प्राप्त नहीं होती है।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। मार्गीभौम-श्लेषा।। **बुध**-शतभिष। **ति.**७ सोम पू.भा.मे ०।१५(प्रा.६।०)। **ति.**१३ रवि मीन१७।४२(दि.१।५५)। **ति.**३० मंगल उ.भा. मे १४।१(दि.११।२४)।। **वक्रीगुरु-ति.**४. शुक्र श्लेषा में ३ चरण १।२६ (प्रा.६।३१)।। **शुक्र**-धनिष्ठा। **ति.**४ शुक्र शतभिष ३५।५१ (रा.८।१७)। ति.३०मंगल पू.भा.४०।१५(रा.९।५६)।। **शनि**-ति.१३रवि रेवती २ चरण १४।१(दि.११।२६)।। **राहु**-धनिष्ठा १ चरण।। **केतु**-श्लेषा ३ चरण।।

चैत्र कृष्ण पक्ष विचार-यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। पक्ष में चार या पाँच ग्रहों का योग प्रबल वृष्टि अथवा युद्ध कारक होता है। **२३ मार्च** को आज **वसन्तोसव** मनाया जायेगा। वसन्तोसव संबंधी कृत्य में आम बौर खाना चाहिये। गीत वन्दन, काममहोत्सवादि का आयोजन होगा। **२५ मार्च** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय में रात ९:१३ के बाद अर्घ्यदान करें। **२७ मार्च** को **रंगपंचमी** का पर्व मनाया ☛ जायेगा। **२९ मार्च** को शीतला सप्तमी व्रत कर रात्रि में पूजन किया जायेगा। **३० मार्च** को **शीतलाष्टमी व्रत (बसौड़ा)** होगा। आज बासी भोजन करना शास्त्रोक्त है। आज शीतला माता के निमित्त जल (पानी) व ठण्डी वस्तुओं का दान करें। आज ही चैत्र प्रतिपदा वसन्तोत्सव के बाद दूसरे मङ्गल को काशी में **वृद्ध अङ्गारक** (बुढ़वा मंगल) के नाम से जाना जाने वाला सांस्कृतिक मनाया जायेगा। **२ अप्रैल** को समस्त पापों को हरने वाली **पापमोचिनी एकादशी व्रत** सबका होगा। **४ अप्रैल को प्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज ही सूर्योदय से **दि. ३।३० तक वारुणी पर्व** है। इस योग में गंगा स्नान से करोड़ों सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। आज के दिन जो मनुष्य शिवसानिध्य में गंगास्नान करता है, उसे कभी प्रेतयोनि प्राप्त नहीं होती। **५ अप्रैल** को **मासशिवरात्रि व्रत** होगा। **६ अप्रैल** को **स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या** है। मंगलवार को अमावस्या पड़ने से भौमवती अमावस्या के रूप में यह अत्यन्त पुण्य फलदायिनी होती है। इसमें गंगा-स्नान व दान पुण्य करने से वह सूर्यग्रहण में किये जाने वाले दान-पुण्य के समान हो जाता है।

पक्ष में विविधमुहूर्त-ति. १ मंगल हस्त सूर्यवेध। **ति.** २ बुध चित्रा सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है।। **ति.** ३ गुरु दि.१।३२ भद्रा बाद स्वाती में रिक्तादोष। **ति.** ४ शुक्र विशाखा राहुवेध। **ति.** ५ शनि अनुराधा भौमवेध। **ति.** ६ रवि प्रा.६।५१ तक व्यतिपातापूर्व ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण चौपायों का क्रय विक्रय नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानकटाई मुहूर्त। **ति.** ७ **सोम प्रा.**७।० व्यतिपात बाद मूल शिशुताम्बूलभक्षण दवँरी धानरोपाई औषधी सेवन **विपणि** धानकटाई मुहूर्त। **ति.** ८ मंगल पू.षा.शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। **ति.** ९ बुध पू.षा.रिक्तादोष। रा.९।३८ से उ.षा.नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण नावनिर्माण मुहूर्त। **ति.** १० गुरु दि.१०।४१ भद्रापूर्व उ.षा.पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण प्रथम बार भूमि पर शिशु को बैठाना सूतीकास्नान सौभाग्वती को छोड़कर नवीनवस्त्र स्वर्णरत्न धारण आभूषण निर्माण बागवानी शिल्पविद्या नावनिर्माण धानकटाई **गर्भाधान कूपनिर्माण(बोरिंग)** मुहूर्त। **ति.** ११ शुक्र श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण **पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा** दवँरी शिल्पविद्या औषधी सेवन नौर्वातिर्माण वाहनक्रय धानकटाई **गर्भाधान** मुहूर्त। **ति.** १२ शनि धनिष्ठा राहुयुति। **पश्चात् मासान्त दोष है।**

चौदह मनु एवं मन्वादि तिथियों का बोधक चक्र

क्र०सं०	मनुओं के नाम	मन्वादि तिथियां
१	स्वायम्भुव	चैत्र शुक्ल ३
२	स्वारोचिष	चैत्र शुक्ल १५
३	औत्तम	कार्तिक शुक्ल १५
४	तामस	कार्तिक शुक्ल १२
५	रैवत	आषाढ़ शुक्ल १०
६	चाक्षुष	आषाढ़ शुक्ल १५
७	वैवस्वत	ज्येष्ठ शुक्ल १५
८	सावर्णि	फाल्गुन शुक्ल १५
९	दक्षसावर्णि	आश्विन शुक्ल ९
१०	ब्रह्मसावर्णि	माघ शुक्ल ७
११	धर्मसावर्णि	पौष शुक्ल ११
१२	रुद्रसावर्णि	भाद्रपद शुक्ल ३
१३	देवसावर्णि	श्रावण कृष्ण ३०
१४	इन्द्रसावर्णि	श्रावण कृष्ण ८

युगादितिथि-ज्ञानार्थ चक्र

युगनाम	सत्ययुग १	त्रेतायुग २	द्वापर युग ३	कलियुग ४
मास पक्ष तिथि	कार्तिक शुक्ल ९	वैशाख शुक्ल ३	भाद्रपद कृष्ण १३	माघ कृष्ण ३०

मन्वादि, युगादि तिथियों में अनध्याय (पठनावकाश) और श्राद्ध दानादि करना चाहिए। मन्वादि-युगादि तिथियां शुभकार्य में त्यागने योग्य है, किन्तु उपरोक्त तिथियों में किये गये दान को अक्षय कहा गया है। अक्षय तृतीया में सभी शुभ कार्य करना चाहिए।

दश अवतारों का मास-पक्ष-तिथ्यादि विवरण

१-मत्स्यावतार-चैत्र शुक्ल ३ अपराह्न में
२-रामावतार- चैत्र शुक्ल ९ मध्याह्न में
३-परशुरामावतार-वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषकाल में
४-नृसिंहावतार- वैशाख शुक्ल १४ सायंकाल में
५-कूर्मावतार - वैशाख शुक्ल १५ मध्याह्न में
६-कल्किअवतार- श्रावण शुक्ल ६ सायं काल में
७-कृष्णावतार- भाद्रपद कृष्ण ८ मध्यरात्रि में
८-वामनावतार- भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्न में
९-बौद्धावतार- आश्विन शुक्ल १० सायंकाल में
१०- वाराहावतार- भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्न में

पर्व-तिथियाँ- चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या तथा पूर्णिमा और सूर्य-संक्रान्ति (सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने) की तिथि इन तिथियों को पर्व-तिथि कहते हैं।

त्रिविध (नक्षत्र-लग्न-तिथि) गण्डान्त (सन्धि) परिचय

(१) नक्षत्र गण्डान्त	१-रेवती के अंत की २ घटी और अश्विनी के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४ घटी (१ घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त (सन्धि) काल होता है। २-श्लेषा के अन्त की २ घटी और मघा के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४ घटी (१ घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त काल होता है। ३-ज्येष्ठा के अन्त की २ घटी और मूल के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४घटी (१ घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त काल होता है। उपरोक्त तीनों को नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं।
(२) लग्न गण्डान्त	१-कर्क के अन्त की आधी घटी (१२मिनट) और सिंह के आदि की आधी घटी (१२मि०) कुल (२४ मि०) =१घटी गण्डान्त काल होता है। २- वृश्चिक के अन्त की आधी घटी (१२मि०) और धनु के आदि की आधी घटी (१२मि०) कुल १ घटी (२४ मि०) गण्डान्त होता है। ३-मीन मेष की क्रमशः अन्त-आदि की आधी-आधी घटी अर्थात् इन दोनों के अन्तराल की १ घटी (२४ मि०) गण्डान्त होता है।
(३) तिथि गण्डान्त	पूर्णा तिथियों (पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या के अंत की तथा नन्दा तिथियों (प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी) के आदि की १-१ घटियाँ अर्थात् पूर्णा और नन्दा तिथियों के बीच अन्तराल की २ घटियाँ (४८ मिनट) तिथि गण्डान्त होता है।

उपरोक्त त्रिविध गण्डान्त (नक्षत्र गण्डान्त, लग्न गण्डान्त और तिथि गण्डान्त) शुभ कार्यों में त्याज्य हैं।

नक्षत्रों के विविध नामों की सूची

अश्विनी	दस्र, अश्वि. आद्य, अश्व के नाम
भरणी	यम, अन्तक, कृतान्त, याम्य
कृत्तिका	वह्नि तथा अग्नि के अन्य और नाम
रोहिणी	ब्रह्मा, ब्राह्म, धाता, शकट
मृगशिरा	मृग, मृगशीर्ष तथा शशि के नाम
आर्द्रा	शिव, रुद्र, ईश्वर, रौद्र, तारका
पुनर्वसु	अदिति, सुरजननी, देवमाता
पुष्य	ईज्य, तिष्य, अमरेज्य, देवेज्य
श्लेषा	सर्प, अहि, उरग, भुजंग
मघा	पितर, पितृ, जनक
पूर्वाफाल्गुनी	भग (सूर्य विशेष), भाग्य
उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा (सूर्यविशेष), उत्तरभग
हस्त	कर, अर्क, पतंग, सूर्य के नाम
चित्रा	त्वष्टा, विश्व, त्वाष्ट्र, सुरवर्द्धकि
स्वाती	वायु, पवन, मारुत तथा वायु के नाम
विशाखा	द्वीश, द्विदैव, इन्द्राग्नि, शूर्पभ
अनुराधा	मैत्र, मित्र
ज्येष्ठा	इन्द्र, शाक्र, कुलिशतारा, सुरस्वामी
मूल	क्रव्य, निशाचर, निर्ऋति, राक्षस, क्रतुभुज
पूर्वाषाढ़	जल, सलिल, पय, तोय, वारि
उत्तराषाढ़	वैश्व, विश्वेदेव, विश्व
अभिजित्	ब्रह्मा, धाता, विधि
श्रवण	श्रुति, कर्ण, विष्णु, हरि, श्रोणा
धनिष्ठा	वसु, वासव, श्रविष्ठा
शतभिषा	वरुण, पाशि, शततारका, जलेश के नाम
पूर्वाभाद्रपद	अजैकपात्, अजपात्, पूर्वप्रोष्ठपद
उत्तरा भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य, उत्तरा प्रोष्ठपात्
रेवती	पूषन्, पौष्ण, अन्त्य, पूषा

टिप्पणी-मुख्य रूप से नक्षत्र संख्या २७ ही है, किन्तु उत्तराषाढ़ के चतुर्थ चरण के मान (घटी, पल) में श्रवण नक्षत्र के मान (घटी पल) के पन्द्रहवें भाग को जोड़ देने पर घटी पल के रूप में अभिजित् नक्षत्र का मान होता है। इस प्रकार २८वीं नक्षत्र हो जाती है, जिसकी अनेक कार्यों में उपयोगिता है।

ध्रुवादि नक्षत्र-वार बोधक चक्र

संज्ञा	नक्षत्र	वार
ध्रुव, स्थिर	रोहिणी, उ० फा०, उ०षा०, उ०भा	रवि
चर, चल	स्वा०, पुन०, श्र०, ध०श०	सोम
उग्र, क्रूर	पू०फा०, पू०षा०, पू०भा०, भ०, म०	भौम
मिश्र, साधारण	विशाखा, कृत्तिका	बुध
क्षिप्र, लघु	हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्	गुरु
मृदु, मैत्र	मृ०, रेवती, चि०, अनु०	शुक्र
तीक्ष्ण, दारुण	मू०, ज्ये०, आर्द्रा, आश्ले०	शनि

तिथि-स्वामी-बोधक चक्र

तिथियाँ	१	२	३	४	५	६	७	८
तिथि स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	गुह (कार्तिकेय)	सूर्य	शिव
तिथियाँ	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
तिथि स्वामी	दुर्गा	यम	विश्वेदेवा	विष्णु	कामदेव	शिव	चन्द्रमा	पितर

तिथियों की नन्दादिसंज्ञा बोधक चक्र

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दादि संज्ञा
१	२	३	४	५	तिथियाँ
६	७	८	९	१०	
११	१२	१३	१४	१५	
				३०	

तिथियों में त्याज्य विचार

षष्ठी में तैल, अष्टमी में मांस, चतुर्दशी में क्षौर (बाल कटाना) और अमावस्या में स्त्री-प्रसंग नहीं करना चाहिए। २,१०,१३ तिथियों में उबटन तथा ३०,७,९ इन तिथियों में आँवला लगाकर स्नान नहीं करना चाहिए। परन्तु शनिवार की षष्ठी में तैल लगाना, महाष्टमी (आश्विन शुक्ल अष्टमी) में मांस, शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में क्षौर तथा दीपावली (३०) में स्त्री-प्रसंग प्रशस्त है।

भूहास्य और भूरुदन विचार

पूर्णा (५।१०।१५) तिथि, पुष्य, गुरुवार, श्रवण के चन्द्र और हस्त के सूर्य में भू-हास्य होता है; जो शुभ है। मासान्त, संक्रान्ति का दिन, वर्षान्त, अमावस्या, होलिका, मङ्गलवार को भूरुदन होता है। भू-रुदन में यात्रा करने से यात्राभंग होती है, कृषि कार्य प्रारंभ करने से कृषिभंग होती है, गृहारम्भ करने से और व्यापार (वाणिज्य) का आरंभ करने से निष्फल होता है। विवाह करने से मृत्यु तथा क्षौर कराने से रोग होता है।

भू-शयन और भू-रजस्वला का विचार

संक्रान्ति के दिन से १।५।१०।११।१६।१८। १९वें दिन भूरजस्वला रहती है। इसमें यज्ञ, हवन, हलप्रवहण और बीज बोना वर्जित है। सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।२२।२६वें चन्द्रनक्षत्रों में भू शयन करती है।

हलप्रवहण (हल चलाने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की १ शुभ है।
वार	सू०, चं०, बु०, बृ०, शु० शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रो०, मृ०, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उ०फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उ०षा०, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ हैं।

२।३।६।९।१२ लग्न में। पापग्रह निर्बल हों। चन्द्रमा जलचर राशि के नवांश में हो। चं० शु० बली हों। युति या दृष्टि द्वारा लग्न पर बृहस्पति का प्रभाव हो तथा हलचक्र बनता हो और भूशयन एवं भूरजस्वला का दिन न हो तो हल चलाना शुभ होता है। हल चक्र का विचार सूर्य नक्षत्र से अभिजित् सहित चन्द्रनक्षत्र तक की संख्या से किया जाता है। ३ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ३ शुभ होते हैं। यह मुहूर्त मार्तण्डोक्त है। मुहूर्त चिन्तामणि और मुहूर्त गणपति के मतानुसार सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रर्क्ष तक गिनने पर ३ अशुभ, ८ शुभ, ९ अशुभ, ८ शुभ होते हैं।

राहु के नक्षत्र से बीज बोने का चक्र व मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा शुभ है।
वार	सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
नक्षत्र	अश्विनी, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, म०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, मू०, ध०, रेवती।
लग्न	२।३।६।९।१२ श्रेष्ठ है।

राहुस्थित नक्षत्र से गिनने पर दिन नक्षत्र तक क्रमशः ८ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, ४ अशुभ होते है। बीज बोने (बीजोप्ति) में भू-रजस्वला और भूरुदन दोनों वर्जित हैं।

धान्यच्छेदन (फसल काटने) का मुहूर्त

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, श्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों में मङ्गलवार और शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में धान्यच्छेदन (फसल की कटाई) का कार्य शुभ होता है।

कणमर्दन (दँवाई या मड़ाई) का मुहूर्त

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, ज्येष्ठा, रोहिणी नक्षत्रों में कणमर्दन का कार्य शुभ होता है।

कोठी, खात, बखारी, आदि में अन्न रखने का मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों-उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों तथा रवि-सोम-गुरु-शुक्र वारों में कोठी-बखारी तथा खात आदि में अन्न का रखना शुभ होता है।

बीज संग्रह करने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों, स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) लग्नों, बुध-गुरु और शुक्रवारों में बीज का संग्रह करना शुभ होता है।

नवान्नभक्षण का मुहूर्त-विचार

चैत्र और पौष मासो को छोड़ अन्य १० मासो में मङ्गल-शनि को छोड़ अन्य वारों में। दोनों पक्ष की २।३।५।७।१०।१३ तथा पूर्णिमा तिथियों में। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में। विष घटिकाओं को छोड़ अन्य घटियों में तथा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट शुभ ग्रहों के लग्नों में नवीन अन्न भक्षण शुभ होता है।

वाणिज्यकर्म (दूकान प्रारम्भ करने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की२।३।५।६।७।८।१० ११।१२।१३ एवं १५ तथा कृष्ण १ श्रेष्ठ हैं।
वार	सू०, चं०, बु०, बृ०, शुक्र और शनि।
नक्षत्र	अश्विनी, रो०, मृ०, पुष्य, उ०फा०, हस्त, चित्रा, अनु०, मूल, उ०षा०, श्रवण, अभि०, ध०, पू० भा०, उ० भा०, रेवती।
लग्नशुद्धि	लग्न से केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) स्थानों में शुभग्रह तथा त्रिषडाय (३।६।११) स्थानों में पापग्रह हो। लग्न में चन्द्रमा और शुक्र हों। २।१०।११ भावों में शुभग्रह हों। ८।१२ भावों में पापग्रह न हों तो वाणिज्यकर्म (विपणि) करना शुभ होता है। इसके लिए रिक्ता तिथियाँ, मङ्गलवार, कुम्भ लग्न और भूरुदन दिन अप्रशस्त होने से वर्जित है, अतः मुहूर्त-विचार के समय ध्यान देते हुए इनका परित्याग किया जाय।

सामान्यतया सुभिक्ष आदि का ज्ञान

प्रभव सम्वत्सर से प्रारम्भकर वर्तमान सम्वत्सर तक की संख्या को दूना करके उसमें से तीन घटाकर सात से भाग देने पर शेष संख्या के अनुसार शुभाशुभ फल जानें। १ और ४ शेष रहने पर दुर्भिक्ष। २ और ५ शेष में सुभिक्ष, ३ और ६ शेष में सम और शून्य शेष में पीड़ा जानना चाहिए।

विषघटीज्ञानदायक तालिका

कृ०, पुन०, मघा, रेवती	की ३० घटी के उपरान्त ४ घटी
रोहिणी	की ४० घटी के उपरान्त ४ घटी
आश्लेषा	की ३२ घटी के उपरान्त ४ घटी
अश्विनी	की ५० घटी के उपरान्त ४ घटी
उत्तरा फा०, शतभिषा	की १८ घटी के उपरान्त ४ घटी
पुष्य, पू०फा०, चित्रा, उ०षा०	की २० घटी के उपरान्त ४ घटी
आर्द्रा, हस्त	की २१ घटी के उपरान्त ४ घटी
पूर्वाभाद्रपद	की १६ घटी के उपरान्त ४ घटी
भरणी, पूर्वाषाढ़, उ०भाद्र०	की २४ घटी के उपरान्त ४ घटी
अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा	की १० घटी के उपरान्त ४ घटी
मूल	की ५६ घटी के उपरान्त ४ घटी
मृग०, स्वा०, वि०, ज्येष्ठा	की १४ घटी के उपरान्त ४ घटी

टिप्पणी-उपरोक्त तालिका में अङ्कित घटी नक्षत्रमान ६०घटी मानकर दर्शाया गया है यदि नक्षत्र मान ६०घटी से न्यूनाधिक होगा तो उक्त मान (घटी) के समय में न्यूनाधिक्य करना होगा, जो त्रैराशिक क्रिया से आ जाएगा।

विषघटी-परिहार-चन्द्रमा लग्न के अतिरिक्त केन्द्र-त्रिकोण में हो, अथवा शुभग्रहों से दृष्ट होते हुए लग्नेश केन्द्र में हो तो विषघटी दोष नहीं होता है।

दीक्षाग्रहण के मुहूर्त का विचार

मास	चैत्र, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, एवं शततारका शुभ है।
वार	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार, भद्रा आदि दोष से रहित होने पर शुभ होते हैं।
तिथि	शुक्लपक्ष की२।३।५।७।१०।११।१२ तथा कृष्णपक्षकी २।३।५तिथियाँ प्रशस्त हैं।
लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१२संख्यक लग्न, चन्द्र-तारा की अनुकूलता होने पर शुभ होती है।
लग्न शुद्धि	लग्न से ३।६।११ स्थानों मे पाप ग्रहो और १।४।५।७।९।१० स्थानो में शुभ ग्रहो की स्थिति उत्तम होती है। गुरु-शुक्र का उदय होना आवश्यक है। अष्टमी, संक्रान्ति तथा सूर्य-चन्द्रग्रहण का समय दीक्षा लेने हेतु उत्तम होता है।

होमाहुति का मुहूर्त

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गणना करने से ३-३ नक्षत्रो के क्रमशः ९ भाग ९ ग्रहों के होंगे। पाप ग्रहों के भाग (नक्षत्रो) मे हवन नहीं होना चाहिए। ग्रहों के उक्त ३-३ नक्षत्र को उनका मुख कहा है। पापग्रहों के मुख मे पड़ी आहुति अशुभ होती है। ग्रहो के नक्षत्र विभाग, क्रम तथा शुभाशुभ फल निम्न लिखित चक्र से स्पष्ट ज्ञात होगा।

सूर्य न०से इष्ट न०सं०	३	३	३	३	३	३	३	३	३
ग्रहों के मुख	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
शुभाशुभ फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

अग्निवास और शुभाशुभ फल

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि की संख्या मे १ जोड़कर रवि आदि वार की संख्या को जोड़कर उसमें ४ का भाग देने से १ शेष रहने पर स्वर्ग में, २ शेष रहने पर पाताल में तथा ३ या शून्य शेष रहने पर भूमि में अग्नि का वास होता है। भूमि मे अग्नि का वास रहने पर उस दिन किया गया हवन सुखद-शुभद होता है। स्वर्ग में अग्निवास के दिन किया गया होम प्राणनाशक तथा पाताल मे अग्नि वास होने पर किया गया होम धन का नाशक होता है। अतः पृथ्वी में अग्निवास वाले दिन ही हवन किया जाना चाहिए।

विशेष--विवाह में, व्रतबन्ध मे, नवरात्र में, नित्य-नैमित्तिक कार्य मे, कुलदेवता के पूजन में, विष्णु के हवन में, दुर्गा के हवन में, ग्रहण में, शांतिकर्म में, पुत्रजन्म में, उत्पात शान्ति मे, युगादि तिथियों में, ग्रहशान्ति में, गण्डान्त में अग्निचक्र विचारणीय नहीं होता।

वस्त्र-निर्माण (क्लाथमिल) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा (१) शुभ है।
वार	सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, तीनो उत्तरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती प्रशस्त है।

नवीन वस्त्र की रँगाई-छपाई का मुहूर्त

तिथि	शुक्ल पूर्णिमा (१५) तथा कृष्ण प्रतिपदा (१) और दोनो पक्षों की २।३।५। ६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ प्रशस्त है।
वार	रवि, भौम, गुरु और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र शुभप्रद है।

सूचीकर्म (सिलाई कार्य-टेलरिंगशॉप) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा तथा कृष्ण प्रतिपदा एवं दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ शुभ हैं।
वार	रवि, सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और रेवती नक्षत्र प्रशस्त हैं।

रजक-कार्य (क्लाथ वाशिंग, लाण्ड्री) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्ष की २।३।५।७।८।१०।११ तिथियाँ और कृष्ण १(प्रतिपदा) शुभ हैं।
वार	सोमवार, मङ्गलवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और धनिष्ठा प्रशस्त हैं।
त्याज्य	श्राद्धपक्ष, नवरात्र, व्रत का दिन, संक्रान्ति का दिन और पर्वदिन त्याज्य है।

चर्मोद्योग (चमड़े की वस्तुओं के निर्माण) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा, कृष्ण प्रतिपदा (१) तथा दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार और शनिवार।
नक्षत्र	कृत्तिका, मृगशिरा, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती प्रशस्त हैं।

सर्ववस्तु विक्रय (बेची हुई वस्तु मात्र लेने-देने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (१) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार।
नक्षत्र	भरणी, कृत्तिका, श्लेषा, तीनों पूर्वा और विशाखा प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	स्थिर (२।५।८) लग्नों में, केन्द्र त्रिकोण और द्वितीय में शुभग्रह एवं ३।६।११वें स्थानों में पापग्रहों की स्थिति शुभ होती है।

सर्ववस्तु क्रय (खरीदी) हुई वस्तु के मूल्य मात्र लेने-देने का मुहूर्त

तिथि	कृष्ण प्रतिपदा, शुक्ल पूर्णिमा तथा दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शततारका और रेवती शुभ है।

टिप्पणी- यद्यपि क्रय-विक्रय (खरीदने-बेचने) का मुहूर्त एक सा होना चाहिए; क्योंकि एक ही दिन (समय) में किसी वस्तु को एक व्यक्ति बेंचता है और दूसरा व्यक्ति उसी वस्तु को खरीदता है। परन्तु वस्तु के लेने-देने में विक्रय मुहूर्त तथा मूल्य के लेने-देने में क्रय मुहूर्त देखना चाहिए। (ऐसा प्रयोग व्यापारियों के लिए हो सकता है)

गृह, खेत आदि भूसम्पत्ति के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

गुरु, शुक्रवारों में नन्दा (१।६।११) और पूर्णा (५।१०।१५) तिथियों में तथा मृगशिरा, पुनर्वसु, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, अनुराधा मूल, विशाखा, रेवती नक्षत्रों में गृह-क्षेत्रादि भूसम्पत्ति का क्रय-विक्रय करना प्रशस्त कहा है।

शत्रु से सन्धि (सुलह) करने का मुहूर्त

८।१२ तिथियों में बु०, चं०, गु०, शु० वारों में पुष्य, मघा, अनुराधा नक्षत्रों में तैतिल करण में, शुभग्रह से युक्त दृष्ट लग्न में शुभ कहा है।

दुकान खोलने में शुभाशुभ ज्ञानार्थ हट्टचक्र

सूर्य के नक्षत्र से गिनना प्रारम्भ कर दुकान खोलने के दिन के नक्षत्र तक गिनकर संख्यानुसार शुभ या अशुभ फल चक्र के अनुसार ज्ञात करें।

नक्षत्र संख्या	स्थान	फल
१,२	आसन	सौख्य
३,४,५	मुख	विक्रय नाश
६,७,८,९	अग्नि	अर्थनाश
१०,११,१२,१३	नैर्ऋत्य	सुख
१४,१५,१६	सम्मुख	अतिश्रेष्ठ
१७,१८,१९,२०	वायव्य	चोरभय
२१,२२,२३,२४	ईशान	सर्वप्रकार हानि
२५,२६,२७,२८	मध्य	शुभप्रद

वाद प्रस्तुत (मुकदमा दाखिल) करने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।८।१०।१३ तिथियाँ और पूर्णिमा प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार, गुरुवारऔर शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्लेषा और भरणी प्रशस्त है।
लग्न	३।६।७।८।१२ शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानों में हों ३।६।११ स्थानो में पापग्रह हों। अष्टम भाव में शुभ या पाप कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए।
विशेष	यदि लग्न में कोई बलवान् पापग्रह बैठा हो तो ऐसे लग्न में वाद प्रस्तुत करना (मुकदमा दाखिल करना) अत्यन्त शुभ होगा।

आय-व्यय फलादेश जानने की

विधि– लाभ-हानि को जोड़ दीजिए। जमा में से १ घटा दें। तदुपरान्त उसमें ८ से भाग दें। शेष को इसप्रकार से जानिए— १. धन-लाभ, उत्तम-सिद्धि, २. धन-लाभ, मध्यम, शुभ कार्य में व्यय, ३. लाभ कम, खर्च अधिक, उलझन, ४. मानसिक तनाव, रोग, कष्ट, ५. अपव्यय, ६. भाग्य की उन्नति, ७. अकस्मात् लाभ, तथा थोड़ी सी परेशानी।

सेवाकार्य (नौकरी) करने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षो की २।३।५।७।१०।११।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १ (प्रतिपदा) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित् और रेवती नक्षत्र प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।२।४।७।१०।११वें भावों में शुभग्रहों की स्थिति शुभद कही है तथा १०।११वें भावों में सूर्य मङ्गल भी शुभप्रद होते हैं।
त्याज्य	राज-पंचक, नृप-बाण और नृदूर त्याज्य हैं।
१	राज-पञ्चक ज्ञान-शुक्लादिगततिथि में लग्न-संख्या जोड़कर ९ से भाग देने पर शेष ४ बचे तो राज-पञ्चक होता है। यह नर्मदा नदी के दक्षिण में प्रसिद्ध है।
२	नृप - बाण - गोचर भ्रमणवश जब - जब प्रत्येक राशि के ५वें १४वें और २३वें अंशों पर सूर्य रहता है, तब-तब नृप-बाण होता है।
३	नृदूर-सेवक के नाम के नक्षत्र से स्वामी का नाम नक्षत्र दूसरा हो तो नृदूर दोष होता है। इससे स्वामी को हानि पहुँचती है।

विशेष--सेव्य (स्वामी) सेवक (नौकर) के मेलापक (योनि, राशिमैत्री, नाड़ी इत्यादि) के विचार के लिए जन्मराशि का ग्रहण न कर पुकार के नाम के नक्षत्र और राशि आदि के अनुसार विचार करना चाहिए। इसमें योनि की शुभता राशि मैत्री तो आवश्यक है ही यदि सेव्य सेवक की एक ही नाड़ी हो तो अति प्रशस्त कहा गया है।

नारायणबलि कर्म का मुहूर्त

श्रेणी	उत्तम	मध्यम
तिथि	कृष्णपक्ष की २।३।५।७।८। १०।१२।३०	कृष्णपक्ष की ४।९
वार	रविवार, सोमवार, तथा गुरुवार।	बुधवार
नक्षत्र	अश्विनी, पुष्य, हस्त, स्वाती और श्रवण।	रोहिणी, पुनर्वसु, पूर्वा फाल्गुनी, तीनों उत्तरा, विशाखा का पूर्वार्द्ध तथा अनुराधा।

शेष में नारायण बलि करना अशुभ है।

त्रिपुष्कर योग, न्यूनाधिमास, १ वर्ष के बाद, दक्षिणायन, व्यतीपातपरिघ-वैधृतियोग, गुरु शुक्र का अस्त समय, भद्रा, शुक्लपक्ष, जन्मतारा और प्रत्यरितारा तथा कर्ता की राशि से ४।८।१२वाँ चन्द्र त्याज्य है।

नोट- अशौच के पश्चात् मुहूर्त देखा जाता है। अशौच में तो यथासम्भव करना चाहिए।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिये-

पत्नीं मनोरमां देहि
मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार-
सागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

इस मन्त्र का का जप अथवा दुर्गा सप्तशती का सम्पुट युक्त पाठ करने या ब्राह्मण द्वारा कराने से शीघ्र विवाह की बाधाएँ दूर होती हैं तथा सुन्दर-गुण सम्पन्न पत्नी की प्राप्ति होती है।

गोद लेने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३ पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष की १ (प्रतिपदा) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा तथा धनिष्ठा शुभ है।
लग्न	वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ (अर्थात् स्थिर लग्न ही) प्रशस्त है।

विशेष- गोद लेने वाले व्यक्ति और गोद जाने वाले बालक की जन्मराशि और नाम राशि दोनों तरह से परस्पर राशि-मैत्री होनी चाहिए तथा उस बालक के भाग्य की प्रबलता होनी चाहिए।

नौका आदि जलयान-निर्माण जलावतरण, संचालन का मुहूर्त

रिक्ता और अमा (४।९।१४।३०) तिथियों के अतिरिक्त तिथियों में, रवि-गुरु-शुक्रवारों में, अश्विनी, मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य, तीनों पूर्वा-तीनों उत्तरा-हस्त-चित्रा-स्वाती-अनुराधा, मूल, श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा और रेवती नक्षत्रों में शुभयुतदृष्ट मिथुन-सिंह-कन्या कुम्भ लग्नों में नौका (स्टीमर-जहाज) आदि जलयान का निर्माण शुभ होता है।

शुभग्रहों के लग्नों और वारों मे श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, अश्विनी, हस्त नक्षत्रों में निर्माण स्थान से चलाकर जलावतरण कराना शुभ है। नौकादि जलयान को (यथार्थ) संचालन के लिए, शुभतिथि-वार-योग-लग्न तथा अश्विनी, हस्त, मृगशिरा, धनिष्ठा, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, अनुराधा एवं श्रवण नक्षत्र शुभद कही गई है। ज्योतिर्विदाभरण ग्रन्थ के अनुसार रोहिणी से दिन-नक्षत्र तक गिनने पर १ से ६ तक संख्या हो तो शुभ, उसके पश्चात् ७ से १५ तक संख्या हो तो अशुभ उसके पश्चात् १६ से १८ तक संख्या हो शुभ, तत्पश्चात् १९ से २१ तक अशुभ, तत्पश्चात् ६ नक्षत्र संख्या अर्थात् २२ से २७ तक शुभ होती है।

उत्तराधिकार (वसीयत) का मुहूर्त

मास	चैत्र को छोड़कर उत्तरायन के अन्य मास प्रशस्त है। चंद्र गुरु, शुक्र उदय और बली हों।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०। ११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा (१५) और कृष्ण १ (प्रतिपदा) प्रशस्त है।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार शुक्रवार तथा शनिवार ग्राह्य हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण और रेवती शुभ है।
लग्न	३।५।६।७।८।११ लग्नों में से जो लग्न उत्तराधिकार ग्रहण करने वाले की जन्मराशि से ३।६।१०। ११वीं हों उनमें शुभ कहा है।
शुद्धि लग्न	लग्न से १।२।४।५।७।९।१०।११ में शुभ ग्रह तथा ३।६।११वें में पापग्रह प्रशस्त है। लग्न से ३में शनि, ११ मे सूर्य ६ में मङ्गल, १।४।५।९।१० में गुरु तथा १० में शुक्र शुभ है।
	सूर्य, मंगल, लग्नेश, दशमेश, जन्मलग्नेश का बलवान् होना विशेष शुभद होता है।
त्याज्य	अमावस्या (३०) और रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ रात्रि का समय, मङ्गलवार त्याज्य हैं। लग्न से १।२।४।५।७।८।१०।१२वें में पापग्रहों का होना अशुभ होता है।

मंत्र-यंत्रादिसाधन-मुहूर्त

अश्विनी, मृगशिरा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, विशाखा और श्रवण नक्षत्रों में, रविवार और शुभ ग्रहों के वारों में मंत्र-यंत्रादि का साधन करना प्रशस्त कहा है।

वीर (वेताल) साधन मुहूर्त

भरणी, मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में तथा कुम्भ लग्न में बुध स्थित हो, लग्न से चतुर्थ भाव में शुक्र बैठा हो, अष्टम भाव शुद्ध (ग्रहरहित) हो तब ऐसे समय में वीर वेताल साधना सिद्धिप्रद होती है।

संन्यास ग्रहण करने का मुहूर्त

तिथि	रिक्ता (४।९।१४) के अतिरिक्त अन्य तिथियाँ शुभ है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, तीनो उत्तरा, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा प्रशस्त है।
लग्न	स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) की लग्न शुभ कही गई है।

विवरण-पापग्रह निर्बल हों, चन्द्रमा अष्टम में न हो, बृहस्पति भाग्य अथवा केन्द्र में हो, शुक्र ६वें या बारहवें स्थान में हो तथा शनि तृतीय या षष्ठ अथवा एकादश स्थान में हो तो मुमुक्षु व्यक्ति को संन्यास ग्रहण करना चाहिए।

ऋण (कर्ज) लेने-देने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३ तिथियाँ एवं पूर्णिमा प्रशस्त है।
वार	सोम, गुरु, शुक्र, शनिवार ।
नक्षत्र	स्वाती, पुनर्वसु, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और अश्विनी नक्षत्र प्रशस्त है ।
लग्न शुद्धि	चर (१।४।७।१०) लग्नों में, लग्न से त्रिकोण (५।९) तथा ८वें स्थान में कोई भी ग्रह न रहने पर शुभद होगा।
त्याज्य	हस्त नक्षत्र युक्त रविवार, संक्रान्ति, वृद्धि योग तथा मङ्गलवार को भूल कर भी ऋण नहीं लेना चाहिए, क्योंकि उक्त समय में लिया गया ऋण लेन[illegible] वाले के वंश में पुत्र-पौत्र [illegible] दीर्घकाल तक चला जाता है। [illegible] तक उससे मुक्ति नही मिलती। मङ्गल[illegible] को ऋण लेने का तथा बुधवार को ऋण देने का दोनो का निषेध है।

विशेष- भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, मूल, ३ उत्तरा, ३ पूर्वा, हस्त, ज्येष्ठा, भद्रा, व्यतीपात (नक्षत्रों, करण, योग) में द्रव्य चुरा जाना, व्यापार में लगाना, किसी को ऋण या उधार देना, द्रव्य का गाड़ना अथवा किसी प्रकार के कार्य में द्रव्य लगाने से वह धन पुनः प्राप्त (वापस) नहीं होता।

।।शुभाशुभ ग्राम वास विचार।।

किसी ग्राम या नगर में (नए स्थान मे) बसने हेतु ग्राम के या नगर के नाम के आदि के अक्षर से जो नक्षत्र हो उससे बसने वाले व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर से जो नक्षत्र आये, वहाँ तक (अभिजित् सहित) नक्षत्रों की संख्या ज्ञातकर निम्न प्रकार फल जाने।

स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तक पर	७	धन तथा मान का लाभ
पीठ पर	७	हानि तथा निर्धनता
ह्रदय पर	७	सुख, सम्पत्ति लाभ
पैरों पर	७	पर्यटन (यात्रा)

चैत्रादि मासों में गृह बनाने में फल का ज्ञान

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
फल	शोक	धान्य-वृद्धि	मृत्यु	पशुहानि	द्रव्य-वृद्धि	नाश
मास	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
फल	विवाद	सेवक हानि	धनाप्ति	श्रीप्राप्ति	अग्निभय	लक्ष्मी प्राप्ति

वास्तुभूमि का प्लव (ढलान) के अनुसार फल

भूमि के ढलान की दिशा	फल
पूर्व	धनैश्वर्यवर्द्धक
अग्निकोण	अग्निभय कारिणी
नैर्ऋत्यकोण	धनहानि कराने वाली
पश्चिम	सुतक्षय कारिणी
वायव्य कोण	प्रवास एवं उद्वेगप्रदायिनी
उत्तर	श्री, सुख, विद्याप्रदायिनी
ईशानकोण	धन, विद्या और यशप्रदा

मध्यप्लवा (बीच में नीची और चारों ओर ऊँची) भूमि नेष्ट तथा अशुभ फल देने वाली होती है। गृह निर्माण के लिए समतल, पूर्व प्लवा, उत्तर-प्लवा एवं ईशान प्लवा भूमि ही श्रेष्ठ होती है।

वृक्ष-चक्र (सूर्य नक्षत्र से चन्द्रर्क्ष तक)

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे दिन के नक्षत्र तक गिनकर निम्नलिखित चक्र के अनुसार फल समझना चाहिए।

मूल में	त्वचा में	शाखा में	पत्तों में	शीर्ष पर	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोगप्रद	धनप्रद	नाशकारक	दारिद्रता कारक	शुभप्रद	मृत्युप्रद	हानिप्रद	धनागम	लाभप्रद	फल

वाटिका (बाग) लगाने का मुहूर्त चक्र

मास	वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, और फाल्गुन मास सामान्यतया शुभ कहे हैं।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १ भी प्रशस्त हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों-उत्तरा हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, अभिजित्, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
विशेष	लग्न में चन्द्रमा या जलचर राशि होना चाहिए। उत्तरायण और गुरु-शुक्र के उदय समय में शुभ होता है।

वृक्षारोपण (लगाने) का मन्त्र– ॐ वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते शुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।।

वास्तुप्रदीप के अनुसार द्वार की विधि

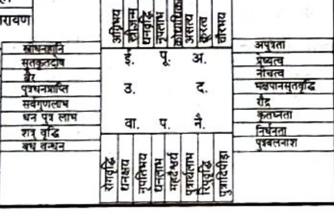
जिस दिशा में द्वार बनाना हो, विस्तार या दीर्घ में उसके नौ भाग करें। पाँच भाग को दक्षिण की तरफ और तीन भाग को उत्तर भाग में छोड़कर शेष भागमें द्वार बनाना चाहिए।

दक्षिण और वाम का विचार—घर से निकलते समय जो दाहिनी ओर पड़े वह दक्षिण तथा जो बाँयी तरफ पड़े वह वाम है। ऐसा वास्तु राजवल्लभ का मत है।

चौकोर घर के भीतर विविध कार्यों-सामग्रियों के स्थान का चक्र

देवता	स.घा.	स्नान	दधिमंथन	रसोई
औष.	ईशान पूर्व के मध्य में अन्य सभी वस्तुओं का स्थान बनाना चाहिए।			घृत
भण्डार				शयन
रति				पाखाना
धान्य	रोदन	भोजन	विद्या भ्यास	अस्त्रादि

वाराहमिहिर के अनुसार चारों दिशा में द्वार का चक्र और फल



।।भूमि में शल्य (हड्डी आदि) ज्ञानविधि।।

वर्तमान समय मे प्राय: व्यक्ति वर्णव्यवस्थानुसार कहे हुए कार्यों को ही न कर के सभी वर्णों के कार्यों को न्यूनाधिक मात्रा में कर रहा है। अत: पूछने वाले व्यक्ति से फल, फूल, नदी और देवता, इन चारों के एक-एक नामों को उच्चारण कराकर उनके प्रथमाक्षरों के द्वारा निम्न लिखित चक्र से शल्यादि की स्थिति, प्रकार और गहराई आदि का बोध करें।

अ	क	च	ट	त	प	य	श	ह,प, य	वर्ण अक्षर
पूर्व में	अग्नि कोण में	दक्षिण में	नैर्ऋत्य कोण में	पश्चिम में	वायव्य कोण में	उत्तर में	ईशान कोण में	मध्य में	दिशा
मनुष्य की हड्डी	गधे की हड्डी	मनुष्य की हड्डी	कुत्ते की हड्डी	बच्चे की हड्डी	भूसी, राख कोयला	ब्राह्मण की हड्डी	गौ की हड्डी	मनुष्य के कपाल की हड्डी	शल्य प्रकार
१।।हाथ नीचे	२हाथ नीचे	२हाथ नीचे	१।।हाथ नीचे	१।।हाथ नीचे	४ हाथ नीचे	२ हाथ नीचे	१ हाथ नीचे	३।।हाथ नीचे	हस्त प्रमाण
मृत्यु-प्रद	राजभय-प्रद	स्वामी को मृत्युदायी	बाल मृत्यु दायी	गृह विनाश-कारी	दु:स्व-प्नदायी	दरिद्रता-कारी	गो नाश-कारी	कुलनाश-कारी	फल

ध्वजादि आयों के नाम एवं फलबोधक चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	संख्या
ध्वज	धूम	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ऊष्ट्र	आय-नाम
कीर्ति	शोक	जय	शत्रुता	धन	दरिद्रता	सुख	रोग	फल

ब्राह्मण राशि (४।८।१२) वालों को ध्वज आय, क्षत्रिय (१।५।९) राशिवालों को वृष आय, वैश्य (२।६।१०) राशिवालों को सिंह आय तथा शूद्र (३।७।११) राशिवालों को गज आय शुभदायक होता है।

विशेष- ध्वज आय में पूर्ण सिद्धि, वृष आय वाले मकान में पशुओं की वृद्धि, गज आय वाले गृह में विविध प्रकार की सम्पत्ति का लाभ तथा सिंह आय वाले गृह में क्रूरता तथा सन्तान की कमी होती है। शेष समसंख्यक आयों वाले मकान अनेक प्रकार के शोक, दु:ख देने वाले होते हैं।

सूर्य चन्द्रवेध निर्णय तथा इनका प्रयोग

चन्द्रवेध उसे कहते हैं, जिसकी लम्बाई उत्तर-दक्षिण की हो और पूर्व-पश्चिम जिसकी लम्बाई हो उसे सूर्य वेध कहते हैं।

१- ग्राम में, क्षेत्र में, गृह में, बावली (वापी) में, तालाब (तड़ाग) और बगीचा (वाटिका) में चन्द्रवेध तथा अग्निकार्य से आजीविका चलाने वालों के लिए उनके कक्ष (कार्य स्थल) में सूर्यवेध अच्छा कहा है।

२- दूसरा मत है, कि गृह में चन्द्रवेध, जलाशय में सूर्यवेध तथा वाटिका में सूर्यवेध और चन्द्रवेध दोनों ही शुभप्रद होते हैं।

।।देवालयारंम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशयारंभ में राहुमुख तथा खाते की दिशा बोधक चक्र।।

आरम्भ में	राहु का मुख-पुष्ठ में	ईशान कोण में	वायव्य में	नैऋत्य में	अग्निकोण में
देवालय के आरम्भ में	राहुमुख राशियाँ	१२।१।२ के सूर्य में	३।४।५ के सूर्य में	६।७।८ के सूर्य में	९।१०।११ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्नि कोण में	ईशान में	वायव्य में	नैऋत्य में
गृहारम्भ में	राशियाँ	५।६।७ के सूर्य में	८।९।१० के सूर्य में	११।१२।१ के सूर्य में	२।३।४ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्निकोण में	ईशान में	वायव्य में	नैऋत्य में
जलाशयारम्भ में	राहुमुख-राशियाँ	१०।११।१२ के सूर्य में	१।२।३ के सूर्य में	४।५।६ के सूर्य में	७।८।९ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्निकोण में	ईशान में	वायव्य में	नैऋत्य में

वास्तुभूमि शुभाशुभ ज्ञान विधि–सायं काल में हाथ भर गहरा गड्ढा खोदकर उसे जल से भर दें। प्रात:काल यदि उसमें जल रहे तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम तथा यदि उसमें दरारें पड़ गई हों तो अशुभ समझना चाहिए।

भूमि की आकृतियाँ (आकार) और उनके फल–समकोण आयताकार भूमि सभी प्रकार सिद्धिप्रद होती है। चतुष्कोण समचतुर्भुज भूमि धनागम की द्योतक होती है। वृत्ताकार भूमि बुद्धिवर्धक होती है। भद्राकार भूमि भद्रदायिनी (मङ्गल करने वाली) होती है। चक्राकार (कुम्हार के चाक के आकार वाली) भूमि दरिद्रता देने वाली होती है। विषम भुजाओं वाली भूमि शोकप्रदा, त्रिकोण भूमि राजभय करने वाली होती है। बैलगाड़ी के आकार की भूमि धननाशक, दण्डाकार पशुनाशक, सूर्पाकार भूमि गोनाशक, कूर्माकार बन्धन (जेल) भय, धनुषाकार बहुत भय उत्पादक, कुम्भाकार कुष्ठरोग करने वाली, पवनाकार (पूर्व-पश्चिम आयत) भूमि नेत्रदोष करने वाली मृदङ्गाकार भूमि बन्धु विनाश करने वाली होती है।

पिण्ड (क्षेत्रफल) के अनुसार आय-वार अंशादि ज्ञान विधि

१-पिण्ड को ९ से गुणाकर उसमें ८ से भाग देने पर शेष तुल्य संख्यक आय होगी। २-पिण्ड को ९ से गुणाकर उसमें ७ से भाग देने पर शेष तुल्य संख्यक वार होगा। ३-पिण्ड को ६ से गुणाकर उसमें ९ से भागदेने पर शेष तुल्य अंश की संख्या होगी। ४-पिण्ड में ८ से गुणाकर गुणनफल में १२ से भागदेने पर शेष तुल्य द्रव्य होगा।
५-पिण्ड को ३ से गुणाकर उसमें ८ से भाग देने पर शेष तुल्य ऋण होगा।
६-पिण्ड को ८ से गुणाकर २७ से भाग देने पर शेष नक्षत्र की संख्या होगी।
७-पिण्ड को ८ से गुणाकर १५ से भाग देने पर शेष तुल्य तिथि होगी।
८-पिण्ड को ४ से गुणाकर उसमें २७ से भाग देने पर शेष संख्या तुल्य योग होगा।
९-पिण्ड में ८ से गुणाकर गुणनफल में १२० का भाग देने पर शेष संख्या तुल्य आयु होगी।
टिप्पणी- आय से तात्पर्य ध्वजादि से है। वारों की गणना रविवारादि से होगी। अंशों के स्वामी क्रमश: सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र एकादि शेष में समझना चाहिए। द्रव्य-संख्या अधिक और ऋण संख्या अल्प होना चाहिए। नक्षत्र संख्या अश्विन्यादि से समझना चाहिए। गृहस्वामी के नामनक्षत्र से गृहपिण्ड की नक्षत्र संख्या (इस गणनानुसार) ३।५।७ नहीं होनी चाहिए क्यों कि तीन (३) निरंतर दु:खसूचक, ५ वीं यशक्षय करने वाली, तथा ७ वी आयु क्षीण करने वाली होती है।

।।गृहारम्भ में वृषवास्तु चक्र ज्ञान।।

गृह आदि के आरम्भ में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से गणना आरम्भ कर अभिजित सहित गृहारम्भ के दिन तक गणना करें। प्रथम ३ नक्षत्र वृष के शिर पर रखे उस में गृहारम्भ करने से अग्निभय, तत्पश्चात् ४ नक्षत्र आगे के पैर पर रखे उसमें गृहारंभ करने से उद्वेग फिर ४ नक्षत्र पिछले पैर पर रखे उसके गृहारंभ करने से स्थिरता, तत्पश्चात ३ नक्षत्र पीठ पर रखे उस में गृहारंभ करने से श्री (लक्ष्मी) प्राप्ति, फिर ४ नक्षत्र दाहिने कोख में रखे, उसमें गृहारंभ करने से लाभ, तत्पश्चात् ३ नक्षत्र पूँछ पर रखे उसमें गृहारंभ करने से जय गृहस्वामी का नाश, तत्पश्चात् ४ नक्षत्र बायी कोख में रखे उसमें गृहारम्भ करने से निर्धनता तथा मुख वाले ३ अंत के नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से गृहस्वामी को सदा पीड़ा होती है। स्पष्टता के लिए वृषवास्तु चक्र देखिए।

।।स्पष्टता के लिए वृषवास्तु चक्र।।

स्थान	नक्षत्र सं०	फल	शुभाशुभ
शिर पर	३ (१ से ३ तक)	अग्निभय	अशुभ
आगे के पैर पर	४ (४ से ७ तक)	उद्वेग	अशुभ
पीछे के पैर	४ (८ से ११ तक)	स्थिरता	शुभ
पीठ पर	३ (१२ से १४ तक)	लक्ष्मी प्राप्ति	शुभ
दाहिनी कोख पर	४ (१५ से १८ तक)	जय, लाभ	शुभ
पूँछ पर	३ (१९ से २१ तक)	गृहस्वामीकानाश	अशुभ
बायीं कोख पर	४ (२२ से २५ तक)	निर्धनता	अशुभ
मुख पर	३ (२६ से २८ तक)	सतत पीड़ा	अशुभ

।।द्वारचक्र।।

सूर्यस्थित नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नक्षत्र संख्यानुसार फल जानना चाहिए। जो निम्न चक्र से स्पष्ट है।

नक्षत्र सं०	फल
४	राज्यलाभ
२	हानि
४	धनप्राप्ति
२	भय
४	मृत्युभय
२	मृत्यु
४	द्रव्यलाभ
२	शोक, भय
३	धनलाभ

।।द्वारशाखा चक्र।।

सूर्य स्थित नक्षत्र से आरम्भकर दिन के नक्षत्र तक गिनकर निम्न लिखित चक्र से फल का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करे।

स्थान	नक्षत्र सं.	फल
शिर पर	४	श्रीप्राप्ति
कोण में	८	उद्वसन
शाखा में	८	सौख्य
देहली में	३	गृहस्वामी का नाश
मध्य में	४	सौख्य

गृहारम्भ मुहूर्त बोधक चक्र ४३

शुभ मास	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुनमास शुभ है।
शुभ सौर मास	मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर और कुम्भस्थ सूर्य के मास।
शुभ तिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ शुभ है।
शुभवार	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनिवार।
शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, मृगशिरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती
शुभलग्न	२।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ है
लग्न-शुद्धि	लग्न से केन्द्र त्रिकोण (१।४।७।१०।५।९) स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह स्थित हों। लग्न से ८।१२ स्थानों में शुभ या पाप कोई भी ग्रह न हों। लग्न अपने स्वामी और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो श्रेष्ठ होता है।
त्याज्य	भद्रा, कुयोग, अष्टमस्थ चन्द्रमा, चक्र-शुद्धि का अभाव, गुरु-शुक्र का बालत्व-वृद्धत्व तथा अस्तादि समय त्याज्य है। प्रात: सायं संध्या मध्याह्न और मध्य रात्रि भी त्याज्य है।

।। गृह-प्रवेशार्थ वामरवि विचार ।।

पूर्व आदि दिशाओं में द्वार (मुख्य द्वार) वाले गृहों में प्रवेश करने के लिए क्रमश: आठवें, पाँचवें, दूसरे और ग्यारहवें स्थानों से ५ स्थानों में सूर्य हो तो वाम रवि होता है। अर्थात् पूर्वद्वार वाले गृह में प्रवेश करने के लिए प्रवेश लग्न से आठवें स्थानों से ५ स्थानों में सूर्य के रहने से वाम रवि होता है। दक्षिण ओर द्वार वाले गृह मे प्रवेश के लिए प्रवेश लग्न से ५वें स्थान से ५ स्थानो में सूर्य रहे तो वाम रवि होता है। पश्चिम द्वार वाले भवन में प्रवेश लग्न से २ (दूसरे) स्थान से ५ स्थान में सूर्य हो तो वाम रवि होता है। उत्तर दिशा मे द्वार वाले गृह में प्रवेश लग्न से ११वें स्थान मे सूर्य के रहने से वाम रवि होता है। वाम रवि मे ही प्रवेश करना उत्तम होता है। वाम रवि के स्पष्ट ज्ञान के लिए आगे दिया चक्र द्रष्टव्य है।

वाम रवि बोधक चक्र

पूर्वद्वार	दक्षिणद्वार	पश्चिमद्वार	उत्तरद्वार	द्वार की दिशा
८।९।१०।११।१२	५।६।७।८।९	२।३।४।५।६	११।१२।१।२।३	प्रवेश लग्न से प्रति दिशा में ५-५ स्थानों में स्थित सूर्य वाम रवि होता है।

कुम्भचक्र शुद्धि विचार

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से १ नक्षत्र कलश के मुख मे स्थापित करें, उसका फल अग्निदाह है। तत्पश्चात् ४ नक्षत्र पूर्व मे उद्वास कारक, ४ नक्षत्र दक्षिण में लाभप्रद, ४ नक्षत्र पश्चिम मे श्रीप्रद, ४ नक्षत्र उत्तर में कलह कारक, ४ नक्षत्र गर्भ मे विनाश कारक, ३ नक्षत्र गुदा में स्थिरता कारक, और ३ नक्षत्र कण्ठ में भी स्थिरता कारक कहा है, यह गणना सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से प्रवेश के दिन तक के नक्षत्र तक गिनकर उपरोक्त क्रम से, स्थापित करने पर जिस स्थान पर प्रवेश नक्षत्र पड़े तदनुरूप फल जानना चाहिए। स्पष्टता के लिए नीचे चक्र देखें।

सूर्य के नक्षत्र से २७ न०	१	४	४	४	४	४	३	३
स्थान	मुख में	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में	गर्भ में	गुदा में	कण्ठ मे
फल	अग्निदाह	उद्वास	लाभ	श्रीप्राप्ति	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता
विशेष फल	अशुभ		शुभ		अशुभ		शुभ	

चुल्ही चक्र

सूर्य स्थित राशि से दिन के नक्षत्र तक गणना करने पर प्रथम ६ नक्षत्र पीठ पर रखे जिस का फल श्रीलाभ, ४ नक्षत्र शिर पर जिसका फल मृत्युभय, ८ नक्षत्र बाहों में सुखद, ५ गर्भ में फल विनाश कारक, २ हाथ में सुभोजनप्रद, २ नक्षत्र पैरों पर, स्त्री नाशक है। स्पष्टता के लिए चक्र द्रष्टव्य है।

स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल
पीठ पर	६	श्री लाभ	गर्भ में	५	विनाश
शिरपर	४	मृत्युभय	हाथों में	२	सुभोजन
बाहुओं पर	८	सुखप्रद	पैरों में	२	स्त्रीमरण

गृह के लिए इष्ट नक्षत्र कल्पना एवं गणना विचार

आर्द्रा से ६ नक्षत्र तथा शतभिषा से तीन नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी और शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा एवं उत्तराभाद्रपदा (उ.भा.) यह ९ नक्षत्र गृह की हो तो श्रेष्ठ है। गृह और गृह स्वामी दोनों का राशि कूट आदि (मेलापक) उसी प्रकार विचार करना चाहिए जिस प्रकार विवाहार्थ वर कन्या का मेलापक देखा जाता है। वर-कन्या के विवाहार्थ मेलापक में एक नाड़ी होना वर्जित है, परन्तु गृह और गृहस्वामी की एक नाड़ी हो तो अति प्रशस्त कहा है और यह भी कहा है, कि गृह और गृहेश की यदि एक नाड़ी हो तो अन्य बातों का विचार गौड़ हो जाता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त

मास	वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन। जीर्णादि, प्राचीन क्रांत गृहों में प्रवेश के लिए श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ है।
तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ उत्तम है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, और शनिवार
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुन०. पुष्य, उ०फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु० मूल, उ० षा०, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ०भा० एवं रेवती प्रशस्त हैं।
लग्न	२।५।८।११ उत्तम तथा ३।६।९।१२ मध्यम कही है।
लग्न-शुद्धि	लग्न से केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानों और २।११ स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह श्रेष्ठ होते हैं। प्रवेश लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध अर्थात् ग्रहरहित होना चाहिए। जन्म लग्न जन्मराशि से उपचय राशि अंश तथा स्थिर राशि की लग्न और वामार्क होना उत्तम कहा है।
त्याज्य	गुरु-शुक्र का बालत्व-वृद्धत्व तथा अस्त का समय, भद्रा, कुयोगादि, चर (१।४।७।१०) लग्न, क्षीण चन्द्रमा का पापयुत-दुष्ट होकर प्रवेश लग्न से ६।८।१२ स्थानों में स्थित होना उक्त सभी त्याज्य है।

भौमस्थ नक्षत्र से कूप चक्र विचार

मङ्गल जिस नक्षत्र पर हो उससे गणना प्रारम्भकर कूपारम्भ के दिन तक चन्द्र नक्षत्र की जो संख्या हो उसका फल नीचे दिये जा रहे चक्र से समझना चाहिए।

१	४	३	३	४	३	३	३	३	नक्षत्र
सजल	निर्जल	स्वादुजल	खण्डजल	अमृतजल	शुद्धजल	शुष्कजल	क्षारजल	सुन्दर पूर्णजल	फल

सूर्यस्थ नक्षत्र से कूपचक्र विचार

सूर्य स्थित नक्षत्र से कूपारम्भ के दिन पर्यन्त नक्षत्रो की गणना कर नीचे दिये चक्र से फल जाने।

रोहिणी नक्षत्र से कूपचक्र विचार

रोहिणी नक्षत्र से गणना प्रारंभ कर कूपारम्भ के दिन तक जो संख्या हो उसका फल निम्न चक्र से जाने।

स्थान	नक्षत्र सं.	फल	स्थान	नक्षत्र सं.	फल
मध्य में	३	स्वादिष्ट जल	मध्य में	३	शीघ्र स्वादिष्टजल
पूर्व में	३	खण्डित जल	पूर्व मे	३	निर्जल
अग्निकोण मे	३	स्वादिष्ट जल	अग्निकोण मे	३	शीघ्रजल
दक्षिण में	३	जलहानि	दक्षिण में	३	निर्जल
नैऋत्य मे	३	स्वादिष्ट जल	नैऋत्य मे	३	अमृतजल
पश्चिम में	३	दुग्धवत् जल	पश्चिम मे	३	निर्मल जल
वायव्य में	३	मिश्रित जल	वायव्य में	३	जलहानि
उत्तर में	३	मीठाजल	उत्तर मे	३	मीठाजल
ईशान मे	३	खारा जल	ईशान मे	३	खारा जल

बृहस्पति स्थित नक्षत्र से कूपचक्र विचार

बृहस्पति स्थित नक्षत्र से कूपारम्भ के दिन तक नक्षत्रो की गणना करने से जो संख्या प्राप्त हो उसके अनुसार निम्नलिखित चक्र-द्वारा फल जानना चाहिए।

५	५	५	७	५	नक्षत्र संख्या
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभाशुभ-फल

राहु स्थित नक्षत्र से कूपचक्र विचार

राहु स्थित नक्षत्र से गणना प्रारंभ कर कूपारम्भ के दिन तक जो नक्षत्र संख्या प्राप्त हो उसका शुभा-शुभ फल नीचे दिये हुए चक्र के अनुसार समझना चाहिए।

५	३	३	३	४	४	२	३	नक्षत्र-संख्या
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

रोहिणी नक्षत्र से वापी (बावली) चक्र विचार

कोष्ठ में	नाभि में	हृदय में	मध्य में	नेत्रों में	पैरों में	स्थान
४	४	४	४	४	८	नक्षत्र २८
शुभ	बुद्धिनाश	स्थिरता	कलह	धनप्राप्ति	अनर्थ	फल

सूर्यस्थित नक्षत्रानुसार तडाग (तालाब) चक्र

सूर्यस्थित नक्षत्र से प्रारम्भ कर दिन (तडागारम्भ के दिन) के नक्षत्र तक गिनकर २-२ नक्षत्र आठों दिशाओं में ५ नक्षत्र मध्य मे तथा ६ नक्षत्र वारिवाह में स्थापन करके फल का विचार करना चाहिए। स्पष्टता एवं फलज्ञान के लिए नीचे दिया हुआ चक्र देखना अपेक्षित है।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	वारिवाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्षत्र २७
शोक	जलाधिक्य	जलक्षय	अमृतजल	स्वादिष्टजल	जलशोष	स्थिरजल	नष्टजल	जलपूर्णता	पूर्णजल	फल

तडागारम्भ हेतु शुभनक्षत्रों के नाम एवं शुभ वारों के नाम– रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, रेवती तथा शतभिषा नक्षत्रों में और सोमवार, शुक्रवारो में अच्छे योग एवं शुभ लग्न मे तडागारम्भ करना चाहिए। वापी के आरम्भ में अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, शततारका और रेवती शुभप्रद हैं।

कूपारम्भ मुहूर्त

मास	वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन) माघ और फाल्गुन मास श्रेष्ठ कहे हैं।
तिथि	३।५।७।८।१०।११।१३ श्रेष्ठ हैं। ४।९।१४।३० तथा शुक्ल १ नेष्ट शेष तिथियाँ मध्यम है।
वार	सोमवार,बुधवार,गुरुवार, श्रेष्ठ है। शुक्रवार क्षार-जलका द्योतक कहा है, शेष वार नेष्ट कहे हैं।
नक्षत्र	हस्त, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, मृगशिरा और रेवती नक्षत्र उत्तम हैं। चित्रा, स्वाती, मूल, पुनर्वसु, अश्विनी और श्रवण मध्यम हैं, आवश्यक होने पर इन्हें ग्रहण किया जा सकता है। ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। शेष त्याज्य है।
लग्न	सिंह, वृश्चिक और धनु लग्नों के अतिरिक्त शेष सभी लग्नों में कूपारम्भ (खनन) शुभ है। सिंह, वृश्चिक और धनु त्याज्य है।
विशेष	(१) केन्द्र १।४।७।१०, त्रिकोण ५।९ और ८ (अष्टम) में शुभग्रह व्यवस्थित हों। पापग्रह केन्द्र और अष्टम के अतिरिक्त स्थानों में स्थित हों तो प्रासाद (राजगृह), कुआँ, तालाब, बावली आदि कार्यों को आरम्भ करना शुभ होता है। (२) चन्द्रमा लग्न में हो, सोमवार हो, बृहस्पति केन्द्र में हो, पापग्रह उपचय (३।६।१०।११) स्थानों में हों, तो उद्यान (बाग), कुआँ, तालाब, बावली आदि जलाशयों का आरम्भ करना शुभप्रद होता है।

नेवार (जमुअट) स्थापन चक्र

नेवार (जमुअट या नीचक) देने के लिए राहु स्थित नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ३-३ नक्षत्र पूर्वादि ८ दिशाओं में तथा ४नक्षत्र मध्य में स्थापित करना चाहिए, इसमें अभिजित सहित २८ नक्षत्र ली गई हैं। दिन नक्षत्र (चन्द्रनक्षत्र) का पूर्व और मध्य में पड़ना शुभप्रद, उत्तर में पड़ना धनवर्धक होता है, इन तीन के अतिरिक्त अन्य किसी दिशा में पड़ना शुभद नहीं है। स्पष्टता के लिए निम्न चक्र देखें।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	२८ नक्षत्र
शुभद	महद्भय	महादुःख	महादुःख	महद्भय	महद्भय	धनवर्धक	महद्भय	सुखद	फल

कूपादि के जीर्णोद्धार करने का मुहूर्त

तीनों उत्तरा, रोहिणी, मघा, धनिष्ठा, रेवती, पूर्वाषाढ़, पुष्य, अनुराधा और, मृगशिरा नक्षत्रों में जलचर राशिस्थ चन्द्रमा में या जलचर राशि के नवांश में चन्द्रमा के रहने पर शुभवारों में तथा शुभ तिथियों में कूप-बावली-तालाबादि जलाशयों का जीर्णोद्धार किया जाना चाहिए।

।।दीर्घविस्तारादि शुद्धि सहित सिद्ध पिण्ड सारिणी।।

दीर्घ	विस्तार	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु	दीर्घ	विस्तार	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु
१७	१५	७	६	१	१२	५	१५	१५	२१	१२०	४९	४५	५	७	१	१२	७	१	१५	१८	१२
१९	१५	५	३	१	१२	७	१२	१५	६	१२०	५१	३५	१	७	१	१२	३	२४	१५	१२	१२
२१	१५	३	७	१	१२	१	१	१५	१८	१२०	५१	३७	७	१	१	१२	५	३	६	१५	१६
२१	१७	५	७	१	१२	७	२१	६	२४	९६	५१	४५	७	५	१	१२	५	२७	१५	२७	१२
२१	१९	७	७	१	१२	५	६	१२	३	७२	५१	४७	५	६	१	१२	७	६	६	३	१६
२५	१५	७	२	१	१२	५	३	१५	१५	१२०	५१	४९	३	७	१	१२	१	१२	१२	६	७२
२५	१९	३	५	६	८	१	२०	५	१०	८०	५३	४५	१	३	१	१२	३	१८	१५	१	१२
२५	२१	५	७	१	१२	७	१५	१५	२१	१२०	५५	४५	३	१	१	१२	१	१	१५	१८	१२
२७	१५	५	५	१	१२	७	२७	१५	२७	१२०	५५	५१	५	३	१	१२	७	३	१५	१५	१२
२७	२१	७	७	१	१२	५	२७	६	२७	९६	५७	५१	३	४	१	१२	१	१	६	१८	९६
२७	२५	३	६	१	१२	१	२७	१५	२७	१२०	५७	५५	७	५	१	१२	५	२४	१५	१२	१२
२९	२१	१	७	१	१२	३	१२	१२	६	७२	५९	४९	३	७	३	४	१	११	१३	८	८८
३१	२७	५	१	१	१२	७	२७	६	२७	९६	५९	५२	१	५	१	१२	३	१५	१२	२१	७२
३१	२९	३	६	३	४	१	१०	७	५	११२	६१	५५	३	४	६	८	१	२	५	१	८०
३३	२५	१	५	१	१२	३	१२	१५	६	१२०	६१	४७	५	३	१	१२	७	६	६	३	१६
३३	२९	५	३	१	१२	७	१५	६	३१	९६	६३	५५	१	७	१	१२	३	१८	१५	१	१२
३५	२७	१	७	१	१२	३	२७	१५	२७	१२०	६३	५१	५	७	१	१२	७	१	६	१८	१६
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	६५	५१	३	१	१	१२	१	६	१५	३	१२
३५	३३	३	७	१	१२	१	६	१५	३	१२०	६५	५३	५	२	६	८	७	२०	५	१०	८०
३७	२९	१	४	३	४	३	२५	४	२६	६४	६५	५७	१	४	१	१२	३	२१	१५	२४	१२
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	११	२५	५६	६५	५९	३	५	६	८	१	८	५	४	८०
३७	३३	५	६	१	१२	७	२१	३	२४	४८	६५	६३	७	७	१	१२	५	१	१५	१८	१२
३९	३१	१	३	१	१२	३	६	१२	३	७२	६७	५५	५	६	६	८	७	२३	५	२५	८०
३९	३३	७	५	१	१२	५	१	६	१८	९६	६७	५७	३	२	१	१२	१	१५	१२	२१	७२
३९	३५	५	७	१	१२	७	१२	१५	६	१२०	६९	६१	१	४	१	१२	३	३	१२	१५	७२
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१६	८०	६९	६३	३	७	१	१२	१	२७	६	२७	१६
४१	३९	७	६	१	१२	५	२१	१२	२४	७२	६९	६५	५	३	१	१२	७	२४	१५	१२	१२
४३	३३	३	३	१	१२	१	१२	१२	६	७२	७१	५७	७	३	१	१२	५	३	६	१५	१६
४३	३९	५	१	१	१२	७	२४	६	१२	९६	७१	६५	७	४	६	८	५	११	५	१९	८०
४३	४१	३	५	३	४	१	१०	४	५	६४	७१	६९	३	५	१	१२	१	१५	१२	२१	७२
४५	३५	७	७	१	१२	५	१८	१५	९	१२०	७३	६१	५	२	६	८	७	११	१४	१९	१०
४५	३७	१	५	१	१२	३	१	१५	१८	१२०	७३	६३	७	७	१	१२	५	१८	१२	१	७२
४५	३९	३	३	१	१२	१	२७	१५	२७	१२०	७३	६९	५	१	१	१२	७	८	६	६	१६
४५	४१	५	१	१	१२	७	१८	१५	९	१२०	७५	६३	५	७	१	१२	७	२७	१५	२७	१२
४५	४३	७	६	१	१२	५	१	१५	१८	१२०	७५	६५	३	७	१	१२	१	१२	१५	६	१२
४७	३५	५	७	६	८	७	११	५	११	८०	७५	६७	१	५	१	१२	३	२४	१५	१२	१२
४७	३७	३	६	३	४	१	७	७	१०	११२	७५	६९	७	४	१	१२	५	१	१५	१८	१२
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७५	७३	३	२	१	१२	१	६	१५	३	१२
४७	४५	३	२	१	१२	१	१८	१५	९	१२०	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	५	१३	८०
४९	३७	५	७	६	८	३	५	१४	१६	१०४	७७	७१	३	७	६	८	१	२३	११	२५	५६
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१०	११२	७७	७५	७	७	१	१२	५	३	१५	१५	१२

।।यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्रों की तालिका।।

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती	यह ९ नक्षत्र यात्रा में शुभ होती है।
रोहिणी, पू.फा., उ.फा., मूल, पू.षा., उ.षा. शतभिषा, पू.भा. उ.भा. और ज्येष्ठा	यह १०नक्षत्र यात्रा मे मध्यम होती है।
भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाती एवं विशाखा	यह ८ नक्षत्रयात्रा में अशुभ (निन्दित) हैं।
अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा और श्रवण	इन ७ नक्षत्रों में रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ और दिशामूल से रहित होनेपर सभी दिशाओं में सर्वदा यात्रा शुभ होती है।

नोट- अति आवश्यक होने पर तीनों पूर्वा की आरम्भ से १६ घटियाँ, कृत्तिका की आदि की २१ घटियाँ मघा की आदि की ११ घटियाँ, भरणी की पूर्व की, ७ घटियाँ तथा स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन ४ नक्षत्रों की १४-१४ घटियाँ तथा चित्रा की आदिकी ३० घटियाँ यात्रा में निषिद्ध हैं। इनके पश्चात् की घटियों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में तिथि-नक्ष की शुद्धि- दोनों पक्षों की ४,६, ८, ९ १२, १४ तिथियाँ तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (१) पूर्णिमा और अमावस्या इन तिथियों में यात्रा शुभ नहीं कही गई है। अश्विनी पुनर्वसु पुष्य मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती इन ९ नक्षत्रों में यात्रा अत्युत्तम (प्रशस्त) होती है।

दिशाओं में तिथि-वार-नत्रक्षशूलबोधक चक्र

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
तिथि	१/९	५/१३	६/१४	२/१०
वार	सोम शनि	गुरु	रवि शुक्र	मंङ्गल बुध
नक्षत्र	ज्येष्ठा	पूर्वाभाद्र०	रोहिणी	उ० फालु०

दिशाशूल निवारण हेतु वारक्रम से धारण-भक्षण अथवा दानार्थ वस्तुओं और वारदोहद के ज्ञानार्थ चक्र

वार	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
भक्षण, प्राशन, धारण एवं दान की वस्तुयें	घी	दूध	गुड़	तिल	दही	जव	उड़द
	ताम्बुल	चन्दन	मिट्टी	पुष्प	दही	घी	तिल
वार-दोहद	रसाला (श्रीखण्ड)	पायस (खीर)	कांजी (लपसी)	पकाया हुआ दूध (रबड़ी)	दही	कच्चा दूध	तिल युक्त भात

टिप्पणी- रसाला, (जिसे श्रीखण्ड भी कहते है) दही, शक्कर, मिर्च, इलायची मिलाकर बनती है।

दोहद में भक्ष्याभक्ष्य का विचार- ऊपर चक्र में उल्लिखित दोहद-वस्तुओं का शास्त्र की दृष्टि एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से, भक्ष्याभक्ष्य को विचार कर भक्षण करना चाहिए। अभक्ष्य होने पर दोहद-वस्तु को देखकर और यदि वह अप्राप्य हो तो मात्र उस वस्तु का ध्यान (स्मरण) कर यात्रा आरम्भ करनी चाहिए।

।।दिग्लग्न चक्र।।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा/फल
१।५।९	२।६।१०	२।७।११	४।८।१२	श्रेष्ठ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
३।७।११ ४।८।१२	४।८।१२ १।५।९	१।५।९ २।६।६०	२।६।१० ३।७।११	नेष्ट

।।समयशूल चक्र।।

दिशा में	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में
समय	प्रात:	मध्याध्न	सन्ध्या	अर्धरात्रि

दिगीश-पूर्व के सूर्य,अग्निकोण के शुक्र,दक्षिण के मङ्गल,नैर्ऋत्य के राहु,पश्चिम के शनि, वायव्य के चन्द्रमा, उत्तर के बुध, और ईशान के बृहस्पति दिक्पति हैं।

॥ ललाटिक योग ॥



लालाटिक योग विचार लग्न में सूर्य हो तो पूर्व में ११।१२ भागों में शुक्र हो तो अग्नि कोण में १० वें मङ्गल हो तो दक्षिण में, ८।९ में राहु हो तो नैर्ऋत्य कोण में ७ वें मं. शनि हो तो पश्चिम में, ५।६ वें में चन्द्रमा हो तो वायव्य में, ४वें में बुध हो तो उत्तर में, २।३ में गुरु हो तो ईशान कोण में लालारिक योग होता है। दिकपति से ही लालाटिक योग बनता है। जो ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, वह यदि तात्कालिक लग्न से भी उसी दिशा में पड़ जाय तो सम्मुख ललाट के सामने होने के कारण लालाटिक कहलाता है, अत: उस दिशा मे यात्रा नही होनी चाहिए। दिगीश के केन्द्र में होने पर यात्रा कही गई है। इससे यह सिद्ध हुआ कि कोई भी दिगीश अपनी दिशा वाले केन्द्र के अतिरिक्त ३ केन्द्रो में किसी में हो तो यात्रा करें।

।।वारोमेदिग्विदिक्शूल अवबोधक सारिणी।।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
चं०श०	चं०बृ०	बृ०	सू०शु०	सू०शु०	मं०	मं०बु०	बु०श०	वार

।।यात्रा मे दिशा दोष परिहारक वस्तुज्ञापक चक्र।।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	चावल	तिल	सत्तू	मछली	गेहूँ	दूध	खीर	वस्तु

।।वार के क्रम से कालचक्र।।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मङ्गक	चन्द्र	सूर्य	०	वार

।।वार के क्रम से पाशचक्र।।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
मंगल	चन्द्रमा	सूर्य	०	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	वार

काल और पाशकी स्थिति एवं उनके फल-काल और पाश सदा एक दूसरेके सम्मुख रहते हैं। दिन में जहाँ काल होता है, रात में वही पाश होता है,और दिन में जहाँ पाश होता है रात में वही काल रहता है। यात्रा और युद्ध में दाँयी ओर काल तथा बाँयीं ओर पाश रहे तो शुभद अन्यथा अशुभ होता है। काल और पाश दोनों का यात्रा में सम्मुख रहना वर्जित है।

फल सहित अकुल, कुल और कुलाकुल बोधक चक्र

संज्ञायें	नक्षत्र	तिथियाँ	वार	यात्राफल
अकुल	भरणी, रोहिणी श्लेषा, उ० ३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, पुनर्वसु और रेवती	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	रवि, चन्द्र, गुरु, शनि	यायी की विजय
कुल	अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वा३, चित्रा, विशाखा ज्येष्ठा एवं श्रवण	४।८।१२।१४	मङ्गल, शुक्र	स्थायी की विजय
कुलाकुल	आर्द्रा, अभिजित् मूल तथा शततारको	२।६।१०	बुध	यायी-स्थायी दोनो मे सन्धि

।।पथिराहु चक्र।।

धर्ममार्गर्क्ष	अश्विनी पुष्य, श्लेषा, विशाखा अनुराधा, धनिष्ठा और शततारका।
अर्थमार्गर्क्ष	भरणी, पुनर्वसु, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा।
काममार्गर्क्ष	कृत्तिका, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी चित्रा मूल अभिजित्, उत्तराभाद्रपदा।
मोक्षमार्गर्क्ष	रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी,हस्त, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, रेवती।

यात्रा में समय बल- १- ऊषाकाल मे पूर्व छोड़ कर अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। २- गोधूली मे पश्चिम के अतिरिक्त अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। ३- निशीथ (अर्धरात्रि) मे उत्तर छोड़ कर अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। ४- अभिजित् मुहूर्त (मध्याह्न) में दक्षिण दिशा को छोड़ कर अन्य दिशाओंकी यात्रा शुभ होती है। तात्पर्य यह है कि उषाकाल (सूर्योदय से पूर्व के समय) में पूर्व की गोधूली मे पश्चिम की, आर्धरात्र मे उत्तर की और मध्याह्न में दक्षिण की यात्रा नही करनी चाहिए।

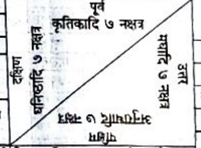
।।पथिराहुचक्र का फल।।

१- यदि सूर्य धर्मनक्षत्र मे और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष नक्षत्र मे हो, अथवा २- सूर्य अर्थनक्षत्र मे और चन्द्रमा धर्म या मोक्ष नक्षत्र मे हो, अथवा ३- सूर्य कामनक्षत्र मे हो और चन्द्रमा धर्मार्क्ष या मोक्षर्क्ष या अर्थर्क्ष मे हो, अथवा ४- सूर्य मोक्षर्क्ष मे और चन्द्रमा केवल धर्मार्क्ष मे हो तो शुभ होता है। इनसे विपरीत स्थिति रहने पर अशुभ होता है।

द्वादशस्थ चन्द्रमाका शुभत्व- आधान, सम्प्रदान, विवाद राज-विग्रह, पणिग्रहण, यात्रा, अभिषेक निषेक, गृह, पुंसवनादि संस्कार, युद्ध-यात्रा मे द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। चन्द्रमा और योगिनी के वास और फल पृष्ठ संख्या १० पर दिया गया है, आवश्यकतानुसार वहाँ पर देखें।

यात्रा में विलम्ब के कारण प्रस्थान स्थापन काल एवं वस्तुयें- राजाको दश, सामन्तोको सात, तथा सामान्य लोगो को पाँच दिन पूर्व प्रस्थान स्थापित करना चाहिए। ब्राह्मण को यज्ञोपवीत, क्षत्रीय को शस्त्र, वैश्य को शहद एवं शूद्र को औंवला-फल प्रस्थान में चला देना चाहिए अथवा जिसे जो वस्तु अत्यन्त प्रिय हो वही प्रस्थानमें रखें किसी के मत से पूर्व दिशा की यात्रा मे सात, दक्षिण की यात्रा में पाँच, पश्चिम की यात्रा मे तीन और उत्तरकी यात्रामें दो दिन पूर्व प्रस्थान रखना चाहिए।

परिघदण्ड चक्र



नियम-परिघ दण्ड का उल्लंघन नही करना चाहिए,तथा दिग्द्वार नक्षत्रो को सम्मुख या दाहिने रखकर यात्रा, करना शुभ होता है। पू०-आ०। द०-नै०। प०-वा०। उ०-ई० दिशा द्वार के नक्षत्र एक समान समझना चाहिए। वही विदिशा की यात्रा के लिए भी शुभ है। अर्थात् पूर्व दिशा के कृ० से श्ले० तक नक्षत्रों मे पूर्व दिशा की भाँति आग्नेय दिशा की भी यात्रा की जा सकती है। **परिघ-दण्ड का परिहार-** आवश्यक में वारशूल नक्षत्रशूल तथा वारादि का दोषा न हो और दिग्लग्न शुद्धि हो तो परिघदण्ड का उल्लंघन करके भी यात्रा की जा सकती है।

।।यात्रा में तिथि जनित दोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र।।

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	
वस्तु	अर्कपत्र	तंडुलोदक	घी	हल्वा	हविष्य	स्वर्णजल	पूआ	
तिथि	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वस्तु	बीजपूरक का फल	जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	रक्त	मुंग

।।एक दिन में भी आवश्यकतावश योगिनी भोग बोधक चक्र।।

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४२	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४५	५२	५६	६०	घटी
५५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

योगिनी फल

द्युतक्रिया, गमन एवं युद्ध में सम्मुख योगिनी मृत्यु-कारक तथा वाम भागोंमें अशुभ तथा पृष्ठ एवं दक्षिण में जय प्रदान करने वाली होती है।

।।यात्रा में छिक्काफल चक्र।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
अशुभ	दुखी	अनिष्ट	शुभ	शुभोज्य	धनाप्ति	कलह	शुभ	भय

पथिक राहु के शुभ-अशुभ फलज्ञान के लिए धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष नक्षत्रों की सूची

अश्विन	पुष्य	श्लेषा	विशाखा	अनुराग	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मनक्षत्र
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थनक्षत्र
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	ऽभि	उ.भा.	कामनक्षत्र
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षनक्षत्र

।। यात्रा में दिन-रात मान के अष्टमांश से वेला का फल ।।

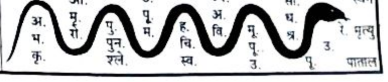
घं.	सु.दि.	सु.रा.	चं.दि.	चं.रा.	भौ.दि.	भौ.रा.	बु.दि.	बु.रा.	बु.दि.	बृ.रा.	शु.दि.	शु.रा.	श.दि.	सू.दि.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	राग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	रोग
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	राग
४	लाभ	अमृत	शुभ	राग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	राग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	राग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

यात्रा में विशेष विचार। यात्रा मे दक्षिण राहु, बायें योगिनी, पीछे ये दोनों तथा सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है। **उत्सवादि में गमनागमन विचार।** आरम्भ होने के बाद विवाह, यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा ताथ मरणाशौच की समाप्ति के बिना यात्रा नही करनी चाहिए। **गर्गादि ऋषियों के मत से प्रयाण मुहूर्त विचार।** यात्रा मे ऊषाकाल को गर्ग, शकुन को बृहस्पति,मन के उत्साह को अंगिरा तथा ब्राह्मण की आज्ञा को जनार्दन प्रशस्त मानते हैं। घात चन्द्र दोष। यात्रा,कृषिकार्य,व्यापार,संग्रह,वाद-विवाद,तथा गृहारम्भमे घात चन्द्रमाका त्याग कर देना चाहिए। **विजय योग।** युद्ध सम्बन्धी यात्राकाल में गुरु एवं चन्द्रमा लग्न मे तथा मंगल एवं शनि षष्ठ स्थान मे गये हो तो जय प्राप्त होता है। उसी प्रकार लाभ स्थान मे बुध, शुक्र एवं बृहस्पति तथा दशम स्थान मे सूर्य स्थित हो तो अभीष्ट सिद्धि होती है।

सर्वघात चक्र- केवल यात्रा-युद्ध-रोगर्तता मे ही विचारणी है

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सू०घा०	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
च०घा०	९	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ०घा०	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु०घा०	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
बृ०घा०	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु०घा०	७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श०घा०	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा०घा०	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के०घा०	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा०घा०	का०	मार्ग०	पौष	माघ	फा०	चैत्र	वै०	ज्ये०	आ०	श्रा०	भाद्र०	आश्वि०
तिथि घात	९	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा०घा०	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	बृ०	शु०	शु०	मं०	बृ०	शु०
न०घा०	मघा	हस्त	स्वाती	अनु०	मूल	श्रवण	शत०	रेवती	भरणी	रोहि०	आर्द्रा	श्लेषा
यो०घा०	विष्कु०	शूल	परिघ	धृति	प्रीति	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	वैधृति	गण्ड	व्याघा०	वज्र
क०घा०	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	वणिज	विष्टि
प्र०घा०	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
ल०घा०	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र०घा०	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०
धा०घा०	पि०	वा०	स०	क०	पि०	वा०	स०	क०	पि०	वा०	स०	क०
व०घा०	क्ष०	वै०	शू०	वि०	क्ष०	वै०	शू०	वि०	क्ष०	वै०	शू०	वि०
संज्ञा	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री
संज्ञा	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
संज्ञा	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०
व०घा०	रक्त	श्वेत	हरित	पीत	धूम्र	चित्र	श्याम	शुभ्र	पीत	कृष्ण	धूम्र	[illegible]
स्वी चं०	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धनु	मकर	कुंभ	मीन
घा०	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

वर्षा ज्ञानार्थ सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र- अश्विनी आदि नक्षत्रों के द्वारा सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र लिखना चाहिए। इस चक्र में स्वर्ग, पाताल एवं भूमि के नवी-नवी नक्षत्र होते हैं। **फल-**समस्त शुभ एवं क्रूर ग्रह यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो शीघ्र ही अधिक जल देने वाली वृष्टि होती है। यदि क्रूर ग्रह स्वर्ग तथा शुभ ग्रह पाताल नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित हों तो वृष्टिजल समुद्र में चला जाता है। नपुंसक एवं स्त्रीग्रहों के योग से वायु तथा पुरुष एवं स्त्री संयोग हो और ग्रह निर्बल हों तो वृष्टि होती है, नपुंसक एवं स्त्री योग से जल तथा क्लीब एवं पुरुष योग से वायु से भय होता है। वातनाड़ी के अन्तर्गत ग्रह नाड़ी से उत्पन्न फल देते हैं। एक भी ग्रह शुभ नाड़ी में स्थित हो तो वह उस नाड़ीजन्य शुभ फल को देता है। मंगल सभी नाड़ियों में उनके फलों को देता है। बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो निश्चित ही उस समय मे वृष्टि होती है। लग्नस्थ मंगल एवं गुरु से चल वृष्टि, शुक्र से सामान्य वृष्टि तथा शनि से तीनों प्रकार की वृष्टि होती है।



सम्मुख-दक्षिण शुक्र का अपवाद

(१) यदि स्त्री को पिता के घर में रहते ही स्तन चिन्ह उत्पन्न हो और रजोदर्शन हो जाय तो पति के घर जाने के लिए सम्मुख-दाहिने शुक्र का दोष नही होता। (२) अपने नगर या ग्राम और स्वगृह के प्रवेश मे, किसी विषय (बीमारी या उत्पात आदि) के उपद्रव मे, विवाह में, देवतीर्थ की यात्रा में, राजपीड़ित होकर स्थान परिवर्तन की स्थिति मे तथा नववधू के प्रथम पतिगृह प्रवेश में सम्मुख-दक्षिण शुक्र दोष-कारक नही होता। (३) कश्यप, वशिष्ठ, भृगु, अत्रि, अङ्गिरा, वत्स और भरद्वाज गोत्र वालों को सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नही होता। (४) गोचर-भ्रमणवश चन्द्रमा जब तक रेवती नक्षत्र से मृगशिरा नक्षत्र तक रहता है तबतक शुक्र अन्धा रहता है। इस अवधि मे शुक्र के सामने-दाहिने रहने का दोष नहीं होता। (५) गुरु-शुक्र अस्त हो या सिंह राशिस्थ बृहस्पति हो या अधिमास हो, चन्द्र-तारा की शुद्धि भी नही हो तो भी किसी प्रकार का कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता यदि स्त्री दीपावली के दिन अपने पति के गृह मे जाय। दीपावली अति प्रशस्त कहा है।

त्रिरागमन (द्वयंग) मुहूर्त

विवाह के पश्चात् पिता के घर से पतिगृह के लिए की जाने वाली तीसरी यात्रा को द्वयंग यात्रा या त्रिरागमन कहते है। इसमें मुख्य रूप से राहु का विचार किया जाता है, साथ ही योगिनी और दिशाशूल भी विचारणीय होता है। त्रिरागमन में मासिक राहु ग्रहण करना चाहिए। त्रैमासिक राहु देवालय-गृह आदि मे तथा यामार्द्ध राहु युद्ध-यात्रा में विचारणीय होता है। सम्मुख और दाहिने का राहु, क्रमश: वैधव्य और संतान हानि का द्योतक कहा है। पीछे और बायें का राहु शुभप्रद होता है। योगिनी भी पीछे और बायें होने पर शुभ फल देती है। राहु-वास तथा योगिनीवास का चक्र आगे दिया जा रहा है। चन्द्रवास देखकर, सम्मुख और दाहिने का चन्द्रमा लेना चाहिए।

तिथि	दोनों पक्षो की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की १ (प्रतिपदा) प्रशस्त है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती शुभद है।
त्याज्य	४।६।८।९।१२।१४ (दोनों पक्षो की) तथा ३० (अमावस्या) और शुक्ल १ (प्रतिपदा) तिथियाँ, रविवार एवं मङ्गलवार, भद्रा, दिशाशूल, सामने-दाहिने का राहु, सामने-दाहिने की योगिनी, पीछे और बायें का चन्द्रमा, कर्क-सिंह-कन्या-धनु और मीन राशिस्थ सूर्य तथा उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त शेष नक्षत्र त्रिरागमन (द्वयंग) में त्याज्य है।

मासिक राहुबोधक चक्र

राहु के निवास की दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
गोचर-भ्रमण वश सूर्य-स्थित राशियाँ	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन

योगिनीवास चक्र

तिथियाँ	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
योगिनीवास की दिशा	पूर्व	अग्नि कोण	दक्षिण	नैर्ऋत्य-कोण	पश्चिम	वायव्य कोण	उत्तर	ईशान कोण

चन्द्रवास चक्र

गोचर भ्रमणवश राशियों में चन्द्रमा की स्थिति	मेष, सिंह, धनु	वृषभ, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन
	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर

चन्द्रमा सम्मुख होने पर आर्थिक लाभ कराता है। दाहिने रहने पर सुख और सम्पत्ति देता है। पीछे रहने से मृत्युतुल्य कष्ट देता है तथा बायें होने पर धनहानि कराता है। योगिनी का फल इसके विपरीत होता है।

शिववास-विचार–वर्तमान तिथि संख्या को दो से गुणा करके उसमें पाँच जोड़ देने से जो संख्या प्राप्त हो उसमें ७ से भाग देने पर १ शेष रहने पर कैलाश, पर २ शेष में गौरी के समीप, ३ शेष में बैल (नन्दी) पर, ४ शेष में सभा में, ५ शेष में भोजन में, ६ शेष में क्रीडा में, ७ शेष अर्थात् ० शेष में श्मशान में शिववास होता है। तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा (१) से करनी चाहिए। शिववास का फल नीचे चक्र में देखिए।

शिववास बोधक-चक्र

शुक्लपक्ष की तिथियाँ	कृष्णपक्ष की तिथियाँ	शिववास	फल
१।८।१५	७।१४	श्मशान में	मृत्युप्रद
२।९	१।८।३०	गौरी के पास	सुख-समृद्धिप्रद
३।१०	२।९	सभा में	तापकारक
४।११	३।१०	क्रीड़ा मे	कष्टप्रद
५।१२	४।११	कैलाश पर	सुखद
६।१३	५।१२	बैल (नन्दी) पर	अभीष्टसिद्धिदायक
७।१४	६।१३	भोजन में	कष्टप्रद

ग्रहों का स्वगृह-उच्च-नीच-मूलत्रिकोण, जाति, रंग अवस्था, भाग्योदय वर्ष आदि बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह-विवरण
सिंह	कर्क	मेष, वृश्चिक	मिथुन, कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	मकर, कुम्भ	कन्या	मीन	गृहराशियाँ
मेष, १० अंश	वृष ३ अंश	मकर २८ अंश	कन्या १५ अंश	कर्क ५ अंश	मीन २७ अंश	तुला २० अंश	वृष	वृश्चिक	उच्च राशियाँ
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	मिथुन	धनु	मूलत्रिकोण राशियाँ
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रात:	प्रात:	अपराह्न	सन्ध्या	सन्ध्या	सन्ध्या	कालबल
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्व/दीर्घ
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातियाँ
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	वश्यादि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुन्सक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुषादि सं०
क्रूर	सौम्य	पाप	सौम्य/पाप	सौम्य	सौम्य	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि सं०
रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	रंगबिरंगा	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	रक्तादि रंग
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	वनचारादि सं०
नृलोक	नृलोक	नागलोक	स्वर्गलोक	स्वर्गलोक	नागलोक	नागलोक	नागलोक	नागलोक	नृलोकादि
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि
पित्तप्रकृति	कफप्रकृति	पित्तप्रकृति	सम	सम	कफप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	पित्तादिप्रकृति
कटु	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	खारा-खट्टा	तिक्त	तिक्त	तिक्त	कट्वादिरस
व्योमदृष्टि	समदृष्टि	व्योमदृष्टि	तिर्यक दृष्टि (तिरछी दृष्टि)	समदृष्टि	तीक्ष्णदृष्टि	नीचीदृष्टि	नीचीदृष्टि	नीचीदृष्टि	दृष्टियाँ
पूर्वमुख	पश्चिममुख	दक्षिणमुख	उत्तरमुख	उत्तरमुख	पूर्वमुख	पश्चिममुख	दक्षिणमुख	दक्षिणमुख	गृहके द्वारोंकी दिशायें
मोती	चाँदी	राँगा	स्वर्ण	रत्न	चाँदी	लोहा	अस्थि	अस्थि	पदार्थ
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पशुस्थान	जलगृह	दग्धभूमि	गोशाला	देवस्थान	जलस्थान	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	निवास स्थान
हरिवंश-श्रवण	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	आमात्रदान	गो-प्रतिमादान	मृत्युञ्जय-जप	सोने के सर्प का दान	ध्वजादान	क्षेमार्थ दानपदार्थ
२२ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष	भाग्योदय वर्ष
अग्नि	जल	पृथ्वी	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा	प्रत्यधि दे०
शुष्क	सजल	शुष्क	सजल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि सं०	सभी ग्रह अपनी उच्च राशियों से सप्तम राशि में नीचस्थ होते हैं।	
अयन	मुहूर्त	दिवस	ऋतु १	मास	पक्ष १	वर्ष	समय प०		
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण		

ग्रहों के भाग्योदय वर्षों का प्रयोजन-- जो ग्रह स्वगृह मे हो, उच्च में हो, षड्वर्ग शुद्ध हो तो उक्त वर्ष में सुख तथा भाग्योन्नति होती है।

तिथिवारों के संयोग से मृत्युयोग सूचकतालिका

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	वार
१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५	तिथियाँ

अन्तरिक्ष जन्मज्ञान-मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्नों मे जन्म लेने वालों का अन्तरिक्ष में जन्म होना तथा अन्य लग्नों में उत्पन्नों का भूमि में जन्म होना कहा गया है। अन्तरिक्ष का तात्पर्य भूमि से ऊपर समझना चाहिए।

जन्मलग्न द्वारा बालक का मस्तक ज्ञान- यदि जन्म लग्न मेष, सिंह और धनु में से कोई हो तो जातक का जन्म के समय पूर्व में शिर जाने। यदि जन्म लग्न वृषभ, कन्या और मकर में से कोई हो तो दक्षिण में शिर होता है। यदि मिथुन, तुला और कुम्भ में से कोई जन्मलग्न हो बालक पश्चिम शिर उत्पन्न होता है। यदि कर्क, वृश्चिक और मीन में से किसी लग्न में जन्म हो तो बालक के जन्म के समय उत्तर में शिर होता है।

दिनमान के १६ कालांशों के अनुसार दुर्मुहूर्तादि ज्ञान

रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वासर	दोष-ज्ञान
१४	९।१२	२।४	८	६।१२	४।६	१।२	दुष्टक्षण	प्रहरार्ध मृत्युकारक यमघण्ट निर्धनता-कारक तथा कुलिक सर्वनाश कारक होता है। रात्रि में इनका दोष नही होता ऐसा वशिष्ठ का मत है।
१४	१२	१०	८	६	४	२	दिन मे कुलिक	
१३	११	९	७	५	३	१	रात्रि में कुलिक	
६	४	२	१४	१२	१०	८	कण्टक क्षण	
८	६	४	२	१४	१२	११	काल वेला	
७।८	१०।१४	२।४	९।१०	१५।१६	५।६	११।१२	अर्धयाम	
१०	८	६	४	२	१४	१०	यमघण्ट	

।। मेषादि राशियों के स्वामी, वर्ण, धातु संज्ञा आदि का बोधक चक्र।।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशियाँ
मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्रमा	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	राशिस्वामी
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेतारुण	पाण्डुर	विचित्र	कृष्ण	स्वर्णिम	पिंगल	कर्बुर	बभ्रुव:	स्वच्छ	राशियों के रङ्ग
क्षत्री	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	राशियों की जाति
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	समान	कफ	पित्तादि धातु
चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चरादि संज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री पुरुषादि संज्ञा
पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	पृष्ठोदयादि संज्ञा
रात्रिबली	रात्रिबली	रात्रिबली	रात्रिबली	दिवसबली	दिवसबली	दिवसबली	दिवसबली	रात्रिबली	रात्रिबली	दिवसबली	समान	दिन/रात्रि बली
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अर्ध द्विपद अर्ध चतुष्पद	अर्ध चतुष्पद अर्ध द्विपद	जलचर	जलचर	चतुष्पदादि संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानुद्वय	जंघाद्वय	पादद्वय	कालपुरुष के अंग में नि०
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लव दिशा
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	ह्रस्वादि
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर/सौ० संज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशियों की दिशा
धातु युक्त तथा रत्न युक्त भूमि	वन पर्वत की चोटी, कृषि भूमि तथा गौशाला	जुआ, रति और बिहार भूमि	बावली तालाब आदि का तट	सघन पर्वत, गुफा तथा बन	हरित भूमि शिल्पभूमि तथा स्त्री पुरुषों की क्रीड़ा भूमि	नगरीय व्यवसायिक, भूमि	पत्थर, विष तथा कृमियों का वि०	रथ, हाथी, घोड़ा की निवासभूमि	पूर्वार्ध बन में परार्ध नदी के जल में	घड़ा और जलपात्र रखने की भूमि	जलाशय, नदी तथा समुद्र	राशियों के निवास स्थान

।। चैत्रादि मासों में शून्य तिथि नक्षत्र राशि बोधक चक्र।।

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	मास
८/९	१२	१३	७	२/३	१/२	१०/११	१४	७/८	४/५	६	३	शून्यतिथि शु०प०
८/९	१२	१४	६	२/३	१/२	१०/११	५	७/८	४/५	५	४	शून्यतिथि कृ०प०
अश्विनी रोहिणी	चित्रा स्वाती	उत्तरा षा० पुष्य	पू० फा० धनिष्ठा	श्रवण उ० षा०	शतभि० रेवती	पूर्वा भाद्रपदा	मघा कृत्तिका	चित्रा विशाखा	आर्द्रा, हस्त अश्विनी	मूल श्रवण	भरणी ज्येष्ठा	शून्य नक्षत्र
कुम्भ	मीन	वृष	मिथुन	मेष	कन्या	वृश्चिक	तुला	धनु	कर्क	मकर	सिंह	शून्य राशि

।।जन्मराशि और नामराशि की प्रधानता।।

नामराशि की प्रधानता–किसी देश, ग्राम, नगर, (अर्थात नये स्थान) में वास करने, गृह बनाने, युद्ध में, नौकरी करने में, व्यवहार में, व्यापार में, राजसेवा में, पुकारनाम के अनुसार जो राशि हो उसी राशि की उपरोक्त कार्यों हेतु प्रधानता शास्त्रोक्त है इन कार्योंमें जन्मराशि से विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

जन्मराशि की प्रधानता– व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) में विवाह में, यात्रा में, मुण्डन में, सब प्रकार के माङ्गलिक कार्यों में तथा ग्रह गोचर में जन्मराशि ही ग्रहण करना चाहिए।

विशेष–यदि किसी की जन्मराशि ज्ञात न हो तो सब विचार नामराशि से ही करना चाहिए तथा पुनर्विवाह में भी नामराशि का ग्रहण करना प्रशस्त कहा है । विवाह मेलापक के विचार के लिए वर-कन्या दोनो की जन्मराशि लेनी चाहिए। यदि एक की जन्मराशि हो और दूसरे की न हो तो दोनों की नामराशि से ही विचार किया जाना चाहिए। एक की जन्मराशि तथा दूसरे की नामराशि से मेलापक का विचार करना अनिष्टकर होता है।

अक्षांश तथा काशी से देशान्तर सारिणी

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अकबरपुर (फैजाबाद)	२६।२६	८२।३३	-०।४।३०
अकबरपुर (औरैया)	२६।२४	७९।५२	-०।३१।२०
अमेठी	२६।१०	८१।५०	-०।११।४०
अमरोहा	२८।५४	७८।३१	-०।४४।५०
अलीगढ़	२७।५४	७८।६	-१०।४९।०
अल्मोड़ा (उत्तरांचल)	२९।३७	७९।४०	-०।३३।२०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	-०।७।४०
अहरौरा	२४।५९	८३।२	+०।०।२०
आगरा	२७।१०	७८।५	-०।४९।१०
आजमगढ़	२६।३	८३।१३	+१०।२।१०
इटावा	२६।४७	७९।२	-०।३९।४०
इलाहाबाद(प्रयागराज)	२५।२८	८१।५४	-०।११।१०
उत्तरकाशी (उत्तरांचल)	३०।४५	७८।२४	-०।४६।१०
उन्नाव	२६।३२	८०।३२	-०।२४।१०
उरई	२६।०	७९।२८	-०।३५।२०
एटा	२७।३५	७८।४०	-०।४३।२०
ओबरा	२४।२९	८३।३	+०।०।३०
ओरछा (झांसी)	२५।२१	७८।४०	-०।४३।२०
औरइया (औरैया)	२६।२७	७९।३३	-०।३४।३०
कन्नौज	२७।३	७९।५८	-०।३०।२०
कर्वी	२५।७	८०।५२	-०।२१।२०
काठगोदाम (उत्तरांचल)	२९।५	७९।५२	-०।३१।२०
कानपुर	२६।२८	८०।२०	-०।२६।४०
कालपी	२६।१०	७९।४८	-०।३२।०
कासगंज (एटा)	२७।४८	७८।४२	-०।४३।०
कुण्डा	२५।४२	८१।३६	-०।१४।०
केदारनाथ (उत्तरांचल)	३०।४५	७९।३	-०।३९।३०
कोंच (जालौन)	२६।०	७९।१३	-०।३७।५०
कौशाम्बी	२५।३३	८१।३०	-०।१५।०
खलीलाबाद	२६।४१	८३।७	+०।१।१०
खीरी	२७।५४	८०।४८	-०।२२।०
खुर्जा	२८।१५	७७।५०	-०।५१।४०
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।३	-०।४९।३०
गढ़वाल (उत्तरांचल)	३०।१५	७९।३०	-०।३५।०
गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+०।५।५०
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२८	-०।५५।२०
गोण्डा	२७।२८	८२।१	-०।९।५०
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+०।४।०
गोलागोकर्णनाथ	२८।१०	८०।३६	-०।२४।०
चकिया	२५।३	८३।३	+०।०।३०
चन्दौसी	२८।२७	७८।४९	-०।४१।५०
चन्दौली	२५।१५	८३।१७	+०।२।५०
चम्पावत (उत्तरांचल)	२९।२१	८०।१०	-०।२८।२०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
चित्रकूट	२५।१२	८०।५२	-०।२१।२०
चुर्क	२४।३३	८३।१०	+०।१।४०
चुनार	२५।८	८२।५६	-०।०।४०
जरवा (श्रावस्ती)	२७।४०	८२।३०	-०।५।०
जलालपुर	२६।१८	८२।४४	-०।२।४०
जालौन	२६।८	७९।२३	-०।३६।१०
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	-०।२।४०
झाँसी	२५।२७	७८।३७	-०।४३।५०
टनकपुर (उत्तरांचल)	२९।१०	८०।१८	-०।२७।०
टेहरी (उत्तरांचल)	३१।३०	७८।५०	-०।४१।४०
दुद्धी (उ०प्र०)	२४।१५	८३।१३	+०।२।१०
देवरिया	२६।३३	८३।४७	+०।७।५०
देहरादून	३०।१९	७८।४	-०।४९।२०
दोहरीघाट	२६।८	८३।२७	+०।४।३०
नरेन्द्रनगर (उत्तरांचल)	३०।१२	७८।१७	-०।४७।१०
नानपारा	२७।५२	८१।३३	-०।१४।३०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-०।३५।०
नोएडा	२८।३३	७७।२३	-०।५६।१०
नौगढ़ (महराजगंज)	२७।६	८३।१३	+०।२।१०
पडरौना	२६।५४	८४।१	+०।१०।१०
प्रतापगढ़	२५।५४	८२।०	-०।१०।०
पिथौरागढ़ (उत्तरांचल)	२९।३९	८०।१०	-०।२८।२०
पीलीभीत	२८।३८	७९।५१	-०।३१।३०
पौड़ी (उत्तरांचल)	३०।८	७८।५२	-०।४१।२०
फतेहगढ़	२७।२३	७९।४०	-०।३३।२०
फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	-०।२१।२०
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	-०।३३।५०
फिरोजाबाद	२७।९	७८।२४	-०।४६।०
फैजाबाद	२६।४७	८२।१२	-०।८।०
बदायूँ	२८।२	७९।१०	-०।३८।२०
बद्रीनाथ (उत्तरांचल)	३०।४४	७९।३२	-०।३४।४०
बरेली	२८।२२	७९।२७	-०।३५।३०
बलिया	२५।४४	८४।११	+०।११।५०
बलरामपुर	२७।२५	८२।१५	-०।७।३०
बहराइच	२७।३६	८१।३७	-०।१३।५०
बस्ती	२६।४८	८२।४६	-०।२।२०
बागपत	२९।३	७७।४३	-०।५२।५०
बाँदा	२५।२८	८०।२२	-०।२६।२०
बाराबंकी	२६।५६	८१।१३	-०।१७।५०
बिजनौर	२९।२३	७८।१०	-०।४८।२०
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५४	-०।५१।०
बेला	२५।५६	८२।०	-०।१०।०
भदोही	२५।२४	८२।३८	-०।३।४०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
मऊ	२५।५७	८३।३६	+०।६।०
मथुरा	२७।२८	७७।४१	-०।५३।१०
महोबा	२५।१८	७९।५५	-०।३०।५०
मछलीशहर	२५।४१	८२।२७	-०।५।३०
मलीहाबाद	२७।१०	८०।३०	-०।२५।०
महराजगंज	२७।९	८३।३३	+०।५।३०
मसूरी (उत्तरांचल)	३०।२७	७८।६	-०।४९।०
मिरजापुर (मीरजापुर)	२५।१०	८२।३७	-०।३।५०
मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४४	-०।५२।४०
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	-०।४१।५०
मुगलसराय ([illegible])	२५।१७	८३।११	+०।१।५०
मेरठ	२९।१	७७।४५	-०।५२।३०
मैनपुरी	२७।१३	७९।२	-०।३९।४०
राठ	२५।३८	७९।३६	-०।३४।०
रानीखेत (उत्तरांचल)	२९।४०	७९।३३	-०।३४।३०
रामनगर (उत्तरांचल)	२९।३०	७९।१०	-०।३८।२०
रामपुर (उ० प्र०)	२८।४८	७९।१	-०।३९।५०
रायबरेली	२६।१४	८१।१६	-०।१७।२०
राबर्ट्सगंज	२४।४१	८३।५	+०।०।५०
रेनुकूट	२४।१५	८३।५	+०।०।५०
रुद्रप्रयाग (उत्तरांचल)	३०।१८	७८।५६	-०।४०।४०
रुद्रपुर (उत्तरांचल)	२९।२७	७९।१२	-०।३८।०
रुड़की (उ० प्र०)	२९।५२	७७।५३	-०।५१।१०
लखनऊ	२६।५५	८१।०	-०।२०।०
लखीमपुर	२७।५७	८०।४९	-०।२१।५०
ललितपुर	२४।२२	७८।२८	-०।४५।२०
बटेश्वर	२६।४८	७८।२४	-०।४६।०
विन्ध्याचल स्टेशन	२५।१०	८२।३०	-०।५।०
वाराणसी	२५।१८	८३।०	-०।०।०
वृन्दावन	२७।३३	७७।४४	-०।५२।४०
शाहगंज	२६।१	८२।४५	-०।२।३०
शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	-०।३०।३०
शाहदरा	२८।४०	७७।२०	-०।५६।४०
शाहाबाद	२७।३०	८०।५	-०।२९।१०
शिकोहाबाद	२७।०	७९।०	-०।४०।०
सम्भल	२८।३५	७८।३७	-०।४३।५०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	-०।५६।१०
सीतापुर	२७।३२	८०।४३	-०।२२।५०
सुलतानपुर	२६।१६	८२।७	-०।८।५०
सैदपुर	२५।३२	८३।१६	+०।२।४०
सोरों, (शूकरक्षेत्र)	२७।५२	७८।४८	-०।४२।०
हमीरपुर	२५।५८	८०।१२	-०।२८।०
हरदोई	२७।२३	८०।१०	-०।२८।२०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	-०।४७।५०
हल्द्वानी	२९।१३	७९।३६	-०।३४।०
हाथरस	२७।३६	७८।६	-०।४९।०
हापुड़	२८।४३	७७।५०	-०।५१।४०

बिहार-झारखण्ड और उड़ीसा के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अमावाँ (टिकरी) बिहार	२५।९	८५।५०	+०।२८।२०
अलीगंज(हयुआ)(बिहार)	२६।१२	८४।२४	+०।१४।०
अरवल (बिहार)	२५।१८	८४।४७	+०।१७।५०
आरा (बिहार)	२५।३२	८४।३२	+०।१५।२०
अंगुल (अनुगूल) उड़ीसा	२०।४५	८५।३	+०।२०।३०
औरंगाबाद (बिहार)	२४।४५	८४।२५	+०।१४।१०
कटक (उड़ीसा)	२०।२८	८५।५४	+०।२९।१०
कटिहार (बिहार)	२५।३०	८७।२०	+०।४३।२०
कालाहाँडी (उड़ीसा)	१९।४०	८३।०	+०।०।०
किशनगंज (बिहार)	२६।१०	८८।०	+०।५०।०
कोडरमा (बिहार)	२४।३०	८५।३४	+०।२५।४०
कोणार्क (उड़ीसा)	१९।५१	८६।१०	+०।३१।४०
कोरापुट (उड़ीसा)	१८।५३	८२।४३	-०।२।५०
कोसी (बिहार)	२६।३	८७।२	+०।४०।२०
खगड़िया (बिहार)	२५।२७	८६।४२	+०।३७।०
खरीयार (उड़ीसा)	२०।१८	८२।२९	-०।५।१०
खोर्धा (उड़ीसा)	२०।१२	८५।३८	+०।२६।२०
गढ़वा (झारखण्ड)	२४।१०	८३।५२	+०।८।४०
गया (बिहार)	२४।४९	८५।०	+०।२०।०
गिरीडीह (झारखण्ड)	२४।१०	८६।२१	+०।३३।३०
गोपालगंज (बिहार)	२६।३०	८४।२५	+०।१४।१०
चतरा (झारखण्ड)	२४।१२	८४।३६	+०।१६।०
चाईबासा (झारखण्ड)	२२।२६	८५।५०	+०।२८।२०
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४७	+०।१७।५०
छोटा नागपुर (झारखण्ड)	२३।०	८५।०	+०।२०।०
जमालपुर (बिहार)	२५।१९	८६।३२	+०।३५।२०
जमशेदपुर(टाटा)(झार०)	२२।५०	८६।१०	+०।३१।४०
जयनगर (बिहार)	२६।३५	८६।०९	+०।३१।३०
जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)	१९।४१	८५।५२	+०।२८।४०
जयपुर (उड़ीसा)	१८।५२	८२।३८	-०।३।४०
जाजपुर (उड़ीसा)	२०।५६	८६।३०	+०।३५।०
जोगबनी (बिहार)	२६।२५	८७।१०	+०।४१।४०
झरिया (झारखण्ड)	२३।५०	८६।३३	+०।३५।३०
झारसुगड़ा (उड़ीसा)	२१।५५	८४।०	+०।१०।०
टिहरिया (उड़ीसा)	२०।२८	८४।३४	+०।१५।४०
डाल्टनगंज (झारखण्ड)	२४।२	८४।४	+०।१०।४०
डुमरिया (बिहार)	२७।८	८४।३१	+०।१५।१०

बिहार-झारखण्ड और उड़ीसा के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
डुमराँव (बिहार)	२५।३३	८४।२१	+०।१३।३०
ढेंकनाल (उड़ीसा)	२०।४०	८५।३८	+०।२६।२०
तालचर (उड़ीसा)	२०।५७	८५।१६	+०।२२।४०
दुमका (झारखण्ड)	२४।१०	८७।१५	+०।४२।३०
दरभंगा (बिहार)	२६।१०	८५।५७	+०।२९।३०
दास पल्ला (उड़ीसा)	२०।१९	८४।५६	+०।१९।२०
दासपुर (उड़ीसा)	२१।५८	८६।७	+०।३१।१०
देवगढ़ (उड़ीसा)	२१।३२	८४।४६	+०।१७।४०
देवघर(बैद्यनाथ) (झार०)	२४।३०	८६।४५	+०।३७।३०
दोरण्डा (झारखण्ड)	२३।२२	८५।२२	+०।२३।४०
पटना (बिहार)	२५।३५	८५।१३	+०।२२।१०
पारसनाथ (झारखण्ड)	२३।५५	८६।२०	+०।३३।२०
पालामऊ(पलामू)(झार०)	२३।५२	८४।१७	+०।१२।५०
पालकोट (बिहार)	२२।५२	८४।४१	+०।१६।५०
पूर्णिया (बिहार)	२५।४९	८७।३१	+०।४५।१०
बुद्ध गया (बिहार)	२४।४१	८५।२	+०।२०।२०
बेतिया (बिहार)	२६।४८	८४।३३	+०।१५।३०
बक्सर (बिहार)	२५।३४	८४।१०	+०।११।४०
भागलपुर (बिहार)	२५।१५	८७।२	+०।४०।२०
भुवनेश्वर (उड़ीसा)	२०।१७	८५।५२	+०।२८।४०
मधेपुर (बिहार)	२५।५७	८६।५१	+०।३८।३०
मयूरभंज (उड़ीसा)	२१।५६	८६।४६	+०।३७।४०
रक्सौल (बिहार)	२७।०	८५।०	+०।२०।०
रामगढ़ (झारखण्ड)	२३।३८	८५।३४	+०।२५।४०
रायदा (उड़ीसा)	१९।९	८३।२७	+०।४।३०
रोहतासगढ़ (बिहार)	२४।४०	८३।५९	+०।९।५०
राउरकेला (उड़ीसा)	२२।१२	८४।५४	+०।१९।०
लक्खीसराय (बिहार)	२५।१०	८६।५	+०।३०।५०
लोहारदग्गा (झारखण्ड)	२३।२६	८४।४२	+०।१७।०
सगौली (बिहार)	२६।४७	८४।४८	+०।१८।०
समस्तीपुर (बिहार)	२५।५५	८५।५०	+०।२८।२०
सम्भलपुर (उड़ीसा)	२१।२८	८४।०	+०।१०।०
सासाराम (बिहार)	२४।५७	८४।३	+०।१०।३०
सहरसा (बिहार)	२५।५६	८६।५०	+०।३८।२०
सोरदा (उड़ीसा)	१९।४५	८४।२९	+०।१४।५०
सोनपुर (उड़ीसा)	२०।५१	८३।५५	+०।९।१०
सोहेला (उड़ीसा)	२१।१८	८३।२६	+०।४।२०
साहाबाद (बिहार)	२५।६	८४।५६	+०।१९।२०
शेखपुरा (बिहार)	२५।९	८५।५३	+०।२८।५०
हजारीबाग (झारखण्ड)	२४।०	८५।२५	+०।२४।१०
हरिहर क्षेत्र (बिहार)	२५।४०	८५।१५	+०।२२।३०
हाजीपुर (बिहार)	२५।४१	८५।१४	+०।२२।२०
हिण्डोला (उड़ीसा)	२०।३६	८५।१४	+०।२२।२०
हिंगीर (उड़ीसा)	२१।५८	८३।४३	+०।७।१०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अकलकोट (महाराष्ट्र)	१७।३१	७६।१५	-१।७।३०
अकोला (महाराष्ट्र)	२०।२४	७७।२	-०।५९।४०
उ० अर्काट (तमिलनाडु)	१२।५६	७९।२४	-०।३६।०
अंकिलेश्वर (गुजरात)	२१।३८	७३।३	-१।३९।३०
अंगोल (आन्ध्र)	१५।३०	८०।६	-०।२९।०
अगरतल्ला (त्रिपुरा)	२३।५०	९१।२३	+१।२३।५०
अजमेर (राजस्थान)	२६।२७	७४।४२	-१।२३।०
अजयगढ़ (म०प्र०)	२४।५३	८०।१३	-०।२७।५०
अंजार (गुजरात)	२३।१०	७०।६	-२।९।०
अजन्ता (महाराष्ट्र)	२०।३३	७५।४८	-१।१२।०
अंजन गाँव (केरल)	८।४०	७६।४८	-१।२।०
अट्टूर (तमिलनाडु)	१०।१६	७७।५३	-०।५१।१०
अडोनी (आन्ध्र)	१५।३८	७७।१९	-०।५६।५०
अण्डमान (पूर्वीद्वीप)	१२।०	९२।४०	+१।३६।४०
अथनी, अठनी (कर्नाटक)	१६।४४	७५।६	-१।१९।०
अदीलाबाद (आन्ध्र)	१९।४०	७८।३०	-०।४५।०
अनाइमुडी (केरल)	१०।२४	७६।५०	-१।१।४०
अनाकपल्ली (आन्ध्र)	१७।४१	८३।३	+०।०।३०
अलवर (राजस्थान)	२७।३४	७६।३८	-१।३।४०
अलीराजपुर (म.प्र.)	२२।११	७४।२४	-१।२६।०
अलेप्पी (केरल)	९।३०	७६।२३	-१।६।१०
अल्लीखेर (कर्नाटक)	१८।१०	७७।१३	-०।५७।५०
अल्लूर (आन्ध्र)	१४।४१	८०।५	-०।२९।१०
उदमालपेठ (तमिलनाडु)	१०।३६	७७।१७	-०।५७।१०
उदयगिरि (आन्ध्र)	१४।५२	७९।१९	-०।३६।५०
उदगिरि (महाराष्ट्र)	१८।२५	७७।१०	-०।५८।२०
ऊँझा (गुजरात)	२३।४६	७२।२४	-१।४६।०
ऊना (हिमाचल प्र०)	३१।३२	७६।१९	-१।६।५०
उस्मानाबाद (महा०)	१८।८	७६।६	-१।९।०
एकलिंग जी (राज०)	२४।४३	७३।५०	-१।३१।४०
औरंगाबाद (महा०)	१९।५३	७५।१३	-१।१७।५०
कच्छ (गुजरात)	२३।१५	७२।२५	-१।४५।५०
कटनी (म०प्र०)	२३।४७	८०।२७	-०।२५।३०
कडप्पा (आन्ध्र)	१४।२८	७८।५०	-०।४१।४०
कन्नानूर (केरल)	११।५२	७५।२५	-१।१५।५०
कनकनाड़ी (केरल)	१२।४८	७४।५०	-१।२१।४०
कपूरथला (पंजाब)	३१।२३	७५।२५	-१।१५।५०
कोप्पल (कर्नाटक)	१५।२५	७६।३९	-१।३।३०
कयालपत्तनम् (तमिलनाडु)	८।३४	७८।१०	-०।४८।२०
करनाल (हरियाणा)	२९।४२	७७।०	-१।०।०
करतारपुर (पंजाब)	३१।२७	७५।३२	-१।१४।४०
करूर (तमिलनाडु)	१०।५८	७८।३	-०।४९।३०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
कर्दमान (केरल)	९।२७	७६।५२	-१।१।२०
कोलकाता (प० बंगाल)	२२।३४	८८।२४	+०।५४।०
कलिंगपत्तन (आन्ध्र)	१८।२०	८४।५	+०।१०।५०
कालिम्पोंग (प० बंगाल)	२७।६	८८।३०	+०।५५।०
काम्बे (खम्भात) (गुजरात)	२२।१९	७२।३८	-१।४३।४०
कांगड़ा (हिमाचल)	३२।५	७६।२८	-१।५।२०
काञ्ची (कोचीन) (केरल)	९।५८	७६।१७	-१।७।१०
काञ्चीपुरम् (तमिलनाडु)	१२।५०	७९।४८	-०।३२।०
काटवा (बंगाल)	२३।३९	८८।११	+०।५१।५०
कारगिल (काश्मीर)	३४।३६	७६।३	-१।९।३०
कालका (पंजाब)	३०।४५	७६।५८	-१।०।२०
कालीकट (केरल)	११।१२	७५।५०	-१।११।४०
कालीमेर (तमिलनाडु)	१०।१८	७९।५२	-०।३१।२०
किशनगढ़ (राजस्थान)	२६।३५	७४।५६	-१।२०।४०
कूचबिहार (प० बं०)	२६।२०	८९।२९	+१।४।५०
कुर्ग (कर्नाटक)	१२।२०	७६।१०	-१।८।२०
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)	२९।५६	७६।५६	-१।०।४०
कोल्लम (केरल)	८।५४	७६।३९	-१।३।३०
कोकनद (आन्ध्र)	१६।५०	८२।१२	-०।८।०
कोकोचान (अण्डमान)	१३।५६	९२।५०	+१।३८।२०
कोचीन (केरल)	९।५८	७६।१७	-१।७।१०
कोटा (राजस्थान)	२५।१८	७१।१६	-१।५७।२०
कोटली (कश्मीर)	३३।३०	७३।५७	-१।३०।३०
कोटरा (राजस्थान)	२४।२२	७३।१५	-१।३७।३०
कोट्टयम (केरल)	९।३६	७६।३४	-१।४।२०
कोरंगल (आन्ध्र)	१७।८	७७।३६	-०।५४।०
कोडाईकनाल (मद्रास)	१०।१३	७७।३२	-०।५४।४०
कोपड़गंज (महाराष्ट्र)	२२।४५	७२।३८	-१।४३।४०
कोयम्बटूर (तमिलनाडु)	११।०	७७।०	-१।०।०
कोलार (कर्नाटक)	१३।९	७८।११	-०।४८।१०
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)	१६।४२	७४।१६	-१।२७।२०
कोहिमा (नागालैण्ड)	२५।४०	९४।५	+१।५०।५०
कृष्णानगर (प० बंगाल)	२३।२४	८८।२३	+०।५३।५०
कृष्णागिरि (तमिलनाडु)	१२।३५	७८।३	-०।४९।३०
खण्डवा (मध्यप्रदेश)	२१।५०	७६।२३	-१।६।१०
खण्डेला (राजस्थान)	२७।३६	७५।३२	-१।१४।४०
खापर खेड़ा (महाराष्ट्र)	२१।१५	७९।१०	-०।३८।२०
खेरवाड़ा (राजस्थान)	२३।५९	७३।४०	-१।३३।२०
खासी जयन्तिया (असम)	२५।३४	९१।५६	+१।२९।२०
खिरकिया (म०प्रदेश)	२२।१८	७७।०	-१।०।०
खुलदाबाद (महा०)	२०।१	७५।१५	-१।१७।३०
खोपोली (महाराष्ट्र)	१८।४	७३।१०	-१।३८।२०

अक्षांश तथा काशी से देशान्तर सारिणी

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
खेतड़ी (राजस्थान)	२७।५९	७५।५०	-१११।४०
खैरागढ़ (म०प्र०)	२११२६	८०।५९	-०।२०।१०
गुडूर (आन्ध्र)	१४।१९	७९।५४	-०।३१।०
गढ़शंकर (पंजाब)	३११५	७६।१३	-११७।५०
गरसोप्पा फाल (कर्नाटक)	१४।१८	७४।५५	-१।२०।५०
गंगटोक (सिक्किम)	२७।१०	८८।३०	+०।५५।०
ग्वालियर (म० प्र०)	२६।१४	७८।१०	-०।४८।२०
गोलपाड़ा(असम)	२६।११	९०।४१	+१।२६।५०
गुण्टूर (आन्ध्र)	१४।१८	८०।९	-०।२८।३०
गंगापुर (राजस्थान)	२६।२९	७६।४६	-१।२।२०
गंगावती (कर्नाटक)	१५।३०	७६।३६	-१।४।०
गंगानगर (राजस्थान)	२९।५६	७३।५४	-१।३१।१६
गिरनार (गुजरात)	२१।४०	७१।०	-२।०।०
गिलगिट (कश्मीर)	३५।५५	७४।२२	-१।२६।२०
गुड़गाँव (हरियाणा)	२८।२७	७७।१	-०।५९।५०
गुना (म० प्र०)	२४।४०	७७।२०	-०।५६।४०
गुरयास (कश्मीर)	३४।३८	७४।५६	-१।२०।४०
गुरुदासपुर (पंजाब)	३२।२	७५।२७	-१।१५।३०
गुलमर्ग (कश्मीर)	३४।१०	७४।२०	-१।२६।४०
गोकर्ण (कर्नाटक)	१४।३२	७४।२०	-१।२६।४०
गोंदिया (महाराष्ट्र)	२१।२८	८०।२९	-०।२५।१०
गोधरा (गुजरात)	२२।४५	७३।४०	-१।३३।२०
गोलकुण्डा (आन्ध्रप्रदेश)	१७।४१	८२।३१	-०।४।५०
गोवा	१५।३०	७३।५७	-१।३०।३०
चालीसगाँव (महाराष्ट्र)	२०।३३	७५।०	-१।२०।०
चम्बा (हिमाचल)	३२।३९	७६।१०	-१।८।२०
चन्द्रनगर (प० बं)	२२।५२	८८।२५	+०।५४।१०
चिकमंगलूर (कर्नाटक)	१३।१८	७५।४९	-१।१।५०
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	२४।५४	७४।४२	-१।२३।०
चित्तूर (आन्ध्र)	१३।१३	७९।८	-०।३८।४०
चितूर (केरल)	१०।४२	७६।४७	-१।२।१०
चिदम्बरम् (तमिलनाडु)	११।२४	७९।४४	-०।३२।४०
चेन्नई (तमिलनाडु)	१३।४	८०।१७	-०।२७।१०
चुरु (राजस्थान)	२८।१९	७५।०	-१।२०।०
चेरापूंजी (मेघालय)	२५।१७	९१।४७	+१।२७।५०
चण्डीगढ़ (पंजाब)	३०।४४	७६।५२	-१।१।२०
छतरपुर (मध्यप्रदेश)	२४।५४	७९।३८	-०।३३।४०
छाबड़ा (राजस्थान)	२४।४०	७६।५४	-१।१।०
छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)	२२।३	७८।५९	-०।४०।१०
जगदलपुर (छत्तीसगढ़)	१९।२	८२।५	-०।९।१०
जबलपुर (म०प्र०)	२३।१०	८०।०	-०।३०।०
जम्मू (कश्मीर)	३२।४२	७४।५४	-१।२१।०
जयपुर (असम)	२७।१५	९५।२६	+२।४।२०
जयपुर (राजस्थान)	२६।५५	७५।५२	-१।१।२०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
जोरहाट (असम)	२६।४६	९४।१६	+१।५२।४०
जलगाँव (महाराष्ट्र)	२१।०	७५।४०	-१।१३।२०
जलपाईगुड़ी (प०बं०)	२६।३२	८८।४६	+०।५७।४०
जवहार (महा०)	१९।५७	७३।१६	-१।३७।२०
जामनगर (गुजरात)	२२।२७	७०।७	-२।८।५०
जिन्द (पंजाब)	२९।१९	७६।२३	-१।६।१०
जूनागढ़ (गुजरात)	२१।३१	७०।२६	-२।५।४०
जैसलमेर (राजस्थान)	२६।५५	७०।५७	-२।०।३०
जोधपुर (राजस्थान)	२६।२०	७३।४	-१।३९।२०
झाबुआ (म०प्र०)	२२।४५	७४।३८	-१।२३।४०
झालावाड़ (राजस्थान)	२४।३८	७६।१०	-१।८।२०
झुनझुनू (राजस्थान)	२८।६	७५।२६	-१।१५।४०
टीकमगढ़ (म०प्र०)	२४।४५	७८।५७	-०।४०।३०
टोंक (राजस्थान)	२६।११	७५।५०	-१।११।४०
डभोई (गुजरात)	२२।११	७३।२५	-१।३५।५०
डमडम, दमदम (प०बं०)	२२।३८	८८।२८	+०।५४।४०
डिब्रूगढ़ (असम)	२७।३०	९५।०	+२।०।०
डीघ (राजस्थान)	२७।२८	७७।२०	-०।५६।४०
डोडा (कश्मीर)	३३।१०	७५।३५	-१।१४।१०
तंजौर (तमिलनाडु)	१०।४७	७९।१०	-०।३८।२०
तुमकुर (कर्नाटक)	१३।२०	७७।८	-०।५८।४०
तेजपुर (असम)	२६।३७	९२।५०	+१।३८।२०
तिरुपति (आन्ध्र)	१३।४०	७९।२०	-०।३६।४०
तिरुच्चिरापल्ली (कर्नाटक)	१०।५०	७८।४६	-०।४२।२०
त्रिपुरा	२३।४५	९१।३०	+१।२५।०
त्रिवेन्द्रम (केरल)	८।२९	७६।५७	-१।०।३०
थाणे (महाराष्ट्र)	१९।१२	७३।०	-१।४०।०
दतिया (म०प्र०)	२५।३९	७८।२७	-१।४१।१०
दमन (गुजरात)	२०।२५	७२।५३	-०।३५।१०
दमोह (म०प्र०)	२३।५०	७९।२९	-०।३५।१०
दार्जिलिंग (प० बं०)	२७।३	८८।१८	+०।५३।०
द्वारिका पुरी (गुजरात)	२२।१४	६९।१	-२।१९।५०
दीमापुर (असम)	२५।५१	९३।४८	+१।४८।०
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	-०।५८।०
देवरी (म० प्र०)	२३।२३	७९।४	-०।३९।२०
देवली (महाराष्ट्र)	२०।३९	७८।३२	-०।४४।४०
देवली (राजस्थान)	२५।४६	७५।२५	-१।१५।५०
देवास (म०प्र०)	२२।५८	७६।६	-१।९।०
देवांगिरी (असम)	२६।५१	९१।२६	+१।२४।२०
देवीकोट (राजस्थान)	२६।३८	७१।७	-१।५८।५०
दौलताबाद (महाराष्ट्र)	१९।५७	७५।१५	-१।१७।३०
धनुषकोटि (तमिलनाडु)	९।१०	७९।२८	-०।३५।२०
धमतरी (छत्तीसगढ़)	२०।४२	८१।३४	-०।१४।२०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
धर्मजयगढ़ (छत्तीसगढ़)	२२।२८	८३।१५	+०।२।३०
धर्मपुरी (तमिलनाडु)	१२।८	७८।१३	-०।४७।५०
धार (म०प्र०)	२२।३५	७५।२०	-१।१६।४०
धौलपुर (राजस्थान)	२६।४१	७७।५३	-०।५१।१०
नान्देड़ (महाराष्ट्र)	१९।१०	७७।२२	-०।५६।२०
नन्दिग्राम (आन्ध्र)	१६।४६	८०।२०	-०।२६।४०
नन्दीराज (म०प्र०)	२०।४५	८०।५०	-०।२१।४०
नन्दयाल (आन्ध्र)	१५।२९	७८।३२	-०।४४।४०
नदिया (बंगाल)	२३।२४	८८।५६	+०।५९।२०
नरसिंहगढ़ (म०प्र०)	२३।४४	७७।८	-०।५८।४०
नरसिंहपुर (म०प्र०)	२२।५७	७९।१५	-०।३७।३०
नलगोंडा (आन्ध्र)	१७।३	७९।२०	-०।३६।४०
नवाब बासौदा (म०प्र०)	२३।५७	७८।५४	-०।४१।०
नसीराबाद (राजस्थान)	२६।२०	७४।४६	-१।२२।२०
नागौर (राजस्थान)	२७।११	७३।४६	-१।३२।२०
नागौद (म०प्र०)	२४।३३	८०।३७	-०।२३।५०
नागपुर (महाराष्ट्र)	२१।९	७९।६	-०।३९।०
नाथद्वारा (राजस्थान)	२४।५६	७३।५२	-१।३१।२०
नरवरगढ़ (म०प्र०)	२५।३९	७७।५३	-०।५१।१०
नासिक (महाराष्ट्र)	२०।०	७३।५२	-१।३१।२०
निजामाबाद (आन्ध्र)	१८।४०	७८।१०	-०।४८।२०
नीमच (म०प्र०)	२४।२७	७४।५२	-१।२१।२०
नेल्लूरु (आन्ध्र)	१४।२७	८०।०	-०।३०।०
नेमावार (म०प्र०)	२२।३०	७७।०	-१।०।०
नैनपुर (म०प्र०)	२२।२८	८०।८	-०।२८।४०
नैनवा (राजस्थान)	२५।४५	७५।५७	-१।१०।३०
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	२१।११	८१।२१	-०।१६।३०
दुर्गापुर (प०बंगाल)	२३।३०	८७।२०	+०।४३।२०
देवदुर्ग (कर्नाटक)	१६।२५	७७।०	-१।०।०
देवभोग (छत्तीसगढ़)	१९।५८	८२।४५	-०।२।३०
नौशेरा (कश्मीर)	३३।७	७४।१०	-१।२८।२०
पचमढ़ी (म०प्र०)	२२।३०	७८।३२	-०।४४।४०
पटियाला (पंजाब)	३०।२०	७६।३५	-१।४।१०
पद्दीकुण्डा (आन्ध्र)	१५।२४	७७।४	-०।५९।२०
पठानकोट (पंजाब)	३२।१५	७५।३३	-१।१४।३०
पद्मनाभपुरम् (केरल)	९।६	७६।५०	-१।१।४०
पडरिया (म०प्र०)	२२।१५	८१।२७	-०।१५।३०
पंढरपुर (महाराष्ट्र)	१७।४१	७५।२३	-१।१६।१०
प्रतापगढ़ (राजस्थान)	२४।१	७४।४०	-१।२३।२०
प्रतापपुर (म०प्र०)	२०।०	८०।५०	-०।२१।४०
पथरी (म०प्र०)	२३।५६	७८।१५	-०।४७।३०
पन्ना (म०प्र०)	२४।४४	८०।१४	-०।२७।४०
परभनी (महाराष्ट्र)	१९।१६	७६।५०	-१।१।४०
परमगुड़ी (तमिलनाडु)	९।३१	७८।३९	-०।४३।३०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
पालनपुर (गुजरात)	२४।१२	७२।२४	-१।४६।०
पल्लाडम (तमिलनाडु)	१०।५९	७७।२०	-०।५६।४०
पाटन, सोमनाथ (गुज०)	२०।५४	७०।२६	-२।५।४०
पाटन (राजस्थान)	२७।४९	७६।२	-१।९।४०
पांडिचेरी (तमिलनाडु)	११।५६	७९।५३	-०।३१।१०
पानीपत (पंजाब)	२९।२३	७६।५८	-१।०।२०
पारलाकोट (म०प्र०)	१९।४५	८०।४८	-०।२२।०
पालमकोटा (तमिलनाडु)	८।४३	७७।४६	-०।५२।२०
पालघाट (केरल)	१०।४६	७६।४२	-१।३।०
पाली (राजस्थान)	२५।४६	७३।२५	-१।३५।५०
पार्वतीपुरम् (आन्ध्र)	१८।४७	८३।२८	+०।४।४०
पिटिहरा, पेटहरा (म.प्र.)	२३।४	७९।२०	-०।३६।४०
पिरामिड (तमिलनाडु)	९।३०	७७।२	-०।५९।४०
पीर (कश्मीर)	३३।३०	७४।३०	-१।२५।०
पुरलिया(मानभूमि)(प०बं)	२३।२०	८६।२५	+०।३४।१०
पुष्कर क्षेत्र (राजस्थान)	२६।२९	७४।३७	-१।२३।५०
पूंछ, पूंच (कश्मीर)	३३।५१	७४।८	-१।२८।४०
पूना (महाराष्ट्र)	१८।३०	७३।५८	-१।३०।२०
पेरियाकुलम् (तमिलनाडु)	१०।७	७७।३५	-०।५४।१०
पोखरन (राजस्थान)	२६।५५	७१।५८	-१।५०।२०
पोरबन्दर (गुजरात)	२१।३७	६९।४९	-२।११।५०
पौनी (महाराष्ट्र)	२०।४८	७९।४०	-०।३३।२०
फतहपुर (राजस्थान)	२८।०	७५।०	-१।२०।०
फतेहाबाद (पंजाब)	२९।३१	७५।३०	-१।१५।०
फरीदकोट (पंजाब)	३०।४०	७४।४७	-१।२२।१०
फाजिल्का (पंजाब)	३०।२५	७४।०	-१।३०।०
फिरोजपुर (पंजाब)	३०।५५	७४।४८	-१।२२।०
फोर्टजार्ज (तमिलनाडु)	१३।४	८०।१७	-०।२७।१०
फोर्ट डेविड (तमिलनाडु)	११।४५	७९।५०	-०।३१।४०
बदनावर (म०प्र०)	२३।५	७५।१८	-१।१७।०
बड़ौदा शहर (गुज०)	२२।१५	७३।११	-१।३८।१०
बड़वानी (म०प्र०)	२२।३	७४।५७	-१।२०।३०
बड़वाहा (म०प्र०)	२२।२५	७५।५८	-१।१०।२०
बदनूर (म०प्र०)	२१।२५	७७।५७	-०।५०।३०
बंगलुरु, बंगलौर (कर्नाटक)	१२।५८	७७।३८	-०।५३।४०
बम्बई, मुम्बई (महाराष्ट्र)	१८।५५	७२।५४	-१।४१।०
बर्दवान (प० बं)	२३।१६	८७।५४	+०।४९।०
ब्रह्मपुरी (महाराष्ट्र)	२०।४०	७९।५६	-०।३०।४०
बहरामपुर, ब्रह्मपुर (प.बं.)	२४।६	८८।१९	+०।५३।१०
बरडी, बर्डी (म०प्र०)	२४।३०	८२।२६	-०।५।४०
बराण्डा (म०प्र०)	२५।३	८०।४०	-०।२३।२०
बस्तर (छत्तीसगढ़)	१९।१०	८१।५८	-०।१०।२०
बनासकंठ (गुजरात)	२४।२३	७१।३७	-१।५३।५०
बंडा (म०प्र०)	२४।३	७८।५५	-०।४०।५०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
बाँकुड़ा (प०बं०)	२३।१४	८७।७	+०।४१।१०
बेलारी (म०प्र०)	२२।१४	७६।४८	-१।२।०
बाँदरा (महाराष्ट्र)	१९।३	७२।५२	-१।४१।२०
बारामती (महाराष्ट्र)	१८।६	७४।३६	-१।२४।०
बेरछा (म०प्र०)	२३।१६	७६।१२	-१।८।०
बारसी (महाराष्ट्र)	१८।१०	७५।५०	-१।११।४०
बेमेतरा (छत्तीसगढ़)	२१।३८	८१।३७	-०।१३।५०
बारपेट (असम)	२६।२०	९१।३	+१।२०।३०
बारमूला (कश्मीर)	३४।१०	७४।३०	-१।२५।०
बालाघाट (म०प्र०)	२१।५५	८०।१५	-०।२७।३०
बालकुण्ड (आन्ध्र)	१९।५	७८।२०	-०।४६।४०
बालमेर, बाड़मेर (राज०)	२५।४५	७१।२५	-१।५५।५०
बान्धवगढ़ (म०प्र०)	२३।२६	८०।५३	-०।२१।१०
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)	२२।५	८२।१०	-०।८।२०
बिलासपुर (हिमाचल)	३१।१९	७६।५०	-१।१।४०
विश्रामपुर (छत्तीसगढ़)	२३।१६	८३।१६	+०।२।४०
विष्णुपुर (प०बं०)	२३।२५	८७।२३	+०।४३।५०
बीकानेर (राजस्थान)	२८।१	७३।१२	-१।३८।०
बीजापुर (कर्नाटक)	१६।५०	७५।४९	-१।११।५०
बीदर (कर्नाटक)	१७।५७	७७।३९	-०।५३।३०
बीना (म०प्र०)	२४।८	७८।५	-०।४९।१०
बीरभूम (सिउरी) (प०बं०)	२३।५४	८७।३४	+०।४५।४०
बुरहानपुर (महाराष्ट्र)	२१।२५	७६।१६	-१।७।२०
बुलसर, बलसर (गुज०)	२०।३६	७२।५७	-१।४०।३०
बूँदी (राजस्थान)	२५।२७	७५।४६	-१।१२।२०
बेजवाड़ा,विजयवाड़ा(आन्ध्र)	१६।३१	८०।३९	-०।२३।३०
बेलग्राम (कर्नाटक)	१५।५२	७४।३५	-१।२४।१०
बेगमगंज (म०प्र०)	२३।२८	७८।२०	-०।४६।४०
बैतूल (म०प्र०)	२१।५१	७७।५८	-०।५०।२०
बैरकपुर (प०बं०)	२२।४६	८८।२४	+०।५४।०
भाखरा नांगल (पंजाब)	३१।३८	७६।६	-१।९।०
भटिंडा (पंजाब)	३०।११	७४।५९	-१।२०।१०
भरतपुर (राजस्थान)	२७।१५	७७।३०	-०।५५।०
भरतपुर (छत्तीसगढ़)	२३।४२	८१।५०	-०।११।४०
भड़ौच (गुजरात)	२१।४०	७३।१	-१।३९।५०
भदरवाह (कश्मीर)	३२।५८	७५।५०	-१।११।४०
भद्राचलम् (आन्ध्र)	१७।४०	८०।५६	-०।२०।४०
भद्रावती (कर्नाटक)	१३।५२	७५।४०	-१।१३।२०
भाटपारा (प०बं०)	२२।५४	८८।२५	+०।५४।१०
मांडेर (म०प्र०)	२५।५८	७७।५८	-०।५०।२०
भानपुर (म०प्र०)	२४।३२	७५।५१	-१।११।३०
भावनगर (गुजरात)	२१।४६	७२।११	-१।४८।१०
भिण्ड (म०प्र०)	२६।२५	७८।५६	-०।४०।४०
भिलाई (छत्तीसगढ़)	२१।१८	८१।४५	-०।१२।३०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
भिनख गाँव (म०प्र०)	२१।५३	७५।५८	-१।१०।२०
भिवानी (पंजाब)	२८।५०	७६।६	-१।९।०
भीलवाड़ा (राजस्थान)	२५।२१	७४।४०	-१।२३।२०
भुज (गुजरात)	२३।१५	६९।४९	-०।३१।५०
भुसावल (महाराष्ट्र)	२१।२	७५।४९	-१।११।५०
भानुप्रतापपुर (छत्तीसगढ़)	२०।२२	८१।८	-०।१८।४०
भोपाल (म०प्र०)	२३।१६	७७।१८	-०।५७।०
भण्डारा (महाराष्ट्र)	२१।९	७९।४२	-०।३३।०
महू (छावनी) (म०प्र०)	२२।३४	७५।४९	-१।११।५०
मऊगंज (म० प्र०)	२४।४०	८१।५६	-०।१०।४०
मकड़ी (छत्तीसगढ़)	१९।४५	८१।५८	-०।१०।२०
मदुराई (मदुरा) तमिलनाडु	९।५८	७८।१०	-०।४८।२०
मल्हारगढ़ (म०प्र०)	२४।२५	७५।३	-१।१९।३०
महासमुद्र (छत्तीसगढ़)	२१।६	८२।४	-०।९।२०
मनमाड (महाराष्ट्र))	२०।१५	७४।२९	-१।२५।१०
मालापुरम् (केरल)	११।०	७६।२	-१।९।४०
मलकापुर (महाराष्ट्र)	२०।५३	७६।१५	-१।७।३०
मालवान (महाराष्ट्र)	१६।३	७३।३०	-१।३५।०
महाबलेश्वर (महाराष्ट्र)	१७।५८	७३।४३	-१।३२।५०
महबूबनगर (आन्ध्र)	१६।४२	७७।५८	-०।५०।२०
महेसाणा (गुजरात)	२३।४२	७२।३७	-१।४३।५०
माण्डवी (गुजरात)	२२।५१	६९।३२	-२।१४।४०
मालदा (प०बं०)	२५।३	८८।९	+०।५१।३०
मिदनापुर (प०बं०)	२२।२५	८७।२१	+०।४३।३०
मुरैना (म०प्र०)	२६।३०	७८।५	-०।४९।१०
मैनपुर (छत्तीसगढ़)	२०।१८	८२।१५	-०।७।३०
मुर्शिदाबाद (प० बं०)	२४।११	८८।१९	+०।५३।१०
मुहम्मदगढ़ (म०प्र०)	२३।३९	७७।५३	-०।५१।१०
मेडक (आन्ध्र)	१८।३	७८।१८	-०।४७।०
मैसूर (कर्नाटक)	१२।१८	७६।४२	-१।३।०
मैहर (म०प्र०)	२४।१६	८०।४९	-०।२१।५०
मोरवी (गुजरात)	२२।४९	७०।५४	-२।१।०
महेश्वर (म०प्र०)	२२।९	७५।३९	-१।१३।३०
मुंगेली (छत्तीसगढ़)	२।२	८१।४०	-०।१३।२०
मण्डला (म०प्र०)	२२।४३	८०।३५	-०।२४।१०
मण्डी (हिमाचल)	३१।४३	७६।५८	-१।०।२०
मन्दसोर (म०प्र०)	२४।६	७५।८	-१।१८।४०
यवतमाल (महाराष्ट्र)	२०।२३	७८।११	-०।४८।१०
रघुगढ़ (म०प्र०)	२४।२६	७७।१५	-०।५७।३०
रतनगढ़ (राजस्थान)	२८।५	७४।२९	-१।२५।१०
रतनपुर (छत्तीसगढ़)	२२।१७	८२।११	-०।८।१०
रतलाम (म०प्र०)	२३।२१	७५।७	-१।१८।५०
रनिया (पंजाब)	२९।२८	७५।५४	-१।११।०
राजकोट (गुजरात)	२२।१८	७०।५६	-२।०।४०

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
राजगढ़ (रेनी) राजस्थान	२८।३९	७५।२६	-१।१५।४०
राजगढ़ (म०प्र०)	२४।१	७६।४०	-१।३।२०
राजम (आन्ध्र)	१८।१९	८३।४८	+०।८।०
राजनाँद गाँव (म०प्र०)	२१।६	८१।६	-०।१९।००
रानीगंज (प०बं०)	२३।३०	८७।५	+०।४०।५०
रामकोला (छत्तीसगढ़)	२३।४०	८३।८	+०।१।२०
रामगढ़ (राजस्थान)	२८।१०	७५।०	-१।२०।०
रामगढ़ (छत्तीसगढ़)	२३।०	८१।०	-०।२०।०
राम टेक (महाराष्ट्र)	२१।२४	७९।२०	-०।३६।४०
रामदुर्ग (कर्नाटक)	१५।५८	७५।२२	-१।१६।२०
रामनगर (म०प्र०)	२४।११	८१।१२	-०।१८।०
राहतगढ़ (म०प्र०)	२३।४२	७८।२२	-०।४६।२०
रामनाथपुरम् (तमिलनाडु)	९।२२	७८।५२	-०।४१।२०
रामपुर (हिमाचल)	३१।२०	७७।४०	-०।५३।२०
रामपुर (म०प्र०)	२३।२८	७५।३०	-१।१५।०
रामेश्वरम् (तमिलनाडु)	९।१७	७९।२२	-०।३६।२०
रायगढ़ (छत्तीसगढ़)	२१।५४	८३।२६	+०।४।२०
रायदुर्ग (आन्ध्र)	१४।४२	७६।५३	-१।१।१०
रायपुर (छत्तीसगढ़)	२१।१५	८१।४१	-०।१३।१०
रायचोटी (आन्ध्र)	१४।४	७८।५०	-०।४०।१०
रायसेन (म०प्र०)	२३।२२	७७।४५	-०।५२।३०
रामाकोना (म०प्र०)	२१।३०	७८।५०	-०।४०।१०
रीवाँ (म०प्र०)	२४।३१	८१।१९	-०।१६।५०
रूपनगर (राजस्थान)	२६।४८	७४।५४	-१।२१।०
रेपल्ली (आन्ध्र०)	१६।२	८०।५३	-०।२१।१०
रेवाड़ी (हरियाणा)	२८।१२	७६।३६	-१।४।०
रोहतक (हरियाणा)	२८।५४	७६।३८	-१।३।४०
लखनादौन (म०प्र०)	२२।३६	७९।३९	-०।३३।३०
लातूर (महाराष्ट्र)	१८।२४	७६।३६	-१।४।०
लुधियाना (पंजाब)	३०।५५	७५।५४	-१।११।०
वारंगल (आन्ध्र)	१८।०	७९।४०	-०।३३।२०
विऔरा (म०प्र०)	२३।५५	७६।५३	-१।१।१०
विजयानगरम् (आन्ध्र)	१८।७	८३।२७	+०।४।३०
विशाखापट्टनम् (आन्ध्र)	१७।४२	८३।२०	+०।३।२०
विदिशा (म०प्र०)	२३।३२	७७।५१	-०।५१।३०
बीजापुर (महाराष्ट्र)	१९।५८	७४।४८	-१।२२।०
वेल्लोर (तमिलनाडु)	१२।५५	७९।११	-०।३८।१०
विल्लूपुरम् (तमिलनाडु)	११।५७	७९।३२	-०।३४।४०
सिल्चर (असम)	२४।५०	९२।५१	+१।३८।३०
सतारा (महाराष्ट्र)	१७।४२	७४।०	-१।५०।०
सतना (म०प्र०)	२४।३४	८०।५५	-०।२०।५०
सरायपाली (छत्तीसगढ़)	२१।१८	८३।०	-०।०।०
सरगूजा (छत्तीसगढ़)	२२।३१	८३।५	+०।०।५०
सरहिन्द (पंजाब)	३०।३८	७६।२९	-१।५।१०

अक्षांश-तथा काशी से देशान्तर सारिणी

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
साँची (म०प्र०)	२३।२३	७७।३२	-०।५४।४०
सवाई माधोपुर (राज०)	२५।५९	७६।२०	-१।६।४०
सायला (गुजरात)	२२।३२	७१।२१	-१।५६।३०
सागर (म०प्र०)	२३।५०	७८।५०	-०।४१।४०
संगरूर (पंजाब)	३०।१२	७५।५३	-१।११।१०
सांगारेड्डीपेठ (आन्ध्र)	१७।३५	७८।२	-०।४९।४[illegible]
सांगली (महाराष्ट्र)	[illegible]	७४।३६	-१।२४।०
[illegible] (गुजरात)	२३।२०	७२।४७	-१।४२।१०
साँभरझील (राजस्थान)	२६।५४	७५।१३	-१।१७।५०
सारंगगढ़ (छत्तीसगढ़)	२१।३६	८३।७	+०।१।१०
सीधी (म०प्र०)	२४।२५	८१।५५	-०।१०।५०
सीकर (राजस्थान)	२७।३६	७५।१५	-१।१७।३०
सिरमौर (म०प्र०)	२४।४६	८१।३०	-०।१५।१०
सिरोंज (म०प्र०)	२४।६	७७।४४	-०।५२।४०
सिलचर (असम)	२४।५०	९२।५१	+१।३८।३०
सिलीगुड़ी(प०बं०)	२६।४२	८८।२५	+०।५४।१०
सिवनी (म०प्र०)	२२।६	७९।३५	-०।३४।१०
सीतामऊ (म०प्र०)	२४।१	७५।२३	-१।१६।१०
सुजानगढ़ (राजस्थान)	२७।४९	७४।३१	-१।२४।५०
सूरत (गुजरात)	२१।१२	७२।५२	-१।४१।२०
सूरतगढ़ (राजस्थान)	२९।१९	७३।५७	-१।३०।३०
सेलम (तमिलनाडु)	११।३९	७८।१२	-०।४८।०
सोनाखान (छत्तीसगढ़)	२१।३६	८२।३६	-०।४।०
सोमनाथ (गुजरात)	२०।५४	७०।२६	-२।५।४०
सोलन हिमा०)	३०।५५	७७।९	-०।५८।३०
सोहागपुर- (पिपरिया)(म०प्र०)	२२।४२	७८।१७	-०।४७।१०
शहडोल (म०प्र०)	२३।१५	८१।२०	-०।१६।४०
शाजापुर (म०प्र०)	२३।२६	७६।२३	-१।६।१०
शोरानूर (केरल)	१०।५०	७६।१९	-१।८।३०
शिकारपुर (कर्नाटक)	१४।१६	७५।२४	-१।१६।०
शिवकाशी (तमिलनाडु)	९।८	७७।५१	-०।५१।३०
शिलांग (असम)	२५।३४	९१।५६	+१।२९।२०
शिवगंगा (तमिलनाडु)	९।५१	७८।३२	-१।४४।४०
शिवपुर (म०प्र०)	२५।२०	७७।३४	-०।५२।२०
शिवसागर (असम)	२७।०	९४।४१	+१।५६।५०
शोलापुर (महाराष्ट्र)	१७।४०	७५।५२	-१।११।२०
शृंगेरी (कर्नाटक)	१३।२६	७६।४३	-१।२।५०
श्रीनगर (कश्मीर)	३४।६	७४।५५	-१।२०।५०
श्रीरंगपत्तन (कर्नाटक)	१२।२६	७६।४२	-१।३।०
श्री हरिकोटा (आन्ध्र०)	१३।४५	८०।१५	-०।२७।३०
हसन (कर्नाटक)	१३।१	७६।१०	-१।८।२०
हांसी (हरियाणा)	२९।६	७६।०	-१।११।०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
हावड़ा (प०बं०)	२२।३५	८८।२३	+०।५३।५०
हिंगोली (महाराष्ट्र)	१९।४३	७७।११	-०।५८।१०
हिम्मत नगर (गुजरात)	२३।३५	७२।५८	-१।४०।२०
हिसार (हरियाणा)	२९।८	७५।४८	-१।१२।०
हुगली (प०बं०)	२२।५५	८८।२६	+०।५४।२०
हुबली (कर्नाटक)	१५।२०	७५।१३	-१।१७।५०
हैदराबाद (आन्ध्र)	१७।२४	७८।३०	-०।४५।०
होशंगाबाद (म०प्र०)	२२।४६	७७।४५	-०।५२।३०
होशियारपुर (पंजाब)	३१।३२	७५।५७	-१।१०।३०

विश्व के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अटक (पाक)	३३।५३	७२।१७	-१।४७।१०
अनुराधापुर (श्रीलंका)	८।२२	८०।२३	-०।२६।१०
अबादान (ईरान)	३०।२७	४८।२५	-५।४५।५०
अमलेखगंज (नेपाल)	२७।१५	८५।०	+०।२०।०
अराकान (म्यामार)	२०।२८	९३।२७	+१।४४।३०
अहमदपुर (पाक)	२९।६	७१।१६	-१।५७।२०
इस्लामाबाद (पाक)	३३।४७	७५।१०	-१।१८।२०
अखड़ा (पाक)	३०।५०	७३।३०	-१।३५।०
कनलन (म्यामार)	२३।४	९८।७	+२।३२।१०
कराची (पाक)	२४।५१	६७।४	-२।३९।२०
करीमगंज (बांग्लादेश)	२४।३१	९०।५५	+१।१९।१०
काठमाण्डू (नेपाल)	२७।४२	८५।१२	+०।१२।१०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४।३०	६९।१८	-२।१७।०
कुरुगंल (श्रीलंका)	७।३१	८०।१६	-०।२७।२०
क्वेटा (पाक)	३०।१२	६७।०	-२।४०।०
कोटचाँदपुर (बांग्लादेश)	२३।८५	८९।५७	+१।९।३०
कोलम्बो (श्रीलंका)	६।५६	७९।५६	-०।३०।४०
खुलना (बांग्लादेश)	२२।४९	८९।३७	+१।६।१०
खुशालगढ़ (पाक)	३३।२८	७१।५९	-१।५०।१०
खैरागढ़ (पाक)	२९।५५	७१।१२	-१।५८।०
गजनी (अफगानिस्तान)	३३।३४	६८।१७	-२।२७।१०
ग्रीनविच (लन्दन)	५१।३०	०।०	-१३।५०।०
गुजरानवाला (पाक)	३२।१०	७४।१४	-१।२७।४०
चटगाँव (बांग्लादेश)	२२।२१	९१।५०	-१।२८।२०
चुंगकिंग (चीन)	२९।३०	१०६।५०	+३।५८।२०
जनकपुर (नेपाल)	२६।५०	८६।०	+०।३०।०
जलालाबाद (पाक)	३४।२४	७०।२६	-२।५।४०
जार्जटाउन (गुयाना)	६।५८	५०।६	-५।२९।०

विश्व के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
टोकियो (जापान)	३५।४०	१३८।४५	+९।१७।३०
डायमंड (म्यामार)	१५।५२	९४।१९	+१।५३।१०
ढाका (बांग्लादेश)	२३।४३	९०।२६	+१।१४।२०
तक्षशिला (पाक)	३३।४०	७२।५०	-१।४१।४०
थिम्फू (भूटान)	२७।३३	८९।५३	+१।८।५०
त्रिकोन्माली (श्रीलंका)	८।३१	८१।१५	-०।१७।३०
दिनाजपुर (बांग्लादेश)	२५।३७	८८।४०	+०।५६।४०
पोर्ट ओखा (गुजरात)	२२।२५	६९।५०	-२।१९।१०
पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान)	११।३०	९२।५०	+१।३८।२०
न्यूयार्क (उ०अमेरिका)	४०।४३	७४।१०	-२६।११।४०
नैरोबी, केन्या	१।१८	३६।५२	-७।४१।२०
पीकिंग, (बीजींग) (चीन)	३९।५५	११६।२४	+५।३४।०
पेरिस (फ्रांस)	४८।५०	२।२०	-१३।२६।४०
पेशावर (पाक)	३४।२	७१।३७	-१।५३।५०
बट्टीकलोआ (श्रीलंका)	७।८	८१।७	-०।१८।५०
बन्दरशाहपुर (ईरान)	३०।०	४९।२०	-५।३६।४०
बर्लिन (जर्मनी)	५२।३२	१३।२५	-११।३५।५०
बहावलपुर (पाक)	२८।२४	७१।४७	-१।५२।१०
बेलग्रेड (रुस)	४४।४८	२०।३७	-१२।३।५०
बोर्नियो	०।०	११५।०	+५।२०।०
मक्का (अरब)	२१।२५	३९।५४	-७।११।०
मानसरोवर (नेपाल)	३०।४५	८१।२०	-०।१६।४०
मास्को (रुस)	५५।४५	८१।२०	-०।१६।४०
मुल्तान (पाक)	३०।१२	७१।३१	-१।५४।५०
मैक्सिको (उ०अमेरिका)	१९।२६	९९।१	-३०।२०।१०
रावलपिण्डी (पाक)	३३।३७	७३।६	-१।३९।०
रोम (इटली)	४१।५५	१२।२८	-१।१५।२०
रंगून (म्यामार)	१६।४५	९६।१३	+२।१२।१०
लरकाना (पाक)	२७।३३	६८।१५	-२।२७।३०
लेनिनग्राड (रुस)	५९।५७	७७।४१	-२।२७।३०
वाशिंगटन (उ०अमेरिका)	३८।५५	७७।४१	-२६।४६।५०
समरकंद (रुस)	३९।३०	६९।५०	-२।११।४०
स्यालकोट (पाक)	३२।३१	७४।३६	-१।२४।०
सिंगापुर (मलेशिया)	२।०	१०३।५१	-३।२८।३०
शेरपुर (बांग्लादेश)	२४।४०	८९।२८	+१।४।४०
हनोई (वियतनाम)	२१।२	१०५।५२	+३।४८।४०
हाँगकाँग (चीन)	२२।१६	११४।१९	+५।११।३०
हिरोशिमा (जापान)	३४।३८	१३२।३५	+८।१५।५०
हैदराबाद (पाक)	२५।२५	६८।३८	-२।२३।४०
लाहौर (पाक)	३१।३७	७४।३६	-१।२४।०
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१।३०	०।५	-१३।५०।५०

चरसारिणी (क्रान्त्यंश)

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
७	० २९	० ५९	१ २८	१ ५८	२ २९	२ ५७	३ २७	३ ५७	४ २७	४ ५८	५ २८	५ ५९	६ ३०	७ १	७ ३२	८ ४	८ ३६	९ ९	९ ४२	१० १५	१० ४८	११ २२	११ ५७	१२ ३२
८	० ३४	१ ७	१ ४१	२ १५	२ ४९	३ २३	३ ५६	४ ३१	५ ६	५ ४१	६ १६	६ ५१	७ २६	८ २	८ ३८	९ १४	९ ५१	१० २८	११ ६	११ ४४	१२ २२	१३ १	१३ ४१	१४ २१
९	० ३८	१ १६	१ ५४	२ ३३	३ ११	३ ४९	४ २७	५ ६	५ ४५	६ २४	७ ४	७ ४३	८ २३	९ ३	९ ४४	१० २५	११ ६	११ ४८	१२ ३०	१३ १३	१३ ५६	१४ ४१	१५ २५	१६ ११
१०	० ४२	१ २५	२ ७	२ ५०	३ ३२	४ १५	४ ५८	५ ४१	६ २४	७ ८	७ ५१	८ ३६	९ २०	१० ५	१० ५०	११ ३६	१२ २३	१३ ८	१३ ५५	१४ ४३	१५ ३१	१६ २०	१७ १०	१८ १
११	० ४७	१ ३४	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४०	५ २८	६ १५	७ ३	७ ५१	८ ४०	९ २९	१० १७	११ ७	११ ५६	१२ ४७	१३ ३८	१४ २९	१५ २०	१६ १४	१७ ७	१८ १	१८ ५६	१९ ५२
१२	० ५१	१ ४२	२ ३३	३ २४	४ १६	५ ९	५ ५९	६ ५०	७ ४३	८ ३६	९ २८	१० २०	११ १६	१२ ९	१३ ३	१३ ५९	१४ ५४	१५ २०	१६ ४७	१७ ४५	१८ ४३	१९ ४२	२० ४२	२१ ४३
१३	० ५५	१ ५१	२ ४६	३ ४२	४ ३८	५ ३४	६ ३०	७ २७	८ २३	९ २०	१० १७	११ १५	१२ १३	१३ १२	१४ ११	१५ ११	१६ ११	१७ १२	१८ १४	१९ १७	२० २०	२१ २५	२२ ३०	२३ ३६
१४	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	६ ०	७ १	८ २	९ ३	१० ५	११ ७	१२ ९	१३ १२	१४ १५	१५ १९	१६ २४	१७ २९	१८ ३४	१९ ४२	२० २०	२१ ५८	२३ ८	२४ १८	२५ ३०
१५	१ ४	२ ९	३ १३	४ १७	५ २१	६ २७	७ ३१	८ ३८	९ ४४	१० ५०	११ ५७	१३ ४	१४ १०	१५ १९	१६ २८	१७ ३८	१८ ४८	१९ ५९	२१ १०	२२ २४	२३ ३५	२४ ५२	२६ ७	२७ २४
१६	१ ९	२ १८	३ २७	४ ३६	५ ४५	६ ५४	८ ४	९ १४	१० २५	११ ३६	१२ ४७	१३ ५९	१५ १०	१६ २४	१७ ३६	१८ ५२	२० ७	२१ २३	२२ ४०	२३ ५७	२५ १७	२६ ३७	२७ ५८	२९ २०
१७	१ १३	२ २७	३ ४०	४ ५४	६ ८	७ २२	८ ३६	९ ५१	११ ६	१२ २०	१३ ३८	१४ ५४	१६ ११	१७ २९	१८ ४८	२० ७	२१ २७	२२ ४८	२४ १०	२५ ३३	२६ ५८	२८ २३	२९ ५०	३१ १८
१८	१ १८	२ ३६	३ ५१	५ १२	६ ३१	७ ५०	९ ९	१० २८	११ ४८	१३ ८	१४ २९	१५ ५०	१७ २२	१८ ३४	१९ ५९	२१ २३	२२ ४८	२४ १४	२५ ४३	२७ १०	२८ ४१	३० १०	३१ ४३	३३ १६
१९	१ २३	२ ४५	४ ८	५ ३१	६ ५४	८ १८	९ ३७	११ ६	१२ ३०	१३ ५५	१५ २१	१६ ४५	१८ १४	१९ ४२	२१ ११	२२ ४०	२४ १०	२५ ४२	२७ १४	२८ ४८	३० २३	३१ ५९	३३ ३७	३५ १६
२०	१ २७	२ ५५	४ २२	५ ५०	७ १६	८ ४६	१० १५	११ ४४	१३ १३	१४ ४३	१६ १४	१७ ४५	१९ १७	२० ५०	२२ २३	२३ ५७	२५ ३३	२७ १०	२८ ४१	३० २७	३२ ८	३३ ४९	३५ ३३	३७ १८
२१	१ ३२	३ ४	४ ३६	६ ९	७ ४२	९ १५	१० ४८	१२ २२	१३ ५७	१५ ३२	१७ ७	१८ ४३	२० २०	२१ ५८	२३ ३७	२५ १७	२६ ५८	२८ १४	३० २३	३२ ८	३३ ५४	३५ ४१	३७ ३१	४९ २२
२२	१ ३७	३ १४	४ ५१	६ २८	८ ६	९ ४४	११ २२	१३ १	१४ ४०	१६ २०	१८ १	१९ ४२	२१ २५	२३ ८	२४ ५२	२६ ३७	२८ २३	३० ११	३१ ५९	३३ ४९	३५ ४२	३७ ३५	३९ ३०	४१ २७
२३	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३२	१० १४	११ ५७	१३ ४१	१५ २५	१७ १०	१८ ५६	२० ४२	२२ ३०	२४ १८	२६ ६	२७ ५६	२९ ५०	३१ ४२	३३ ३७	३५ ३३	३७ ३१	३९ ३०	४१ ३१	४३ ३४
२४	१ ४७	३ ३४	५ २१	७ ८	८ ५६	१० ४४	१२ ३२	१४ २१	१६ ११	१८ १	१९ ५२	२१ ४३	२३ ३६	२५ ३०	२७ २४	२९ २०	३१ १८	३३ १५	३५ १५	३७ १८	३९ २२	४१ २७	४३ ३५	४५ ४४
२५	१ ५२	३ ४४	५ ३६	७ २८	९ २१	११ १४	१३ ८	१४ ५९	१६ ५७	१८ ५२	२० ४८	२२ ४५	२४ ४३	२६ ४२	२८ ४३	३० ४४	३२ ४७	३४ ५२	३६ ५७	३९ ५	४१ १४	४३ २६	४५ ४०	४७ ५६
२६	१ ५७	३ ५४	५ ५२	७ ४९	९ ४७	११ ४५	१३ ४४	१५ ४३	१७ ४३	१९ ४४	२१ ४६	२३ ४८	२५ ५२	२७ ५६	३० २	३२ ९	३४ १८	३६ २८	३८ ४०	४० ५४	४३ १३	४५ २८	४७ ४८	५० १०
२७	२ २	४ ५	६ ७	८ १०	१० १३	१२ १७	१४ २१	१६ २६	१८ ३१	२० ३७	२२ ४४	२४ ५२	२७ २	२९ १२	३१ २३	३३ ३६	३५ ५१	३८ ६	४० २५	४२ ४५	४५ ७	४७ ३२	४९ ५८	५२ २७
२८	२ ७	४ १५	६ २३	८ ३१	१० ४०	१२ ४९	१४ ५९	१७ ८	१९ १९	२१ ३१	२३ ४४	२५ ५७	२८ १२	३० २८	३२ ४६	३५ ५	३७ २५	३९ ४८	४२ १२	४४ ३८	४७ ६	४९ ३८	५२ ११	५५ ४७
२९	२ १३	४ २६	६ ४०	८ ५३	११ ७	१३ २२	१५ ३७	१७ ५२	२० ९	२२ २६	२४ ४४	२७ ४	२९ २५	३१ ४८	३४ १०	३६ ३५	३९ २	४१ ३०	४४ १	४६ ३३	४९ ८	५१ ४६	५४ २७	५७ ९
३०	२ १९	४ [illegible]	६ ५६	९ १५	११ ३५	१३ ५५	१६ १६	१८ ३७	२१ ०	२३ २२	२५ ४६	२८ १२	३० ३९	३३ ६	३५ ३६	३८ ७	४० ४०	४३ १५	४५ ५२	४७ ३१	५१ १३	५३ ५७	५६ ४५	५९ ३५
३१	२ २४	४ ४९	७ १३	९ ३७	१२ २	१४ २९	१६ ५३	१९ २२	२१ ५०	२४ २१	२६ ५०	२९ २१	३१ ५४	३४ २७	३७ ४	३९ ४१	४२ २१	४५ २	४७ ४६	५० ३२	५३ २०	५६ १२	५९ ६	६२ ४
३२	२ ३०	५ ०	७ ३०	१० १	१२ ३२	१५ ४	१७ ३६	२० ७	२२ ४३	२५ १८	२७ ५४	३० ३२	३३ १०	३५ ५०	३८ ३३	४१ १६	४४ ३	४६ ५१	४९ ४२	५२ ३५	५५ ३१	५८ ३०	६१ ३१	६४ ३६
३३	२ ३६	५ १२	७ ४६	१० २५	१३ २	१५ ३९	१८ १६	२० ५७	२३ ३७	२६ १८	२९ ०	३१ ४४	३४ ३०	३७ १६	४० ५	४२ ५६	४५ ४८	४८ ४४	५१ ४०	५४ ४१	५७ ४४	६० ५१	६३ ५७	६७ १३
३४	२ ४२	५ २४	८ ५	१० ४९	१३ ३२	१६ १६	१९ ०	२१ ४५	२४ ३२	२७ १९	३० ६	३३ ५८	३५ ४९	३८ ४४	४१ ३९	४४ ३६	४७ [illegible]	५० ३७	५३ ४३	५६ ५१	६० १	६३ १५	६६ ३३	६९ ५४
३५	२ ४८	५ ३६	८ २५	११ १४	१४ २	१६ ५३	१९ ४४	२२ ३५	२५ २६	२८ २२	३१ १९	३४ [illegible]	३७ १३	४० १३	४३ १५	४६ १९	४९ २७	५२ ३६	५५ ४५	५९ ४	६२ २२	६५ ४४	६९ १०	७२ ४०
३६	२ ५४	५ ४९	८ ४४	११ ३९	१४ ३४	१७ ३१	२० २८	२३ २७	२६ २६	२९ २७	३२ २९	३५ ३२	३८ ३७	४१ ४५	४४ ५२	४८ ६	५१ २०	५४ ३७	५७ ५७	६१ २०	६४ ४६	६८ १७	७१ ५१	७५ ३०
३७	३ १	६ २	९ ३	१२ ५	१५ ७	१८ १०	२१ १४	२४ १९	२७ २५	३० ३३	३३ ४१	३६ ५२	४० ५	४३ १९	४६ ३६	४९ ५५	५३ १७	५६ ४१	६० ७	६३ ४०	६७ १५	७० ५४	७४ ३७	७८ २४
३८	३ ८	६ १५	९ २३	१२ ३२	१५ ४१	१८ ५०	२२ १	२५ १३	२८ २६	३१ ४१	३४ ५६	३८ १४	४१ ३४	४४ ५४	४८ २०	५१ ४७	५५ १७	५८ ४९	६२ २५	६६ ५	६९ ४८	७३ ३६	७७ २८	८१ २५

सारणी द्वारा चर बनाने का उदाहरण– काशी का अक्षांश २५°।१८ (उत्तर) अभीष्ट दिन की रविक्रान्ति (उत्तरा) २१°।४० सारिणी में ऊपर क्रान्त्यंश और बायीं ओर अक्षांश दिये गये हैं। चर सारिणी में ऊपर २२ अंक के नीचे तथा बायीं ओर के २५ अंक के सामने ४३।२६ तथा ऊपर के २१ अंक के नीचे तथा बायी ओर २५ अंक के सामने ४१।१५ मिले, दोनों का अन्तर करने पर (४३।२६-४१।१५) मिनटादि २।११ अर्थात् १३१ सेकेण्ड हुए। अब यहाँ अनुपात किया कि ६० कला में १३१ सेकेण्ड प्राप्त होते हैं तो ४० कला में कितने सेकेण्ड प्राप्त होंगे। फलस्वरूप ८७ सेकेण्ड अर्थात् १ मिनट २७ सेकेण्ड मिले, इन्हें ४१।१५ में युक्त किया तो ४२।४२ मिनटादि हुए। अब ऊपर के २२ अंक के नीचे एवं बायीं ओर के २६ अंक के सामने ४५।२८ तथा २१ अंक के नीचे २६ अंक के सामने ४३।१० मिले। दोनों का अन्तर करने पर (४५।२८-४३।१०) मिनटादि २।१८ अर्थात् १३८ सेकेण्ड मिले। पूर्व की भाँति अनुपात किया कि ६० कला में १३८ सेकेण्ड तो ४० कला में क्या? फलस्वरूप ९२ सेकेण्ड अर्थात् १ मिनट ३२ सेकेण्ड मिले। इन्हें ४३।१० में युक्त किया तो ४४।४२ मिनटादि हुए। ४४।४२ में से ४२।४२ को घटाने पर २ मिनट अर्थात् १२० सेकेण्ड अन्तर आया, फिर पूर्ववत् अनुपात किया कि ६० कला में १२० सेकेण्ड में तो १८ कला में क्या ? फलस्वरूप ३६ सेकेण्ड मिले इन्हें ४२।४२ में जोड़ने पर ४३ मिनट १८ सेकेण्ड चर के रूप मे २५।१८ अक्षांश और २१।४० क्रान्त्यंश से प्राप्त हुए।

रविक्रान्ति उत्तरा होने से चरमिनटादि ४३।१८ को ६ घण्टे में युक्त किया तो अभीष्ट दिन का सूर्यास्त का स्थानिक समय ६ घण्टा ४३ मिनट १८ सेकेण्ड तथा इसे १२ घण्टे में घटाने से ५ घण्टा १६ मिनट ४२ सेकेण्ड सूर्योदय का समय हुआ। सूर्यास्त घण्टादि का ढाई गुना करने पर १६-४८-१५घट्यादि दिनार्ध हुआ, दिनार्ध को दूना करने पर घट्यादि ३३।३६।३० दिनमान हुआ जो स्वल्पान्तर से ३३ घटी ३७ पल मानने योग्य है। इस (दिनमान) को ६० घटी में से घटाने पर २६ घटी २३ पल रात्रिमान हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र का चर सूर्योदयास्त दिन-रात्रिमान ज्ञात किया जाना चाहिए।

होरालग्न के आनयन की विधि– इष्टकाल की घटियों को २ से गुणा कर उसमें ५ से भाग देने पर जो शेष बचे उसे पलात्मक बना कर १० से विभक्त करें, इस प्रकार घटी-पल में जो भजनफल प्राप्त हो उसे जन्मसमय के स्पष्ट सूर्य में युक्त करने पर स्पष्ट होरा लग्न होता है।

रोग में विचार के लिए त्रिनाड़ी चक्र– यदि सूर्य और चन्द्रमा इस त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी के नक्षत्र में हो तो रोग उत्पन्न होने पर मृत्यु की सम्भावना रहती है।

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	श्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.
धनिष्ठा	श्रवण	उ.षा.
शतभिषा	पू.भा	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

जन्मसमय के अनुसार दीर्घादिभेद से तीन प्रकार आयुबोधकचक्र

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चरराशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश	चरराशि में लग्नेश स्थिरराशि में अष्टमेश	चरराशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश
स्थिरराशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश	स्थिरराशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश	स्थिरराशि में लग्नेश स्थिरराशि में अष्टमेश
द्विस्वभाव राशि में लग्नेश स्थिरराशि मे अष्टमेश	द्विस्वभाव राशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश	द्विस्वभाव राशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश

चक्र द्वारा आयुनिर्णय की विधि– १- जन्मलग्नेश तथा अष्टमेश की स्थिति के द्वारा, २-जन्म-लग्न और चन्द्रमा की स्थितियों द्वारा, ३-जन्मलग्न एवं होरा लग्न की स्थितियो द्वारा, तीनों प्रकार से विचार करते हुए आयु का निर्णय करना चाहिए। तीनों प्रकार से यदि एकरूपता हो तो उसी आयु को ग्रहण करना चाहिए। यदि दो प्रकार एकरूपता और एक प्रकार भिन्नता हो तो दो प्रकार एकरूपता वाली आयु ग्रहण करना चाहिए तथा यदि तीनों प्रकार भिन्न-भिन्न आयु आती हो तो जन्मलग्न और होरालग्न द्वारा आयी हुई आयु ग्रहण करना चाहिए, किन्तु तीनो प्रकार भिन्न-भिन्न आयु आती हो और यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तमभाव में हो तो जन्मलग्न और होरालग्न से आने वाली आयु न ग्रहण कर जन्मलग्न और चन्द्रमा द्वारा आयी हुई को ही ग्रहण करना चाहिए। यदि शनि योगकारक हो तो कक्ष्याह्रास होता है अर्थात् दीर्घायु में मध्यमायु, मध्यमायु में अल्पायु और अल्पायु में बहुत स्वल्पायु होती है। किन्तु शनि स्वराशि या अपने उच्च में स्थित हो तो कक्ष्या ह्रास नहीं होता है। लग्न और सप्तम के अष्टमेशों में जो बली हो, वह केन्द्र में स्थित हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यमायु, आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है।

सारिणी द्वारा आयु स्पष्ट करने हेतु उदाहरण– जन्मलग्न ६/१२/१५/२०, होरालग्न ७/२/८/१०, चन्द्रमा ३/५/१०/८, लग्नेश और अष्टमेश शुक्र ७/१४/२०/८ है। यहाँ लग्नेश और अष्टमेश दोनों शुक्र ही है। शुक्र स्थिर राशि में है इस कारण अल्पायुयोग हुआ। जन्मलग्न और चन्द्रमा दोनो चर राशियों में है। इस कारण दीर्घायु योग हुआ। चर राशि में जन्मलग्न है और स्थिर राशि होरालग्न होने से मध्यम आयु योग हुआ यहाँ तीनों तरह से भिन्न-भिन्न आयु आने से तथा लग्न अथवा सप्तम में चन्द्रमा के न रहने से जन्मलग्न और होरालग्न से प्राप्त मध्यमायु ही ग्राह्य है। क्रमश: जन्मलग्न और होरालग्न के अंशादिकों का योग=१२।२५।२०+२।८।१०=१४°।२३'।३०" हुआ। दो योग कारक होने से उक्त अंशादिकों के योग में दो से भाग दिया तो ७°।११'।४५" आया। ७° से प्राप्त ७ वर्ष ५ मास १८ दिन, ११' से प्राप्त २ मास १० दिन २४ घटी तथा ४५" से ४ दिन ४८घटी ० पल प्राप्त हुआ इन सभी का योग करने पर ७वर्ष ८मास ३दिन १२घटी योग हुआ। इन वर्षादिकों को मध्यमायु के ६४ वर्षों में से घटाने पर ५६ वर्ष ३ मास २६ दिन ४८ पल स्पष्ट प्रमाण सिद्ध आयु हुई।

॥ निधनार्क-निधनेन्दु-निधनलग्न विचार ॥

निधनार्क ज्ञान–जातक की मृत्यु का सौर-मास निश्चय करने के लिए निधनार्क की आवश्यकता होती है। अष्टमेश जिस द्वादशांश में हो उस राशि से त्रिकोण (५,९ स्थान) में गोचर भ्रमणवश जब राहु हो तथा अष्टमेश से जब सूर्य त्रिकोण (५,९) राशि में गोचर भ्रमणवश रहे तब मृत्यु होती है। इस प्रकार मृत्यु के मास का ज्ञान होगा। दिन और समय के ज्ञान के लिए स्पष्टसूर्य की राशि, अंश, कला को कलात्मक बनाकर दो स्थानों में लिखें, तथा स्पष्ट राहु की राशि अंश, कला को कलात्मक बनाकर कलात्मक सूर्य से गुणा करके उसमें २१६०० का भाग देने पर लब्ध घट्यादि को द्वितीय स्थान पर स्थापित कलात्मक सूर्य पिण्ड में जोड़ने पर जो कलात्मसंख्या प्राप्त हो उसकी राश्यादि बनाने पर जो राश्यादि स्पष्ट सूर्य प्राप्त हो वही निधनार्क होता है। इस निधनार्क के राशि, अंश जिस मास मे जिस दिन मिले उस दिन सूर्य की कला-विकला से इष्ट समय निकाल कर मृत्यु समय जाने।

उपरोक्त राहु और सूर्य द्वारा की गई क्रिया की भाँति मङ्गल और सूर्य द्वारा क्रिया करने से जो राश्यादि सूर्य प्राप्त हो वह तथा उससे नवम-पंचम में स्थित गोचर का सूर्य भी क्लेश कष्ट या मृत्युकारक होता है।

निधनचन्द्रज्ञान- अष्टमेश-स्थित राशि से त्रिकोण (५,९) राशि में अथवा अष्टमेशस्थ नवांश से ५।९ नवांशराशि में जब चन्द्रमा गोचर भ्रमणवश संचार करे तथा चन्द्रराशि की रेखासंख्या (समुदायाष्टक वर्ग में) स्वल्प हो तो निश्चय मृत्यु कहना चाहिए। समय-ज्ञान की विधि पूर्ववत् जाने।

निधनलग्नज्ञान- १- जन्मलग्न अथवा जन्म कालीन चन्द्रमा जिस नवांश में हो, उससे ६४ वी- नवांश राशि की लग्न में मृत्यु जानना। अथवा

२- लग्न या अष्टमभाव के त्रिकोण (५,९) राशि की लग्न में से जिस राशि में (समुदायाष्टकवर्ग में) अल्प रेखा हो उस राशि के स्वामी की दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु जानना चाहिए।

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु अंशफल बोधक सारिणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु कलाफल बोधक सारिणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	११
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु विकलाफल बोधक सारिणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	६
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जातक परिजात ग्रन्थ के अनुसार आयु विचार- अष्टमेश व्यय अथवा षष्ठ भाव में पाप ग्रह से युक्त होकर बैठा हो तो जातक अल्पायु होता है। या द्वादश में अष्टमेश निर्बल होकर लग्नेश के साथ हो तो जातक अल्पायु होता है। दशमेश अष्टमेश तथा लग्नेश बली हो इनसे शनि का योग न हो तो जातक दीर्घायु होता है। उक्त दशमेश, अष्टमेश तथा लग्नेश में दो बली हो और शनि का योग न हो तो मध्यमायु होता है तथा एक बली हो तो अल्पायु यदि तीनों निर्बल हो तो अनायु होता है। अष्टमेश यदि पाप गृह में होते हुए दुःस्थान मे होकर पाप ग्रह से युक्त होता अल्पायु होता हैं। वही अष्टमेश यदि शुभग्रह से युक्त तथा शुभ राशि में हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट होकर अष्टमस्थ हो तो दीर्घायु होता हैं। लग्नेश अष्टमस्थ हो या अष्टमेश पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर अस्तंगत हो अथवा शत्रुगृही हो तो जातक आयु हीन होता है। अष्टमेश अपनी उच्च राशि में शुभ ग्रह से युक्त हो, केन्द्र-त्रिकोण में हो तो दीर्घायु होता है अथवा अष्टमेश अष्टमस्थ लग्नेश लग्नस्थ हो तो जातक दीर्घायु होता है। लग्न से द्वादशेश अपनी राशि में बलवान हो तो जातक दीर्घायु तथा सुखी होता है। लग्नेश व अष्टमेश बलवान हो, केन्द्र में हो तो भी जातक दीर्घायु होता हैं। अष्टमेश अपने स्थान में हो तो जातक दीर्घायु होता है। लग्नेश व अष्टमेश दोनों षष्ठस्थ या द्वादशस्थ हों तो जातक दीर्घायु होता है।

॥ योगिनियों की दशा-अन्तर्दशा ज्ञानार्थचक्र ॥

मङ्गला १			पिङ्गला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			सङ्कटा ८		
आर्द्रा चित्रा श्रवण			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य विशा. शत.			अश्वि.श्ले.अ. पू.भा.			भर.मघा.ज्ये. उ.भा.			कृत्ति.पू.फा. मू. रेव.			रोहि. उ.फा. पू.षा.			मृग. हस्त उ.षा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ०	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	२०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	१	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि	१८	२०

॥ ग्रहों की विंशोत्तरीया महादशा-अन्तर्दशाबोधक चक्र ॥

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ., उ.फा. उ.षा अन्तर्दशा				रोहि., हस्त, श्रवण अन्तर्दशा				मृ., चित्रा, ध. अन्तर्दशा २१			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा, स्वा., शत. अन्तर्दशा				पुन., वि., पू.भा. अन्तर्दशा				पुष्य, अनु., उ.भा. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्र दशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती अन्तर्दशा				मघा., मू., अश्वि. अन्तर्दशा				पू.फा. पू.षा. भर. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

॥ ग्रहों के अष्टकवर्गज्ञानार्थ सारिणी ॥

सूर्याष्टकवर्गाङ्क ४८								चन्द्राष्टकवर्गाङ्क ४९								भौमाष्टकवर्गाङ्क ३९								बुधाष्टकवर्गाङ्क ५४							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	ल.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३	१	२	१	१	३	३	३	३	१	३	६	६	१	३	३	१	१	६	१	१	५	२	१	१
२	६	२	५	६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	६	२	५	१०	८	४	५	६	३	३	८	२	२	६	४	२	२
४	१०	४	६	९	१२	४	६	६	५	४	७	५	६	७	१०	४	६	११	११	७	६	११	६	५	११	३	४	९	६	४	५
७	११	७	९	११		७	१०	७	६	५	८	७	११	८	११	७	११	१२	१२	८	१०		१०	६	१२	४	७	११	८	७	६
८		८	१०			८	११	१०	९	७	१०	९		१०		८				९	११		११	९		५	८	१२	१०	८	८
९		९	११			९	१२	११	१०	८	११	१०		११		१०				१०				१०		८	९		११	९	१०
१०		१०	१२			१०			११	१०	१२	११				११				११				११		९	१०			१०	११
११		११				११				११														१२		११	११			११	

गुर्वष्टकवर्गाङ्क ५६								शुक्राष्टकवर्गाङ्क ५२								शन्यष्टकवर्गाङ्क ३९								लग्नाष्टकवर्गाङ्क ४९							
बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	ल.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	ल.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	२	३	१	२	१	१	१	१	३	८	१	३	३	५	१	३	१	३	३	६	५	६	१	३	३	३	१	१	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२	२	४	११	२	५	५	८	२	५	२	६	५	८	६	११	३	६	४	६	३	२	२	२	३
३	६	६	३	७	४	४	४	३	५	१२	३	६	६	९	३	६	४	११	६	९	११	१२	४	१०	६	१०	६	४	४	३	४
४	९	१२	४	९	७	५	५	४	८		४	९	९	१०	४	११	७		१०	१०	१२		६	११	१०	११	१०	६	५	४	६
७	१०		७	११	८	६	६	५	९		५	११	११	११	५		८		११	११			१०		११		११	८	६	५	१०
८	११		८		१०	९	७	८	१०		८	१२			८		१०		१२	१२			११		१२			१०	७	८	११
१०			९		११	१०	९	९	११		९				९		११											११	९	९	
११			१०			११	१०	१०			११				११														१०	११	
			११				११	११			१२																		११		

ग्रहों के गुणक अङ्क :- सू. ५, चं. ५, मं. ८, बु. ५, बृ. १०, शु. ७, श. ५.
राशियों के गुणक अङ्क :- मे. ७ वृ. १०, मि. ८, क. ४, सिं. १०, क. ५, तु. ७, वृ. ८, ध. ९, म. ५, कु. ११, मी. १२.
रेखाओं के फल :- १ क्लेश , २ धनहानि, ३ प्रवास-कष्ट, ४ समता, ५ सुख, ६ धनप्राप्ति , ७ परम आनन्द, ८ कार्यसिद्धि व समृद्धि सुख।

।।नवीन (वेध सिद्ध) वर्षमान के अनुसार वर्ष प्रवेशसारिणी।।

गतवर्ष सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०
गतवर्ष सं०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गतवर्ष सं०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५२	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०

।।प्राचीन वर्षमान के अनुसार वर्ष प्रवेशसारिणी।।

गतवर्ष सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गतवर्ष सं०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गतवर्ष सं०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	१६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विफल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ताजिकमतानुसार ग्रहों के दृग्बल आनयन की सारिणी

रा०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
० मे०	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गु०२ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ०
१ वृ०	०	१	२	४	५	६	८	९	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३८	गु०४ ह०३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	ध०
२ मि०	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५	३४	३३	३२	३१	३०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१६	१५	गु०५ ह०६
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	ऋ०
३ क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गु०१ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध०
४ सिं०	४५	४३	४२	४०	३९	३७	३६	३४	३३	३१	३०	२८	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	९	७	६	४	३	१	गु०३ ह०२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ऋ०
५ क०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गु०२ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध०
६ तु०	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गु०२ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ०
७ वृ०	०	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४३	गु०३ ह०२
	०	३०	०	३०	०		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ध०
८ ध०	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	गु०१ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ०
९ म०	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	गु०१ ह०६
	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	ऋ०
१० कुं०	१०	९	९	९	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	गु०१ ह०३
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	ऋ०
११ मी०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गु०२ ह०१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध०

दृश्यग्रह में से द्रष्टा ग्रह को हीन कर शेष राश्यादि का कला-विकला करके उसमें गुणक से गुणा कर हर से भाग देने से धन, ऋण रूप में जो प्राप्त हो उसका संस्कार करने पर जो स्पष्ट फल प्राप्त हो वही ग्रह का दृक्फल होता है।

वर्षेश निर्णय के लिए पञ्चाधिकारी

१	जन्मलग्नपति।	४	मुंथहापति।
२	वर्षलग्नपति।	५	दिनमें सूर्य राशीश
३	त्रिराशिपति।	६	रात्रिमें सूर्य राशीश

वर्षमुद्दा दशा का बारहवाँ भाग मासदशामान होता है।

।। अथ त्रिराशिपति चक्र ।।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिवा
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श	शु.	श.	मं.	बृ.	च.	रात्री

वर्षेशनिर्णय– ऊपर सारिणी में दर्शाये हुए वर्षेश के पञ्चाधिकारी गणो मे जो सबसे अधिक बलवान होकर लग्न को देखता है वही वर्षेश होता है। यदि कोई ग्रह बलवान होता हुआ भी लग्न को न देखता हो तो वह वर्षेश नहीं होता है। यदि पञ्चाधिकारी ग्रह बलवान होकर लग्न को देख रहे हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि होती है वही वर्षेश होता है। यदि सबकी समान दृष्टि हो व सभी निर्बल हों तो मुन्थहालग्न का स्वामी वर्षेश होता है। पाँचो अधिकारियो में अगर कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो सबसे अधिक बलवान ग्रह ही वर्षेश हो जाता है। कुछ आचार्यों के अनुसार बलादि साम्य रहने पर रात्रि के वर्ष प्रवेश में चन्द्र राशिपति वर्षेश होता है। अथवा— यदि कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो वर्ष लग्नेश ही वर्षेश हो जाता है।

वर्ष में अरिष्टज्ञानार्थ त्रिपताकी चक्र– वर्षप्रवेश काल मे गत वर्ष की संख्या में एक जोड़कर ९ से भाग देने पर प्राप्त शेष राशि तुल्य स्थान अपनी राशि से चन्द्र को आगे बढ़ाकर त्रिपताकी चक्र मे रखना चाहिए। इसी तरह गत वर्ष की संख्या मे ४ का भाग देने से शेष संख्या तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्मकालिक ग्रह आगे हो जाते है। इस चक्र में लग्न एवं चन्द्र अशुभग्रह से विद्ध हों तो अशुभ फल होता है। **मुंथहानयन-** जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष में एक-एक राशियों की वृद्धि से मुंथहा भ्रमण करती है।

वर्ष-कुण्डली में तन्वादिद्वादश भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	क्लेश, चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रम और धन का लाभ	हानि, पीड़ा, भय	रोगभय, पुत्रनाश	शत्रुनाश सुख	संकट, पीड़ाभय	शोक, भय, कष्ट	धर्मवृद्धि, राज्यप्रद	सुखाप्ति, राज्यलाभ	सुखार्थ, लाभ	उद्वेग, पीड़ा
चन्द्र	कफज्वर, पीड़ा	नेत्र कष्ट, धनाप्ति	हर्ष, धन प्राप्ति	शत्रुनाश सुख	सुख, सद्बुद्धि	अङ्गपीड़ा व्यय	ज्वर, भय	विविध कष्ट, भय	पुण्योदय, धनागम	सुकर्म, जय प्राप्ति	यशलाभ, धनलाभ	व्यय, नेत्र कष्ट
मंगल	वातव्याधि, फोड़ाफुंसी	नेत्र, रोग धनहानि	नैरुज्य, धनलाभ	व्यसन, रोगभय	पुत्राप्ति, कुबुद्धि	सुख, शत्रुनाश	स्त्रीनाश, कष्ट	फोड़ा, फुंसी ज्वर	पुण्योदय, धनाप्ति	राज्यार्थ, लाभ	धनादि लाभ	कर्ण पीड़ा विरोध
बुध	धनलाभ सुख	सुख, द्रव्य प्राप्ति	सुख, सम्मान	सुख, द्रव्य लाभ	पुत्र-धन-सुख की प्राप्ति	रोगभय, कलह	धनागम, सुख	व्यग्रता, कफरोग	धन व यश की प्राप्ति	मान, सुख आदि का लाभ	सुख, जय प्राप्ति	शत्रु, मद रोग से भय
गुरु	सुख-यश अर्थ लाभ	कीर्ति तथा धनलाभ	विजय, सुख	वाहन, प्राप्ति, सुख	पुत्र-प्राप्ति सुख	शत्रु उत्पत्ति, भय	सुख, धनप्राप्ति	कठिनरोग का भय	सुख, भाग्यवृद्धि	राज्य, धन का लाभ	पुत्र-अर्थ लाभ	शोक, रोग शत्रुभय
शुक्र	सम्मान, धनलाभ	धनप्राप्ति राज्यसुख	कीर्तिवृद्धि, अर्थागम	सुख, द्रव्यलाभ	धनागम, सुख	कष्ट, शत्रुभय	स्त्री-सुख	ज्वर-पीड़ा, भय	धर्म, धनागम	सम्मान, विजय लाभ	शान्ति, अर्थलाभ	व्यय अलाभ
शनि	रिपुभय, वातरोग	पीड़ा, भय विरोध	धनप्राप्ति, विजय	सुखार्थ का नाश कष्ट	पुत्र-हानि, पीड़ा	धन प्राप्ति, रोगनाश	स्त्री कष्ट कलह	दुःख रोग, भय	भाग्यवृद्धि, शत्रुनाश	धनहानि, पीड़ा, भय	धन लाभ	क्लेश, चिन्ता
राहु	शिरोरोग, कलह	राजभय, पीड़ा	शत्रुनाश, शुभ	वातरोग, दुःख	धनक्षय, बुद्धिनाश	आरोग्य, शत्रुक्षय	पीड़ा, भय, धन हानि	धनहानि, रोगभय	धन, धर्म वृद्धि	वाहन नाश, जय	अपुत्रता, सुलाभ	व्याधि, भय
केतु	पीड़ा, भय, चिन्ता	क्लेश, धन-क्षय	धर्मलाभ, आरोग्य	कष्ट, राजभय	पीड़ा, भय, दुर्बुद्धि	सुख, धनागम	क्लेश, रोग	ज्वरादि से कष्ट	भाग्य, यश-अर्थ-लाभ	कीर्ति धनलाभ	सुखार्थ सुख लाभ	शोक रोग भय
मुंथा	सुख, शत्रुनाश	सुयश, अर्थागम	कार्यपुष्टि, धनादि	शरीरपीड़ा, दुःख	सुबुद्धि, सुखप्राप्ति	रोगभय धर्मनाश	रोग भय व्यसन	दुर्व्यसन रोगभय	भाग्योदय	राज्य सुख धनाप्ति	धर्मार्थ-लाभ	सुव्यय

।। वर्ष मुद्दादशाचक्र ।।

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	चं	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिवस

गतवर्ष सं० में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर योग में २ घटाकर ९ से भाग देने पर शेष संख्यक विंशोत्तरी क्रम से सूर्यादिग्रहो की दशा होगी। वर्षारम्भकालिक भयात भभोग के द्वारा दशा का भुक्त भोग्य निकालकर जन्म की विंशोत्तरी दशा की भाँति इसका भी दशा चक्र बनाकर फल को समझना चाहिए।

हद्दाचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंश
बृ०	शु०	बु०	मं०	बृ०	बु०	श०	मं.	बृ०	बु०	शु०	शु.	स्वामी
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अंश
शु०	बु०	शु०	शु०	शु.	शु.	बु०	शु०	शु०	बृ०	बु०	बृ०	स्वामी
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अंश
बु०	बृ०	बृ०	बु०	श०	बृ०	बृ०	बु०	बु०	शु०	बु०	बु०	स्वामी
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अंश
मं०	श०	मं०	बृ०	बु०	मं०	शु.	बृ०	मं.	श०	मं०	मं०	स्वामी
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अंश
श.	मं०	श०	श०	मं०	श०	मं०	श०	श०	मं०	श०	श.	स्वामी

।।अथ द्रेष्काण चक्र।।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अंश
मं.	बु	बृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	१०
र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	बृ.	२०
शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	३०

।।स्वगृहादिबलविभाग चक्र।।

०	स्व०	मित्र	सम	शत्रु
ग्रह	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काण	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवांश	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५

उत्तर अक्षांश २५°/१८'. अयनांश २४°/००

काशी की लग्न सारिणी

यह लग्नसारिणी इलाहाबाद, चित्रकूट, गाजीपुर, छपरा, झरिया, प्रतापगढ़, पुर्णिया, भागलपुर, मिर्जापुर, बलिया, बाँदा, बूँदी, कुदरा, जहानाबाद, पन्ना, मुंगेर, डुमराव, नालंदा, शाहाबाद, सहसराम, आदि स्थानों के लिए भी उपयोगी है।

		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७		४१	५१	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८
२२	०	४९	११	३३	५५	१७	३९	१	२३	४५	१५	४९	७	३३	५९	२५	५१	१७	४३	९	३५	१	२७	५३	१९	४५	११	३७	३	२९	५५
०	वृ०	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८		५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५६	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९
२६	१	२१	४७	१३	३९	५	३१	४७	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९
०	मि०	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०		४९	५९	९	१९	४०	११	४०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११
८	२	२७	३५	४३	५१	७	४७	१५	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११
०	क०	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११		२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५
२४	३	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३
०	सिं०	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११		६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	०	१२	२३	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३३
३०	४	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३
०	क०	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११		४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	५	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४५	५६	८
१०	५	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३
०	तु०	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११		१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०
१०	६	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३
०	वृ०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११		१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३
३०	७	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११
०	ध०	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११		४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१४	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७
२४	८	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९
०	म०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०		५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८	६	१४	२३	३१	४०	४८	५७	५	१३
८	९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४१	७	३३	५९	२५	५१	१७	४३	९	३५	१	२७	५३	१९	४५	११	३७	३	२९	५५
०	कुं०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८		२२	३०	३९	४७	५६	४	१२	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१२	२०	२७	३५	४२	४९	५७	४	११	१९	२६	३३	४१	४८	५६	३
२६	१०	२१	४७	१३	३९	५	३१	५७	२३	४५	७	२९	५१	१३	३५	५७	१९	४१	३	२५	४७	९	३१	५३	१५	३७	५९	२१	४३	५	२७
०	मी०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
[illegible]		१०	१८	२५	३२	४०	४७	५५	२	९	१७	२४	३१	३९	४६	५३	१	८	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३७	४४
[illegible]	११	४९	११	३३	५५	१७	३९	१	२३	४५	७	२९	५१	१३	३५	५७	१९	४१	३	२५	४७	९	३१	५३	१५	३७	५९	२१	४३	५	२७

लग्न स्पष्ट करने की विधि– जन्मकालिक सूर्य के राश्यंश के समान वाले कोष्ठक के घटी, पलादि में इष्टकाल के घटी-पल को जोड़ने से प्राप्त संख्या को लग्नसारिणी में देखने पर जहां भी उस संख्या अथवा उसके निकट की संख्या है। उसकी बाईं ओर लग्न की राशि और ऊपर लग्न के अंश होंगे। अनुपात से कला-विकला भी निकाला जा सकता है।

।। दिन-रात्रि में वर्ष-प्रवेश होने के कारण साधन की गणित-क्रिया में भिन्नता वाले सहमों की सारिणी ।।

सहमों के नाम	दिन में वर्षप्रवेश होने पर की जाने वाली सहमस्पष्ट हेतु गणित क्रिया	रात्रि में वर्षप्रवेश होने पर सहम स्पष्ट करने हेतु गणित क्रिया
पुण्य सहम	चन्द्रमा में सूर्य हीन कर शेष में लग्नयुक्त करना चाहिए।	सूर्य में चन्द्रमा हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गुरु-विद्यासहम, ज्ञानसहम	सूर्य में चन्द्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	चन्द्र में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
यश सहम, बल सहम तथा देह सहम	बृहस्पति में पुण्य सहम हीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	पुण्य सहम में बृहस्पति हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
मित्र सहम	गुरुसहम में पुण्यसहम हीन कर शेष में शुक्र युक्त करना चाहिए।	पुण्यसहम में गुरुसहम हीन कर शेष में शुक्र जोड़ना चाहिए।
माहात्म्य सहम, शौर्य सहम	पुण्यसहम में मङ्गल हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	मङ्गल में पुण्यसहम हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
आशा सहम	शनि में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शुक्र में शनि हीनकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गौरव सहम	गुरु में चन्द्रमा हीनकर शेष में सूर्य युक्त करना चाहिए।	गुरु में सूर्य हीनकर चन्द्रमा को शेष में युक्त करना चाहिए।
राज सहम, पिता सहम	शनि में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सूर्य में शनि हीनकर लग्न को शेष में युक्त चाहिए।
मातृ सहम, अबुसहम, कान्ति सहम	चन्द्रमा में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शुक्र में चन्द्रमा घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
प्रसूति सहम	गुरु में बुध हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	बुध में गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
शत्रुसहम	मङ्गल में शनि हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में मङ्गल घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
उद्यम सहम, स्थैर्य सहम, जीविका सहम	शनि में गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	गुरु में शनि हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
दरिद्र सहम	पुण्यसहम में बुध हीन कर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।	बुध में पुण्यसहम हीनकर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।
गुरुता सहम	सूर्योच्च (0।10) में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	चन्द्रोच्च (1।3) में चन्द्र हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
जलपथ सहम	कर्कार्द्ध (3।15) में शनि को घटा कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में कर्कार्द्ध (3।15) हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
बन्धन सहम	पुण्यसहम में शनि को घटा कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में पुण्यसहम हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
अपमृत्यु सहम	पुण्यसहम में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सूर्य में पुण्यसहम घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
कर्म सहम	मङ्गल में बुध हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	बुध में मङ्गल घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
सैन्य सहम	गुरु में पुण्य सहमहीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	पुण्यसहम में गुरु हीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
जीवन सहम	शनि में गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	गुरु में शनि हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
क्षमा, कलह सहम	बृहस्पति में मङ्गल घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	मङ्गल में बृहस्पति हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
शास्त्र सहम	बृहस्पति में शनि हीन कर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।	शनि में बृहस्पति हीन कर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।
अन्यकर्म सहम	चन्द्रमा में शनि हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में चन्द्रमा हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
कार्यसिद्धि सहम	शनि में सूर्य हीन कर शेष में सूर्यस्थ राशि का स्वामी जोड़ना चाहिए।	शनि में चन्द्र हीन कर शेष में चन्द्रस्थ राशीश युक्त करना चाहिए।
बन्दक सहम	चन्द्रमा में बुध घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	बुध में चन्द्र को घटा कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
जाड्य सहम	मङ्गल में शनि हीन कर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।	शनि में मङ्गल हीन कर शेष में बुध युक्त करना चाहिए।
सामर्थ्य सहम •	मङ्गल में लग्नेश घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	लग्नेश में मंगल हीन करके शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
मन्मथ सहम ✕	चन्द्र में लग्नेश हीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	लग्नेश में चन्द्रमा हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।

• यदि मङ्गल ही लग्नेश हो तो दिन या रात्रि किसी में वर्ष प्रवेश हो सर्वदा बृहस्पति में से मङ्गल (लग्नेश) घटा कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

✕ यदि चन्द्रमा ही लग्नेश हो तो दिन या रात्रि किसी भी समय वर्ष प्रवेश हो सदैव सूर्य में लग्नेश (चन्द्रमा) घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

दिन-रात्रि में साधन की समान गणित-क्रिया वाले सहमों की सारिणी

भातृ सहम	बृहस्पति में शनि हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	रोग सहम	लग्न में चन्द्रमा हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
पुत्र सहम	बृहस्पति में चन्द्रमा को घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	मृत्यु सहम	अष्टमभाव में चन्द्रमा हीन कर शेष में शनि युक्त करना चाहिए।
बन्धु सहम	बुध में चन्द्रमा को हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	देशान्तर सहम	नवमभाव में नवमेश को हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
अन्यदारा सहम	सूर्य में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	अर्थ सहम	धनभाव में द्वितीयेश को घटा कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
विवाह सहम	शुक्र में शनि घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सन्तापसहम	शनि में चन्द्रमा को घटा कर शेष में षष्ठभाव जोड़ना चाहिए।
श्रद्धा सहम	शुक्र में मङ्गल को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिए।	प्रीति सहम	विद्यासहम(गुरुसहम) में पुण्यसहम घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिये।
व्यापार सहम	मङ्गल में बुध घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	कन्या सहम	शुक्र में चन्द्रमा को घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
स्त्री सहम	सप्तमेश में शुक्र को घटाकर शेष में सप्तमभाव जोड़ना चाहिए।	गज सहम	चन्द्रमा में गुरु को हीन कर शेष में आयभाव जोड़ना चाहिए।
वणिक्सहम	चन्द्रमा में बुध घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	प्रभाव सहम	शुक्र में पुण्य सहम घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गर्भ सहम	ज्ञानसहम (गुरुसहम) में शनि घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	यात्रा सहम	नवमभाव में नवमेश को घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

विशेष— सहमों के स्पष्ट करते समय जो घटाया जाता है, उसे शोध्य तथा जिसमें घटाया जाता है उसे शुद्ध्याश्रय कहते हैं। जोड़ा जाने वाला भाव (लग्नादि) या ग्रह शोध्य और शुद्ध्याश्रय के अन्तर्गत न हो तो सहम में एक राशि युक्त करना चाहिए और यदि शोध्य (घटानेवाले) से शुद्ध्याश्रय (जिसमें घटाया गया हो) के अन्तर्गत आता हो तो एक राशि युक्त नहीं करना चाहिए।

चैत्र में अयनांश साधनार्थ गुणक

एकादि १ गुणोत्तर			दशादि १० गुणोत्तर		
१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

वर्तमान वर्ष के अयनांश में वार्षिक अयनांश गति जोड़ने से अग्रिम वर्ष के आदि का अयनांश होगा। शाके १८०० में अयनांश-२२।८।३३ था। उससे आगे या पीछे का अयनांश जानने के लिए उतने वर्ष के फल का योग-अन्तर कर लेने से अभीष्ट अयनांश होगा।

काशी में राशियों का उदयमान एवं लंकोदयमान

राशियाँ	काश्युदय (पलात्मक)	लंकोदय (पलात्मक)
मेष	२२१	२७८
वृष	२५३	२९९
मिथुन	३०४	३२३
कर्क	३४२	३२३
सिंह	३४५	२९९
कन्या	३३५	२७८
तुला	३३५	२७८
वृश्चिक	३४५	२९९
धनु	३४२	३२३
मकर	३०४	३२३
कुम्भ	२५३	२९९
मीन	२२१	२७८

पलभाज्ञान सारिणी

१	०	१२	२४	३३	७	४७	३१
२	०	२५	९	३४	८	५	३८
३	०	३७	४४	३५	८	२४	७
४	०	५०	२१	३६	८	४३	५
५	१	३	०	३७	९	२	३५
६	१	१५	४०	३८	९	२२	३०
७	१	२८	२३	३९	९	४३	१
८	१	४१	१०	४०	१०	४	९
९	१	५४	०	४१	१०	२५	५३
१०	२	६	५०	४२	१०	४८	१८
११	२	१९	५५	४३	११	११	२४
१२	२	३३	०	४४	११	३५	१८
१३	२	४६	१२	४५	१२	०	०
१४	२	५९	२८	४६	१२	२५	३४
१५	३	१२	५४	४७	१२	५२	७
१६	३	२६	२४	४८	१३	१९	३७
१७	३	४०	५	४९	१३	४८	१७
१८	३	५३	५६	५०	१४	१८	५
१९	४	७	५५	५१	१४	४९	८
२०	४	२२	१	५२	१५	२१	३२
२१	४	३६	२२	५३	१५	५५	३
२२	४	५०	५३	५४	१६	३१	१
२३	५	५	३८	५५	१७	८	१४
२४	५	२०	३	५६	१७	४७	२८
२५	५	३५	४२	५७	१८	२८	४४
२६	५	५१	७	५८	१९	१२	१३
२७	६	६	५२	५९	१९	५८	१८
२८	६	२२	४८	६०	२०	४७	७
२९	६	३९	४	६१	२१	३८	५३
३०	६	५५	४१	६२	२२	३४	६
३१	७	१२	१८	६३	२३	३३	४
३२	७	२९	५३	६४	२४	३६	१३

पलभासाधन – बस्ती का अक्षांश २६।४८। पलभाचक्र में २६ अंश का फल=५।५१।७ तथा अग्रिम २७ अंश का फल=६।६।५२। दोनों फलों का अन्तर=०।१५।४५। × शेष (अक्षांश का कलामान) ४८=७२०।२१६० में ६० से भाग देने पर १२।३६। हुआ। इसफल को २६ अंशवाले फल में जोड़ देने से २६।४८ अक्षांश की स्फुट पलभा ६।३।४३ हुई। इसी तरह सभी स्थानों की पलभासिद्ध हो जायेगी।

दशम सारिणी

(सर्वत्र के लिए उपयोगी)

		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे०	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
९		४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४
१६	०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४
०	वृ०	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
९		३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	४०
५८	१	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०
०	मि०	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९
१०		५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३
४६	२	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०
०	क०	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
१०		१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
४६	३	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४
०	सिं०	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
९		१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२५	३४	४३	५२
५८	४	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०
०	क०	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३
९		२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४४	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	३	१२	२१	३०
१६	५	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०
०	तु०	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
९		४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४
१६	६	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४
०	वृ०	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
९		३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	४०
५८	७	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०
०	ध०	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९
१०		५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३
४६	८	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०
०	म०	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
१०		१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
४६	९	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४
०	कुं०	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
९		१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२५	३४	४३	५२
५८	१०	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०
०	मी०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
९		२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४४	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	३	१२	२१	३०
१६	११	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०

इस सारिणी से दशम लग्न साधन विधि– लग्न सारिणी से सूर्य के राशि-अंश से प्राप्त फल (घट्यादि) में इष्टकाल को जोड़ने पर प्राप्त घट्यादि में से १५ घटी घटा कर शेष घट्यादि फल को इस दशम सारिणी में देखें, जिस, कोष्ठक में उक्त घट्यादि अथवा उसके समीप की घट्यादि प्राप्त हो, उसकी बाईं ओर राशि और ऊपर अंश के तुल्य दशमलग्न राशि अंश होंगे। अनुपात से कला-विकला का आनयन करना चाहिए।

(१) राहुकाल वास

राहुकाल दो प्रकार का होता है।

वार	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि
दिशा	पूर्व	अग्निकोण	दक्षिण	नैर्ऋत्यकोण	पश्चिम	वायु कोण	उत्तर

१- वार (दिन) अनुसार पूर्वादि क्रम से
२- राहुकाल को (यामार्ध) भी कहते हैं।
इसमें विवाह, गृहप्रवेश, युद्ध, यात्रा का निषेध है, अन्य कार्य में नहीं।
राहुकाल जानने की विधि– वार की संख्या में ३ से गुणा कर ८ का भाग देने पर यामार्ध (राहुकाल) होता है।
जैसे रविवार - १

वार १ × ३ = ३

८) ३ (०

३ शेष में १ जोड़ने से ४ यह राहुकाल हुआ।

राहुकाल चक्र

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिशा	४	७	२	५	८	३	६

दिनमान में १६ का भाग देने पर जो लब्धि आयेगी उसको घंटा मिनट बनाकर सूर्योदय में जोड़ने पर राहुकाल का समय होगा। जिसको द्विमुहूर्त भी कहते हैं।

रविवार को ७-८। सोमवार को १३-१४ मुहूर्त। मंगलवार को ३-४ मुहूर्त। बुधवार को ९-१० मुहूर्त। गुरुवार को १५-१६ मुहूर्त। शुक्रवार को ५-६ मुहूर्त तथा शनिवार को ११-१२ मुहूर्त का राहुकाल होता है।
राहुकाल– १।३० घंटा का होता है।
दिनमान- ÷१६=१ मुहूर्त होता है। २ मुहूर्त का एक राहुकाल होता है। जैसे दिनमान ३० घटी है। तो १६) ३० (१।५ २४ मिनट=४५

श्री प्रश्न द्वारा कार्यसिद्धि

अ, क, च इत्यादि वर्गों द्वारा कार्यसिद्धि, नष्ट वस्तु की प्राप्ति तथा चोर की जाति ज्ञान कोई प्रश्नकर्ता ज्योतिषी से प्रश्न करता है कि मेरा कार्य होगा कि नहीं ?

दैवज्ञ (ज्योतिषी) को चाहिए कि अपने इष्ट का ध्यान करके प्रश्नकर्ता से फल, पुष्प या देवता इत्यादि में किसी एक का नाम पूछे। प्रश्नकर्ता के मुख से निकला शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण करें।

जैसे- दैवज्ञ प्रश्नकर्ता से पूछे कि फल या पुष्प का नाम ले। उसने फल में अमरूद कहा। अतः प्रथम अक्षर अ हुआ। इसी प्रकार अन्य में समझें। आम कहा तो भी अ वर्ग में हुआ।

अ, इ, उ, ए, ओ यह अ वर्ग का हुआ।
क, ख, ग, घ, ङ यह क वर्ग का हुआ।
च, छ, ज, झ, ञ यह च वर्ग का हुआ।
ट, ठ, ड, ढ, ण यह ट वर्ग का हुआ।

काल होरा मुहूर्त चक्र

घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
घ.प.	२।३०	५	७।३०	१०	१२।३०	१५	१७।३०	२०	२२।३०	२५	२७।३०	३०	३२।३०	३५	३७।३०	४०	४२।३०	४५	४७।३०	५०	५२।३०	५५	५७।३०	६०
रवि	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
सोम	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंगल	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बुध	बुध	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गुरु	गुरु	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शुक्र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
शनि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

काल होरा का प्रयोजन– निषेध दिन (वार) मे कार्य करना हो तो काल होरा मे कार्य किया जा सकता है। शुभवार के होरा में शुभ कार्य होता है। विशेषकर दिग्शुल में निषेधवार मे यात्रा कालहोरा में की जा सकती है। पूर्व दिशा सोम तथा शनिवार को दिग्शूल है। अन्य वार में यात्रा हो सकती है। आगे इसी प्रकार अन्य वार तथा दिशा में यात्रा होगी।

काल होरा निकालने की विधि– इष्ट घटी को २ से गुणा कर ५ से भाग देने पर जो शेष बचे, उसे द्विगुणित इष्ट में घटाकर १ जोड़ कर सात से भाग देने पर जो शेष बचे वही क्रम से वार होगा। जैसे- १ रविवार २ सोमवार इसी क्रम में आगे समझें।

जैसे–४ घटी पर वार जानना है। ४×२=८। ५) ८ (१ = ८-३=५ + १=६। ७) ६ (० शुक्रवार –२ होरा।
३ (शेष) ... ६ शेष।

दूसरी विधि– जिस दिन का होरा जानना है। १ घंटा पहले वही दिन होगा। जैसे- रविवार को प्रथम रविवार दूसरा, छठवाँ दिन शुक्रवार होगा। इसी प्रकार आगे समझें।

त, थ, द, ध, न यह त वर्ग का हुआ।
प, फ, ब, भ, म यह प वर्ग का हुआ।
य, र, ल, व यह य वर्ग का हुआ।
श, ष, स, ह यह श वर्ग का हुआ।

किसी व्यक्ति ने पूछा कि मेरा कार्य होगा कि नहीं। इस व्यक्ति से फलादि में से किसी एक का नाम पूछे तथा प्रथम अक्षर ग्रहण करे तथा इसके द्वारा उत्तर दें। प्रातःकाल मे फूल, मध्याह्न मे फल, अपराह्न मे देवता तथा सायंकाल में पहाड़ या नदी का नाम पूछें।

अ,च,त,य वर्ग हो तो कहें कार्य की सिद्धि होगी।
क,ट,प,श वर्ग हो तो कहें कि सिद्धि नहीं होगी।

इसी प्रकार लाभालाभ के प्रश्न में भी। अ इत्यादि वर्ग मे लाभ तथा क इत्यादि मे नही होगी।

चोरी गई वस्तु प्राप्त होगी या नहीं।

अ,च,त,य वर्ग में प्राप्त होगी। क, ट, प, श. में नही होगी।

दिशा ज्ञान

अ, क, च, ट, इत्यादि वर्ग क्रम से दिशा जाने। अ पूर्व दिशा, क अग्निकोण, च दक्षिण, ट नैर्ऋत्य कोण, त पश्चिम, प वायव्य कोण, य उत्तर तथा श वर्ग से ईशान कोण जाने। चोरी गई वस्तु उन दिशा में कहें। **जाति ज्ञान तथा स्थान से दूरी–** अ से ब्राह्मण जाति ऊसर भूमि में, क वर्ग से क्षत्रिय यज्ञशाला, भोजनालय में। च वर्ग से वैश्य जाति वन या झाड़ी में। ट वर्ग से सेवक (विश्वासी नौकर), शूद्र जाति। ट वर्ग दास-दासी आधा मील की दूरी पर खर्च करने से प्राप्त। प वर्ग मालिक के पास। य वर्ग शूद्र जाति का, नहीं प्राप्त होगा। श वर्ग वैश्यजाति सिर पर बाल कम होगा उम्र ३५-४० वर्ष।

अंक द्वारा प्रश्न- प्रश्नकर्ता से १ से १०८ के अंदर किसी एक अंक को पूछें। जो अंक प्रश्नकर्ता के मुख से निकले उसको १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल कहें। १,७,९ से कार्य में विलम्ब। ८,४,१०,५ से कार्य नहीं होगा। ३,६,११,१२ से कार्य शीघ्र होगा। तथा २ से कार्य में वृद्धि होगी।

अंकचक्र द्वारा कार्यसिद्धि

१	२	३
६	५	४
७	८	९

प्रश्नकर्ता से कहे अपने इष्ट का ध्यान करके कोष्ठक मे अँगुली रखें। अँगुली रखने पर कोष्ठक मे जो अंक प्राप्त होगा, उसके द्वारा कार्य की सिद्धि जानें। इसका फल—२, ८ पर कार्य नही होगा।
४, ६, कार्य मे द्विविधा है, अर्थात् होगा-नही भी।
३, ७ पर कार्य विलम्ब से होगा।
१, ५, ९ पर अँगुली पड़े तो कार्य शीघ्र होगा ऐसा दैवज्ञ कहें।

प्रसुती लग्न फल

मेष–जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व अथवा पश्चिम मे शिर, उपसूतिका २ या ३, प्रसव मे माता को अधिक कष्ट, पैर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ। बालक जन्म के बाद तेज शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन था ४।११।१६।४४।५८ वर्षों मे बालक को कष्ट होवे। इन वर्षों के आरम्भ मे तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीये।

वृष–माता का शिर दक्षिण मे, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आयी, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण अधोमुख, पैर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से मे सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।१८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक को कष्ट। इन वर्षों के प्रारम्भ मे महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीये।

मिथुन–माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा अथवा जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही तेज शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग मे जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त विचित्र अल्प भोजन किया। दूध कम उतरे। ४।१०।१३।३८।४८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इससे बचे तो १०० वर्ष जीये। कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ समय तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करवाना कल्याणप्रद रहेगा।

कर्क–माता का शिर उत्तर में, उपसूतिका ४ या ५ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, वाम भाग में चिन्ह, पैर के बल जन्म, घर के दक्षिण भाग मे प्रसवस्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मधुर एवं शीतल भोजन किया था। दीपक उठाया गया। बालक के वामांग में लहसन का चिन्ह, बालक जन्म के बाद देर से रोया। ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों मे बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवित रहे। कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ-समय मे तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करवाना कल्याणप्रद होगा।

सिंह–माता का शिर पश्चिम या पूर्व मे, मलिन सा लाल वस्त्र, शुष्क-कसैला या खट्टा भोजन किया था। जन्म समय स्त्री ३ बाद में १ आई। दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही रोया। दक्षिण भाग मे प्रसव स्थान ५।१२।२८।३६।४८ इन वर्षों मे बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मंत्र का जप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या– माता का शिर दक्षिण मे, लाल जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न, बासी भोजन या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५। दीपक हाथ मे उठाया गया, बालक जन्मते ही अल्प रोया। नैर्ऋत्य कोण मे प्रसव स्थान। ४।१५।२३।३५।४५ इन वर्षों मे गोदान, मृत्युञ्जय जपादि और मूँग के लड्डू भोजन कराना श्रेयस्कर है। यदि इन वर्षों मे बचे तो १०० वर्ष जीवित रहे।

तुला–माता का शिर पश्चिम या पूर्व मे श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जला या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या वहाँ एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया। बालक जन्मसमय कुछ रुक कर तेज स्वर करके रोया। घर के पश्चिम भाग मे सूतिका स्थान। ८।१५।३६।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप करना श्रेष्ठ है।
यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीये।

वृश्चिक–माता का शिर दक्षिण या उत्तर म, रक्त या सफेद वस्त्र, अधिक अमधुर क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। घर के पश्चिमी भाग मे प्रसव स्थान, ११।२८।५८।६१ इन कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीये।

धनु–माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पकवान भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान १।१०।१८।२१।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ मे शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७१ वर्ष जीवे।

मकर–माता का शिर दक्षिण मे, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय १ स्त्री पीछे आई। दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग मे पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ मे रुद्राभिषेक, स्वर्णदान, अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीये।

कुम्भ–माता का शिर पश्चिम मे, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या मलिन वस्त्र-मधुर शीत शाकादि भोजन, कष्ट अधिक, जन्म के समय पास मे स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई उनमे से एक स्त्री गर्भिणी थी। दीपक स्वस्थान मे टिका रहा, बालक जन्मोत्तर तेज शब्द से रोया, वामांग मे कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग मे सूतिका गृह २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ मे तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीये।

मीन– माता का शिर उत्तर, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण मे सूतिका स्थान १।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ मे ग्रहशान्ति हवन, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवित रहे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न मे लक्षण मिले वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि वह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नही मिल सकते।

राशियों का वर्ण–मेष लाल, वृष सफेद, मिथुन हरा, कर्क पाटल (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल), सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर भूरा, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण- सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरु पीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते है।

राशियों की दिशा–मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष, कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर दिशा के स्वामी होते है।

ग्रह दिशा–सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैर्ऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान के स्वामी है। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि मे और उच्च मे रहता है एवं शुभ ग्रह और मित्र के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है तथा जो ग्रह शत्रु के गृह मे, नीच ग्रह से, पाप ग्रह से अथवा शत्रु से युक्त होता है वह दुर्बल माना जाता है। जो राशि अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रह युक्त राशि दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छठे, आठवें और बारहवें भाग मे पड़े अथवा ग्रहाष्टम, द्वादशाधीश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

विक्रम संवत् २०८३, सन् २०२६-२७ के व्रत-पर्व-त्यौहार

ता. वार — विवरण

सन् २०२६ ई.

मार्च व्रत-त्यौहार

२०.शुक्र-चन्द्रदर्शन, चैती चाँद, सिन्धी नववर्ष।
२१.शनि-सौभाग्य सुंदरी व्रत, सरहुल-बिहार, गणगौरी व्रत-राजस्थान, मु.म.सव्वाल हि.१४४७, ईद।
२२.रवि-रविवती वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, राष्ट्रीय नववर्ष चैत्र शक १९४८ आरम्भ।
२३.सोम-लक्ष्मी पंचमी, श्रीराम राज्य महोत्सव।
२४.शनि-सूर्य षष्ठी व्रत-बिहार, स्कन्द षष्ठी व्रत, यमुना छठ (नेपाल)।
२५.रवि-महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारंभ सायं ४:२९ से।
२६.सोम-दुर्गाष्टमी व्रत, महानवमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन २:११ तक।
२७.मंगल-नवरात्र व्रत का पारण, राम नवमी व्रत।
२९.रवि-कामदा एकादशी व्रत।
३०.सोम-सोम प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, मदन द्वादशी, अनंग त्रयोदशी व्रत।
३१.मंगल-रेवती के सूर्य रात १०:२३।

मार्च जयन्ती

२०.शुक्र-झूलेलाल जयंती।
[illegible]६.गुरु-मेला बहुफोर्ट-कश्मीर, मेला मनसा देवी।
[illegible].शुक्र-स्वामी नारायण जयंती।
[illegible]मंगल-महावीर जयंती-जैन।

अप्रैल व्रत-त्यौहार

[illegible]-व्रत की पूर्णिमा।
२.गुरु-स्नान-दान की चैत्र पूर्णिमा।
३.शुक्र-वैशाख-स्नान-दान आरम्भ।
५.रवि-सं. गणेश चतुर्थी व्रत च.उ.रात ७:२०।
८.बुध-कोकिला षष्ठी व्रत।
१०.शुक्र-शीतलाष्टमी व्रत।
१३.सोम-वरुथिनी एकादशी व्रत-सबका।
१४.मंगल-अश्विनी-मेष संक्रांति दिन ११:४५, मेष-सतुआ संक्रांति पुण्य काल, खरमास समाप्त, बंगला नववर्ष वैशाख सं.१४३३ आरम्भ, वैशाखी पर्व, नयहक पूजा।
१५.बुध-प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१७.शुक्र-स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या।
१८.शनि-चन्द्रदर्शन।
१९.रवि-मु.जिल्काद हि.१४४७।
२०.सोम-अक्षय तृतीया व्रत।
२१.मंगल-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
२२.बुध-स्कन्द षष्ठी व्रत, चन्दन षष्ठी-बंगाल,
२३.गुरु-गंगा सप्तमी, कमला सप्तमी।
२५.शनि-सीता नवमी व्रत।
२७.सोम-मोहिनी एकादशी व्रत-सबका, भरणी के सूर्य रात ३:५९।
२८.मंगल-रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी।
२९.बुध-प्रदोष व्रत।
३०.गुरु-श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत।

अप्रैल जयन्ती

१.मंगल-मूर्ख दिवस।
२.गुरु-हनुमान प्राकट्योत्सव, अमोहा मेला, धरती पूजा, खद्दी पर्व-छत्तीसगढ़, मेला-सालासर बालाजी महाराज।
३.शुक्र-गुड फ्राइडे।
४.शनि-इस्टर सटरडे।
५.रवि-इस्टर सण्डे।
६.सोम-सती अनसूईया जयंती।
७.मंगल-गुरु तेग बहादुर जयंती।
८.बुध-गुरु अर्जुनदेव जयंती।
१३.सोम-श्रीवल्लभाचार्य जयंती।
१४.मंगल-अम्बेडकर जयंती।
१८.शनि-देव दामोदर तिथि-असम, महर्षि पराशर जयंती।
१९.रवि-परशुराम जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती-तिथि मत।
२०.सोम-चन्दन यात्रा, चार धाम यात्रा।
२२.बुध-आद्य शंकराचार्य जयंती, संत सूरदास जयंती, श्रीरामानुजाचार्य जयंती।
२३.गुरु-बाबू कुँवर सिंह जयंती-बिहार।
२४.शुक्र-बगलामुखी देवी प्राकट्योत्सव।
२५.शनि-विश्व मलेरिया दिवस, श्रीजानकीजी प्राकट्योत्सव (वैष्णव मतानुसार)।
३०.रवि-श्रीनृसिंह प्राकट्योत्सव, छिन्नमस्ता देवी प्राकट्योत्सव।

मई व्रत-त्यौहार

१.शुक्र-स्नान-दान-व्रत की वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गन्धेश्वरी पूजा-बंगाल, वैशाख व्रत-नियम समाप्त।
५.मंगल-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात ९:५६।
१०.रवि-श्रीशीतलाष्टमी व्रत, त्रिलोचनाष्टमी-बं.।
११.सोम-कृत्तिका के सूर्य रात १०:५८।
१३.बुध-अचला एकादशी व्रत-सबका, भद्रकाली ग्यारस-पंजाब, जलक्रीड़ा एकादशी-उड़ीसा।
१४.गुरु-प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ-उ.भा., वृष संक्रांति दिन १०:६।
१५.शुक्र-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१६.शनि-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, भउका अमावस्या, वटसावित्री व्रत-उ.भा., सावित्री अमावस्या-उड़ीसा।
१८.सोम-चन्द्रदर्शन।
१९.मंगल-मु.म.जिलहिज हि.१४४७।
२०.बुध-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
२२.शुक्र-स्कन्द षष्ठी व्रत।
२५.सोम-रोहिणी के सूर्य रात ८:२१।
२६.मंगल-गंगादशहरा, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस।
२७.बुध-पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबका।
२८.गुरु-प्रदोष व्रत।
३०.शनि-व्रत की पूर्णिमा।
३१.रवि-स्नान-दान की पुरुषोत्तमी पूर्णिमा।

मई-जयन्ती

१.शुक्र-श्रमिक दिवस, महाराष्ट्र-गुजरात स्थापना दिवस, बुद्ध जयंती, पुष्करा देवी प्राकट्योत्सव, कूर्म प्राकट्यो., अमोहा मेला, अबार माता मेला।
३.रवि-प्रेस स्वतंत्रता दिवस, देवर्षि नारद जयंती।।
७.गुरु-रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।
८.शुक्र-विश्व रेडक्रास दिवस।
१०.रवि-मातृ-दिवस (मदर्स-डे)।
१६.शुक्र-शनिदेव प्राकट्योत्सव।
२८.गुरु-मु.पर्व बकरीद।
३१.रवि-धूम्रपान निषेध दिवस।

जून व्रत-त्यौहार

४.गुरु-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात १०:८।
८.सोम-कालाष्टमी व्रत, मृग.के सूर्य रात १०:८।
११.गुरु-पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबका।
१२.शुक्र-प्रदोष व्रत।
१३.शनि-मास शिवरात्रि व्रत।
१४.रवि-श्राद्ध की अमावस्या।
१५.सोम-स्नान-दान की सोमवती अमावस्या, मिथुन संक्रान्ति रात ७:५५, राजस संक्रान्ति।
१६.मंगल-करवीर व्रत, चन्द्रदर्शन।
१७.बुध-रम्भा तीज व्रत, मु.म. मुहर्रम, नववर्ष हि.१४४८ शुरू।
१८.गुरु-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, उमा चतुर्थी-बं.।
१९.शुक्र-महादेव विवाह (उड़ीसा), श्रुतिपंचमी-जैन।
२०.शनि-श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत, अरण्य षष्ठी, शीतला षष्ठी-उड़ीसा, जमाई षष्ठी-बंगाल।
२२.सोम-शुक्ला देवी पूजा, आर्द्रा के रवि रात ८:२७।
२५.गुरु-भीमसेनी-निर्जला एकादशी व्रत-सबका।
२७.शनि-शनि प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत-आरम्भ (द.भा.)।
२९.सोम-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, जलयात्रा, वट सावित्री व्रत-द.भा.।

जून जयन्ती

१.सोम-बाल सुरक्षा दिवस।
५.शुक्र-विश्व पर्यावरण दिवस।
१४.रवि-रक्तदान दिवस, पिता दिवस।
१७.बुध-महाराणा प्रताप जयंती।
१८.गुरु-गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस।
२१.रवि-अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस।
२२.सोम-अम्बुवाची पर्व-श्रीकामाख्या देवी महोत्सव ३ दिनात्मक प्रारम्भ-असम, धूमावती देवी प्राकट्योत्सव, मेला क्षीर भवानी-क.।
२४.बुध-श्रीवटुकभैरव प्राकट्योत्सव।
२५.गुरु-रुक्मिणी विवाह-उड़ीसा, गायत्री माता प्राकट्योत्सव, मेला-खाटू श्यामजी-राजस्थान, काशी विश्वेश्वर कलश यात्रा।
२६.शुक्र-मुहर्रम (ताजिया), नशा निरोधक दिवस।
२७.शनि-मधुमेह दिवस (डायबीटिज-डे)।
२९.सोम-संत कबीरदास जयंती।
३०.मंगल-गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती।

जुलाई व्रत-त्यौहार

३.शुक्र-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ९:२१।
६.सोम-पुनर्वसु के रवि रात १०:२।
८.बुध-शीतलाष्टमी व्रत, इन्द्राणी पूजा, त्रिलोचन पूजा।
१०.शुक्र-योगिनी एकादशी व्रत-सबका।
१२.रवि-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१४.मंगल-स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमाव.।
१५.बुध-गुप्त नवरात्रारम्भ, मनोरथ द्वितीया-बंगाल, चन्द्रदर्शन।
१६.गुरु-रथयात्रा, मु.म.सफर हि.१४४८।
१७.शुक्र-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, कर्क संक्रान्ति दिन ११:१२।
१९.रवि-स्कन्द-षष्ठी व्रत, कुमार षष्ठी व्रत।
२०.सोम-पुष्य के रवि रात ११:२८।
२२.बुध-परशुरामाष्टमी-उड़ीसा, खर्ची पूजा-त्रिपुरा।
२३.गुरु-गुप्त नवरात्र समाप्त।
२५.शनि-हरिशयनी एकादशी व्रत-सबका, रवि नारायण एकादशी-उड़ीसा।
२६.रवि-प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, श्रीकृष्ण द्वादशी, चातुर्मास आरम्भ।
२८.मंगल-चौमासी चौदस-जैन।
२९.बुध-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा।
३०.गुरु-पार्थिव पूजन व काशी विश्वनाथ दर्शन पूजन आरम्भ, मैथिल नववर्ष आरम्भ।
३१.शुक्र-अशून्य शयन व्रत।

जुलाई जयन्ती

१.बुध-डॉक्टर्स-डे।
१०.शुक्र-देवरहाबाबा पुण्य तिथि।
११.शनि-विश्व जनसंख्या दिवस।
१६.गुरु-रामबलराम रथोत्सव।
२३.गुरु-बाल गंगाधर जयंती, मेला शरीक भगवती-कश्मीर।
२७.सोम-मेला ज्वालामुखी-कश्मीर।
२९.बुध-श्री साईं बाबा उत्सव-शिरडी, ओशो पूर्णिमा।
३१.शुक्र-मुन्शी प्रेमचन्द जयंती।

अगस्त व्रत-त्यौहार

१.शनि-जया-पार्वती व्रत।
२.रवि-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात ८:५७।
३.सोम-श्रावण सोमवार व्रत, नागपंचमी-बंगाल, श्लेषा के रवि रात ११:५०।
४.मंगल-भौमव्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमान दर्शन।
५.बुध-शीतला सप्तमी-उड़ीसा।
६.गुरु-शीतलाष्टमी व्रत।
९.रवि-कामदा एकादशी व्रत-सबका।
१०.सोम-सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत।
११.मंगल-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
१२.बुध-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, हरियाली अमावस।
१४.शुक्र-चन्द्रदर्शन।
१५.शनि-हरियाली तीज व्रत, मधुश्रवा तीज व्रत, स्वर्ण गौरी व्रत, मु.रविउलअव्वल हिजरी १४४८।
१६.रवि-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्वा-गणपति व्रत।
१७.सोम-नाग पंचमी, तक्षक पूजा, श्रावण सोमवार व्रत, मघा-सिंह संक्रांति रात १०:३७।
१८.मंगल-लुण्ठन षष्ठी-बंगाल, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमान दर्शन।
२३.रवि-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका।
२४.सोम-श्रावण सोमवार व्रत, दामोदर द्वादशी।
२५.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, मंगलागौरी व्रत, भौम व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
२६.बुध-आखेटक त्रयोदशी-उड़ीसा।
२७.गुरु-व्रत की पूर्णिमा, नारोली पूर्णिमा।
२८.शुक्र-स्नान-दान की पूर्णिमा, रक्षाबंधन, श्रावणी उपाकर्म।
२९.शनि-अशून्य शयन व्रत।
३०.रवि-रतजग्गा, कजलियाँ-मध्य प्रदेश।
३१.सोम-सं.बहुला गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात ८:५, कजली तीज व्रत, सतुआ तीज, तिजड़ी-सिन्धी, पू.फा. के सूर्य रात ७:१७।

अगस्त जयन्ती

१.शनि-लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि।
३.सोम-मैथिलीशरण गुप्त जयंती।
४.मंगल-मु.पर्व चेहल्लुम।
९.रवि-युवक दिवस।
१२.बुध-मु.शहादते इमाम हसन, आखिर चहारशम्बा।
१४.शुक्र-स्वामी करपात्रीजी जयंती।
१५.शनि-स्वतन्त्रता दिवस, ठकुराईन जयंती।
१८.मंगल-कल्कि अवतार।
१९.बुध-विश्व छायाकंन दिवस, गोस्वामी तुलसीदास जयंती।
२०.गुरु-सद्भावना दिवस, विश्व मच्छर दिवस, मेला-नयना देवी चिन्तापूर्णि-हि.प्र.।
२३.रवि-झूलन यात्रा प्रारम्भ।
२६.बुध-ईदे मिलाद (बारावफात)।
२७.गुरु-हयग्रीव प्राकट्योत्सव, झूलन यात्रा समाप्त।
२८.शुक्र-संस्कृत दिवस, अमरनाथ यात्रा।
३०.रवि-विन्ध्याचल-भीमचण्डी देवी प्राकट्योत्सव, विशालाक्षी देवी यात्रा, भारतेन्दु जयन्ती।

सितम्बर व्रत-त्यौहार

१.मंगल-रक्षा पंचमी-उड़ीसा, कोकिला पंचमी, भातृभगिनी पंचमी।
२.बुध-हलषष्ठी-ललही छठ व्रत, श्रीचन्द षष्ठी।
३.गुरु-शीतला सप्तमी पूजा।
४.शुक्र-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत-सबका, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)।
७.सोम-जया एकादशी व्रत-सबका।
८.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
९.बुध-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, अघोर चतुर्दशी।
१०.गुरु-श्राद्ध की अमावस्या, पिठौरी अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस्या।
११.शुक्र-स्नान-दान की अमावस्या।
१२.शनि-चन्द्रदर्शन।
१३.रवि-मु.रविउस्सानी हि.१४४८।
१४.सोम-हरितालिका तीज व्रत, ढेला चौथ-चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात ७:४९)। वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारंभ, उ.फा. के रवि दिन १:२८।
१५.मंगल-ऋषि पंचमी व्रत, अरुन्धती सहित सप्तऋषि पूजन, रक्षा पंचमी-बंगाल।
१७.गुरु-सूर्य षष्ठी व्रत, लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व, भदैनी-वाराणसी, कन्या संक्रांति रात ११:३६, विश्वकर्मा पूजा।
१८.शुक्र-मुक्ताभरण संतान सप्तमी व्रत, अपराजिता सप्तमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ चं.उ. रा.१०:४२, सोरहिया मेला-१६ दिन प्रारम्भ।
१९.शनि-राधाष्टमी व्रत, दुर्गाष्टमी व्रत।
२०.रवि-महानन्दा नवमी, महा रविवार व्रत।
२१.सोम-दशावतार व्रत।
२२.मंगल-पद्मा-कर्मा एकादशी व्रत-सबका, डोल ग्यारस, जलझूलनी एकादशी-राज.।
२३.बुध-वामन द्वादशी व्रत, श्रवण द्वादशी।
२४.गुरु-प्रदोष व्रत।
२५.शुक्र-अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणपति विसर्जन।
२६.शनि-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, उमा महेश्वर व्रत, लोकपाल पूजा, नान्दी मातामह श्राद्ध।
२७.रवि-महालया-पितृपक्ष आरम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, हस्त के रवि रा.शे.४:५१, फसली नववर्षारम्भ असौज सन् १४३४ प्रारम्भ।
२८.सोम-अशून्यशयन व्रत, द्वितीया श्राद्ध।
२९.मंगल-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ७:२२, तृतीया श्राद्ध, भरणी श्राद्ध।
३०.बुध-चतुर्थी श्राद्ध।

ता. वार विवरण

सितम्बर जयन्ती

५.**शनि**-माधवदेव तिथि-असम, शिक्षक दिवस, डॉ.राधाकृष्णन् जयन्ती, मदर टेरेसा पुण्य तिथि।

८.**मंगल**-विश्व साक्षरता दिवस।

११.**शुक्र**-सन्त विनोवा भावे जयंती।

१३.**रवि**-वाराह प्राकट्योत्सव।

१४.**सोम**-हिन्दी दिवस।

१५.**मंगल**-इन्जीनियर्स-डे, मेला पाट प्रात: ३ दिन।

१७.**गुरु**-विश्वकर्माजी प्राकट्योत्सव।

२०.**रवि**-श्री चन्द्र जयन्ती।

२३.**बुध**-श्रीवामन प्राकट्योत्सव, मु.ग्यारहवीं शरीफ।

२८.**सोम**-उर्स हजरत निजामुद्दीन औलिया (दिल्ली)।

२९.**मंगल**-विश्व हृदय दिवस।

३०.**बुध**-बैंक अर्धवार्षिक लेखा बन्दी।

अक्टूबर व्रत-त्यौहार

१.**गुरु**-पंचमी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी श्राद्ध।

२.**शुक्र**-सप्तमी श्राद्ध, कपिला षष्ठी योग।

३.**शनि**-जीवित्पुत्रिका-जीउतिया व्रत, महालक्ष्मी व्रत, अष्टमी श्राद्ध, अष्टका श्राद्ध।

४.**रवि**-मातृनवमी, मातामह श्राद्ध, नवमी श्राद्ध, जीउतिया व्रत पारण।

५.**सोम**-दशमी श्राद्ध।

६.**मंगल**-इन्दिरा एकादशी व्रत-सबका, एकादशी श्राद्ध।

७.**बुध**-यती-संन्यासी श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध, मघा श्राद्ध।

८.**गुरु**-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध।

९.**शुक्र**-चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रादि से मृतक का श्राद्ध।

१०.**शनि**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, पितृ-विसर्जन, महालया समाप्त।

११.**रवि**-शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलश स्थापन, दौहित्र द्वारा मातामह श्राद्ध, चित्रा के सूर्य रा.शे.६:०।

१२.**सोम**-चन्द्रदर्शन।

ता. वार विवरण

१३.**मंगल**-मु.म.जमादि उलअव्वल हि.१४४८।

१४.**बुध**-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, मान चतुर्थी।

१५.**गुरु**-उपांग ललिता व्रत।

१६.**शुक्र**-विल्व आमन्त्रण, स्कन्द षष्ठी व्रत।

१७.**शनि**-महानिशा पूजा, सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा।

१८.**रवि**-महाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत, सरस्वती पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा, तुला सं.दिन १०:२०।

१९.**सोम**-नवरात्र हवन, कन्या पूजन।

२०.**मंगल**-विजयादशमी, दुर्गा मूर्ति विसर्जन, नवरात्र व्रत पारण, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, शमीपूजन, शस्त्रपूजा।

२२.**गुरु**-पापांकुशा एकादशी व्रत-सबका।

२३.**शुक्र**-प्रदोष व्रत, पद्मनाभ द्वादशी व्रत।

२४.**शनि**-स्वाती के रवि रात ३:२।

२५.**रवि**-व्रत की पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, शरद् पूर्णिमा।

२६.**सोम**-स्नान-दान की पूर्णिमा।

२७.**मंगल**-कार्तिक मास का यम-नियम-व्रतारंभ, अशून्यशयन व्रत।

२९.**गुरु**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत चं.उ. रात ७:५७ पर, ललिता चतुर्थी, दशरथ चतुर्थी-बंगाल।

अक्टूबर जयन्ती

२.**गुरु**-गाँधी-शास्त्री जयंती, अहिंसा दिवस।

८.**गुरु**-वायु सेना दिवस।

९.**शुक्र**-विश्व दृष्टि दिवस।

१०.**शनि**-राष्ट्रीय डाक दिवस, चरखा जयन्ती।

११.**रवि**-श्रीशैलपुत्री देवी दर्शन, महाराज अग्रसेन जयंती।

१२.**सोम**-श्रीब्रह्मचारिणी देवी दर्शन।

१३.**मंगल**-श्रीचित्रघण्टा देवी दर्शन।

१४.**बुध**-श्रीकूष्माण्डा (दुर्गा) देवी दर्शन।

१५.**गुरु**-श्रीस्कन्दमाता देवी दर्शन।

१६.**शुक्र**-श्रीकात्यायनी देवी दर्शन।

१७.**शनि**-श्रीकालरात्रि देवी दर्शन।

१८.**रवि**-श्रीमहागौरी देवी दर्शन।

१९.**गुरु**-श्री सिद्धिदात्री देवी दर्शन।

ता. वार विवरण

२०.**मंगल**-बौद्धावतार।

२१.**बुध**-साईं बाबा पुण्यतिथि, माधवाचार्य जयंती, पुलिस स्मृति दिवस।

२२.**गुरु**-भरतमिलाप-नाटी इमली, वाराणसी।

२६.**सोम**-महर्षि वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयंती।

२९.**गुरु**-नक्कटैया चेतगंज, वाराणसी।

३१.**शनि**-सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती, एकता दिवस।

नवम्बर व्रत त्यौहार

१.**रवि**-अहोई अष्टमी व्रत।

२.**सोम**-राधाष्टमी व्रत, राधा कुण्ड स्नान पर्व, कराष्टमी-महाराष्ट्र।

५.**गुरु**-रम्भा एकादशी व्रत-सबका, गोवत्स द्वादशी।

६.**शुक्र**-प्रदोष व्रत, धनतेरस।

७.**शनि**-नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, हनुमज्जन्म सायं, विशाखा के रवि दिन १०:१०।

८.**रवि**-श्राद्ध की अमावस्या, दीपावली, गणेश-लक्ष्मी-महाकाली पूजा, प्रात: हनुमद् दर्शन।

९.**सोम**-स्नान-दान की सोमवती अमावस्या, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा काशी से अन्यत्र, बलिपूजा।

१०.**मंगल**-नेपाली नववर्ष संवत् ११४७ आरम्भ, चन्द्रदर्शन, गोवर्धन पूजा काशी में, भैयादूज, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, दावात पूजा।

११.**बुध**-मु.जमादि उस्सानी हि.१४४८।

१३.**शुक्र**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत ३ दिन प्रारम्भ।

१४.**शनि**-ज्ञान पंचमी जैन।

१५.**रवि**-सूर्यषष्ठी (डालाछठ) व्रत सायं अर्घ्य।

१६.**सोम**-डाला छठ प्रात: अर्घ्य, व्रत का पारण।

१७.**मंगल**-गोपाष्टमी, गो पूजन, वृश्चिक संक्रान्ति दिन ८:३।

१८.**बुध**-अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आँवला नवमी, दुर्गा नवमी, जगद्धात्री पूजा-बंगाल।

२०.**शुक्र**-हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत-सबका, तुलसी विवाह, भीष्म पंचक प्रारम्भ, अनुराधा के रवि दिन ३:५।

२१.**शनि**-चातुर्मास व्रत समाप्त।

ता. वार विवरण

२२.**रवि**-प्रदोष व्रत।

२३.**सोम**-वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस-जैन।

२४.**मंगल**-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, रास पूर्णिमा, त्रिपुरोत्सव, देव दीपावली, श्रीकार्तिकेय दर्शन, भीष्मपंचक समाप्त।

२७.**बुध**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ७:५७।

२९.**रवि**-श्रीअन्नपूर्णा देवी व्रतारम्भ १६ दिनात्मक।

३०.**सोम**-श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन।

नवम्बर जयन्ती

२.**सोम**-श्री राधा प्राकट्योत्सव।

७.**शनि**-धन्वन्तरी प्राकट्योत्सव, श्रीकामेश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, श्रीहनुमान प्राकट्योत्सव।

९.**सोम**-महावीर निर्वाण दिवस।

१०.**मंगल**-कालीदास जयन्ती।

१४.**शनि**-बाल दिवस, पण्डित जवाहर लाल नेहरू जयन्ती।

१८.**बुध**-अयोध्या-मथुरा परिक्रमा।

२४.**मंगल**-गुरुनानक जयंती, पुष्कर मेला-अजमेर, हरिहर क्षेत्र मेला-सोनपुर, गढ़ मुक्तेश्वर-पुष्कर मेला, महावीर-रथोत्सव जैन, भृगु आश्रम मेला ददरी-बलिया।

२९**रवि.**-लोटा भंटा मेला-रामेश्वर-वाराणसी।

३०.**सोम**-कालभैरव प्राकट्योत्सव।

दिसम्बर व्रत त्यौहार

१.**मंगल**-भैरव अष्टमी व्रत, अष्टभैरव दर्शन, कालाष्टमी।

३.**गुरु**-ज्येष्ठा के रवि सायं ६:१६।

४.**शुक्र**-उत्पन्ना एकादशी व्रत।

६.**रवि**-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।

८.**मंगल**-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या।

९.**बुध**-रुद्र व्रत-पीड़िया (प्रदोष काल)।

१०.**गुरु**-चन्द्रदर्शन।

११.**शुक्र**-मु.म. रज्जब हि.१४४८।

१३.**रवि**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।

ता. वार विवरण

१४.**सोम**-द्वितीय नागपंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव।

१५.**मंगल**-स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी-महाराष्ट्र, मूलकरूपिणी षष्ठी व्रत, गुहषष्ठी।

१६.**बुध**-मित्र (सूर्य) सप्तमी व्रत, मूल-धनु संक्रांति रात ८:६, खरमास प्रारम्भ।

१८.**शुक्र**-महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी।

२०.**रवि**-मोक्षदा एकादशी व्रत-सबका, मौनी एकादशी-जैन।

२१.**सोम**-सोम प्रदोष व्रत, मत्स्य द्वादशी व्रत।

२२.**मंगल**-पिशाचमोचन श्राद्ध, कपर्दीश्वर महादेव दर्शन।

२३.**बुध**-व्रत की पूर्णिमा।

२४.**गुरु**-स्नान-दान की पूर्णिमा।

२५.**शुक्र**-क्रिसमस-डे (बड़ा दिन)।

२७.**रवि**-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात ९:२।

२९.**मंगल**-पू.षा. के रवि सायं ५:५६।

३१.**गुरु**-कालाष्टमी।

दिसम्बर जयन्ती

१.**मंगल**-विश्व एड्स दिवस।

३.**गुरु**-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, किसान दिवस, भोपाल गैस त्रासदी दिवस।

४.**शुक्र**-नौसेना दिवस।

६.**रवि**-डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्य तिथि।

७.**सोम**-झण्डा दिवस।

१०.**गुरु**-मानवाधिकार दिवस।

११.**शुक्र**-मु.उर्स मोइनुद्दीन चिश्ती-अजमेर।

१४.**सोम**-ऊर्जा बचत दिवस, गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस।

२०.**रवि**-गीता जयंती।

२३.**बुध**-श्रीदत्तात्रेय प्राकट्योत्सव, अन्तर्गृही यात्रा काशी।

२४.**गुरु**-षोडशी त्रिपुरसुन्दरी देवी प्राकट्योत्सव।

२५.**शुक्र**-ईसा मसीह जयंती, पं.मदनमोहन मालवीय जयंती (अं.मत)।

२६.**शनि**-जोर मेला पंजाब ३ दिन।

२८.**सोम**-जोर मेला समाप्त।

३१.**गुरु**-नववर्ष की पूर्व सन्ध्या।

ता. वार विवरण

सन् २०२७ ई.

जनवरी व्रत त्यौहार

१.**शुक्र**-ईसाई नववर्ष आरंभ।

२.**शनि**-पौष दशमी।

३.**रवि**-सफला एकादशी व्रत सबका।

५.**मंगल**-भौम प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत।

७.**गुरु**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, कपिलधारा तीर्थ श्राद्ध।

९.**शनि**-चन्द्रदर्शन।

१०.**रवि**-मु.सावान हि.१४४८।

११.**सोम**-वैनायकी गणेश चौथ व्रत।

१४.**गुरु**-श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत, अन्नरूपाषष्ठी व्रत, लोहरी-पंजाब, भोगी-द.भा., मकर संक्रांति रा.३:५३।

१५.**शुक्र**-मकर संक्रांति पुण्यकाल, खिचड़ी पर्व, पोंगल-द.भा.।

१७.**रवि**-साम्ब दशमी-उड़ीसा, सूर्य पूजा-उ.।

१८.**सोम**-पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त।

१९.**मंगल**-वैष्णवों की एकादशी व्रत, कूर्मद्वादशी।

२०.**बुध**-प्रदोष व्रत।

२२.**शुक्र**-स्नान दान व्रत की पूर्णिमा।

२३.**शनि**-प्रयाग माघ मेला प्रारंभ।

२४.**रवि**-श्रवण के सूर्य रा.१०:५०।

२५.**सोम**-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा.८:४८।

जनवरी जयंती

३.**रवि**-श्रीपार्श्वनाथ जयंती।

४.**सोम**-लुई ब्रेल जयंती।

७.**गुरु**-राजिम भक्तिन माता जयंती।

५.**मंगल**-गुरुगोविन्द सिंह जयंती।

६.**बुध**-मु.शव ए मिराज।

१२.**मंगल**-स्वा.विवेकानन्द जयंती।

१५.**शुक्र**-गुरु गोविन्द सिंह जयंती।

२३.**शनि**-सुबाष चन्द्र बोस जयंगी।

२९.**शुक्र**-स्वा.विवेकानन्द जयंती-ति.मत।

फरवरी व्रत त्यौहार

२.**मंगल**-षट्तिला एकादशी व्रत-सबका।

ता. वार विवरण

३.**बुध**-प्रदोष व्रत।

४.**गुरु**-मास शिवरात्रि व्रत, मेरु त्रयोदशी-जैन।

५.**शुक्र**-रटन्ती कलिका पूजा-बं.।

६.**शनि**-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या।

७.**रवि**-गुप्त नवरात्र आरंभ।

८.**सोम**-चन्द्रदर्शन।

९.**मंगल**-मु.म.रमजान हि.१४४८ रोजा शुरू।

१०.**बुध**-वैनायकी गणेश चतुर्वी व्रत।

११.**गुरु**-वसंत पंचमी-सरस्वती पूजा, तक्षक पूजा।

१२.**शुक्र**-श्री स्कन्द षष्ठी, शीतला षष्ठी-बं.।

१३.**शनि**-अचला सप्तमी व्रत, रथ सप्तमी, सूर्य सप्तमी, कुंभ संक्रांति दि.२:३७।

१५.**सोम**-महानन्दा नवमी।

१७.**बुध**-जया एकादशी व्रत, भैमी एकादशी।

१८.**गुरु**-प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी।

१९.शुक्र-शतभिषा के सूर्य रा.शे.४:३९।

२०.**शनि**-स्नान-दान व्रत की माघी पूर्णिमा।

२४.**बुध**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चं.उ.रा.९:३०।

२८.**रवि**-सीताष्टमी व्रत, कालाष्टमी।

फरवरी जयंती

७.**रवि**-वल्लभ जयंती।

११.**गुरु**-वागीश्वरी जयंती।

१५.**सोम**-श्री हरसूब्रह्मदेव जयंती-चैनपुर भभुआ।

२०.**शनि**-संत रविदास जयंती।

२८.**रवि**-जानकी प्राकट्योत्सव।

मार्च व्रत त्यौहार

४.**गुरु**-विजया एकादशी व्रत-सबका।

५.**शुक्र**-प्रदोष व्रत, पू.भा.के सूर्य दि.१०:१२।

६.**शनि**-महा शिवरात्रि व्रत।

७.**रवि**-शिवरात्रि व्रत पारण।

८.**सोम**-स्नान-दान श्राद्ध की सोमवती अमावस्या।

९.**मंगल**-चन्द्रदर्शन।

१२.**शुक्र**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।

१४.**रवि**-श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत, गोरूपिणी षष्ठी-बं., होलाष्टक आरंभ।

ता. वार विवरण

१५.**सोम**-कामदा सप्तमी व्रत, मीन संक्रांति दि.९:५१, खरमास आरंभ।

१६.**बुध**-फगुदशमी-उ.।

१८.**गुरु**-आमलकी एकादशी व्रत, रंगभरी एकादशी व्रत, काशी विश्वनाथ शृंगार दिवस, उ.भा. के सूर्य सा.६:२।

२०.**शनि**-शनि प्रदोष व्रत।

२१.**रवि**-व्रत की पूर्णिमा, भद्रा बाद होलिका दहन, चौमासी चौदस-जैन।

२२.**सोम**-स्नान-दान पूर्णिमा, होली, रंगोत्सव, राष्ट्रीय नववर्ष चैत्र शक १९४९ प्रारंभ।

२३.**मंगल**-वसंत उत्सव, होला मेला-पंजाब।

२५.**गुरु**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चं.उ. रा.९:१३।

२७.**शनि**-रंग पंचमी।

२८.**रवि**-श्रीस्कन्द षष्ठी-बं.।

२९.**सोम**-शीतला सप्तमी व्रत।

३०.**मंगल**-श्रीशीतलाष्टमी (बसिअउरा), बुढ़वा मंगल।

३१.**बुध**-रेवती के सूर्य रा.शे.४:३५।

मार्च जयंती

२.**मंगल**-स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती।

६.**शनि**-वैद्यनाथ जयन्ती।

१०.**बुध**-श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, मु.पर्व ईद।

२४.**बुध**-संत तुकाराम जयंती।

२७.**शनि**-विजय गोविन्द हलंकर जयंती।

३१.**बुध**-श्रीऋषभनाथ जयंती-जैन

अप्रैल व्रत त्योहार

२.**शुक्र**-पापमोचिनी एकादशी व्रत सबका।

४.**रवि**-प्रदोष व्रत, महावारुणी पर्व।

५.**सोम**-मास शिवरात्रि व्रत।

६.**मंगल**-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, भौमवती अमावस्या, चान्द्र संवत् २०८३ समाप्त।

अप्रैल जयंती

१.**गुरु**-मुर्ख दिवस।

तात्कालिक करणवश संक्रान्तियों के वाहनवस्त्रायुधादि ज्ञानार्थ चक्र

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पाद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निविष्ट	उपविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फल	भय	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	स्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फल	भीति	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पाण्डु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कम्बल	नग्न	घनाभ
उपवस्त्र	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कम्बल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुध	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भैक्ष	पकवान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्तिका	गोरोचन	महावर	ओस्तुमह	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जाति	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	वर्णसंकर
पुष्प	पुन्नाग	जाति	बकुल	केतकी	बिल्व	मंदार	दूर्वा	कमल	बेला	पाटल	जपा
भोजन पात्र	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लौह	खर्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	हीरा	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	हरित	भूर्जप	सित	पाण्डु	नील	कृष्ण	चर्म	धूम्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्वती	मंदाकिनी	नर्मदा	कृष्णा	गोदावरी	भागीरथी	तुंगभद्रा	कावेरी	कृष्णा
वय	बाला	कुमारी	गतालका	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	वन्ध्या	पुत्रार्थिनी	प्रव्राजिका

छिक्का का शुभाशुभ बोधक चक्र

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	वार
विघ्न	विलम्ब	उत्तम	मृत्यु	शुभ	आगमन	लाभ	विलम्ब	रवि
लाभ	विलम्ब	मृत्यु	लाभ	शुभ	उत्तम	अल्पलाभ	विलम्ब	चन्द्र
मित्र आगमन	लाभ	विलम्ब	मृत्यु	लाभ	विदेश यात्रा	सुख	लाभ	मंगल
सिद्धि	शारीरिक कष्ट	अरिष्ट	विलम्ब	मृत्यु	धनक्षय	चोर भय	शारीरिक कष्ट	बुध
चिन्ता	वार्ता	विलम्ब	उत्तम	चोरभय	मृत्यु	कष्ट	वार्ता	गुरु
धन प्राप्ति	कलह	मित्र मिलन	अर्थलाभ	उत्तम	विलम्ब	मरण	कलह	शुक्र
अर्थक्षय	कष्टनाश	वार्ता	मित्र मिलन	उत्तम	शुभ	विलम्ब	कष्टनाश	शनि

रोगार्त का इष्टकालवश बाधाज्ञान विधि- प्रश्नसमय के तिथि वार, नक्षत्र, लग्न और याम (प्रहर) का योग कर उसमें ८ का भाग दे, यदि शेष ७ या ३ बचे तो देवबाधा, शेष १ या ५ बचे तो ग्रहबाधा, २ या ८ शेष में पितर सम्बन्धी दोष और ६ या ४ शेष बचे तो भूतबाधा जानना चाहिए। उक्त तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और याम के १२ से भाग देने पर यदि ३।५।६।८।९।११ शेष बचे तो जीवित रहेगा तथा १।२।४।७।१०।१२ शेष बचे योग में जीवित नहीं रहेगा। **राजमार्तण्ड के अनुसार-** वार, नक्षत्र, तिथि, दिशा का योग कर उसमें ८ से भाग देवे, यदि लब्धांक २ या ८ हो तो पितरों का दोष, ७।३ बचे तो देवबाधा, ६।४ में प्रेतबाधा तथा १।५ में ग्रहबाधा जाने। उपरोक्त लब्धांक को ३ से गुणाकर उसमें ८ जोड़कर ४ से गुणा करे और गुणनफल में ७ से भाग देने पर १ शेष में कुलजन्यदोष, २ शेष में ग्राम्यदेव का दोष, ३ शेष में वनदेवता का दोष, ४ शेष में-राजपक्षीय दोष, ५ शेष में शत्रुकृत दोष, ६ शेष में पंक्तिज दोष तथा शून्य (०) शेष में आकाश देवता का दोष जाने।। कौल्य (पितृ) दोष में हवन और द्विजार्चन। ग्राम्य दोष में ग्राम के चारों कोण में हवन, वनदेवता के दोष में अर्चना और ब्राह्मण भोजन तथा वस्त्रदान, राजपक्षीय दोष में तीर्थ यात्रा और तीर्थ में दान, शत्रुकृत दोष में दुर्गार्चन और दान तथा पंक्तिज दोष में गायत्री जप और आकाश देवता का दोष होने पर दीपदान करना कल्याणकारी होगा।

राहुल कुमार पाण्डेय

नवग्रह पीड़ा (रोग) निवारणार्थ यन्त्र मन्त्र रत्न एवं जड़ी धारण तथा व्यवसायिक वस्तुएँ

सूर्य की पीड़ा से - बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बिमारियाँ, आँखों की बिमारी, चर्मरोग, घाव लगना, दौरे पड़ना तथा हिस्टीरिया आदि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

तांत्रिक मंत्र- ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।
अधि देवता- ईश्वर। **प्रत्यधि देवता-** अग्नि।
जप संख्या- ७ हजार।
कलियुग में जप संख्या- २८ हजार।

मध्य भाग्य, वर्तुल मण्डल, अंगुल १२, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण। **सिंह** राशि का स्वामी।

वाहन- सप्ताश्व। **समिधा-** मदार।

दान-द्रव्य- माणिक्य, सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूँगा लाल, गौ लाल तथा चन्दन लाल।

दान का समय- रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल।

धारण रत्न- माणिक्य ३ या ४ रत्ती।

उपरत्न- तामड़ा या कण्टकिज धारण करें। इसके अभाव में सूर्य का यन्त्र अथवा बिल्व वृक्ष की जड़ गले या बाहु में धारण करें।

व्यवसायिक पदार्थ- राज्य प्रशासनिक कार्य, इमारती लकड़ी, सोना, रूई, अनाज।

व्रत उपवास- सूर्यदेव की प्रसन्नता हेतु रविवार का व्रत करें तथा इसमें लाल फूल अर्पित करना चाहिए। श्रीसूर्य सहस्रनाम का पाठ करें व श्रीसूर्यार्घ्य प्रदान करें।

चन्द्र की पीड़ा से- अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंढक, बुखार, गठिया, मानसिक असन्तुलन, पेट की बिमारियाँ, जलघात तथा जानवरों का हमला इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ इमं देवा ऽअसपत्नऽं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाऽं राजा।।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।
अधि देवता- उमा। **प्रत्यधि देवता-** अप्।
जप संख्या- ११ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ४४ हजार।

अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल ४, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण। **कर्क** राशि का स्वामी।

वाहन- हरिण। **समिधा-** पलास।

दान-द्रव्य- मोती, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, बांस की डलिया, सफेद बैल तथा सफेद चन्दन।

दान का समय- सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल।

धारण रत्न- मोती ४-५ रत्ती।

अभाव में उपरत्न- गोदन्ती या चन्द्रकान्त मणि धारण करें अथवा चन्द्रमा का यन्त्र तथा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बाँधकर बाहु या गले में धारण करें।

व्यवसायिक पदार्थ- जल से सम्बन्धित व्यवसाय, कांच के बने सामान।

व्रत-उपवास- चन्द्र पीड़ा निवृत्ति हेतु सोमवार व्रत या बत्तीस पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। श्वेत पदार्थ, श्वेत पुष्प चढ़ावें।

मंगल की पीड़ा से- गले की बिमारी, कण्ठ रोग, फोड़ा, फुन्सी, रक्त विकार, गठिया के बुखार, आँखों की बिमारी, दौरे पड़ना, सिर दर्द तथा रक्त सम्बन्धी रोग एवं गर्भपात इत्यादि।

वैदिक जप मंत्र- ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाऽं रेताऽंसि जिन्वति।।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ह्रीं श्री मङ्गलाय नमः।
अधिदेवता- स्कन्द। **प्रत्यधिदेवता-** पृथ्वी।
जप संख्या- १० हजार।
कलियुग में जप संख्या- ४० हजार।

दक्षिण दिशा, त्रिकोण मण्डल, अंगुल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण। **मेष-वृश्चिक** राशि का स्वामी।

वाहन- भेड़ा। **समिधा-** खदिर (खैर)।

दान-द्रव्य- मूँगा, सोना, ताँबा, भूमि, मसूर, गुड़, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल बैल तथा लाल चन्दन।

दान का समय- मंगलवार को सबेरे २ घटी तक।

धारण रत्न- मूँगा ६-७ रत्ती।

उपरत्न- विद्रुम मणि या संगमूँगी अथवा अकीक एवं मंगल का यंत्र या अनन्तमूल वृक्ष की जड़ को लाल कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यवसायिक पदार्थ- औषधि, घड़ी, ईंट, गेहूँ, भूमि।

व्रत उपवास- मंगल देवता अथवा हनुमान्‌जी का व्रत करना शुभप्रद है। लाल फूल अर्पण करें।

बुध की पीड़ा से- दिमागी फितूर, नाक-कान की बिमारी, वात सम्बन्धी बिमारी, पित्तभेद, चर्म रोग, कोढ़, विष तथा ऊँचाइयों से गिरना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सऽं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्। विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ऐं श्री श्री बुधाय नमः।
अधिदेवता- विष्णु। **प्रत्यधिदेवता-** विष्णु।
जप संख्या- ९ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ३६ हजार।

ईशान कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल ४, मगध देश, अत्रि गोत्र, हरित वर्ण। **मिथुन-कन्या** राशि का स्वामी।

वाहन- सिंह। **समिधा-** अपामार्ग।

दान-द्रव्य- पन्ना, सोना, काँसे का बर्तन, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र तथा फल।

दान का समय- बुधवार को सबेरे ५ घटी तक।

धारण रत्न- पन्ना ३ या ४ रत्ती।

उपरत्न- हरा मरगज अथवा बुध-यन्त्र या विधारा की जड़ हरे डोरे या कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यवसायिक वस्तुएँ- मूँग, रेशम, सूत, कापी, लेखन सामग्री (स्टेशनरी)।

व्रत उपवास- बुध देव की पीड़ा निवृत्ति हेतु २७ या १०८ बुधवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प में हरा फूल ग्रहण करें। गौमाता की सेवा, हरा चारा (दूब, पालक आदि) खिलाना लाभदायक होता है।

गुरु की पीड़ा से- पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना तथा वायुयान दुर्घटना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।
अधिदेवता- ब्रह्मा। **प्रत्यधिदेवता-** इन्द्र।
जप संख्या- १९ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ७६ हजार।

उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण। **धनु-मीन** राशि का स्वामी।

वाहन- हाथी। **समिधा-** पीपल।

दान-द्रव्य- पुखराज, सोना, काँसा, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, भूमि तथा पीला फल।

दान का समय- बृहस्पतिवार को संध्या काल।

धारण रत्न- पुखराज ५-६ रत्ती।

उपरत्न- सुनेहला धारण करें अथवा बृहस्पति का यन्त्र या बभनेठी (भारंगी) की जड़ पीले कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक सामग्री- किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा।

व्रत-उपवास- गुरु (बृहस्पति) की पीड़ा निवृत्ति हेतु गुरुवार का व्रत करना चाहिए। इसमें पीली वस्तु, पीला पुष्प से पूजन-अर्चन करना लाभदयक होता है।

शुक्र की पीड़ा- कोढ़, वात-पित्त-कफ सम्बन्धी, वीर्य विकार, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द तथा अण्डकोश की सूजन इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानऽं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

तांत्रिक मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शुक्राय नमः।
अधिदेवता- इन्द्र। **प्रत्यधिदेवता-** इन्द्राणी।
जप संख्या- १६ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ६४ हजार।

पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अंगुल ९, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण। **वृष-तुला** राशि का स्वामी।

वाहन- अश्व। **समिधा-** उदुम्बर (गूलर)।

दान-द्रव्य- हीरा, सोना, चाँदी, मिश्री, दूध, चावल, सफेद एवं चित्रित कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, भूमि तथा सफेद चन्दन।

दान का समय- शुक्रवार को (सूर्योदयकाल)।

धारण रत्न- हीरा ४-५ रत्ती।

उपरत्न- सफेद पुखराज, स्फटिक या जरकन धारण करें। अथवा शुक्र का यन्त्र या मर्जीठ की जड़ को सफेद कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक सामग्री- प्रसाधन सामग्री, फूल, वाहनों की खरीद-बिक्री।

व्रत उपवास- शुक्र ग्रह पीड़ा निवारणार्थ शुक्रवार को व्रत रहना शुभ है। सफेद वस्तुएँ तथा सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिए।

शनि की पीड़ा से- पेट और पैरों की बिमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट लगना, वाहन दुर्घटना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः।।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ऐं ह्रीं श्री शनैश्चराय नमः।
अधिदेवता- यम। **प्रत्यधिदेवता-** प्रजापति।
जप संख्या- २३ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ९२ हजार।

पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अंगुल २, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण। **मकर-कुम्भ** राशि का स्वामी।

वाहन- गीध। **समिधा-** शमी।

दान-द्रव्य- नीलम, सोना, लोहा, काला उड़द, काली तिल, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, कस्तूरी, महिषी, काली गौ तथा काला खड़ाऊ (जूता-चप्पल इत्यादि)।

दान का समय- शनिवार को मध्याह्नकाल।

धारण रत्न- नीलम ४-५ रत्ती।

उपरत्न- कटैला, काले घोड़े के नाल या नाव के कांटे की अंगूठी, शनि यंत्र काले कपड़े या धागे में बाँधकर गले या बाहु मे धारण करें।

व्यवसायिक वस्तुएँ- लकड़ी, लोहा, जूते, कोयला।

व्रत-उपवास- शनि की पीड़ा निवृत्ति हेतु ३३ तैंतीस शनिवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प काला अर्पण करें। नैवेद्य (प्रसाद) में काले तिल के लड्डू, उरद के बड़े आदि अर्पित करना चाहिए।

राहु की पीड़ा से- दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर (विष) देना व लेना, आत्म-हत्या, पाचन संस्थान के रोग इत्यादि।

वैदिक मंत्र- ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

तांत्रिक मन्त्र- ॐ ह्रीं राहवे नमः।
अधिदेवता- काल। **प्रत्यधिदेवता-** सर्प।
जप संख्या- १८ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ७२ हजार।

नैर्ऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अंगुल १२, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण। **कन्या** राशि का स्वामी।

वाहन- व्याघ्र। **समिधा-** दूर्वा।

दान-द्रव्य- गोमेद, सोना, रत्न, सीसा, तिल, सरसो का तेल, सप्त धान्य, उरद, कम्बल, नीला कपड़ा, तलवार, कम्बल, घोड़ा एवं सूप, काला फूल, लौह उपकरण, तिल भरा ताम्रपत्र।

दान-समय- रात्रि में।

धारण रत्न- गोमेद ६-७ रत्ती।

उपरत्न- तुरसावा धारण करें अथवा राहु का यन्त्र या सफेद चन्दन की जड़ काले कपड़े मे बाँधकर धारण करें।

व्यावसायिक वस्तु- तेल, अलसी, चना, हड्डी के सामान।

व्रत उपवास- शनिवार को व्रत में नीला पुष्प अर्पण करना चाहिए।

केतु की पीड़ा से- घाव होना, दाँत का सड़ जाना, जल जाना और पसदायक सारी बिमारियाँ एवं गर्भपात केतु से ही होता है।

वैदिक जप मंत्र- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः।।

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

तांत्रिक में- ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः।
अधिदेवता- चित्रगुप्त। **प्रत्यधिदेवता-** ब्रह्मा।
जप संख्या- १७ हजार।
कलियुग में जप संख्या- ६८ हजार।

वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल ६, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण। **मीन** राशि का स्वामी।

वाहन- कबूतर। **समिधा-** शमी या दूर्वा।

दान-द्रव्य- लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, काला कपड़ा, धूमिल तेल, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा।

दान का समय- रात्रि में।

धारण रत्न- लहसुनिया ७.९ रत्ती।

उपरत्न- गोदन्ती या लाजावर्त धारण करें अथवा केतु का यन्त्र या असगन्ध वृक्ष की जड़ को काले कपड़े में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें।

व्यवसायिक वस्तुएँ- अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति।

व्रत उपवास- राहु के समान व्रत-पूजनादि करें।

सर्वविध पुस्तक प्राप्ति स्थान : रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन, कचौड़ीगली, वाराणसी- २२१००१। फोन : ०५४२-२३९२५४३, २३९२४७१ * मुद्रक : भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी